❀ ओ३म् ❀

ऊमर-काव्य

अर्थात्

जोधपुर के सुप्रसिद्ध चारण कुल-भूषण कविवर ऊमरदानजी के सुन्दर काव्य-रचनाओं का संग्रह जिसमें कुरीतियों का दिग्दर्शन, सामाजिक सुधारो का सरल मारवाड़ी भाषा में मनोहर वर्णन तथा वीरता, भक्ति, हास्य व वैराग्य आदि रसों का भण्डार है

—:o:—

रचयिता

स्वर्गवासी कविवर ऊमरदान

—:o:—

सम्पादक

मारवाड़ राज्य का इतिहास, राठौड़ राजवंश, भारतीय नरेश, राजस्थान के छत्तीस राजवंश, महाराजा सर प्रताप, दियासलाई का इतिहास, मारवाड़ के रीति रस्म, मंडोवर का इतिहास, मारवाड़के ग्राम-गीत आदि ग्रन्थों के रचयिता

विद्याविनोद

श्री जगदीशसिंह गहलोत एम. आर. ए. एस.

जोधपुर स्टेट—मारवाड़

—:o:—

प्रकाशक

मेसर्स अचलप्रताप न्यायी एण्ड को०

बुकसेलर्स व जनरल मर्चेन्टस, जोधपुर

तीसरी बार } वि० सं० १९८७, कलियुगी सं० ५०३१ सन् १९३० ई० { मूल्य ३॥)

प्रकाशक—
अचलप्रताप न्यायी, मालिक
अचलप्रताप न्यायी एण्ड को०
फ़तहसागर, जोधपुर।

मिलने के पते—

१—हिन्दी साहित्य मन्दिर, घंटाघर, जोधपुर।

२—डी० जे० बुकडिपो, जोधपुर।

३—आर्य्य लक्ष्मणजी, न्यूज़ पेपर एजेण्ट, सोजती गेट, जोधपुर।

मुद्रक—
सत्यव्रत शर्मा, शान्ति प्रेस,
शीतलागली, आगरा।

विषय-सूची



शीघ्र प्रकाशित होने वाले ग्रंथ

नीचे लिखे अनमोल काव्य ग्रंथ अब तक अप्राप्य व अप्रकाशित है। अत. इनके छापने का हम उद्योग कर रहे हैं। प्रत्येक ग्रंथ का मूल्य प्रचारार्थ यथासम्भव कम रखा जायगा। परंतु जो सज्जन पहले ग्राहक बनेंगे उनको लागत मात्र में ही दिये जायँगे।

१—वीरमांण
२—गोगादे रूपक
३—बिड़दसिणगार
४—राजरूपक
५—सूरजप्रकाश
६—गुणरूपक
७—गुणभाषाचित्र
८—अभयविलास
९—चौरासी पदार्थ नामावली
१०—मान जसोमंडन
११—अभ्योदय
१२—रघुनाथरूपक
१३—अजितोदय (संस्कृत मे)
१४—जसवंत जसो भूषण (छोटा संस्करण)
१५—ढोला मारू रा दूहा
१६—महाराजा अजीतसिंह रा विखा रा दूहा

शीघ्र ही अपना नाम ग्राहकों में लिखा लीजिये, क्योंकि गिनती की पुस्तकें छपाई जायँगी।

पता—(१) मेसर्स अचल प्रताप न्यायी एण्ड कम्पनी,
फतहसागर तालाब, जोधपुर।
(२) मैनेजर हिन्दी साहित्य मंदिर,
घंटाघर, जोधपुर।

Mahamahopadhyaya,
Rai Bahadur
Gaurishankar H. Ojha.

Ajmer,
Dated १०-४-१९३०

कविवर उमरदानजी से मेरा प्रथम मिलना उदयपुर के
विक्टोरिया हॉल में हुआ था; जब मैंने उनका शुभ नाम पूछा
तो उन्होंने हँसते हुए कहा "मेरा नाम डेली डिलाइटफुल
उम्मरदान है"। उनकी मुखमुद्रा परसे यह झलक आता था
कि वे सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं अतएव उनका डेली डिलाइट
फुल कथन सार्थक है। ऐसे सहृदय कवि से वार्तालाप करने
तथा उनकी मनोहारिणी कविता सुनने में मुझे बड़ा आनन्द
आता था जिससे उनके साथ मेरा स्नेह बढ़ता ही गया।
वे जन्मसिद्ध आशुकवि थे और उनकी राजस्थानी भाषा की
कविता सरस, सरल एवं चित्ताकर्षक होने से ही वे जहाँ जहाँ
गये वहाँ उनका बहुत कुछ आदर हुआ। उनके काव्यों का
राजपूताने में बड़ा आदर है और लोग उन्हे बड़े उत्साह के साथ
पढ़ते है।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा

कविवर ऊमरदान जी से मेरा प्रथम मिलना उदयपुर के विक्टोरिया हॉल में हुआ था; जब मैंने उनका शुभ नाम पूछा तो उन्होंने हँसते हुए कहा "मेरा नाम डेली डिलाइटफुल उम्मरदान है।" उनकी मुख मुद्रा पर से यह झलक आता था कि वे सदा प्रसन्न चित रहते हैं। अतएव उनका "डेली डिलाइटफुल" कथन सार्थक है। ऐसे सहृदय कवि से वार्तालाप करने तथा उनकी मनोहारिणी कविता सुनने में मुझे बड़ा आनन्द आता था जिससे उनके साथ मेरा स्नेह बढ़ता ही गया। वे जन्मसिद्ध आशुकवि थे और उनकी राजस्थानी भाषा की कविता सरस, सरल एवं चित्ताकर्षक होने से ही वे जहां जहां गये वहां उनका बहुत कुछ आदर हुआ। उनके काव्यों का राजपूताने में बड़ा आदर है और लोग उन्हें बड़े उत्साह के साथ पढ़ते हैं।

अजमेर
ता० १०-४-१९३० ई०

गौरीशंकर हीराचंद ओझा
(महामहोपाध्याय रायबहादुर)

श्रद्धाञ्जलि

कविवर ऊमरदानजी ने उम्र भर कभी किसी से द्वेष नहीं किया। वे प्रेम के पुतले, निर्भयता के स्वरूप, देश, नरेश व प्रजा के सच्चे हितैषी, कुरीतियो के विरोधी, विद्या और विज्ञान की लालसा में मग्न और आशु कवि थे। वे हमारी चारण जाति के अनमोल रत्न थे। राजपूताने के राजा महाराजाओं से लेकर छोटे बड़े सरदार व उमरावों मे उनकी बड़ी मानता थी। इनसे एक बार भेट कर कोई भी व्यक्ति उम्र भर इनके मिलाप को नही भूल सकता था। मुझे भी इनके सत्संग का बहुत समय तक अवसर मिला था। उसका जो प्रभाव मेरे जीवन पर पड़ा वह अमिट है। वास्तव मे ऐसे जन्मसिद्ध कवि देश व जातियों में बहुत कम उत्पन्न होते हैं। इन्होने अपनी सरल व सरस कविता मे जो स्पष्ट बातें—जो देखने मे कड़वी परन्तु वास्तव में हितकर—बतलाई हैं उनसे राजस्थानी प्रजा का ही नहीं यहाँ के राजपूत सरदारों की भी भलाई हो सकती है।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता है कि ऊमरदानजी के ऐसे उत्तम व उपयोगी काव्य का प्रकाशन तीसरी बार मय उनके परिचय के हो रहा है। इससे उस महाकवि की स्वर्गीय आत्मा को, अवश्य संतोष होगा।

उज्वल नाथूरामजी की हवेली,
जोधपुर सिटी.
ता० ६ मार्च १९३० ई०

विनीत—
उदयराज उज्वल,
(ऐसिस्टन्ट सिटी कोतवाल)

[काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित "बालाबख्श-राजपूत चारण पुस्तकमाला" के वयोवृद्ध विद्वान् सम्पादक विद्याभूषण पुरोहित श्री हरिनारायणजी शर्मा बी० ए०, सुपरिटेन्डेन्ट चेरिटी डिपार्टमेन्ट जयपुर स्टेट द्वारा]

सम्पादक को बधाई



धपुर के बारहठ कविवर ऊमरदान जी लालस रचित अनेक काव्यों और छन्द गीतों का संग्रह "ऊमर-काव्य" के नाम से दो दफै पहिले जोधपुर से छप चुका था। उन दोनों संस्करणों की कविताओं को हमने बड़े चाव से अपने इष्ट मित्रों के साथ पढ़ा है। जोधपुर के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री जगदीश-सिंह जी गहलोत के पूर्ण परिश्रम से यह तीसरा संस्करण संवर्द्धित रूप में टीका टिप्पणी भूमिका सहित छपा है जिसकी एक प्रति हमारे अवलोक-नार्थ सम्पादकजी ने कृपा कर, हमको हमारी सम्मति के अर्थ दी, जब वे जयपुर में पधारे थे।

हम ऊमरदान जी को डिंगल ही का नहीं पिंगल कविता का भी एक अच्छा कवि मानते हैं।

साहित्यमर्मज्ञ उनकी रचना को पढ़ कर उनकी प्रतिभा का भली भाँति अनुमान कर सकेंगे। हाथ कंगन को आरसी क्या? उनकी सत्योक्ति, स्पष्ट रचना, प्रसाद गुण गुम्फित काव्य सृष्टि, मन्दहास्य मय चुटीली पदावली, मर्म-स्पर्शी गुण दोषोद्घाटन-शैली, लोकोक्ति-समविष्ट, प्रखर-वाक्य विन्यास-प्रक्रिया, प्रकृत विषय-विशद-प्रवचन-निगूढता, श्लेष व्यंग-ध्वनि-निसर्ग विसर्ग-गति, इत्यादि का बखाण मुझ से क्या हो सकता है।

इस तृतीय संस्करण को पूर्ण और सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने के निमित्त सुयोग्य सहृदय साहित्य-प्रेमी संपादक ने कोई बात उठा नहीं रक्खी। द्वितीय संस्करण में आई हुई कविताओं से अधिक कवि की रचनाएँ जोधपुर, जयपुर आदि में जहाँ भी कहीं तलाश से मिल सकीं, उन्होंने संग्रह करलीं। और परिश्रम से पाठ शुद्ध कर कठिन शब्दों और स्थलों पर पांडित्य पूर्ण टीका टिप्पणी की है। जैसी विद्वतापूर्ण रचना कवि की है वैसी ही उस पर विद्वतामय टीका हुई है। विशेषतः ऐतिहासिक स्थलों पर पूरे खोज बीन से टीप है।

जो प्रायः महत्व और काम के हैं। हम टीकाकार की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं।

मूल ग्रंथ की अनुक्रमणिका यथार्थ नहीं है तथापि दूसरे संस्करण से उत्तम है। दूसरे संस्करण में ऊमर काव्य के दूसरे भाग में अन्य पुरुषों की कविता जोड़ कर ऊमरदानजी की कृति के अजागल स्तनवत् निरा पुछल्ला बांधा था, सो ही इस नवीन संस्करण में काट फैंक देने का सौभाग्य गहलोतजी को मिला। तदर्थ बधाई।

ऊमरदानजी की कविता के संकीर्त्तन में (कवि जुगतीदान जी के शब्दों में) हम इतना कह कर यह पंक्तियें समाप्त करते हैं:—

"नर चतुर होय जांणे निपट, आशय ऊमरदांन रो"॥

जयपुर
ता० ११-४-१९३० ई० } पुरोहित हरिनारायण शर्मा.

दो शब्द

लोगों की दिनचर्या व जीवन-घटना पर कविता का गहरा प्रभाव पड़ता है। अच्छे कवि अपनी काव्य-रचनाओं द्वारा जो सुधार के भाव लोगों में भर सकते हैं वह अनेक व्याख्यान और लेखों द्वारा होना कठिन है। राजस्थान में यह बात प्रसिद्ध है कि शाकों के समय रणभेरी की ध्वनि के साथ जब राजस्थान के सपूत केसरिया बाना पहिन शत्रु से लड़ने जाते थे उस समय उनके हृदयों में मोह-माया के विचारों को निर्मूल करने और देश-जाति पर मर मिटने के लिये जो सारगर्भित दोहे, सोरठे और गीत उनके परम्परागत कवि-चारणों द्वारा कहे जाते थे उनका प्रभाव यह होता था कि वीर ही नहीं वीराङ्गनाओं के भी रोमांच खड़े हो जाते थे और वे अपनी जान को हथेली पर रख रणक्षेत्र में कूद पड़ते थे। यही नहीं, एक दोहा या सोरठा उसी तत्व को लिए हुए यदि हज़ारों मनुष्यों की सभा में उसी ढँग से कहा जाय तो उसका प्रभाव हज़ारों व्याख्यानों से अधिक पड़ता है। विशेष कर जबकि हमें राजा, महाराजा, सरदार या उमरावों को उन्हीं की भाषा में समझाना होता है तब व्याख्यान या बड़े लेखों

की ज़रूरत नहीं होती। उस समय कविता ही अच्छा काम करती है।

ऐसे ही भाव इस "ऊमरकाव्य" में हैं। विषय सूची से प्रकट होगा कि हमारी जाति के कविशिरोमणि ऊमरदानजी ने कैसी सारभूत बातें अपनी अनोखी चुभती हुई भाषा में रची हैं जिनका प्रभाव हृदय के अन्दर बैठ जाता है। कहीं कहीं उन्होंने कड़े शब्दों का भी प्रयोग किया है परन्तु उनकी भावना सच्ची और डाक्टर की तरह रोगी को अच्छा करने की गर्ज से है। जो कुछ बुराइयां भी बतलाई गई हैं वह बुरे लोगों की ही हैं न के किसी खास समुदाय की। उन्होंने साथ ही साथ अच्छे लोगों की प्रशंसा भी की है। मनुष्यों को हंसवत गति रखनी चाहिये और नीर क्षीर विवेचन की बुद्धि होनी चाहिए। समाज में अच्छे बुरे सभी तरह के पुरुष होते हैं। इस लिए बुराइयों से हटा कर अच्छाई की तरफ ले जाना ही अच्छे कवियों का कर्त्तव्य है। इस यज्ञ में कवि-वर ऊमरदान जी को कहाँ तक सफलता मिली इसका अनुमान पाठक स्वयं कर सकते हैं।

ऊमरकाव्य आज तीसरी बार प्रकाशित हो रहा है। पूर्व दो संस्करणों से पता चलता है कि

राजा, प्रजा और विद्वानोंके समाज में इसका बड़ा प्रचार रहा । राजस्थान की कोई राजसभा या विद्यासभा ऐसी नहीं होगी जहाँ इस काव्य का प्रचार न हो । राजकवियों को इसकी अनमोल पंखड़िएँ-कविताएँ कंठस्थ हैं, और वे इसे बड़े चाव से राजा रईशों के मनोरंजन व उपदेश के लिये दोहराते हैं । मैं आशा करता हूँ कि इस काव्य का और भी अधिक प्रचार होगा । इस वार इसके सम्पादन में जो परिश्रम सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता कुँ० जगदीशसिंहजी गहलोत एम. आर. ए. एस. जोधपुर ने किया है वह प्रशंसनीय है ।

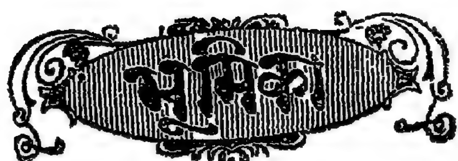
इस तीसरे संस्करण में कई विशेषताएँ हैं । कवि की कई अप्रकाशित कविताएँ खोजकर इसमें लगा दी गई हैं । कठिन शब्दों के अर्थ प्रत्येक पृष्ठ पर दे दिये हैं और जहाँ जहाँ ऐतिहासिक या पौराणिक कथाओं में के प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम आये हैं वहाँ उनका परिचय भी संक्षेप में दे दिया गया है जिससे काव्य के भाव समझने में सुगमता होकर पाठकों की ज्ञानवृद्धि हो ।

जोधपुर
ता०८-४-१९३०ई०

जयकरण बारहठ
बी. ए., एल-एल. बी.
वकील, चीफ कोर्ट, राज मारवाड़

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१०	अणां[५]	अणूं[५]
१०	७	पग	पगां
१५	१४	सोभासंद	सोभासमंद
२०	७	री	व्यथा भरी
२८	१८	विद्यार्थी	५—विद्यार्थी
२६	१८	५—मंड	५—मुंड
३०	१७	शधर	वंशधर
३८	६	सनक[१]आदिक	सनकादिक[१]
३६	६	में दरसे	से दरसे
४२	५	चेत	चित
४२	१४	कां	कौ
४४	३	का	की
४४	४	को	की
४५	१५	कईही[४]	कहई[४]
४५	१५	कानी	कान
४६	१२	गुमुडे	गुडै
४६	१३	रुड	रुडै
४७	७	जनार्दद	जनार्दन
५४	१२	गोचर	न गोचर
६१	१०	चौथी पांचवीं	आठवीं नववीं
६७	२३	१६२६ ई० पृ० २७	१६२६ ई० पृ० २६
१४२	६	धारा	धीरा
२५७	१०	पूरत	पूरती
३२७	२	पहुवी	पुहमी
३३८	६	मुंढा	मूंढा
३४८	६	अकेल	एकल
३६६	२	चग	चुग
३६६	१४	नानांणा	नानाणो
३६६	१४	दादाणां	दादाणो
३७३	५	सुवला लै	सुवलालै
३८६	२	हये	हुये
३८६	५	अरोग	अरोगे



ऊमर काव्य का यह तीसरा संस्करण आज आपकी सेवा में उपस्थित किया जाता है। यह काव्य कितना रोचक, मधुर, ललित, आकर्षक, उपदेशप्रद एवं उपयोगी है यह तो आप इसे पढ़ कर ही जान सकेंगे। यह अपने अनेक गुणों के कारण ही अत्यन्त लोकप्रिय बन गया है। एक मारवाड़ी कवि की ओजस्विनी प्रतिभायुक्त कला का यह एक सजीव नमूना है। इसमें न केवल समाज सुधार का ही विवेचन है बल्कि सभी रसों की मधुर धारा बहती दिखाई पड़ती है। विशेषतः वीर और हास्यरस का विशद वर्णन है। कवि ने अपने काव्य में तत्कालीन परिस्थिति का भी अच्छा चित्र खींचा है।

कवि ऊमरदान जी लालस के लिये काव्य निर्माण वंशानुगत गुण था और वे थे भी जन्म-सिद्ध कवि (Born Poet)। उनमें वे सभी गुण थे जो प्रतिभाशाली कवियों में होने चाहिये। वे सदैव आनन्दित रहा करते थे। एक बार सं० १९५७

में कवि ऊमरदान उदयपुर-मेवाड़ गये। वहाँ उनकी सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता महामहोपाध्याय रायबहादुर श्री गौरीशङ्कर हीराचन्दजी ओझा से विक्टोरिया हॉल (अजायब घर) में पहली बार मुलाकात हुई। ओझाजी ने जब प्रश्न किया कि "श्रीमान् का शुभ नाम क्या है?" तब उन्होंने तत्काल ही अंग्रेजी में अपना नाम "डेली डिलाइट फुल उम्मरदान" (Daily delightful Ummardan) कहा। इस पर से ही अनुमान हो सकता है कि वे कितने मौजी और आनन्दी थे, जो अपने को अंग्रेजी में "सदा आनन्दी उम्मरदान" कहते थे। ओझा जी से पहली मुलाकात और उसी में इस प्रकार खुला व्यवहार कवि के आनन्दी होने का परिचय देता है। ऊमरदान जी को इतिहास और प्राचीन काव्य ग्रन्थों की खोज करने की रुचि थी। वीरशिरोमणि महाराणा प्रताप की वीरता की प्रशंसा में उन्हीं के समकालीन चारण कवि दुरसा आढा ने "विरुद छिहतरी" नाम का ७६ सोरठों वाला एक काव्य बनाया था जिसके कई सोरठे इस समय राजपूतों, चारणों व बड़वा-भाटों आदि के मुख से सुनने में आते हैं। उस

अमुद्रित काव्य की प्रति ऊमरदान जी ने ही खोज निकाली थी, जिसको जोधपुर के मुत्सद्दी बच्छराज जी सिंघवी ने उदयपुर में रहते समय प्रथम वार सं० १६५८ में प्रकाशित की। इस पुस्तक के सिवाय उनकी रचनाओं में से दो पुस्तकें "डफोलाष्टक ढूंडी" सं० १६५७ में और "जसवन्त जस जलद" सं० १६५२ वि० में उनके जीवनकाल में प्रकाशित हो चुकी थीं।

ऐसे आनन्दी एवं प्रतिभाशाली कवि का काव्य भला किस प्रकार नीरस रह सकता था। उसमें रस छलक रहा है। किसी भी पद्य को देख लीजिये आप आनन्द विभोर हो जावेंगे। कवि ने अपने काव्य में जिन खुले शब्दों द्वारा सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ किया है उसे पढ़ते २ जी नहीं अघाता। वास्तव में इस सुन्दर काव्य के रचयिता चारण कुलभूषण कविवर ऊमरदान जी थे भी हास्यरस के अवतार। उनके स्वर्गवास को अभी अधिक काल नहीं बीता है। जिन लोगों ने उन्हें देखा है उनको ऊमरदान जी की आकृति तथा व्यवहार आदि का अच्छी तरह पता है। उनका जोधपुर के राजदरबार में भी बड़ा मान

था। आर्य्यसमाज के प्रवर्त्तक वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती को जब संवत् १६४० वि० में जोधपुर के स्वर्गीय नरेश हिज हाइनैस राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा सर जसवंतसिंह बहादुर जी० सी० एस० आई० ने अपनी राजधानी में पधारने का निमंत्रण भेजा था तब उन्हें मेवाड़ राज्य से लाने के लिये कवि ऊमरदान ही भेजे गये थे। जिन लोगों ने उनको देखा है उन्हें आज भी ऊमरदान जी का ध्यान आने पर उनका मोटे वस्त्र धारे, घुटनों तक की धोती पहने, हाथ में डंडा लिये, निर्भीक प्रसन्न मुख का चित्र आँखों के सामने दिखाई पड़ने लगता है।

बचपन में ऊमरदान जी के माता पिता का स्वर्गवास हो जाने से और बड़े भाई आदि की अवहेलना से उन्हें कुटुम्ब का सुख नहीं मिला और ज़मीन जायदाद के झगड़ों से बचकर वे बचपन में ही खेड़ापे के रामस्नेही साधुओं के कंठी बन्द शिष्य हो गये। उस मंडली में उनकी शिक्षा दीक्षा हुई और जब उन्हें सं० १६३६ में कुछ ज्ञान हुआ तब वे साधुओं का संग छोड़ कर गृहस्थी बने और उनके गुण अवगुण भी जनता को बताने

लगे। इस काव्य को पढ़ने पर हमारे इस कथन की पुष्टि हो ही जायगी।

यह काव्य मारवाड़ी-डिंगल भाषा का एक सरस काव्य है। इसी कारण इसका आदर भी विशेष है। राजस्थानी चारण कवियों का काव्य प्रायः डिंगल भाषा में ही पाया जाता है। यह "डिंगल" एक प्रकार की असंस्कृत भाषा है। ब्रजभाषा की कविता का नाम जैसे "पिंगल" कहा जाता है वैसे ही मरुभाषा (राजस्थानी) की कविता को "डिंगल" कहते हैं। यह "डींग" और "गल" शब्द मिल कर बना है। इसका अर्थ ऊँची बोली का है। क्योंकि इस भाषा के कवि उच्च स्वर से अपनी कविता का पाठ करते हैं। ब्रजभाषा की कविता में ध्वनि उच्च नहीं होती और उसमें मधुरता विशेष होती है। इसलिए इस ब्रजभाषा को राजस्थान में पिंगल अर्थात् पांगली (लँगड़ी-लूली) कविता कहते हैं। पिंगु का अर्थ लँगड़ी और गल का मायना बात या बोली है। स्वर्गीय कविराजा मुरारदान जी महामहोपाध्याय ने "डगल" शब्द का अर्थ अनघड़ पत्थर या मिट्टी का

डगल (ढेला) किया है[१]। क्योंकि इसमें गुजराती, मराठी, मागधी, सिन्धी, ब्रजभाषा, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी आदि कई भाषाओं के अपभ्रंश शब्द पाये जाते हैं। अपभ्रंश भी साधारण नहीं! वह भी इतना ज्यादा कि उसका असली रूप जान लेना भी कठिन हो जाता है। जैसे—

संस्कृत में—	डिंगल भाषा में—
मुक्ताफल	मोताहल़
युधिष्ठिर	जुजठल़
ध्रुवभट	धूहड़
श्रीहर्ष	सीहा या सीहड़
हस्तवल	हाथल
आलभट	अलट

कितना रूपान्तर है! इस भाषा में ट ठ ड ढ ण और ल आदि अक्षरों की प्रधानता होती है और "स" का प्रयोग प्रायः "ह" होता है। इस भाषा में ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, औ, ये स्वर नहीं होते और तालवी (श) और मूर्धनी (ष) के स्थान पर

१—देखो प्रिलिमिनरी रिपोर्ट ऑन दी ऑपरेशन इन सर्च ऑफ मेन्युस्क्रिप्ट्स आफ बार्डिक क्रानिकल्स (महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री सी० आई० ई०) पेज १४-१५ सन् १९१३ ई०।

भी दन्ती सकार (स) ही लिखा व बोला जाता है। ऐसे ही 'ख' के स्थान में 'ष' लिखा जाता है। इसका साहित्य विक्रम की ६वीं शताब्दी से मिलता है। ऐसी डिंगल भाषा में जिसे अनघड़ पत्थर या मिट्टी के ढेले की उपमा दी गई हो काव्य निर्माण और वह भी हृदयग्राही सरस काव्य हो, यह कवि की प्रतिभा का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

यों तो डिंगल भापा में, जो मारवाड़ी भाषा की जननी है सभी रसों का वर्णन कुशल कवि बखूबी कर सकता है—कवियों ने सभी रसों का वर्णन अपनी अपनी रचनाओं में यथा स्थान किया भी है। दादूदयाल, गरीबदास. शंकरदास, और सुन्दरदास आदि महात्माओं ने अपनी अपनी वाणियों को मारवाड़ी भाषा में ही लिखा है; परन्तु उनके काव्य-ग्रन्थ, अपने पन्थों और मतों के भावों से ही पूरित हैं। राजिया और किसनिया के सोरठे तथा दोहे मारवाड़ी भाषा के उज्वल रत्न हैं। इनके अतिरिक्त मारवाड़ी कहावतें भी कुछ कम रोचक नहीं होतीं। तथापि यदि हम काव्य की कसौटी पर प्रस्तुत "ऊमर काव्य" को कस कर देखें तो उत्तम काव्यों की गणना में यह भी आ सकता है।

इस काव्य में डिंगल भाषा का माधुर्य और वीर शृंगार, हास्य, आदि रसों का समूह तथा उपदेश सभी स्पष्ट दिखाई देते हैं। इसमें जो सामाजिक सुधार और आलोचना की मीठी चुटकी दीख पड़ती है, वह भारतीय-राष्ट्र निर्माता स्वामी दयानन्द सरस्वती के सत्संग का ही प्रभाव है। मारवाड़ी भाषा स्वयं ही अतिमधुर है, परन्तु कवि ने उसमें व्यंग और हास्य का संमिश्रण कर के उसे और भी विशेष रोचक कर दिया है।

एक साधारण कुल में जन्म लेकर कवि ऊमर-दान ने अपना नाम इस काव्य द्वारा साहित्य-संसार में अमर कर दिया। देखिये कवि स्वयं अपने विषय में कह रहा है—

मुलक मारवाड़ में थली के मद्ध जन्म जोय,
चारन बरन चारु विकल विसासी को।
बाल वय मे ही पितुमात परलोक बसे,
भ्रात नवलेस भयो हुयो खेल हांसी को।
रांडां के सनेही गुरु मुखिया मुरार मिल्यो,
धणी श्रीप्रताप धार्यो अंकुर उदासी को।
सुख को न किहिनो सोच लख उमरेस लिहिनो,
देव सब दिहिनों सराजॉम सत्यानासी को।

कैसी स्पष्टोक्ति है। कवि के शुद्ध हृदय का परिचय मिल जाता है। कवि जी के पास, घमण्ड या अहंभाव ती फटका तक नहीं था। देखिये एक जगह वे अपने विषय में फिर लिखते हैं:—

"जोगी कहो भव भोगी कहो,
रजयोगी कहौ कौ केसेइ है।
न्यायी कहो अन्यायी कहो,
कुकसाई कहौ जग जैसेइ हैं॥
मीत कहो वो अमीत कहो,
ज्युं पलीत कहो तन तैसेइ है।
ऊत कहो, अवधूत कहो,
लो कपूत कहो हम है सोइ हैं॥

कवि के काव्य को पढ़ने पर उनके स्वभाव एवं सिद्धान्तों का पाठक को पूर्ण ज्ञान हो जाता है। एक बात हम पाठकों को कवि के विषय में और बतला देना चाहते हैं। यद्यपि काव्य में उनके शब्द प्रयोगों से सुज्ञ पाठक अनुमान लगा सकेंगे तथापि हम सूचित कर देना चाहते हैं, कि ऊमरदान जी साधारण अंग्रेजी भी जानते थे। वे अपनी १६-२० वर्ष की उम्र में अंगरेजी पढ़ने के लिये जोधपुर हाई-स्कूल में भरती हुये थे और

बड़े ही परिश्रम से चौथे पाँचवें दर्जे तक उन्होंने अंगरेजी सीखी थी, बाद में अभ्यास द्वारा उन्होंने अपना ज्ञान और बढ़ा लिया था।

कवि ऊमरदानजी का स्वर्गवास उनकी ५१ वर्ष की अवस्था में मिती फाल्गुन सुदि १३ संवत् १९६० विक्रमी (ता० ११-३-१९०३) को जोधपुर में हुआ। उनके स्वर्गवास पर विद्याव्यसनी एवं काव्यमर्मज्ञ पुरुषों को अपार दुःख हुआ। एक कवि ने दुखी होकर आपके स्वर्गवास पर कहा था—

"हमे निपट अलगो हुवो, लालस नेह लगाय।
कागा[1] बिच डेरा किया, जागा अवकी[2] जाय।
विद्या कविता वीरता, ऊमर तो उपदेश।
एकण हॉ फिर आवज्यो, देखै मरुधर देस।

इनके पिता का शुभनाम बारहठ बख्शीराम और दादा का मेघराज जी था। ऊमरदान का जन्म परगना फलोधी (मारवाड़) के गांव ढाढरवाड़ा में सं० १९०८ वि० की वैशाख सुदि २ शनिवार को हुआ था। यह तीन भाई थे, बड़े

१—जोधपुर शहर की एक श्मशान भूमि का नाम।
२—अगम, जहाँ कोई सशरीर न जा सके। कठिन।

भाई का नाम नवलदान और छोटे का शोभादान था। ऊमरदान मँझले थे। ऊमरदान जी के दो पुत्र हुये। अग्रदान तो उनके सामने ही १८ वर्ष का होकर सं० १६५७ की वैशाख सुदि १० बुधवार को चल बसा। अब दूसरा पुत्र बारहठ मीठालाल लालस है जिसकी अवस्था लगभग २७ वर्ष की है और मारवाड़ पुलिस डिपार्टमेन्ट में सार्जेन्ट पद पर नियुक्त हैं।

इसप्रकार कवि का बहुतसा अप्रकाशित काव्य खोज करके इस संस्करण में सम्मिलित कर दिया गया है। अप्रकाशित काव्य को एकत्र करने में श्रद्धेय विद्याभूषण पुरोहित श्री हरिनारायणजी शर्म्मा बी.ए., तथा बारहठ कविया अयाचक श्री मुरारिदानजी जयपुर और अमरकोट (सिन्ध) निवासी ठाकुर तेजसिंह प्रधानसिंहजी सोलंकी से बहुत कुछ सहायता मिली है। इसके लिए हम उनके विशेष आभारी हैं। जयपुर से विशेष सामग्री कविवर बारहठ बालाबख्शजी पालावत* के संग्रह से ही प्राप्त हुई है।

* यह बारहठ जी बड़े दानी और ज्ञानी हैं। इन्होंने काशी नागरी प्रचारिणी सभा-को ७०००) सात हज़ार रुपया देकर "बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला" कायम कराई।

क्योंकि इनकी ऊमरदानजी से घनिष्ठ मित्रता थी। इनके सिवाय मारवाड़ स्टेट प्रेस के प्रिंटिंग फोरमेन श्री धूमे खाँजी सिन्धी, ब्यावर निवासी ठाकुर किशनसिंह जी चौहान 'सैनिक,' उदयपुर मेवाड़ के इतिहासवेत्ता पंडित नाथूलाल भागीरथजी व्यास और आऊश ठिकानाके मुसाहिब विद्यानुरागी ठाकुर नाथूसिंहजी चाँपावत (सिणलो वाले) ने समय-समय पर अपने अमूल्य परामर्श द्वारा सहायता पहुँचाई उसके लिये भी हम उन्हें अनेकानेक धन्यवाद देते हैं। अन्तमें लिपिप्रमाद या भूल से जो अशुद्धियाँ रह गई हों उनके लिये हम सहृदय पाठक पाठिकाओं से क्षमा चाहते हैं।

चलत चलत यदि पान्थ का, पैर विषम पड़ जाय।
तो सज्जन ढाबें तुरत, अरु खल तालि बजाय॥

जोधपुर
ता० ६-४-१६३० ई०
चैत्र सुदि ११ सं० १६८७

जगदीशसिंह गहलोत

१०,०००) दस हजार रुपया बेंक मे जमा कर उसके सूद मे चारण जाति के लड़कों को शिक्षा मिलने का प्रबन्ध जोधनेर के दयानन्द वैदिक हाई स्कूल मे कराया। अपने गांव हर्णूतिया (जयपुर) में स्थायी प्याऊ जानवरो को पानी पीने के लिए १,०००) एक हजार रुपया बेंक में जमा कराया। इन्होंने कई रचनाएँ काव्य में की हैं। इतिहास के भी प्रेमो हैं।

प्रकाशक का निवेदन

ऊमर-काव्य का प्रथम संस्करण परगना मेड़ता के गाँव कुरड़ाई निवासी वैदिक-धर्म प्रेमी महाशय अर्जुनसिंहजी मेड़तिया राठौड़ ने बड़े परिश्रम एवं खोजके साथ संग्रह करके लगभग सं० १९६२ में मारवाड़ स्टेट प्रेस जोधपुरमें छपाकर प्रकाशित किया था। उसके बाद जोधपुर आर्य्यसमाज ने इसे दूसरी बार सं० १९७९ में छपवाया और पुस्तकके अन्तमें कुछ कवियों की रचनाएँ "जगत हितोपदेश" नाम से जोड़ दीं। यद्यपि यह सुन्दर काव्य लोकप्रिय और देशी रजवाड़ों में बहुत आदर पाचुका परन्तु किसी सज्जनने इसका नया संस्करण छपाने का यत्न नहीं किया। इधर कुछ समय से यह अप्राप्य सा हो जाने से इसकी माँग भी बढ़ती गई। अतएव इसकी उपयोगिता देखकर मैंने पूर्व संस्करण के प्रकाशक स्थानिक समाज से इसका तीसरा संस्करण छपाने के विषय में सलाह ली। महात्मा लक्ष्मणजी तथा पंडित शंकरशर्माजी व्यास व ग्रन्थकर्त्ता स्वर्गीय कविवर ऊमरदानजी के

एकलोते पुत्र व उत्तराधिकारी बारहठ मीठालालजी लालस, जोधपुर निवासी ने मेरे विचारों का अनुमोदन करते हुए इस ग्रन्थ को तीसरी बार छपाने की कृपा कर अनुमति दी। इसके लिए मैं इन सज्जनों का आभारी हूँ। यही नहीं महात्मा लक्ष्मणजी ने जहाँ तहाँ पूर्व संस्करणों की अशुद्धियों को भी ठीक करने में सहायता दी। ऐसे ही सम्पादकजी की अनुपस्थिति में इस तीसरे संस्करण के कुछ प्रेस प्रूफों को कुँवर नारायणसिंहजी सोलंकी (ब्यावर) ने शुद्ध करने की कृपा की।

आशा है कि काव्यरस के रसिक जन और विद्वान् इस ग्रन्थ का यथोचित आदर व प्रचार करेंगे। इसीमें मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

फतहसागर,
जोधपुर
ता० १३-४-१९३० ई०

निवेदक
अचलप्रताप न्यायी,
मालिक—मेसर्स अचलप्रताप
न्यायी ऐन्ड को०

———

सूचना

बहुत कुछ खोज करने पर भी स्वर्गवासी कविवर ऊमरदानजी का चित्र हमें नही मिला। यदि किसी सज्जन के पास उनका चित्र हो तो हमे सूचित करें। इस कृपा के लिये हम उनके आभारी ही न रहेगे परन्तु ५०) पचास रुपये पुरस्कार रूप भेंट करेगे और सधन्यवाद वह चित्र सामयिक पत्र-पत्रिकाओं तथा "ऊमर काव्य" के आगामी नये संस्करण मे प्रकाशित करेंगे। ऊमरदानजी का चित्र न मिलने से ही इस तीसरे संस्करण मे हम अन्य चित्र न दे सके है। हमारा विचार था कि इस बार अनेक विषयों के सुन्दर और भाव पूर्ण चित्र देकर इसको और भी उपयोगी बनावें परन्तु वह उक्त कारण से नही हो सका है। अतः सूचनार्थ निवेदन है।

अचलप्रताप न्यायी.



ऊमर-काव्य

[चारण-कुल-भूषण महाकवि ऊमरदानजी लालस कृत]

अथ ईश्वरस्तुति

(छन्द छप्पय)

नमः सच्चिदानन्द भक्तवत्सल भयहरता,
शाश्वत[1] अशरण शरण करण कारण जगकरता।
निराकार निरलेप निगम निरदोष निरंजन,
दीरघ दीनदयालु देव दुख-दालद[2]-भंजन।
अखिलेश अनूपम एक अज[3],
अजरामर महिमा अजय।
नित निरविकार निरभय निपुण,
नारायण करुणानिलय ॥ १ ॥

१—निरन्तर। २—दरिद्र। ३—अजन्मा।

ईश्वरोपासना

(छन्द शिखरिणी)

हरी ओम् ओम् प्रानी जुगति नहिं जानो धृग हहा।
मना हानी ठानी सुगति नहिं मानी मृग महा।
बिहांनी[1] वो बानी बिमल बिलखानी[2] बक ब्रथा।
कथी ना कल्यानी कुटिल कलि खानी कवि कथा ॥१॥
अनादी ऐश्वर्यं ब्रतति वर बर्य्यं ब्रति बुधा।
महेश्वर्य्यो भागी कवन बल त्यागी श्रुति[3] सुधा[4]।
परानिष्ठा[5] निष्ठा बिपदि सु अनिष्ठा पग परी।
पराकाष्ठा[6] काष्ठा वह कवन काष्ठा मग परी ॥२॥
नमांमी सामर्थ्यं प्रबल बल व्यर्थं प्रभु बिना।
बिसुद्धी रुद्धीसी चकत ममबुद्धी बिभु बिना।
बिनादी बादी तें बिकृत प्रतिवादी नहँ बदें[7]।
मदादी[8] मन्वादी प्रथम पति आदी मथ मदे ॥३॥
न जानामी नामी बिहस[9] वर बामी[10] बल बदें।
अनादी सृष्टी ये सुगम यह ब्रष्टी कम सदे[11]।

१—वृथा। २—उदासीन, चिन्ता वाली। ३—वेद। ४—ज्ञाता। ५—परम पद वाली। ६—परले दर्जे की। ७—कहते हैं। ८—काम क्रोध मद आदि। ९—हँस कर। १०—वाममार्गी-कूडापंथी। ११—सहन करना।

सरस्वत्या दिव्योती, सुर गुरु प्रभृत्ती यश सभें ।
अहम्भो वद्यामी सकल जगस्वामीं अस अभे ॥४॥
निदांनो निर्वानीं निगम गम छानीं नित नई ।
दिवांनी दिव्यांनी न प्रभु गत जांनीं गत दई ।
त्रया नेता राखे असत नहिं भाखे अतत्रपा[१] ।
कवी को बखांने कछुक, हम जांनें तव कृपा ॥५॥
सुखार्थी स्वार्थी जे स्वसुख दुख प्रार्थी वच सदें ।
बढ़े जी विद्यार्थी विसद परमार्थी वच वदें ।
प्रचण्ड ब्रह्माण्डः प्रचुर भुविमण्डः प्रद प्रभो ।
वितण्ड प्रोद्दण्ड प्रनत दुख खण्ड प्रद विभो ॥६॥
ध्वनाती वाग्धारा धरम धुनि धारा धपधपें[२] ।
सुनाती स्वीसारा सगुन गुनि सारा सपमपें[३] ।
तनांती निष्तारा त्रिगुन विसतारा तपतपें ।
जनाती जोगारा[४] जगत उजियारा जपजपें ॥७॥
दिगन्तां लों दोरें मचल मन मोरें मुदमुदी[५] ।
विदान्तो[६] झंझोरें विषय विष बोरें[७] बुदबुदी ।
पछारें पापों को अतप भव तापों त्रुटि तले ।
मिलावें मेघा को विधि विधि निसेधा फतन[८] मले ॥८॥

१—अत्यन्त लज्जा के साथ। २—अवाज करते चलना। ३—ज़ोर से चलना। ४—योग को। ५—आनन्द के साथ। ६—वेदान्त। ७—डूबना। ८—फ़तह।

निकाई[1] छाई तें प्रकट प्रभुताई सिख नखा ।
समष्टी व्यष्टी तें सजन दिव दृष्टी ऋषि सखा ।
धरे तूं धारे तूं परज प्रत पारे धन धनी ।
सभी को संहारे प्रलय लय धारे करसनी[2] ॥९॥

अखण्डा ब्रह्मण्डा अखिल इकदेसी तव अगे[3] ।
जराहा आहा तूं सुलभ सब देसी सब जगे ।
रचे तूं ढाहे तूं नियम जुत चाहे फिर रचे ।
नचावे जीवोंको निडर निज बाह्यान्तर[4] नचे ॥१०॥

अणुं[5] तें व्याणुं[6] तें ब्रहद्ल[7] विभूतें अति विभू ।
तुजे नां जाँनें को सुहृद[8] स्वसु[9] जाँने भल त्रभू ।
कहें क्या ध्यावेधी कहन नहिं आवे कुल कुले ।
मदांधो मायावी तुम रु हम भावी सम तुलें ॥११॥

नमांमी तो माया चलत नहिं दाया[10] सुदन रो ।
धुरो पाया शाया अटल मठ छायो घर घरो ।
गजारोही वाजी[11] पदन[12] हथ आजी[13] गत लगे ।
अयोशा[14] योशा[15]जी अनग[16] जिम बाजीगर अगे१२

१—अच्छापन । २—खींचकर । ३—आगे । ४—बाहर व भीतर । ५—छोटा । ६—बड़ा । ७—बहुत बड़ा । ८—प्यारा, मित्र । ९—बहिन । १०—दावा । ११—घोड़ा । १२—पैदल । १३—संग्राम । १४—मर्द । १५—स्त्री । १६—अचम्भा ।

तुंहीं कर्त्ता भर्त्ता भुवन त्रिय भर्त्ता हित तुंहीं।
तुंही नाही मर्त्ता अभय भयहर्त्ता नित तुंहीं।
तुहीं ग्याता ज्ञेय प्रकृति बनि ग्याता पद तुंहीं।
तुंही ध्याता ध्येय व्रति मति विख्याता प्रत तुंहीं ॥१३॥
तुंहीं धू विख्याता उदर मम त्राता अन तुंहीं।
तुंहीं भू सोभाता मुदर[1] अनदाता धन तुंहीं।
तुंहीं माता ताता बहिन निज भ्राता भख तुंहीं।
तुंहीं दाता खाता अवल अनदाता बल तुंहीं ॥१४॥
नभाग्नी[2] वायू लों जल धरनि आयू इन नहीं।
महात्मन् तेरे हैं अवर[3] नहिं मेरे इन मही।
धरा काया माया दुलभ कर दाया द्युत[4] धनी।
घरी नाहिं भूलूं मैं जनम भर भूलो कृतघनी ॥१५॥
रशोनादी[5] गादो[6] विलस[7] नरमादी हित रख्यो।
लग्यो स्वादो स्वादी उपकृत प्रमादी नहिं लख्यो।
दई तेरी देही विषय वपुनेही[8] नित भज्यो।
कृतघ्नी मोसो को परमप्रिय तोसो पति तज्यो ॥१६॥
लजा जी आती है स्वमति घबराती सब लरें।
रहे जाकी रोकी त्वरित[9] त्रयलोकी तथ तरें।

१—मेघ। २—आकाश और अग्नि। ३—और। ४—कान्ति। ५—लहसन आदि। ६—गदला। ७—भोगना। ८—शरीर में प्रेम रखने वाला। ९—जल्दी।

अरू मैं एकाकी थुरन मत थाकी इन अगें ।
लखूं मैं खांचू तो प्रबल ठग पाँचू भग लगें ॥१७॥
भई कष्ठी थामा व्यसन मन भांमा[1] श्रुत भरे ।
महा राती मारें अतान तन जारें नहं मरें ।
तज्यो जान्यो जान्यो तिमहिं हम मांन्यों दुख तथा ।
बड़ाई तेरी है इमहिं कर मेरी गत पथा ॥१८॥
हितू सेवा पूजा अवर नहिं दूजा ब्रह्म में ।
नहीं नेमा प्रेमा धंम नहिन तेमा[2] दगन में ।
नियन्ता यन्ता ना चपल चित चिन्ता भन चुके ।
प्रचेता चेताना जियत हम प्रेता[3] बन चुके ॥१९॥
अबे खोली आँखें अधम मुख झाँखें विष अचें ।
गुविन्दो ना गायो प्रकट फल पायो पिख[4] पचें[5] ।
चिते होतो चेतो गहन नभ देतो मन गसा[6] ।
रशाधो[7] क्यों रोती ह. ह. ह. किम होती दुरदसा॥२०
कृषीकारी बोवें सिटल[8] घर सोवे सुख करें ।
जवें बाले रोवें जुलख[9] मुख जोवें दुख दरें ।
करी जैसी पाई अकल अब आई जब कहें ।
दिधा काई धाई दुकृत दुखदाई कब दहें ॥२१॥

१—स्त्री । २— जलाना, तप करना । ३—भूत । ४—देखना । ५—कष्ट पाना । ६—घूसाना, लगाना । ७—संसार, प्रजा । ८—निर्लज्ज । ९—व्याकुल ।

क्षुधा प्यासा आसा दुसह कर आसा दुख खगैं[1] ।
अधर्मी धारी हैं सरब सुखकारी सुख अगैं ।
अकेला बेलाया[2] करत नहिं केला दम दमैं ।
रहे नैनों रेला तुम रु हम भेला कबरमें ॥२२॥
सियालू ऊनालू विमल बरसालू सब सुखी ।
दयालू हो देवा भजन विन भेवा[3] द्रप[4] दुखी ।
महा खूंनी मूंनी अकल अच भूंनी इन दिना ।
धरा धूनी धूनी सकल जग सूंनी विधु[5] विना ॥२३॥
छितां आयू छीजे कवन गत कीजे तुम कहो ।
रजा व्हे सो भाखो सरम मन राखो सब सहो ।
जरा लारे जारे सुमति नहिं सारे कवि कहीं ।
कृपा बेगी कीजे अलख लख लीजे सब सही ॥२४॥
अबें त्वर्थी[6] अर्थी[7] बकत नह व्यर्थी अति यही ।
अयोनी योनी की विरति चित होनीं रचि यही ।
सभी अच्छे सांई हमहिं भल नाहीं हरि सुनों ।
गुनेंगारी भारी बकश हितकारी मम गुनों ॥२५॥
रसा रूठो रूठो अलख इक रूठो मत रहे ।
हमारी देखे ना विरुद[8] निज लेखे वठ[9] वहे ।

१—नाश करना । २—रोया । ३—भेद वाला । ४—घमंडी । ५—चन्द्रमा । ६—तेरी । ७—प्रार्थना करने वाला । ८—बड़ाई, खिताब । ९—वहाँ ।

तिहारे द्वारे पैं पल पल पुकारे तन तचैं[1]।
विना तेरी घेरी मूरख मति मेरी नहिं बचैं ॥२६॥

जरासो जाखूं[2] मैं हुषिक[3] नहिं राखूं जिय जरे।
महा वैरी मेरो घमँड घन घेरो मन मरे।
मिले हैं मोहादी विसम विशयादी विष विलैं[4]।
मिलें मो ज्ञांनादी विमल मति ध्यानादिक मिलें ॥२७

बधे भक्ती श्रद्धा भवत नर स्पर्धा धृति बधे।
बशे वो जिज्ञासा अगम गम आसा वृत्ति बधें।
अभ्यासो वैराग्य प्रनत[5] अनुराग्य वृति बधें।
बधें धैर्या लम्भो[6] तव चरन लम्भी नृति बधें ॥२८॥

गुनालो गाऊं मैं पुनि न पिछताऊं पथ परूं।
कुपथ्यादी काटूं धरम पथ थाटूं[7] गथ[8] धरूं।
प्रतिज्ञा लेता हूँ पुरुष ब्रह्मवेत्ता श्रुत पगूं।
भगा सक्तो वक्तो पिशुनछल व्यक्तो द्रुत भगूं ॥२९॥

किसी की हांनी मैं मनुज पन जांनीं नह करूं।
प्रमानीं पांनी को धरम अभिमानो पद धरूं।

१—दुर्बल होना । २—देखूं । ३—होसला । ४—नष्ट होना । ५—नम्रता । ६—आश्रय लेने वाली । ७—धारण करना । ८—गाथा ।

प्रभो माया शूरा बिघन कर चूरा बस बनी।
भरोषा है पूरा दुलभ नहिं दूरा दृढ़ मनी ॥३०॥
बसे तूं रोमाली कवन थल खाली तुज बिनां।
लखौं से चोचाली कल कि बल शाली अज किनां।
स्वइच्छा दिच्छा तें इतर नहिं इच्छा सद् सुखी।
अभे दिच्छा[1] दीजे समुखमुख भीच्छा[2] उन मुखी
॥३१॥
समाधी साधू मैं अवर न अराधूं उर अरू।
नऊं नारें[3] लाँघूं[4] दसम निज द्वारे धुन धरूं।
प्रथा प्रज्ञा पागे मगन मन आगे पुनि पकी।
बिभू नाँ बीसारूँ टिकट जिम सारूं इकटकी ॥३२॥
सधे जात्री सीठी सुदिन हम मीठी धुनि सुनें।
गुनें स्टेशन् जातें इमहिं हम आतें गुन गुनें।
दुरेना[5] दे सुर्मी दहन षट ऊर्मी[6] दुसमनाँ।
रवीन्दू पारातें अवत सुभधारा सुख मनां ॥३३॥
महात्मा आत्मा ए परम परमात्मा हिल मिलें।
भिलें जीवोद्योती झगमगत ज्योती भिलमिलें।
मुनी ताके झाके सुख रु दुख थाके बल महीं।
अपूर्वी आभा[7] वो लखत कृत पूर्वी फल लहीं ॥३४॥

१—दिशा। २—भीचा। ३—द्वार। ४—पार होना। ५—छीपना। ६—लहर। ७—कान्ति।

चहूँ नाष्टों सिद्धी निलज नव निद्धी नह चहूँ।
कहूँनाँ रिद्धीकी विविध बल बुद्धी नह कहूँ।
बिड़ोजा[1] खोजा सो नहिंन हम बोझा सह सकें।
सम्म्राटो[2] माटी सी विषम दुख घाटी कह बकें ॥३५॥
लगे ना कौशैया मलिन शुभ शैया मन लगें।
पटीरा[3] पारादी नहिंन चित चोरादिक पग।
नहीं मोती माला नहिन छक[4] हाला[5] सुचि[6] नहीं।
नहीं नारी प्यारी वचन छिन्दगारी रुचि नहीं ॥३६॥
त्रिवर्गा नाँ स्वर्गा नहिंन अपवर्गा[7] दिक तकें।
न नर्का धर्काती दुगत नहिं छाती धक धके।
मरे सो जन्में हैं जगतगत जन्में फिर मरें।
तुझे नाँहिं जानें तें मरन भय मानें डर डरें ॥३७॥
यहा मौका आया मनुज तन पाया बुध मिली।
हरी तोरी ओरी हुलस हिय मोरी सुधहिली।
हितो पाशी आशी दरस अभिलासी हिय हर्‌यो।
परूंना पासी में अलख अविनासी लख पर्‌यो ॥३८॥
हमें भौ तर्नो है नहिंन कछु कर्नो हित कहें।
चिदानन्दी चर्नों[8] मरन पुल शर्नों[9] चित चहें।

१—इन्द्र। २—चक्रवर्त्ती की। ३—रेशम। ४—चन्दन। ५—ऊची। ६—दशा। ७—पवित्र। ८—मोक्ष आदि। ९—चरण। १०—शरण।

तिहारी सृष्टी पें अमिय कर वृष्टी तन तजूं ।
कुदृष्टी दिष्टी को भसंम कर इष्टी हरि भजूं ॥३६॥

नमो शान्ताकारी अमर अघहारी हरि नमो ।
नमो क्षान्ताकारो अजर जर हारी जरि नमो ।
नमो दन्तापासी[1] धरम धुर जाती धव नमो ।
नमो ध्वान्ताराती दलद दुखघाती तव नमो ॥४०॥

नमामी सर्वेसा विलख लयशेषाक्षर नमो ।
नमो सर्वज्ञात्मा परम परमात्मा वर नमो ।
नमो सृष्टा त्वष्टा अगम कृतकृष्टा अह नमो ।
नमो श्रेष्टी जेष्टो मुदित परमेष्टी मह नमो ॥४१॥

नमो अग्राह्यारू श्रवन पुट सारू सत नमो ।
नमो लोकाध्यक्षाभृत[2] विजय लक्ष्या पत नमो ।
नमो विश्वाधारी अनल अघहारी विभु नमो ।
नमो भूभूर्वः स्वः प्रवन सुत विस्वम्भर नमो ॥४२॥

निराकारो कावे कहत नहिं आवे तन नमो ।
निराधारो धारो जपत जस गावे जन नमो ।
नमो भेवाभेवा[3] शरन भव देवा मुनि नमो ।
नवो गर्वाहारी त्रगुन गुनधारी गुनि नमो ॥४३॥

१—बलशाली, दाँत तोड़ने वाला। २—नौकर। ३—भेदाभेद।

प्रभू आज्ञा दीनी ग्रहन कर लीनी स्तुति पढी।
विषे शान्ती शान्ती कव उमर शान्ती हिये बढी।
नभेसोती जागी लगन धुन लागी जक नहीं।
स्वयंभू ध्याऊं मैं परमपद[१] पाऊं शक नहीं ॥४४॥

भजन की महिमा

(मधुमारवृत्तमिदम्)

अथ ओमकार, अक्षर उचार।
निस दिवस नाम, रट राम राम ॥१॥
है सुलभदीप, श्रद्धा समीप
रुचि हेतु राख, दुहुँ दिव्य दाख[१] ॥२॥
मम इष्ट मिष्ट, आदर अभिष्ट।
महिमा मनोग्य,[२] जप जपन जोग्य ॥३॥
माधुर्य्य मेह, आसार एह ।
सद्गुरु समान, जीवन जहान ॥४॥
चित प्रथम चेत, उल्लू अचेत।
यह तन अयान,[३] न स्थिर निदान ॥५॥

१—कहना। २—सुन्दर। ३—अज्ञान।

बचिहे न बीर, तरु सिन्धु तीर।
इक दिवस यार, हे गिरनहार ॥६॥
उड विहँग इच्छ, विश्राम बृच्छ[1]।
जिहँ छांह जीव, सुख है सदीव ॥७॥
तहँ नहिं तमांम, घन सीत घांम।
फल फूल फार,[2] अध्वग[3] उदार ॥८॥
नहिं पहुँच नीच, माज्जारि[4] मींच[5]।
सावजन शंक, निद्रानिशंक ॥९॥
मन मान मोर, छल छन्द छोर।
प्रभु परस पाय, अन्तिम उपाय ॥१०॥
मांनांपमान, सुख दुख समान।
मद्मोह मेट, भगवन्त भेट ॥११॥
इल[6] है न आंन, सद्गति सुथांन।
गुन गर्व गेर, हृदयान्तर हेर ॥१२॥
तब तत्व तीन, अन्तर अधीन।
भवत्याग भोग, जब जुरहिं जोग॥१३॥
भुप चतुर पाय, स्मरण सम्हाय।
लय लीन लच्छ, परिचय प्रतच्छ[7] ॥१४॥

१—बृक्ष। २—बहुत।३—यात्री। ४—बिल्ली। ५—मौत। ६—पृथ्वी। ७—प्रत्यक्ष।

अतिशय अगाध, ईश्वर अराध।
सत सिंवर[1]-सद्य, अपवर्ग अद्य ॥१५॥
मन्तव्य मान, गन्तव्य ग्यांन।
वेदक्त विधांन, धर धेय ध्यांन ॥१६॥
सुन जाग सूर, चन्द्रार्क चूर।
सुख मन संचार, अम्मृत अपार ॥१७॥
निरझर निहार, त्रपुटी नितार।
निश्तेय नीर, सुधकर सरीर ॥१८॥
संयम सहाय, अल अन्तराय।
परहरहु पीर, तुरीयाब्धि तीर ॥१९॥
त्रहुँ ताप तोर, घन नाद घोर।
आश्चर्य एह, दु धवि[2] विदेह ॥२०॥
सम दमन साध्य[3] सहजै समाध्य।
दस द्वार देख, आगे अलेख ॥२१॥
शाश्वत स्वरूप, अवगन[4] अनूप।
भुव गगन भूरि, सब साक्षि सूरि[5] ॥२२॥
मरियाद मित्र, पावन पवित्र।
धन्यास्ति धन्य, गुरु अग्रगन्य ॥२३॥

१—स्मरण करना। २—हटा कर। ३—साधने योग्य। ४—जानना। ५—पंडित।

सर्वज्ञ शेष, आवृति अशेष।
सब शक्तिमान, पूरन प्रधान ॥२४॥
अह अद्वितीय, पंद पूजनीय।
उत्साह अर्घ,[१] मिलनो महर्घ[२] ॥२५॥
आभोग[३] ऊर्ध,[४] भग जगत मूर्ध[५]।
साधन समग्र, अखिलेस अग्र ॥२६॥
शिव शक्ति सीम, अनुभव असीम।
सिद्धान्त सार, नित निराकार ॥२७॥
ब्रह्माण्ड व्यास, परधी[६] प्रकास।
अति व्याप एस, व्यापक विशेष ॥२८॥
वैराट वृद्ध, सानन्द सिद्ध।
घट बढ़न घाट, नूतन निराट[७] ॥२९॥
अद्भुत अमंद, सोभासमंद।
श्रुति सकल सार, बर्जित विकार ॥३०॥
अज अमर ईश, सब लोक शीस।
शुभ शान्त शुद्ध, पालक प्रबुद्ध ॥३१॥
चर अचर चिन्त, निश्चल निचिन्त।
नहिं आदि अन्त, अगहर[८] अनन्त ॥३२॥

१—पूजा। २—महँगा। ३—भोगना। ४—ऊंचा। ५—मस्तक। ६—चारों तरफ़। ७—अत्यन्त। ८—पाप हरने वाला।

ऊरध अकास, पाताल पास ।
सब ठौर सिद्ध, परिकर प्रसिद्ध ॥३३॥
वैरागवृद्धि, सुख बल समृद्धि ।
निरभय निसान, निरधन निधान ॥३४॥
देवादिदेव, सुर असुर सैव ।
राजाधिराज, सविता समाज ॥३५॥
परिपूर्ण प्रेम, निज न्याय नेम ।
विज्ञान विज्ञ, पूर्णप्रतिज्ञ ॥३६॥
गंभीर ज्ञान, विस्मय विज्ञान ।
उद्योग आस्य, एको उपास्य ॥३७॥
सामर्थ्य श्रेष्ठ, जग सकल जेष्ठ ।
आ उदय अस्त, शिक्षक समस्त ॥३८॥
मेधा महन्त, दीपत दिगन्त ।
आदान ओघ, अक्षय अमोघ ॥३९॥
धन धेनु धांन्य, वंटक वदांन्य ।
जाहर जहांन, मोदी[1] महांन ॥४०॥
निर्द्वंद[2] नाथ, आश्रम अनाथ ।
वह अष्टोवार, प्रलयान्त पार ॥४१॥
विश्रांमव्यूढ, गोतीत[3] गूढ, ।
निरगुण निरीह, आधार ईह ॥४२॥

१—चीज वस्तु रखने वाला, रसत देने वाला । २—सुख दुख रहित । ३—इन्द्रियों से परे ।

सूक्ष्म सरीर, व्यांकृति[1] बहीर[2] ।
झीनातिझीन[3] चित विदित चीन ॥४३॥
पद परम पून्य संकल्प सून्य ।
निरबांण[4] नित्य अन्तर अनित्य ॥४४॥
मनवुध अमान[5] पहुँचे न प्रान ।
वाचक न वाच्य,[6] वह पद अवाच्य ॥४५॥
चहुँधां[7] चरित्र वैष्णवे विचित्र ।
त्रैलोक तन्त्र, वह मिलत अन्त्र ॥४६॥
परिब्रह्म पूर्ण, तत मगन तूर्ण[8] ।
परमात्म प्राप्त, वह पुरुष आप्त[9] ॥४७॥
नम दयानन्द आनन्दकन्द ।
उपदेस एस, दीनों दिनेस ॥४८॥
गो तिमर गच्छ, सूझंत स्वच्छ ।
दरसन दयाल, कृपया कृपाल ॥४९॥
स्वांमी सचेत, अति गुन उपेत[10] ।
सेवक विसार, सो लीन सार ॥५०॥

१—विकार । २—बाहर । ३—बारिक से बारिक अर्थात् अत्यन्त बारिक । ४—मोक्ष । ५—प्रमाण रहित । ६—कहने के योग्य । ७—चारों प्रकार से । ८—जल्दी । ९—बड़ा । १०—युक्त ।

मम अमिय मूरि,[1] द्रगतैं न दूरि।
आत्मिक अधार, पाहुँन[2] पधार ॥५१॥
बांचनि विधेय[3] सोपान[4] श्रेय।
संपूर्ण साच, ऊमरो वाच ॥५२॥

चेतावनी

(राग आसावरी)

समज मन आयू बीत गई सारी।
तें करी न भली तिहारी ॥समज०॥टेर॥
बालपणों हंस खेल बितायो,
गाफल चाल गिंवारी।
तरुन भयो तरुनी संगत तू
अन्धाधुन्ध अपारी ॥समज०॥१॥
रात दिवश होवे मन राजी,
निरख पराई नारी।
पढ़न पढ़ावन मोसर[5] पायो,
चूक गयो विभचारी ॥समज०॥२॥
उद्यम छोड़ रह्या अन उद्यम,
आठूंहीं पहर अनारी।

१—जड़। २—मेहमान। ३—करना। ४—सीढ़ी, जीने, पंगतिया। ५—अवसर, मौका।

रोटी रोटी करतो रोवे,
मूढ़ महा झकमारी ॥समज०॥३॥
चन्द बदन गुनखांन चतुर चित्त,
पर हर अपनी प्यारी ।
वेश्या संग मोल विन बालम,[१]
बिकगो बड़ो बिकारी ॥समज०॥४॥
सत्य पुरुष की सीख श्रवण सुन,
लपलप[२] लपत[३] लबारी[४] ।
काम क्रोध के कन्द[५] छेक कर,
धृती क्षमा नहीं धारी ॥समज०॥५॥
और की ऐब उघारन आतुर,
अपनी और अगारी ।
अपनी ऐब आप के अन्तत,
निलज कबू ना निहारी ॥समज०॥६॥
सुन सुन के डारी सारी सुन,
पागल लाख प्रकारी ।
ऊमरदांन विचार बिनां अब,
कछुह न लागे कारी[६] ॥ समज०॥७॥

१—वल्लभ, प्यारा । २—बिना विचारे बार बार कहना । ३—कहना । ४—वाचाल । ५—मूल । ६—उपाय, पैबन्द ।

विलाप: बावनी

(छंद नाराच)

अहावसान आ अरी धरी न कानपै धनां[1] ।
महा अरी घरी घरी मनां करी करी मनां ॥
यथा अयोग्य योग्यकी यल्यो[2] उबाट[3] तू वृथा ।
व्यथा भ री जथा तथा कही न आजलूं कथा ॥१॥

कह्यो स्वकूच[4] प्राचि[5] कौं प्रतीचि[6] पंथ तू पर्‌यो ।
अवाचि[7] जान आदर्‌यो[8] उदीचि[9] कौं अनादर्‌यो[10]॥
कुचाग्र[11] चित्र पत्र पेषि अत्र ऐंनटैं करी ।
कुसाग्र तीव्र बुद्धिकौं समग्र व्यग्र[12] तैं करी ॥२॥

विनिंदिनीय[13] बाम[14] आमनाम[15] तैं नट्यो नहीं ।
कर्‌यो निकाम काम हा हरामतैं हट्यो नहीं ॥
धिकार हैं हजार बार सार तार में धर्‌यो ।
अनूप रूप अच्छतैं[16] प्रतच्छ[17] कूपमें पर्‌यो ॥३॥

ननाक नाक राख नें कजाक नाक नाँ नट्यो ।
मनाक[18] सौख्यछाक[19] में मना अनांक[20] व्है अट्यो[21]॥

१—ध्वनि । २—चला । ३—कुमार्ग । ४—अपना चलना । ५—पूर्व दिशा । ६—पश्चिम । ७—दक्षिण । ८—ग्रहण किया । ९—उत्तर । १०—छोड़ा । ११—स्त्री के स्तनो का अगला हिस्सा । १२—तल्लीन । १३—बुरी । १४—स्त्री । १५—योनी से अर्थ है । १६—आँखो से । १७—दीखते हुये । १८—थोड़ा । १९—आराम का नशा । २०—फ़िजूल । २१—घूमा ।

धुनाय धूलि अर्कधां[1] कुमर्क में भसाकरयो ।
कुतर्क[2] गर्क चर्कको अलर्कलों[3] भुसा करयो ॥४॥
हरोल[4] गोल व्है चंदोल लोल फोज हाकली[5] ।
करी न जै निकृष्ट धृष्ट काल-पृष्ट धाकली[6] ॥
कुकज्ज[7] लज्जतो[8] करयो अनज्जवंस[9] अज्जको[10]।
लुलायु लज्ज भीतभज्ज[11] लज्जनां निलज्जकूं ॥५॥
विषर्ण वर्ण स्तंभतर्ण लंबकर्ण व्है चिलै ।
मही[12] न धर्न[13] चर्न मर्न[14] उत्तमर्न के मिलै ॥
गती रती न ग्यानकी गदा विज्ञान[15] की गमी ।
श्रुती[16] परी करी सदा श्रुती[17] जनश्रुती[18] समी॥६॥
अजस्त्र अस्त्र घस्त्र[19] घस्त्र विश्र[20] पीवतो वह्यो ।
रिजू[21] दलील पोलकै[22] जलील[23] जीवतो रह्यो ॥
बिषाद[24] व्यर्थ वाद[25] कें प्रमादमें परयो रह्यो ।
धरयो न ध्यान धेय गेय ग्यांन तैं गरयो रह्यो ॥७॥

१—आक के वृक्ष जैसे। २—खोटी दलील। ३—कुत्ते की तरह। ४—सेना के आगे का भाग, अगाड़ी, मुहानां। ५—चलाई। ६—ठोकी, पुष्ट की। ७—कुकर्म। ८—लज्जित। ९—अनार्य वश। १०—आर्य वंश को। ११—निडर। १२—भूमि। १३—धरने वाला। १४—मरने वाला। १५—प्रत्यक्ष ज्ञान, वर्त्ताव में लाया हुआ ज्ञान। १६—कानों में। १७—वेद। १८—कहावत, ओखाणा। १९—दिन। २०—विष। २१—रूबरू, सही। २२—दबा करके। २३—नीच। २४—शोक। २५—विवाद।

विदेह[1] देहमें सनेह मेह नां वुठा[2] करैं।
अजूं प्ररोह मोह द्रोह कोह[3] के उठा करैं॥
जुझार[4] जोति जारपै जगी नही जुहार की।
प्रहार स्वर्णकारपै लगी नही लुहार की॥८॥
सगर्व न्याय सासनां[5] उपासनां न आँन की।
अखर्व[6] आस पर्वपर्व[7] सर्व सक्तिमान की॥
उमंग अंगमें उठैं सुचंग[8] सत्य संगतैं।
प्रलापमान[9] अंग नीच कीचके प्रसंगतैं॥९॥
करी बुरी सु पायली अबै बुरी करूं नहीं।
कृपाल की कृपालता स कालतैं डरूं नहीं॥
दयाल दीनबंधु दान में निदान दीजिये।
अयोग हूं कुयोग में यथा नियोग कीजिये॥१०॥
भवाब्धिनाथ भावना विभू नहीं विकारसी।
मदीय[10] में न मूढता त्वदीय है न तारसी॥
निरापराध लोकपै कदापि कोपते नहीं।
कृपाल लोक लोक ठीक लीक लोक लोपते नहीं॥११॥
सदीव सत्य सावधाँन सावधाँन की सुनूं।
गुमाँन ग्याँन गर्हणाँ[11] असावधाँन की गुनूं[12]॥

१—परमहंस। २—बरसना। ३—क्रोध। ४—वीर। ५—हुकूमत, शासन करना। ६—बहुत। ७—हर मौके पर। ८—सुन्दर। ९—बकना। १०—मेरा। ११—फटकार। १२—समझूं।

अयाँनतैं[1] अमित्रता बिचित्रता बिचित्रकी।
महान मित्र मित्रता पवित्रतैं पवित्र की ॥१२॥
अयोगको सुयोगता दई प्रयोग दो नहीं।
लघार के पुकारकी लगारसी[2] रलो[3] नहीं॥
भलै भलो बुरै बुरो ललोपती लजो नहीं।
प्रभू उचार प्रेम पेख नेमको तजो नहीं ॥१३॥
यती सुसील डील में न तुष्णि[4] सील योग में।
अयोग्य जाप आपको जपों जदी अयोग में॥
नरेन्द्रके सुरेन्द्रके धराधरेन्द्रके धृतू।
अकारनींक[5] आप नांहि कारनीक हौ कृतू ॥१४॥
गुनीन में गिनैं गुनी गिरा न सो गुनाढ्यमें।
धनीनमें धुनैं धनीं धरा न सो धनाढ्य में॥
मनीषि[6] गोन[7] मान है न होनहार हानकी।
जहाँ न कोन जान हैं कृपा कृपानिधाँनकी ॥१५॥
दसा विसम्ध[8] संम्यहा अगम्य[9] गम्य[10] है नहीं।
रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नहीं॥
गवाक्ष[11] तैं मृगाक्ष[12] की कटाक्षतैं निगै नहीं।
थिराभ चंद्रसाल चंद्रसालपै थिगै नहीं ॥१६॥

१—अनजान से। २—थोड़ी। ३—मिलना। ४—शान्त। ५—बिना कारण। ६—बुद्धिमान, पंडित, मुंशी। ७—गौण। ८—उल्टा। ९—कठिन। १०—सहज। ११—झरोखा, गोखड़ा। १२—मृगानयनी।

मयाल[1] मंडपाल[2] मेघमाल मोहनीं नहीं ।
हिलंब से प्रलंब थंभ बिंब[3] सोहनी नहीं ॥
सरोख सात गोखतैं झरोख झांकनीं नहीं ।
निकूप चोक चांदनी निमोकनां खनी नहीं ॥१७॥

छटा बिसाल सालतैं छयी घटा छपै नहीं ।
दिवालपै सुवाल[4] दीपमालसी दिपै नहीं ॥
घुमंड मेघकी घटा यहाँ अटालिका नहीं ।
कहाँ भुजाल भालमें कपोत पालिका नहीं ॥१८॥

कटी[5] सु छीन केहरी[6] प्रवीन पायका[7] नहीं ।
बिनीत बानि बीनसी नवीन नायका नहीं ॥
सुचैंन दैंन सैंन स्वीय रैंन में रुठै नहीं ।
अपांग लोल गोलती इलोल में उठै नहीं ॥१९॥

उचाट[8] काटनो निराट[9] पाट[10] ओढ़नी नहीं ।
बिलोक[11] बंक[12] लंक[13] दे पलंक पोढ़नी[14] नहीं ॥
जुरैं समीप दीपसी प्रदीप जोवनी[15] नहीं ।
मयंक[16] हास्य अंक[17] में निसंक सोवनी नहीं ॥२०॥

१—दयालु । २—राजा, इन्द्र । ३—सूरत । ४—सुन्दर स्त्री । ५—कमल । ६—सिंह । ७—दासी । ८—उदासी । ९—बिलकुल । १०—रेशम । ११—देखना । १२—बांकी । १३—कमर । १४—लेटने वाली । १५—देखने की । १६—चन्द्रमा । १७—गोद ।

सदा प्रियासु प्रीति रीति गीत सारनी[१] नहीं।
निसास-रोज[२] आननी[३] उरोज[४] धारनी नहीं॥
कृसोदरीय[५] कामिनी बिभा[६] बयोधरी नहीं[७]।
... ... ॥२१॥

स्वतन्त्र नृत्यसाल में नितम्बिनीं[८] नचैं नहीं।
सुहागिनी स्वराग राग रागनी रचैं नहीं॥
तथुंग थुंग तत्थ थेइ ताल साजती नहीं।
वधू उमंग संगमें मृदंग बाजती नहीं॥२२॥

सुरंग रंगभोमि में तरंग है न तॉनकी।
ढमंक ढोलकी न त्यूँ घमंक[९] घुग्घरॉनकी॥
छमंक बिच्छवॉन की दमंक[१०] ना दरीन की।
झमंक[११] जेहरॉनकी चमंक नाँ चुरीनकी॥२३॥

महा उचूल[१२] मूलके दुकूल[१३] देहमें नहीं।
कहाँ सुगंध कंध बीचि गंध गेह में नहीं॥
धिमिद्ध मिद्ध ऊध्वनी न सिंजनी सुनीं नहीं।
न अध्वनी न दीन दीन आअई कुनी नहीं॥२४॥

सुकाय सीत भीत में निसीथ[१४] धूजती[१५] सही।
निकाय[१६] हाय धाय में उपाय सूझती नहीं॥

१—गाने वाली। २—लम्बी श्वास से रोना। ३—मुँह वाली। ४ - स्तन। ५—पतले पेट वाली। ६—शोभा। ७—अधिक उम्र की। ८—जोबन भरी छाती वाली। ९—आवाज। १०—चमक। ११—झनकार। १२—ऊँचे। १३—रेशमी कपड़े। १४—रात। १५—कॉपना। १६—झुण्ड।

निदाघ[1] में निदाघदेह बाग आगमें नहीं।
नखानुराग[2] त्याग व्है तडाग[3] भागमें नहीं ॥२५॥
परै मरीचि[4] मांहपै[5] न छांह आतपत्र[6] की।
कृमैं न बायु अत्र तालपंत्र[7] तैं कलत्र[8] की ॥
धरे निसान ध्वान आन कानमें घुरै नहीं।
न मुच्छ स्वेतरोम गुच्छ सीसपै ढरै नहीं ॥२६॥
नरेस देसदेस के निदेस मानते नहीं ।
थिरान थानथानके जवान जानते नहीं ॥
धरा अमात्य[9] आत्य[10] माक-माक माधरैं नहीं।
करोर हा भूतादि आ खमाँखमाँ[11] करैं नहीं ॥२७॥
सुधार सस्त्र अस्त्रके जुधार[12] जागते नहीं ।
लखौं विहान[13] सानपै भंभाँन[14] लागते नहीं ॥
कमाँन बाँन ताँनके निसाँन बेधते नहीं ।
रसा उजास अंधते नसा निसेधते[15] नहीं ॥२८॥
भुसंडि तोप भूपके सुलच्छ साधते नहीं ।
विनीत नीतवान जे अनीत बाधते नहीं ॥
महा समूह मूँह देखि मूँह मोरते नहीं।

१—गर्मी।२—महेंदी। ३—तालाव। ४—सूरज की किरणें। ५—मुख पर । ६—छत्र। ७—पंखा। ८—स्त्री। ६—दीवान, मंत्री। १०—सैनिक, फौजी। ११—जय जयकार। १२—योद्धा। १३—सुबह। १४—बाजा। १५—मना करते ।

उछाह चाह आहवी[1] दुबाह दोरते नहीं ॥२६॥
स्वइच्छ सिच्छ[2] सूर वे अनिच्छ ऊंघते नहीं।
मरैं न ते कुमोतितैं सुमोति सूंघते नहीं ॥
खलान्त क्रान्त व्है खपा[3] दुदांत[4] खेरते[5] नहीं।
सुगिद्धनी[6] धपा धपा बपा[7] बखेरते नहीं ॥३०॥
नकार अबअबपै नकीब[8] बोलते नहीं।
खनंक खग्ग[9] बग्गतैं[10] सु अंख खोलते नहीं ॥
पटादि खेल पेलकै सटा समालते नहीं।
घुसैं गयंद[11]की घटा मयंद[12]मालते नहीं ॥३१॥
दिसा दिसा न मान तोप माननी दगै नहीं।
अडोल चक्र नक्र मक्र आननी अगै नहीं ॥
दराज[13] देह दुहै दान[14] राज दाहनी[15] नहीं।
चहूँ चरित्र चित्रसी विचित्र बाहनीं[16]नहीं ॥३२॥
घने उतंग[17] अंगके मतंग[18] घूमते नहीं।
चलंतसै विलोम लोम व्योम[19] चूमते नहीं ॥

१—योद्धा। २—शिक्षा। ३—नाश। ४—कड़े दांत, कठिनता से दमन करने योग्य। ५—गिराते। ६—पक्षी। ७—शरीर। ८—चोबदार, छड़ीदार। ९—तलवार। १०—बजने पर। ११—हाथी। १२—सिंह, नाहर, शेर। १३—बड़ी। १४—दुश्मनों की। १५—जलाने वाली १६—सेना। १७—ऊँचे। १८—हाथी। १९—आकाश।

झपेट देत झंडके ब्रह्मंड व्यापते नहीं।
छलंग देन छोनि[1] है मलंग मानते नहीं ॥३३॥

सतांग बांग यांग स्वांग सारथी सजै नहीं।
महारथी न उत्तमांग[2] भार थी भजै नहीं॥
महोख[3] मोख तंत्रितारगंत्रिका गुरैं नहीं।
महांग अंध धुंध कंध दुंधुयो दुरैं नहीं ॥३४॥

बिसाल चट्टसाल बीच वेदकी धुनी नहीं।
महाश्रमी गृहाश्रमी गिराश्रमी[4] गुनी नहीं॥
धनास मात्रके सुपात्र छात्र[5] धावते नहीं।
अनाथ साथ हाथ आथ अन्न पावते नहीं ॥३५॥

स्वछंदकी अमंद[6] वुद्धि छंद छावते[7] नहीं।
गुनी विहान गाथ तान गान गावते नहीं॥
सुधा समाज ताजसे वुधा बिराजते नहीं।
सताभिधान[8] आव्य[9] के सुकाव्य साजते नहीं॥३६॥

विरुद्ध वेद वारता प्रबुद्ध पातरैं[10] नहीं।

१—पृथ्वी। २—सिर। ३—बडी आंख वाला। ४—वक्ता, कवि। विद्यार्थी। ६—तेज। ७—रचना। ८—सौ बातों को एक साथ याद रखकर यथार्थ उत्तर देने वाला। ९—सुनने योग्य १०—भूलना।

बिसुद्ध सुद्ध संघतैं असुद्ध आंतरे[1] नहीं ॥
प्रचंड पंडितान की वितंड[2] बंडली[3] नहीं ।
महा अबोध सोधनी सुबोध मंडली नहीं ॥३७॥
नये नये पदारथांन खांन खोजते नहीं ।
गुमाँन मेटनै गुनी प्रमान सोझते नहीं ॥
कतार[4] कारवांन[5] के अगार[6] आवती नहीं ।
प्रजा पुकार द्वारपै पगार[7] पावती नहीं ॥३८॥
अपंग पंग अंध जीमि बैठि जानते नहीं ।
महाजनीन हुंडि सेठ पैठि[8] मानते नहीं ॥
हजारहां दिसावरांन[9] नोट[10] हालते[11] नहीं ।
चहूं दिसा समुद्र बीच बोट[12] चालते नहीं ॥३९॥
विमान आसमान में निसानसे रहैं नहीं ।
बसुंधरा बियानसी[13] बगीलगी[14] बहैं नहीं ॥
छलंग बाछरू[15] घरू न उच्छरैं[16] चरैं चिरैं ।
फलंग भैचकी[17] थकी न नैचकी चकी फिरैं ।४०॥

१—दूर । २—फिजूल, बकवाद, विवाद । ३—दुष्ट पारटी । ४—लाइन, पंक्ति । ५—झुंड, काफला । ६—घर । ७—तनख्वाह, वेतन । ८—विश्वास । ९—देश देशान्तर । १०—करेंन्सी नोट । ११—चलना । १२—जहाज । १३—आकाश के जैसे । १४—लगभग । १५—बछेड़ा । १६—उजलना । १७—डरीहुई ।

अमैं न भिच्छु[1] भिच्छुकी मया न दान मानकी।
न ओषधी चिकत्स थान दोसधी[2] निदानकी॥
नितंबनेसबेस के बिनां बिदेस में नहीं।
दु कान के सिवाय हा दुकान देसमें नहीं॥४१॥
अरी न अप्रसन्न व्है प्रसन्न में बडो बिभो।
प्रसंसता प्रसंसनीय की प्रसंसता प्रभो॥
वसून बुद्धि वैतनी जमान पान है जमाँ।
घुमाय लट्ट अट्ठ जाम हौं फिरौं घमाँ घमाँ[3]॥४२॥
सुखी नचिंत सोवनं अचिंत चोर आगतैं।
अभाग ओट[4] उद्धरयों विभागकी बजागतैं॥
हिये हठी हमीर[5] सो अठी[6] अमीर औनमें।
दया गंभीर देखिये घमीर[7] लैनदैनमें॥४३॥

१—भिक्षु। २—रोग परीक्षा। ३—जोर से पाँवों को पटकता हुआ। ४—बाढ़। ५—यह सुप्रसिद्ध गढ़ रणथंभोर (अब जयपुर राज्य में) का बड़ा प्रतापी राजा था जो अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के छठे शधर जैत्रसिंह का पुत्र था। इस (हम्मीर चौहान) का हठ बड़ा प्रसिद्ध था। इसी से "तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़े न दूजी बार" की कहावत प्रसिद्ध है। इसकी गद्दीनशीनी सं० १३३६ वि० में हुई। यह दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का समकालीन था और सं० १३५८ तक इसका राज्यकाल मिलता है। ६—ईधर। ७—छाती पीटना।

असर्मसोन धर्मपै कमान ग्लान मानपै।
पचो जमीन पै सु सांग टांग आसमानपै॥
अहो अलभ्य[1] उद्धमें असभ्य सभ्य अन्यते।
सतंबदप्रबुद्ध पै मने न इक्क मन्यते ॥४४॥
महामुनी समानमें महान हानि मुक्तिमें।
अभोग रोग ना अरै जरैं न जोग जुक्तिमें॥
दुराग्रही दटै नहीं यथागृही अलबैतैं।
स्वनम्र मान सर्वदा सखा अलग्न[2] सबैतैं ॥४५॥
अनंत आपहैं अनल्प[3] आदि अंत अल्पमें।
वृतान्त जल्पनू[4] वृथा तुलूं न कोटि कल्पमें॥
हमेस क्लेस लेस नेस ही असेस नां नहीं।
निदेस[5] सेसनाथ[6] की बिसेस बासना नहीं ॥४६॥
अनालसी[7] न आलसी न नालसी निश्रेयको।
सुस्वामिभक्त स्वामिको सदानुगामि श्रेयको॥
करैं यथा भरैं सही नहीं महेन्द्र नामकी।
कृपालकी कृपालता कपालसोन कामकी ॥४७॥
मन्यूं रसीसु मानली खरे प्रभू न खीजिये[8]।
अनंत रीझ रीजिये सहोजितो सहीजिये॥

१—नहीं मिलने वाला। २—अलग। ३—बहुत। ४—कहना। ५—आज्ञा। ६—विष्णु। ७—उद्यमी। ८—गुस्से होना।

अनंत ओज आप में अनंत ओज दीजिये ।
न तो कृपाल वेद बाक्य कों अबाकि[1] कीजिये ॥४८॥

अनंत बात अंतकी छिपी न अंतराय[2] की ।
सहायहीन कों उपाय सूझती सहायकी ॥
समाधियोग सावधी परावधी[3] पिछानलो ।
महेसराज राजतैं महाधिराज मानलो ॥४९॥

तथा अतीव नम्रता करी सु नम्र मैं तुझैं ।
महाप्रयोग योगको महा उद्योग दे मुझैं ॥
कवी प्रभाव कल्पना कुंजल्पना[4] कलीयसी ।
अनिच्छ[5] जीव अद्यतैं[6] हरीच्छ सो बलीयसी ॥५०॥

कबै कलंक अंकतैं प्रसंकि पापतैं परैं ।
कबैं कलंकसी भनंक रंक कानमें परैं ॥
कबै सु गाथ माथ देहि घूमरैं सनाथकी ।
अबैजु लाज नाथ हाथ झमरैं अनाथकी ॥५१॥
सुखी वियोगसे सुखी दुखी भ्रमैं दिगंतमें ।
सुखान्त कान्त ग्लौमुखो दुखांततैं सुखान्तमें ॥

१—मिटाना ।२—बाधा। ३—अतिम सीमा । ४—बकवाद ।
५—ईच्छा रहित । ६—शुरू से ।

विभू रसाल के विनां हिये विसाल बावनीं।
विभू[1] विथा[2] विलाप की बनी विलाप बावनीं ।५२॥

सन्तां री महिमां

(दरिया सा की महिमां–छन्द त्रोटक)

वस राह्यण[3] बास सुबाल विभू,
प्रगटे दरिया[4] निज दास प्रभू ।
भवतारन कारन नेंह भरी,
धुनिया[5] कुल में धिन देह धरी ॥ १ ॥
सुखमां वरणूं सुखसागर की,
अपनी रुख भेख उजागर की ।
चित चाह उछाह पथा चुनिये,
सब सन्त समाज कथा सुनिये ॥ २ ॥

१—आत्मा । २—कष्ट।३—रैण नाम का गांव है।४—महात्मा दरियावजी—जोधपुर राज्य के परगने मेड़ते के गांव रैण के मुसलमान पीजारे (धुनियां) थे। रामस्नेही साधु पेमदासजी के चेले होकर स० १७६६ से हिन्दू बन कर राम राम जपने लगे। इनका जन्म सं० १७३३ वि० मे व मृत्यु सं० १८१५ में हुई। इनकी गादी रेल्वे स्टेशन रैण मे है। (देखो मारवाड़ सेन्सस रिपोर्ट सन् १८६१ ई० तीसरा हिस्सा पृष्ठ २८८)। ५—पीजरा (रुई पींजाने यानी साफ करने वाला)।

वय बाल विहाय[1] युवा वरणी,
कटिबद्ध भयो करनी करनी।
बिमनां[2] अनुराग बिराग वह्यो,
चितवृत्तिय जोग प्रयोग चह्यो ॥ ३ ॥
गुनवाँन कुराँन पुराँन गुनें,
श्रुतिवाँन श्रुती सब शास्त्र सुनें।
मत भेदन खेद खुबी मत की,
सत चूँप चुभी उपनीसत की ॥ ४ ॥
फटकार हलाहल तें फिरगो,
घन आनन्द अमृत घाँ[3] घिरगो।
मुसला[4] पर डार सिला[5] महती,
गुरु कारज आरज वंस गती ॥ ५ ॥
पुनि पुन्य उदै भए पूरब के,
उघरे उर अंक अपूरब के।
सुरता[6] बिकसी सरसायन[7] में,
परि प्रेम पयोनिधि पायन में ॥ ६ ॥
धिन पांन धुनी सिर पें धरिये,
कर जोर कह्यो अपनों करिये।

१—छोड़कर। २—वैराग्य। ३—बादल। ४—मुसलमान, यवन। ५—पत्थर। ६—बुद्धि। ७—भक्तिरस।

सत पेस कियो शिष सादर तें,
उपदेश दियो गुर आदर तें ॥ ७ ॥
परमापति सागति प्रेरक की,
हहराय थके मति हेरक की ।
अज एक अखंडित ईश्वर को,
जप जाप सखा जगदीश्वर को ॥ ८ ॥
नहिं ऊंच रु नीच जरा नर में,
किल ऊर्ध अधो गति है कर में ।
वद बाट[1] सुझावत हैं बिकटा,
नर पाट पुजावत हैं नकटा ॥ ९ ॥
चिर सार यही सब प्यार चहो,
उपकार बिनां नहिं पार अहो ।
तन तारहिगो[2] जुगती तिलहें[3],
मन मारहिगो मुगती मिलहें ॥ १० ॥
प्रभुदास कहाय रु हाय पिनें,
निगमागम की गम नांहि जिनें ।
अनखाय कमाय न अंगन तें,
मर जाय भलो जग मंगन तें ॥११॥
घट दीन दरिद्र घुमावत क्यूं,
पुरुषारथ हीन पुमावत[4] क्यूं ।

१—रास्ता । २—तारेगा । ३—तिल मात्र । ४—आत्म प्रशंसा करना ।

जन पें जन जा कर[1] जोरत क्यूं,
बस विप्र पति गृह बोरत[2] क्यूं ॥१२॥
घर बाहर धारन धावत क्यूं,
कुल क्षत्रिय चोर कहावत क्यूं।
बद्लाह सलाह बधारत क्यूं,
पद ताह कुराह[3] पधारत क्यूं ॥१३॥
निर गर्व अखर्ब न भावन में,
कृत प्रस्तुत हस्त कमावन में।
सब धर्म जग्यो सुख सन्तन तें,
भव भर्म भग्यो मुख भाषन तें ॥१४॥
मन शूद्र समूद्र न सापत क्यूं,
थिर शूद्र उपद्रव थापत क्यूं।
गुरुदेव बिनां नहिं पार गती,
भव भेव बिनां फल फारगती[4] ॥१५॥
लिपि लापर लेख लिखावन की,
दुनियां विधि देख दिखावन की।
परमातम को नहिं पावन की,
वक[5] वृत्तिय ब्रह्म बतावन को ॥१६॥

१—हाथ। २—डुबोना। ३—खोटा मार्ग। ४—फैसला।
५—बगुला।

पुनिं पारन पाठ पठावन में,
गुनज्ञांन न रागनि गावन में।
चित चैन न बंट चलावन में,
हित है नहिं घंट हिलावन में ॥१७॥

धुन धुर्तन में वुत धारन की,
मन मुर्तिन में सिर मारन की।
चित चेत वहे जड़ हेत चहे,
रस हीन यथारथ दीन रहे ॥१८॥

उर संखन को टुर आवन की,
विवुधालय[1] संख बजावन की।
घनघोर नगारन घोरन की,
ठनकार टकोरन ठोरन की ॥१९॥

तिलकाकृति गारन तोरन की,
किल कंठिय काठ कठोरन की।
डफ डूंम[2] डफोलन[3] को रचि हैं,
सुर[4] वुद्धि सदा बिनतें बचि हैं ॥२०॥

१—मदिर। २—ढोली, नक्कारची जो अपने को वैकुण्ठ के गंधर्व की सन्तान बताते हैं। जयपुर राज्य में यह और मेवाड़ में "बारहठ" कहलाते है। (मारवाड़ सेन्सस रिपोर्ट १८६१ ई० भाग तीसरा)। ३—मूर्ख, गंवार। ४—देवता।

इतने अपलच्छ असन्तन के,
सुनिये अब लच्छन सन्तन के।
प्रणमूं एक आधपदे अपदे,
चित में मम उत्तम साध चढे ॥२१॥
सनक[1] आदिक व्यास[2] वशिष्ठ[3] सखा,
लछतां जन लेख अलेख लखा।
बहु पूत सपूत वधू तन में,
अद् भूत छटा अवधूतन में ॥२२॥
पर पीर विदीरन पीर प्रपा,[4]
तुलसी[5] तसबीर कबीर[6] कृपा।

१—एक ऋषि जा ब्रह्मा के एक पुत्र कहे जाते हैं।२—इन्होंने वेदों का विभाग किया था। लोग इन्हें पुराणों का कर्त्ता कहते हैं, परन्तु पुराण एक समय नहीं बने हैं। वे भिन्न-भिन्न लेखकों द्वारा भिन्न-भिन्न समय में रचे गये हैं। शायद व्यास नाम धारी भिन्न-भिन्न लेखक हों। ३—यह मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के गुरु थे। पुराणों मे इस ऋषि को वेश्या का पुत्र लिखा है। इनके ज्येष्ठ पुत्र का बेटा पराशर था। ४—प्याऊ। ५—इनका जन्म यमुना के किनारे राजापुर गाँव में सरयूपारी ब्राह्मण कुल में सं० १५८६ वि० में हुआ और देहान्त सं० १६८० मे काशी में हुआ। इनकी बनाई रामायण बड़ी प्रसिद्ध है। ६—ये काशी के मुसलमान जुलाहे थे जो १५वीं शताब्दी के उत्तरकाल मे हुए हैं। इनके गुरु रामानन्द जो. स्वामी रामानुजाचार्य के शिष्य थे। कबीर का कहना था कि ईश्वर और अल्लाह में कोई भेद नहीं है

सुधि नांनक[1] वांनक[2] सी सरसी,
दुति[3] दादुदयाल समी दरसी ॥२३॥
गुरु न्याय विधायक गोतम[4] से,
पुन पाय प्रभा पुरसोत्तम से।
अडिगासन आस अहेस्वर से,
मद नाद अभय महेश्वर से ॥२४॥
हर रांम रु रांम गिनों हर से,
जगमें गुरु जेमल[5] में दरसे।

और जात-पांत का ढोंग फिज़ूल है। ये मूर्त्ति-पूजा के विरोधी थे और इनका देहांत सं० १५७५ मंगसर सुदि ११ का बताया जाता है। ये दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी (सं० १५४६-१५७४ वि०) के समय विद्यमान थे।

१—इनका जन्म सं० १५२६ की कार्तिक सुदि १५ शुक्रवार (ता० २०-१०-१४६९ ई०) को पंजाब में तलबन्दी नामक गाँव मे खत्री कुल में हुआ। इनके पिता का नाम कालू था। ४० वर्ष की आयु मे शिष्यों के गुरु होकर सिक्ख धर्म के जन्मदाता बने। इनके और कबीर के उपदेश मिलते जुलते हैं। जातपांत के भेद को ये भी व्यर्थ समझते थे। इनके बनाये ग्रंथ का नाम "ग्रन्थ साहिब" है। इनके अनुयायी "सिक्ख" और साधु "उदासी" कहे जाते है। गुरु नानक देव का देहांत सं० १५९६ आश्विन वदि १० रविवार (ता० ७-९-१५३९ ई०) को हुआ। २—ठाठ। ३—कान्ति, प्रकाश। ४—न्यायदर्शन के कर्ता थे, इस ग्रंथ मे तर्कशास्त्र का प्रतिपादन है। ५—इनका गृहस्थ का नाम जेतराम था। सं० १७६० वि० मे यह साधु हुए और सं० १८१० वि० में परलोक सिधारे।

सुपनें मनसा नहिं स्वारथकी,
प्रभु प्रारथनां परमारथको ॥२५॥
कबहु दरियाव कृपा करहैं,
तब ही भवसागर तें तरहैं ।
तन धारन कारन हौं तरसौं,
प्रभु प्यारन के पदकों परसौं ॥२६॥
अब नेम लगे इन आतमसौं,
तव प्रेम पगे परमातमसौं ।
हरि के जन हैं अरु होवेहिंगे,
ढब[1] पाय धरा दुख धोवेहिंगे ॥२७॥
चिर बीज जरा जननी न जनें,
निरबीज धरा कबहू न बनें ।
अजहां जु प्रवन्ध कबन्ध[2] अरे,
धर्म धारिन को धुर कन्ध धरे ॥२८॥
सब भेख अभेख सुधार करे
अपनीं अरु और उधार करे ।
अपकार उजार गुजार करे,
कृपधा उपकार अपार करे ॥२६॥

१—मौका, अवसर । २—सिर कट जाने के बाद भी कबंध (धड़) से शत्रु से लड़ने वाला ।

सहु नासत सीवन[1] सोध करे,
पहु आसत[2] जीवन बोध करे।
दिल साफ रखे निज दोख दहे,
चित में नित होव न मोख[3] चहे ॥३०॥
रसनामृत सार सु सत्य रटे,
कलि काल कराल कुचाल कटे।
थिर है हिन वंचित धाम थटे,[4]
अन इच्छत गांम हिं गांम अटे[5] ॥३१॥
निज रोस रु ध्वेस[6] सें काम नहीं,
उर[7] हांम[8] आरांम हरांम नहीं॥
गरबे[9] स्तुति निन्द समांन गिनें,
हरवे[10] न बनें नहिं विन्द[11] हनें ॥३२॥
गति ज्ञांन 'विज्ञांन गुनागर वहे,
सत्य ध्यान विधान सुसागर वहे।
बसु[12] आस निरास सुवास वसे,
लख खास विनास उदास लसे[13] ॥३३॥
तन अञ्जन मञ्जन बास तजे,
भय भञ्जन स्वास उसास भजे।

१—मर्यादा। २—आस्तिक। ३—मोक्ष। ४—स्थापित करना। ५—घूमते हैं। ६—द्वेष। ७—हृदय। ८—स्त्री का विलास। ९—गम्भीर। १०—हल्का, नीच। ११—वीर्य। १२—धन। १३—शोभित।

दृग देख दया उपदेस दिए,
निर बाह बिसेसन सेस लिये ॥३४॥
थिन[1] दाहन[2] मेलन[3] थेलिय को,
चेत चाहन चेलन चेलिय को।
लुब[3] लायन[4] पाय[5] पुजाबन की,
सुभ राय सु न्याय सुभावन की ॥३५॥
बन बिन्दन गायन बच्छि बहे,
उनके सुन निन्द सु अच्छि बहे।
तपु ताप तपेरु अतिन्द्रिय है,
जपु जाप जपेरु जितिन्द्रिय है ॥३६॥
किल कंचन कांमनिं त्याग करे,
धन संच प्रपंच न रंच भरे।
तज स्वाद फिरे महि[7] तारन कों,
निरखे नहिं नैंनन नारन कौं ॥३७॥
महि मित्र अमित्र मरे मरनीं,
भर पाव पवित्र करे धरनीं।
विरदाय[8] बड़े सतियां बरनी,
कहि जाय नहीं जिनकी करनीं ॥३८॥

१—स्थिर । २—गहरी इच्छा । ३—इकट्ठा करना । ४—लोभ । ५—हृदय की आग । ६—पाँव । ७—पृथ्वी । ८—रीझा कर ।

सुरनायक[1] सेव्य समृद्धि वहे ।
बल वायक[2] तें बज वृद्धि वहे ।
नव नैंनन में नव निद्धि वहे,
सब हाजर रिद्धिय सिद्धि वहे ॥३९॥
बुध व्याधिय आधि उपाधिय में,
सुध लाधिय[3] सुन्य समाधिय में ।
निरभै तन रोग वियोग नहीं,
सुपनें मन संसय सोग नहीं ॥४०॥
करुना कर आकर कीरत के,
धर्म चाकर ठाकर धीरत के ।
जक नाद रु बिन्द धरे जब वे,
बकवाद रु निन्द करें कब वे ॥४१॥
बपु[4] वार विचारन व्हे वस में,
दिलदार सु द्वार वसे दस में ।
हिय में जिन हेल हमेल नहीं,
जिय में जिन कामनि केल नहीं ॥४२॥
धव के धवि वे धन धूर धरे,
कवके भवके भ्रम दूर करे ।
भव बन्धन कां भक भूर करे,
चय[5] संसय कां चक चूर करे ॥४३॥

१—इन्द्र । २—वचन । ३—मिलना । ४—शरीर । ५—समूह ।

जुरती[1] नहिं आवन जावन की,
फुरती नहिं रांड फँसावन का।
परवाह न पाट पटम्बर को,
अध चाह सु कम्बर[2] अम्बर की॥४४॥
नित भूधर[3] सीत निवारन कां,
धिन जे गल गूदर[4] धारन कां।
करले धर लैर कमंडल की,
महिमां हरले महि मंडल की॥४५॥
खिज खाज न भोजन खोजन की,
मिज मानिय भिच्छ न मोजन की।
छिय चन्त उदन्त दिगन्त छये,
भल सन्त महन्त अनन्त भये॥४६॥
मन दे मरजीवन[5] के मग में,
जन जीवन मुक्त फिरे जग में।
फरियाद हिये धरले फिरले,
बस वे जन हैं सरले विरले॥४७॥
रखिये चित संपति राखन में,
लखिये इकछे त्रिण लाखन में।

१—जरूरत। २—गर्म ऊनी कम्बल। ३—पहाड़। ४—गूदड़ी। ५—जीवन मोक्ष, जो जीवन काल मे ही वैराग्य के कारण मरे हुए के समान विचरे।

सरणागत हैं हम सन्तन के,
अरिरूप[1] अनूप असन्तन के ॥४८॥
गिरगें हम ज्यूँ नहिं ओर गिरे,
घिरगे हम ज्यूँ नहिं ओर घिरे।
तिरगे हम ज्यूँ तस और तिरे,
फिरगे हम ज्यूँ अस ओर फिरे ॥४९॥
भल साध सदा सुख भेटन कों,
फिर फोटन[2] देवन फेटन कों।
भ्रम भञ्जन कों भलभक्क भरयो,
कवि ऊमर त्रौटक छन्द करयो ॥५०॥

दोहा

कहणी प्रभु रीझे न कछु, रहणी[3] रीझे रांम।
सुपनें की सौ म्होर सूँ, कोड़ी सरे न कांम ॥ १ ॥
कईही[4] छांनीं[5] कानी में मानी नहीं महाराज।
चांनी[6] पड़ी विवेक में, आनां कांनी आज ॥ २ ॥

१—शत्रु समान। २—धृष्टों को। ३—शुद्ध आचरण। ४—कही। ५-गुप्त। ६—राख।

श्री हरिरामदासजी रो सुजस

(छन्द मोती दाम)

सदा शुभ सीथल[1] धांम सुथांन,
		स्वरालय शंकर धांम समान।
बली[2] वल वाणिज वाट विराट,[3]
		हुई हर रांम हरो जन हाट ॥१॥
हरी निज चीज धरी निज हाथ,
		समृद्धिय ऋद्धिय सिद्धिय साथ।
भरे भरपूर कुवेर भंडार,
		दयानिध दोसत के दरबार ॥२॥
गुमुडै गरिमादिक ग्यान गुनाढ्य,
		रुड रुड त्रंबक ध्यान धनाढ्य ।

१—बीकानेर राज्य में रेलवे स्टेशन नापासर से कोई ६ मील पर यह गाँव है । २—रकम । ३—बहुत बड़ा ।

हरिरामदासजी—यह जोशी ब्राह्मण थे। इन्होंने सं० १८०० वि० में रामानन्दी वैष्णव साधु चरणदास के चेले महात्मा जयमलदास (दुलचासर जिला बीकानेर) से दीक्षा ली, और सं० १८३५ चैत्र सुदी ७ शुक्रवार (ता० ३-४-१७७८ ई०) को स्वर्गगामी हुए। इनकी पाट गादीगाँव सीथल में है । खैड़ापा रामसनेही पथ के आदि गुरु तपस्वी महात्मा रामदास इन्हीं के चेले थे।
—प्रकाशक

वृबै वसुधा विन व्याज विचित्र,
महाजन पुन्य जनेस्वर मित्र ॥३॥

वृथा सब से वधि पद्ध विधांन,
नवों निधि है नहिं नांम समांन।
विना श्रम बैठत व्योम[1] विमांण,
जनार्दन प्रेरकं पुष्पक[2] जांण ॥४॥

जपे जगदीश सजीवन जुक्त,
महा धन जे जन जीवन मुक्त।
असन्तन जांणत अन्ध अजांण,
सनातन जांणत सन्त सुजांण ॥५॥

रसा[3] सुर सूगति में सुख रास,
दसा मिलगो गुरु जेमलदास।
सदा चित चैंन हरी पद सेव,
दया कर सेन करी गुरुदेव ॥६॥

दई सुर दुर्लभ मानव देह,
अई सिख वारम्वार न एह।
नहीं थिर देह न गेह न नेह,
सही थिर थप्पहु रांम सनेह ॥७

१—आकाश। २—एक अद्भुत विमान। ३—ज़मीन।

अनांकर साकर आखर अन्त,
भलो भव भाग भजे भगवन्त।
भजे नहिं मूरख जे भगवांन,
सही नर शूकर[1] श्वांन[2] समांन ॥८॥

सखा जगमें सतसंगत सार,
विनां सतसंग न ब्रह्म विचार।
धरा सतसंग विनां नहिं ध्यांन,
विनां सतसंग न ज्ञान विज्ञान ॥९॥

रहे सतसंग हरी अनुराग,
विनां सतसंग न त्याग विराग।
सदा सतसंगत लच्छण सोख,
असद्गुरु सद्गुरु लच्छण ईख[3] ॥१०॥

जरे मनसा मथणी मथ जांण,
करे कथणीं कथ के गुजरांण।
कुजीव कुसंग कहां कुसलात,
विजोगण[4] पीव सजोगण[5] बात ॥११॥

१—सुअर। २—कुत्ता। ३—देखना। ४—वियोगिनी।
५—संयोगिनी।

प्रभू प्रणतारत[1] पेखंत प्रेम,
नहीं निगमागम[2] देखत नेम।
थके मन वाणिय आतम थान,
महागुरु मंत्र महातम[3] मान ॥१२॥
महातम ध्येय रती नहिं गम्य,
गती निगमागम गेय अगम्य।
अलौकिक लौकिक सार असार,
हरो जन जांणत जांणणहार ॥१३॥
अजौणिय[4] जौणिय जाणिय ईश,
सुरासुर स्वांमिय कों धर शीश।
नरोत्तम उत्तम तार नितार,
चराचर चिन्तनहार चितार[5] ॥१४॥
निरन्तर अन्तर में निज नाथ,
स्वयं धर ध्यांन धनन्तर साथ।
जरा रिपु भेषज के ढिग जाय,
महाजन जांमण मर्ण मिटाय ॥१५॥
वधा वपु जाहिर पथ्य विवेक,
अनर्गल बाहिर भीतर एक।

१—शरणागत दुखिया। २—वेद शास्त्र। ३—गौरव, बड़ाई। ४—अयोनि। ५—याद करना।

विनां दुखभंजन नीच विहार,
निरंजन अंजन बीच निहार ॥१६॥
अतिक्रम[1] विक्रम त्रिक्रम आस्य[2],
अछेक अनेकन अंक उपास्य।
बराबर दीस दिगंतर बाह्य,
अगोचर गोचर गीसि[3] अग्राह्य[4] ॥१७॥
अनामय[5] अव्यय[6] अक्षय आथ[7],
निरामय निर्भय नाथ अनाथ।
अनूप स्वरूप निरूप अलेख,
निरूपम भूप न रूप न रेख ॥१८॥
नृभै नद आस न आस निरास,
बस्यौ हरिराम अभै पद वास।
दुरासद[8] मारन आस दुकाल,
सुधा झड़ि बारह मास सुकाल ॥१६॥
सदा क्षणभंगुर जांण शरीर,
सखा सुखसागर सूं कर सीर[9]।
हिये धर नाम अमोलक हीर,

१—लांघना। २—मुख। ३—वाणी, सरस्वती। ४—जो ग्रहण करने न में आवे। ५—नीरोग। ६—अविनाशी। ७—धन। ८—कठिनता से वश में आने वाला। ९—चालू हिस्सा।

विश्वम्भर सम्बर[1] बांधव वीर ॥२०॥
तुरातुर[2] नीसरजा भवतीर,
विषे विष बीसरजा बरवीर ।
हमें गुरु वायक[3] मां बुधहार,
सभे निज नायक को सुध सार ॥२१॥
मनी मन मांह रकार मकार,
लगा धक धूंनन की ललकार ।
स्वभाविक ज्ञान गरीविय साज,
नमो पद राम गरीव नवाज ॥२२॥
पिता मह नामहिं नांम प्रचार,
अहर्निश[4] रांमहिं रांम उचार ।
महाशय आशय नासय मूढ,
गहो गुरु शब्द गिराशय गूढ ॥२३॥
गुरू गम अन्तर में गलतांन[5],
धर्‍यो हररांम निरन्तर ध्यान ।
तपी तपतें सुरता इकतार,
धपी रसनां रस अमृतधार ॥२४॥
बध्यो बल धी गल कंज[6] विकाश,
प्रभा परिपूरण प्रेम प्रकाश ।

१—सहारा । २—जल्दी जल्दी । ३—वचन । ४—रात-दिन ।
५—तल्लीन । ६—कमल ।

इदे हुय नांम हली[1] हमगीर[2],
सवी रग रोम खुली सुख सीर ॥२५॥
लग्यो मग मांह जलंधर लीण,
पग्यो पुरुषारथ मेरु प्रवीण।
युंही खट चक्कर भेद अघाव,
पक्के त्रिपुटी तुरिया[3] पद पाव ॥२६॥
अजीत लगी जिय जोग अगाध[4],
सुजीत लगीं धुन ध्यांन समाध।
समाधिय में सब साधन सिद्ध,
पराप्त[5] व्हे परब्रह्म प्रसिद्ध ॥२६॥
सिली[6] सुरता[7] घस सिद्धि[8] सँमंद्ध[9],
पिली[10] प्रभुता वस बुद्धि प्रवंद्ध।
हिली जुगती जस वार हजार,
मिली मुगती दश द्वार मंझार ॥२७॥
परीणत[11] स्वास उसास प्रभाव,
प्रिया प्रिय पास पलोटत[12] पाव।
रमैं रस रास विलास सुरंग,
परस्पर प्रीतम प्रीत प्रसंग ॥२८॥

१—चली। २—साथ वाली। ३—योग की चौथी अवस्था। ४—बेशुमार। ५—प्राप्त, पाना। ६—औजार तेज करने की पत्थर की पटरी। ७—ध्यान की वृत्ति। ८—मोक्ष। ९—सम्बन्ध। १०—घुसी। ११—बदलना। १२—दाबना।

व्यथा विरहाग[१] वियोग विहाय,
सवागण[२] भाग संयोग सुहाय।
अनाग्रह[३] भुल्लित[४] आंन उपाय,
प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय ॥२६॥
सही सुख जोत हि जोत समाय,
रही नहिं अन्तर में अँतराय।
करे निज हंस दुहूं निज केल,
मिल्यो परमातम आतम मेल ॥३०॥
तज्यो त्रिगुणातमको त्रक[५] तंग,
सज्यो निज स्वांमिय सेवक संग।
उदे हुए पूरब पुण्य अँकूर,
दुरी दुबधा[६] दुख दालद दूर ॥३१॥
समापत भोग न रोग न सोग,
जपन्त निकेवल केवल जोग।
प्रत्यागम[७] भो लिव भक्ति प्रदीप,
समागम सो शिव शक्ति समीप ॥३२॥
क्रतू[८] करुणा मय ध्रू[९] करतार,
भणों[१०] भवभाजन भू भरतार।

१—विरह की अग्नि। २—सौभाग्यवती। ३—विना अनुरोध। ४—भूला हुआ। ५—तर्क। ६—खींचतान। ७—पुन जन्म, ८—पुण्य। ९—निश्चल, ध्रुव। १०—कहना।

उधारक धारक लोक अशेष[1],
सुधारक तारक शेष विशेष ॥३३॥
स्वभाविक सास्वत स्वच्छ स्वरूप,
अनिच्छ अभिच्छ[2] प्रतच्छ अनूप।
अधोक्षज अक्षज आद न अन्त,
अखंड प्रचंड अनादि अनन्त ॥३४॥
अनन्त पराक्रम तेज अनन्त,
अनन्त हि वीरज ओज अनन्त।
महा बल सागर मेह मुदार[3],
उजागर[4] नागर[5] नेह उदार ॥३५॥
न गोचर[6] रूप न रंग न रेख,
अगोचर अमृत कूप अलेख।
थिरा[7] नभ[8] थावर[9] जंगम[10] थांन[11],
महा पद आपद[12] मांन अमांन[13] ॥३६॥
प्रभाकर[14] प्राणिय मातर[15] प्रांण,
विभाकर[16] वांणिय ते निरवांण[17]।

१—तमाम। २—यांचना रहित। ३—अगुआ। ४—प्रसिद्ध। ५—चतुर। ६—इन्द्रियों से जाननेयोग्य। ७—पृथ्वी। ८—आकाश। ९—न चलने वाले जीव। १०—चलने वाले जीव। ११—स्थान। १२—दुःख। १३—अपमान। १४—सूर्य्य। १५—मात्र; तमाम। १६—चन्द्रमा। १७—मोक्ष।

अचंभ लस्यो[1] परचे[2] घट एह.
बस्यो हरराम स्वदेश विदेह ॥३७॥
जठे[3] जम काल जरा नहिं जोर,
घुरे घट नाद[4] अनाहद घोर।
दुरास[5] दुमार[6] न आस[7] दुकाल,
सुधा[8] जल बारह मास सुकाल ॥३८॥
अनंग[9] न अंग उमंग[10] इलोल[11],
हरी पद संगम गंग हिलोल[12]।
निरालिय[13] नीति उदंगल[14] नांय,
मुनी किय मंगल जंगल मांय ॥३९॥
नमो हरिराम नमो निज नाम,
गुरू हरिराम नमो गृह गाम।
मही हरिराम नमो जिन मात,
पिता हरिराम नमो धिन पाथ[15] ॥४०॥
प्रभू हरिराम नमो बल पास,
विभू हरिराम नमो थल[16] बास।

१—शोभित हुआ। २—चमत्कार, परिचय। ३—जहाँ। ४—आवाज। ५—बुरी इच्छा। ६—पानी का अकाल। ७—पीड़ा। ८—अमृत। ९—कामदेव। १०—उत्साह। ११—बाद। १२—हिलोरे, धारा। १३—निराली। १४—उत्पात। १५—रास्ता। १६—रेगिस्तान।

नमो हरिराम नमो हरिराम,
हरोहर ब्रह्म समो हरिनाम ॥४१॥
अधा सुपने सुख संपति सोइ,
कृपा हरिराम बिना नहिं कोइ।
सुनूँ हरिराम गुनूँ[1] किय साफ,
महाप्रभु मांगत आगन माफ ॥४२॥
समै कुसमैं सुर सारत सार,
पुकारत आरत बंत[2] पुकार।
सुखी करिये अति आप समान,
दुखो शरणागत ऊमरदान ॥४३॥

दयानन्द वन्दना

[पद राग भैरव-ताल चरचरी]

नमो स्वामी दयानन्द[3] दिव्य[4] ज्ञानदाता।
आर्य्य धर्म आप बिना हाथ नहीं आता ॥ नमो०टेर

१—कसूर। २—दुःखी। ३—इनका जन्म वि० सं० १८८१ (सन् १८२४ ई०) में काठियावाड़-गुजरात की मोरवी रियासत के टंकारा गांव में औदिच्य ब्राह्मण कृष्णजी (अम्बाशंकर) के घर हुआ। स्वामी शंकराचार्य (सं० ८४४-८७६ वि०) के बाद वेदों के महान प्रचारक यही माने जाते हैं। इन्होंने ही सर्व प्रथम सं० १९३२ चैत्र सुदि ५ शनिवार (ता० १०-४-१८७५ ई०) को बम्बई में और द्वि० ज्येष्ठ सुदि १४ रविवार सं० १९३४ (ता० २४-६-१८७७ ई०) को लाहौर में धार्मिक क्रान्तिकारी संस्था "आर्यसमाज" की स्थापना करके भारतवर्ष में हिन्दू संगठन की नींव जमाई। ४—चमत्कार पूर्ण।

वेद ध्वनी हाट बाट, दुष्टन के थाठ[1] दाठ[2],
कलियुग को काट. जुग मत्य ना सुझाता ॥नमो०१
कुल को बनतो कुठार. बंस को देतो बिगार,
चारन[3] वरन चारु[4], छार[5] में छिपाता ॥नमो०२

१—समूह, थोक। २—उपटना, दबाना। ३—राजपूताने में यह जाति राजपूतो को याचक है जो उनके यशको कविता रूप में प्रकट करती है और ख्यात (इतिहास) पीढियां भी बताती है। ये कुल चार हिस्सो में विभक्त है। (१) मारू, (२) काछेला या परजिया, (३) सोरठिया, और (४) तुम्बेल। देश भेद से ये नाम हुए है। मारवाड़ यानी राजपूताना. मालवा व सिंध मे रहनेवाले चारण "मारू चारण' कहलाते हैं, कच्छ देश के काछेला, सौराष्ट्र यानी काठियावाड़ के सोरठिया और ऐसे ही तुम्बेल जो जामनगर की तरफ बड़ी संख्या मे है। मारवाड़ में इनके एकसौ बीस गोत हैं इससे चारणो की बिरादरी बीसोतरा या बीसोत्रा भी कहलाती है। ये लोग अपने को देव ऋषि (देवयोनि) की सन्तान और पहिले स्वर्ग (वैकुण्ठ) ही मे रहना बताते है। महाभारत के अनुसार स्वर्ग से मुराद शायद हिमालय पार त्रिविष्टप (तिब्बत) और उसके पास के देश से हो और सम्भव है इनका असली स्थान वहां हो। मारवाड़ी भाषा की कविता जो डिंगल कहलाती है उसी मे ये लोग अपनी रचना करते हैं। डिंगल (असंस्कृत) बोली का साहित्य ८वीं सदी का मिलता है और ७वीं सदी के महाकवि बाण भट्ट के प्रसिद्ध "कादम्बरी" ग्रंथ में भी इस जाति का वर्णन है। ज्ञात होता है उस समय भी चारणों के गीत और ख्यात प्रचलित थे और इनकी संस्कृत के कवियो (ब्रह्मभट्टों) से प्रतिद्वन्द्विता होने लग गई थी (देखो नागरीप्रचारिणीपत्रिका भाग १ अंक २ पृ० २३१ नया संस्करण सं० १९७० वि०)। ४—अच्छा, सुन्दर। ५—राख।

व्याहृती गायत्री, वृनी, धारत नहीं धर्म धृती,[1]
श्रुती श्रो स्मृती सरब धूर में घसाता ॥नमो०३
बकतो मैं बाद बाद, बूझन करतो विवाद,
सीतलप्रसाद सर्ब जात को जिमाता ॥नमो०४
राधिका कृष्ण रास, वृन्दावन व्रजविलास,
गिनका गज अजामेल[2] गीध[3] पद गाता ॥नमो०५
राम नाम रंग रिल,[4] कामनि कुसंग किल,
मोडन[5] के संग मिल, माजनो[6] गमाता ॥नमो०६
छत्री कुल धर्म छेक, कायर कर देत केक[7] ,
टारत[8] नहिं एक टेक, पाव को पुजाता ॥ नमो०७
भामनि[9] निज छोड़ भोग, परदारा मनका प्रयोग,
जानता नहिं जुगति जोग जन्म हार जाता ॥नमो०८
कुलको वह स्वधीन और ठगके अधीन,
ऊमरदान महादीन लालस[10] लुट जाता ॥ नमो०९

१—धीरज । २—एक पापी जिसकी भागवत में कथा है । ३—जटायु सं अर्थ । ४—मिलना । ५—बनावटी साधु । ६—प्रतिष्ठा । ७—कितने ही । ८—टालना । ९—स्त्री । १०—इस काव्य के रचयिता का यह गोत-अल्ल है ।

२

[पद राग कालिंगड़ा-ताल दीपचन्दी]

नहीं जग माला नीकी[1] रे,
जाला नहीं काटे जी की रे ॥ टेर ॥

धाड़ा[2] पाड़ कर रटके[3] धूरत भन पटके धरधूंस[4] ।
नटके[5] साधू बने निराला, सटके[6] माला सूंस ॥नहीं१
उर अन्तर में नहीं उजाला, ढाला ज्यांरा ढोर[7] ।
मिनखां[8] में फेरे ठग माला, चाला-गारा[9] चोर ॥नहीं२
ताला तोड़ करे मूँ काला, गाला[10] घाले[11] गूढ ।
भाला नेणां बाला[12] भोला, माला फेरे मूढ ॥नहीं०॥३॥
अपणी सरधा खोय अभागी, सपणी[13] आदत सोग ।
तपणी[14] पर बैठे तावड़िये,[15] जपणी[16] फेरण जोग॥४॥
परदारा सूँ फँस भी जावे, हँस भी जावे हेर ।
काम पड़े तब नस भी काटे, फेरे तसबी[17] फेर ॥नहीं॥५
धोला बुगला ध्यान लगावे, खावे मछियाँ खूब ।
पापी पल पल पाप कमावे, डबके जावे डूब ॥नहीं०॥६

१—अच्छी । २—डाका । ३—भागना । ४—जोरसे गिराना । ५—स्वांगी । ६—चट पट, तुरन्त । ७—पशु । ८—मनुष्यों । ९—चालाक । १०—खड्डा । ११—डालना । १२—अन-समझ बालक । १३—सर्पनी । १४—धूनी । १५—धूप । १६—माला । १७—माला ।

पाँच विषय सूँ इन्द्रिय पांचूं. जीत करो मन जेर।
मोज भरी मनवाली माला. फोज मुक्तरी फेर ॥नहीं॥७
दयानन्द स्वामी दरसायो. सुमरन मारग सार।
आठ पहर ऊमर उर अन्तर, लाग रही ललकार॥नहीं॥८

दयानन्द री दया

(गीत सावझड़ो)

अगहन मास कृतू[1] ग्यो आखो[2],
पो[3] त्रेताजुग वीतो पाखो[4]।
द्वापुर माघ महीनों दाखो,
रसा[5] सिधायो[6] आ चितराखो ॥१॥
हिम ते सिसहर रितू विहाई,
दह्यो वसन्त वात[7] दुखदाई।

१—सत्ययुग-हिन्दुओं की काल गणना के अनुसार ४ युग कृत, त्रेता, द्वापर और कलि हैं। सत्युग १७,२८,००० वर्ष का त्रेता १२,९६,००० वर्ष का द्वापर ८,६४,००० वर्ष का और कलियुग ४,३२,००० वर्ष का माना जाता है। तीन युग तो बीत चुके हैं और इस समय चौथा युग कलि का ५०३१वां वर्ष चल रहा है। सृष्टि संवत् (आर्य्यवत्सर) १,९६,०८,५३,०३१वां है। २—पूरा। ३—पौष मास। ४—पक्ष। ५—पाताल। ६—चला गया। ७—हवा।

ग्रीखम पावस सरद गहाई,
ए च्यारूं कलियुग में आई ॥२॥
मकर सक्रांयत बैठी मारी,
क्षत्रिन हित लागी अति खारी।
भू पर ब्राह्मण भये भिखारी,
हे प्रवेश करगी हतियारी ॥३॥
वेद दुसाला बालां बूढां,
राली कांमल[1] नांख्या[2] रूढां[3]।
ग्यांन पथरणों[4] धरियो गूढां,
मेली विद्या रजाई[5] मूढा[6] ॥४॥
लगतां फागण लूरां[7] लागी,
अड़े द्रोण[8] अरु द्रुपद[9] अभागी।
वीरां खाग[10] परस्पर वागी[11],
जिण सूं ज्वाल लड़ण री लागी ॥५॥

१—कम्बल। २—फैंकी, दूर डाली। ३—पुराने ढचरे वाले। ४—शैया में बिछाने का गदला। ५—रुईदार ओढ़ना, दोहर सिरख, लिहाफ जो जाड़े के दिनो मे ओढ़ने के काम में आती है। ६—मुँह पर, मूर्ख। ७—घूमरनाच। ८—यह भरद्वाज ऋषि के पुत्र और कौरव पाण्डवों के धनुर्विद्या के गुरु थे। ९—उत्तर पांचाल (रुहेलखण्ड) देश का चन्द्रवंशी राजा द्रुपद, जिसकी पुत्री द्रोपदी को स्वयम्बर सभा में मछली भेद करके अर्जुन ले आया था। १०—तलवार। ११—चलाई, चली।

भिड़े भीम[1] अर्जुण[2] कुरु[3] भारत,
गेहर-डांडियां[4] रम कुल गारत।
मरथो सुयोधन[5] गो भक मारत,
आर्य्यवर्त्त को करगो आरत ॥६॥
राज कर्म में पड़गी रोली,
मनू[6] मरम मरजादा मोली[7]।
भड़ी सरम फुलां री भोली.
हुयगी परम धर्म की होली ॥७॥
अस्त्र गुलाब अबीर उडायो,
सस्त्र पिचरका छिब सरसाया।
वीर नाद सोइ चंग बजायो,
रंग फाग सम जंग रचायो ॥८॥

१—चन्द्र वंशी राजा पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र जो अत्यन्त बलवान था। ये दूसरा पाण्डव था। मल्लयुद्ध में इसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। इससे दुर्योधन सदा भीम से जला करता था। २—यह तीसरा पाण्डव था। इसके बराबर धनुर्विद्या के पण्डित उस जमाने में कम लोग थे। महाभारत के युद्ध में स्वयं श्रीकृष्ण इसका सारथि था। इसके चार रानियाँ थीं। द्रौपदी, सुभद्रा, चित्राङ्गदा और पाताल देश (अमेरिका) की कौरव्य नामक नाग की पुत्री उलूपी।३—दिल्ली के पास थानेश्वर का मैदान जहाँ कौरव पाण्डवों का युद्ध आज (विक्रमी संवत् १९८६) से ५०३१ वर्ष पहले हुआ था। ४—रास के ढग पर एक नाच। ५—यह अन्ध राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र था। जो महाभारत युद्ध में कौरव दल का नेता था। ६—मनु महाराज। ७—मन्द।

चलतां चेत बांम—मग[1] चाल्यो,
घाव सधर[2] बेदां पर घाल्यो।
अश्वालम्ब[3] गवालम्ब[4] आल्यो,
झटके गधो सीतला[5] झाल्यो ॥६॥
जैन बांम मचिया बडजोरां,
गहरे सुर आई गिणगोरां[6] ।
छित पर मिल मिल छोरयां छोरां,
करदी सांभी च्यारूं कोरां ॥१०॥
चोरां जुगती कुगती कीनीं,
भोग भोगणों घण[7] सुख भीनीं।
कपटी दरसण मूरत कीनीं,
दिव्य धर्म बोलावणि[8] दीनीं ॥११॥

१—बाममार्ग, कूंडापंथ । २—गहरा । ३—घोड़ो का आधार । ४—गौ सेवा । ५—चेचक, शीतला माता। ६—राजपूताने का एक बड़ा त्यौहार जो चैत्र सुदि ३ को मनाया जाता है। ये त्यौहार ईश्वर (महादेव) और गौरी (पार्वती) के गौने (मुकलावा) का सूचक है, या शायद मुद्रा राक्षस आदि नाटकों में "वसन्तोत्सव" के नाम से जो उत्सव वर्णित है उसीने "गणगौर" का रूप धारण कर लिया हो। (देखो इतिहासवेत्ता कुँवर जगदीशसिंह गहलोत द्वारा सम्पादित "मारवाड़ के ग्रामगीत" पृ० ५७)। ७—खो। ८—बंद करना, गणगौरत्यौंहार के बाद ईश्वर व गौरी की काठ मूर्तियों को वापिस घर भीतर रखने के उत्सव को "बोलावनी" कहते हैं।

वैसाखां में विलखा वांमी,'
हुयगा सवला जैन[1] विरामी[2] ।

१—हिन्दुओं के २४ अवतारों में जो ऋषभदेव हैं वे जैन-धर्म के प्रथम तीर्थङ्कर (महान पुरुष) हैं और महावीर स्वामी उनके अन्तिम (२४ वें) तीर्थंकर थे। वेद का "अहिंसा परमो धर्म" वाक्य इस मत का मूल मंत्र है। इसके अधिक अनुयायी कभी नहीं हुए और न भारतवर्ष के बाहर इसका प्रचार हुआ। जर्मन विद्वान् डा० जैकोवी ने पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर को ही जैनधर्म का मूल जन्मदाता माना है जो ईसामसीह से पूर्व ८ वीं सदीमें हुए हैं। इसमें दिगम्बर और श्वेताम्बर दो सम्प्रदाय हैं। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के स्थानकवासी (बाईस टोला—ढूंढिया) और तेरह पन्थी लोग मूर्ति को नहीं पूजते हैं। जब जैन यति (साधु) गृहस्थों के से कार्य करने लग गये तब अहमदाबाद के लूँकाशाह जैन ने उनमें से फटकर १५ वीं शताब्दी में यह बाईस टोला पंथ चलाया। इस शाखा के प्रचारक साधु २२ होने से ही यह नाम पड़ा है। इस पंथ के साधु मुँह पर मूँमती (पट्टी) बाँधे रहते हैं। इसी २२ टोला पंथ से अलग होकर सं० १८१७ आषाढ़ सुदि १५ शनिवार (२८-६-१७६० ई०) को कंटालिया के भीकमजी वैश्य ने यह तेरह पंथ चलाया है, जिसके उपदेश निराले ही हैं। (देखो मर्दुमशुमारी राज मारवाड़ सन १८९१ ई० के वक्त में बना सरकारी "मारवाड़ की कौमों का इतिहास" तीसरा हिस्सा पृष्ठ २६० और जैन-पथ प्रदर्शक पत्र वर्ष १२ संख्या ४० पृष्ठ ७ सन् १९३० ई० आगरा)। २—विश्राम।

आखातीजां घणों अमांमी,
सिद्ध जन्मियो शंकर[1] स्वामी ॥१२॥
वेद धर्म सद् सुकन[2] बतायो,
अमल[3] नयो वेदान्त अचायो।
प्रीत नीत गलवांणी[4] पायो,
खण्डण जैन खीचड़ो[5] खायो ॥१३॥
शंकर बेगो[6] गयो सिधाई,
परजा दुखी घणीं पिछताई।
मारग लूवाँ[7] लपट मचाई,
अब ऊपर तिस[8] मारी आई ॥१४॥
तपै भूम अम्मर[9] हुय ताता[10],
मुरझाई भगती पितु माता।
बागी[11] झाट[12] पिछम दिस बाता,
वंक[13] हुवो सब देस विंघाता ॥१५॥

१—इनका जन्म दक्षिण के जिला मालाबार के गाँव कालपी में वि० सं० ८४४ (स० ७८७ ई०) में नाम्बूद्री ब्राह्मण कुल में हुआ था। बड़े बड़े उत्कट जैन व बौद्ध विद्वान् इनकी विद्वत्ता के सामने न ठहर सके और चारों तरफ वैदिक धर्म गूंज उठा। सं० ८७६ विक्रमी में केदारनाथ पर्वत के समीप ३२ वर्ष की आयु में इनका स्वर्गवास हुआ। २—शकुन, वर्ष का भविष्य देखना। ३—अफीम। ४—गुड़ की राब। ५—खिचड़ी। ६—जल्दी। ७—लूएँ, गर्म हवा। ८—प्यास। ९—आकाश। १०—गर्म। ११—चली। १२—झपट। १३—उल्टा।

तर[1] धर सूका नदी तड़ागा,
लाज धर्म विद्या मग लागा।
आरज[2] हंसा उडगा आगा[3],
कपटी दादर[4] रहगा कागा[5] ॥१६॥
संप[6] सु झरणां गया सुकाई,
लोक लोक सुभरीत लुकाई।
झप्य अंगमल अम्ब झुकाई,
कोचर[7] कंठ कुसम्प कुकाई ॥१७॥
सील सन्तोष शूरता सारा,
तूटण लग दिवस में तारा।
खूटा नीर निवांणां[8] खारा,
चोपायां घर मिले न चारा ॥१८॥
भूमि मांझ धसगो जस भोगो,
साच सु हस्ती ससके सोगी।
दांन ऊँट रे लागी दोगी,[9]
जांण अजांण सोइ थाको जोगी ॥१९॥
जाचक हिरण तिसाया[10] जावे,
पुन्न नीर सुपनें नहिं पावे।

१—वृक्ष । २—आर्य्य धर्म्म (वैदिक)। ३—दूर । ४—मैंढक । ५—कौआ । ६—मेल, एकता । ७—पक्षी विशेष जो उल्लू के बच्चे जैसा होता है । ८—जलाशय । ९—पीड़ा । १०—प्यासे ।

धर जिग्यासू दस दिस धावे,
मृग त्रिसणां गुरु लख मुरझावे ॥२०॥
चौर गुरू बिच्छू चटकावे,
ग्यांन राव[1] विरला गटकावे।
भेक छाछ कारण भटकावे,
लुचा वागल[2] ज्यूँ लटकावे ॥२१॥
पंखें सम सज्जन कोई पावे,
हेत प्रीत सोई पवन हलावे।
छिमा गुलाब नीर छिड़कावे,
पितु वट[3] छाया कोईक पावे ॥२२॥
सन्त संगत सुर बाग सुकायो,
मिले कहूँ बलियो[4] मुरझायो।
ठंडो जल नहिं ठरे ठरायो,
भूले ज्ञांन सुख्यों मन भायो ॥२३॥
आई उमड अविद्या आंधी,
च्यार वर्ण चडगी चख चांधी।
विरचा[5] धजा तूटगी बांधी,
सदाचार री सँधे न सांधी[6] ॥२४॥

१—रबड़ी २—एक पक्षी जो उल्टा लटकता है। ३—बरगद वृक्ष। ४—जला हुआ। ५—वृक्ष। ६—जोड़ी हुई।

कविजन वृन्द[1] कँवल कुमलाया,
गीत कुकवि जणु स्यालां[2] गाया।
मूरख भगतां[3] सोर मचाया,
काली रात जरख[4] कुरलाया[5] ॥२५॥
ओ ऊपर ऊनालो[6] आयो,
दीन जनां दोरो[7] दरसायो।
पांणी ज्ञान कोई नहिं पायो,
कूके लोक हुवो अति कायो[8] ॥२६॥
उर अन्तर में करुणां आई,
सारे देस करण सुख दाई।
मिन्दर तीर्थ पोवां[9] मंडाई,
खर पावे खारो जल खाई ॥२७॥
च्यार सम्प्रदा जिण हित चाली,
प्रगट हुई ज्यूं झांझी पाली।
महिला नीर भरण नें म्हाली,
खारो जल ऊंडो तल खाली ॥२८॥

१—टोला। २—सियार, गीदड़। ३—भक्त। ४—गदहा के कद का एक जंगली जानवर। ५—चिल्लाना। ६—उष्ण काल, गर्मी के दिन। ७—कठिन। ८—तंग होना। ९—प्याऊएँ।

वल्लभ[1] कूप खिणायो[2] बेड़ो,[3]
भरियो नीर भिरावो भेड़ो।
नींबे[4] तलो निकाल्यो नेड़ो,[5]
जिण रो आव[6] नांव रें जेड़ो[7] ॥२६॥

१—इनका जन्म वि० सं० १५३५ बैसाख बदि ११ सोमवार (ता० ३०-३-१४७८ ई०) को चंपारन-सारन के पास चौंरा गाँव मे हुआ, जब इनके पिता तैलंग ब्राह्मण (लक्ष्मणभट्ट) दक्षिण से काशी में जा बसे थे। ये श्रीकृष्ण को विष्णु का अवतार मानते थे। इस मत के अनुयायी अधिकांश भाटिया हैं। जैसलमेर में यादव वंशी राजा भाटी सं० ६८० वि० के आस पास हुआ है। उसके वशधर यादव के बजाय "भाटी राजपूत" कहलाये। शायद इन्हीं भाटी राजपूतों मे से मुसलमानी काल में भाटिया वैश्य बने है। वल्लभ स्वामी के दो पुत्र थे, गोपीनाथ और विट्ठलनाथ। गोपीनाथ का वंश नही चला। गोस्वामी विट्ठलनाथ के ७ पुत्र—गिरधर, गोविंद, बालकृष्ण, गोकलनाथ, रघुनाथ, यदुनाथ और घनश्याम थे। जिन से ७ गादियें हुई और इनके वंशधर गोकुलिये गुसाँई हैं। वल्लभाचार्य का देहान्त काशी में सं० १५८७ आषाढ़ बदि २ रविवार (ता० १२-६-१५३० ई०) को हुआ था। २—खुदाया। ३—दो घड़े, दुहरा। ४—ये १६वीं शताब्दी के अंतिम भाग मे हुये हैं। वैष्णवों की चौथी सम्प्रदाय के यह जन्मदाता थे। इनके केशव और हरिव्यास नामक दो शिष्य थे। ५—नजदीक। ६—पानी। ७—जैसा।

माधव[1] साधन अरठ मंडायो,
खारो मुख ले घणो खिडायो[2]।
छाक[3] पियो जिण पेट छुडायो,
भारी पाणी जन्म भंडायो ॥३०॥
शंकर सागर हुयगो सुरड़ा,[4]
करण मिले नहिं पांणी कुरड़ा[5]।
चोभ[6] मांय ठहरे नहिं चुरड़ा[7]
जिण री पाल़ पड़े दस दुरड़ा[8] ॥३१॥
दस-नांमी[9] दस हूँ दिस दोड़े,

१—वेदों के भाष्यकर्त्ता सायणाचार्य के बड़े भाई जो दक्षिण में पम्पा नगरी में जन्मे थे। ये विजयनगर के राजा बुक्कराय के कुलगुरु व मुख्य मंत्री थे। सं० १३६० वि० में इन्होंने संन्यास लिया। ६० वर्ष की आयु में ये स्वर्ग को सिधारे। इन्होंने पाराशर संहिता का भाष्य लिखा और वैष्णवों की दूसरी सम्प्रदाय चलाई थी। २—चलायो। ३—खुश होकर ४—वेशर्म। ५—कुल्ले। ६—तालाव का वीचला भाग। ७—चुल्लू। ८—खड्डे। ९—ये संन्यासियों का एक भेद है। इस फिर्के में भी १० भेद और हैं। जो जिस भेद का होता है वह अपने नाम के अन्त में उस भेद का सूचक तीर्थ, आश्रम, वन, आरन्य, गिरी, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती, और पुरी शब्द जोड़ लेता है। इस १० भेदों के संन्यासी गुसाँई, स्वामी, महापुरुष और अतीव भी कहलाते हैं। यह सब शिवजी को मानते हैं। घरवारी और नागे दोनों यह होते हैं। संन्यास आश्रम की पुरानी लीक पीटने को गृहस्थ भी अपने मुर्दे को गाड़ते हैं। और सिखासूत्र भी नहीं रखते।

थल खोसे[1] धापे नहिं थोड़े ।
मोसे[2] परजा वेगे[3] मोड़े,[4]
ग्यान ध्यान सब धस्यो गपोड़े ॥३२॥
रामांनुज[5] रिद्[6] गुपत रखावे,
सिड़ियो[7] नीर वास सरसावे[8] ।
मांहिं सिंवाल[9] जाल नहिं मावे,
पैसे बिन छांटो[10] नहिं पावे ॥३३॥
महावीर[11] गोतम[12] मुख मोड़ी,
चौतीणों[13] खिणियो मिण चौड़ी ।

१—छीनना । २—फँफेड़े । ३—जल्दी । ४—देर से । ५—इनका जन्म मद्रास (दक्षिण) से २६ मील की दूरी पर गाँव परम्बधुरम (जिला चंगलपट) में सं० १०७४ वि० मे हुआ । इनके पूर्वज पहले क्षत्रिय थे बाद मे ब्राह्मण होगये । इन्होंने भक्ति मार्ग और वैष्णव पन्थ का प्रचार किया । पद्म पुराण में जिन चार प्रसिद्ध सम्प्रदायो का नाम लिखा है; उस मे पहली सम्प्रदाय (रामानुज) के यही जन्मदाता थे । इनका देहान्त स० ११६४ वि० मे हुआ है । ६—जलाशय । ७—सड़ा हुआ । ८—फैलाव । ९—काई, जल-मैल, नील । १०—बूँद । ११—जैनियों के अन्तिम (२४वें) तीर्थङ्कर (महापुरुष) थे । जैन ग्रन्थों में इनको सात धनुप लम्बे लिखा है । इनका जन्म ईसा मसीह के छः सौ वर्ष पूर्व (B C.) माना जाता है । ७२ वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हुई । १२—भगवान् महावीर तीर्थङ्कर के बड़े शिष्य । १३—जिस कुएँ में एक साथ बैलों की चार जोड़ियों से पानी खींचा जा सकता हो ।

जैनी खाड चिड़ी पट जोड़ी,
मोत हुवे सो जाय मकोड़ी[1] ॥३४॥
बापी[2] पाव कबीर बणाई,
चोखी ईंटां पकी चणाई।
मूरख मिल ना रखी मणाई,[3]
घुस खर गिंडक पियो घणांई ॥३५॥
पालर[4] ठंडो जांभ[5] पायो,
स्वाद अनोखो घणों सरायो।
दया करी निज ताल दिखायो,
गया पाडिया जल गिदलायो[6] ॥३६॥

१—मकड़ी, कीट विशेष। २—बावड़ी। ३—कमी। ४—वर्षा का पानी। ५—इनका जन्म सं० १५०८ भादो बदी ८ शुक्रवार (तारीख २०-८-१४५१ ई०) को बीकानेर राज्य के गाँव पीपासर मे परमार राजपूत कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम लोट्ठ था। सं० १५४२ मे पशु चराना छोड़ यह जनता को उपदेश देने लगे; और जाट, माली, गूजर आदि कृषक जातियो को अपने २६ उपदेश ग्रहण करा उनकी स्वतत्र नई जाति "बिसनोई" नाम से प्रसिद्ध कर दी। बिसनोई मादक वस्तुओ (तमाखू आदि) को छूना महा पाप समझते हैं, और इनमे से यदि कोई स्त्री पुरुप मुसलमान आदि हो जाता है तो उसे जांभाजी का प्याला (चरणामृत) पिला कर यज्ञ से शुद्ध कर लेते हैं और फिर उसके साथ कोई परहेज नहीं रखते। जांभाजी का स्वर्गवास मगसिर बदी ८ सं० १५८३ रविवार (ता० २८-१०-१५२६ ई०) को हुआ। ६—गन्दा किया।

दीन लोक ठहर्‌या कछु देरी,
घर हित घणी आनंद री घेरी।
फिरगो रतनागर[1] चहुँ फेरी,
विचरी वासा मीठी वेरी ॥३७॥
नानग सरवर भरियो नीको,
झुके लोग पीवण दे झीको।
ठगबाजी गादी रो ठीको,
फेर सिकां[2] कर दीनों फीको ॥३८॥
हरीदास रो नासज हूणों,
दादू[3] रो सारां सूं दूणों।

१—(रत्नाकर) समुद्र । २—सिक्ख लोग । ३—ये जयपुर राज्य के गांव नराणे के पिजारे थे। इनका जन्म सं० १६०१ वि० फागुण सुदि ८ (गुरुवार १६-२-१५४५ ई०) को और देहान्त सं० १६६० ज्येष्ठ सुदि ८ रविवार (ता० ८ मई १६०३ ई०) को हुआ था। ये मूर्ति पूजा, मन्दिर और मसजिद का विरोध करते थे। इनके पंथ के साधु दादूपंथी कहलाते है, जो घरबारी और नहग दोनों हैं। नहंग दादू-पंथियों की पहले जयपुर राज्य मे बड़ी सेना थी जो कई युद्धों में अच्छी लड़ी थीं। (देखो फारसी किताब "दबिस्तानुल मजाहिब" और "मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट" सन् १८६१ ई० पृ० २६०)

सन्तदास[1] रो हुयगो सूंनों,
आंतो पाणी पायो ऊंनों[2] ॥३९॥
रामचरण[3] पो[4] ऊपर रहियो,
सीत घांम[5] अपणें सिर सहियो।
कंठ सुं पांणी पांणी कहियो,
विललां भांग पिलायर[6] वहियो ॥४०॥
आछ रामदे पीवण अटकी,
दूभां नाभे[7] घाली भटकी।

१—ये रामस्नेही साधु छोटा नारायणदास के शिष्य थे। इनकी गादी मेवाड़ राज्य के गांव दांतड़ा मे है। इनका स्वर्गवास सं० १८०६ वि० में हुआ। २—गर्म। ३—इनका जन्म जयपुर मे बीजावर्गी वैश्य कुल में सं० १७७६ भादों सुदि १४ सोमवार (ता० १७-८-१७१९ ई०) को हुआ। सं० १८०८ वि० में ये साधु संतदास के शिष्य कृपाराम के चेले होकर शाहपुरा (मेवाड़) में जा बैठे। सं० १८५५ वैशाख में यह रामशरण हुए। इसके भेष के साधु "शाहपुरे के रामस्नेही" कहलाते है। ४—प्याऊ। ५—धूप। ६—पिलाकर। ७—ये जाति के डोम (डूम-ढोली) थे और सं० १५४० में जन्मे थे। ये पहले अन्धे हो गये थे। अतः जयपुर की गलता गादी के महन्त अग्रदास ने इन्हें किसी गांव या जंगल से ६-७ वर्ष की आयु मे जयपुर में ले आये। इलाज होने पर इनके नेत्र ठीक होगये। ये भक्त और कवि थे। इनका लिखा ग्रन्थ "भक्तमाल" है जिसमे भक्तो की विचित्र कथा है।

मीरां[1] फोड़ गई जल मटकी,
पापी अेड़ बोबदे पटकी ॥४१॥

१—यह देवी मेड़ता के स्वतन्त्र नरेश राव दूदाजी राठोड़ की पौत्री और रतनसिंह की इकलौती पुत्री थी। ये सं० १४९८ वि० में कुड़की गाँव मे जन्मी थी और सं० १५१६ मे मेवाड़ के प्रतापी महाराणा साँगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज को व्याही गई थी। परन्तु सं० १५१८ व १५२३ के बीच किसी समय विधवा होगई। विद्वानो ने इसकी मृत्यु सं० १६०३ वि० मे होना माना है परन्तु सं० १६०३ के वाद भी इसके जीवित रहने का पता लगता है। इस भक्तशिरोमणि देवी के बनाये हुए ईश्वर भक्ति के सैकड़ो भजन भारतवर्ष भर मे प्रसिद्ध हैं। मीराँबाई के गुरु सुप्रसिद्ध महात्मा रैदासजी थे जैसा कि मीराँ के भजनों से भी स्पष्ट है। "गुरु मिलियां रैदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी" और कहा है "मीरां ने गोविन्द मिल्या जी, गुरू मिलिया रैदास"। तपस्वी रैदास जी महाराज जाति के चमार थे। मीरां के विद्यागुरु गुर्जर गौड़ ब्राह्मण व्यास गजाधर, कांटिया तिवारी गोत्र का था इसके वंशजों के पास १ हजार बीघा पीवल जमीन, ५०००) वार्षिक आय की मेवाड़ के कस्बापुर और मांडल में मय दानपत्र के है। गजाधर के वंशधरों के करीब ४० घर, ठिकाणा रूपाहेली और बदनोर में भी हैं। साधु सन्तां की एक पुरानी साखी है—

हुवो घने सुं दादू वधता, दादू सूं करमां दुरस।
करमां सिरे कबीर नामदे, सारांसूं मीरां सरस ॥

इण पर पड़गी रात अजांणी,
पीवण नें घट में नहीं पांणी।
तिरिया पुरुषां खांचा तांणी,
प्यासां मरता विलखा प्रांणी ॥४२॥
हिया माझ उठे घण हूकां,
च्यार-वर्ण अपणों मग चूकां।
सास तिसां मरतां कंठ सूका,
ढेढ[1] घरे खेड़ापे ढूका ॥४३॥
भवण[2] कवण रो हे रे भाई,
जीव तिसां मरतां रो जाई।

इसमें अलंकार कर्म है और वर्णनीय मीरांबाई है। उसकी भक्ति की महिमा कवि ने इस प्रकार की है कि "धना हरिभक्त जाति का जाट था सो उसने तो भक्ति रूप कपास बोया। दादू जाति का पिंजारा (धुनिया) था सो उसने भक्तरूप कपास साफ किया। कर्मा जाटनी थी सो उसने कात कर सूत निकाला। कबीर जुलाहा था उसने बुना। नामदेव छीपा था उसने रंगा। ऐसे भक्त रूप चीर को मीरां ने ओढ़ा। इसलिए वह सबसे श्रेष्ठ है।" अधिक हाल के लिए देखो कुँ० जगदीशसिंह गहलोत लिखित भक्त मीरांबाई का सचित्र बड़ा जीवन चरित्र जो छप रहा है। १—चमार जाति का मेघवाल 'नामक एक भेद जो भांवी, और बलाई भी कहलाते हैं। गुजरात में इन्हे ढेढ कहते हैं। ये कपड़े भी बनाते हैं। २—भवन, घर।

पांणी तो हूँ देत पिलाई,
ठांव ढेढ रो हे ठकुराई ॥४४॥
ढेढ नांम सुण पाछा ढलि़या[1],
बांट आवता उण हिंज वलि़या[2]।
टालां अठी उठी नहिं टलि़या,
छली रामले पाछा छलि़या ॥४५॥
अगम[3] भोम सूं म्हे चल आया,
पूरां कारण ब्रह्म पठाया।
पोची जात हीण घर पाया,
लिछमी-बर[4] सूं प्राण लगाया ॥४६॥
भजन करूं सुमरूं भगवांनां,
बंस धर्म रो तजियो बांनां।
छित पर रहूँ जगत सूं छांनां,
दिव्य दृष्टि कोई लख सी दांनां॥४७॥
सता[5] समाध अगम घर सोऊं,
दस दिस रांम रमैयो दोऊं।
जगत भोग सपनां सम जोऊं,
हमहीं गाय सिंघ मैं होऊं॥४८॥

१—लौटे। २—पुनः फिरे। ३—कठिन, मोक्ष। ४—विष्णु। ५—सत्य।

सिमरूं जग पति सासो सासा,
तीन लोक जम मनें न त्रासा।
देह हमारी जग में दासा,
वसे जीव अमरापुर[1] वासा ॥४६॥
जात पांत सपनें सम जांणूं,
पाप पुण्य नहिं एक पिछांणूं।
वपु[2] तो म्यांन समांन बखांणूं,
सार[3] सनांन[4] जीव सेनांणूं ॥५०॥
बात मांनली लम्पै बांढां,
नीत बिगाड़ी निलजां नांढां[5]।
मिलगी जोड़ी जांनां[6] मांढां,[7]
ढेढ कह्यो ज्यूं सुणियो ढांढां[8] ॥५१॥
लीण[9] अलीण[10] गली नहिं लाधी,[11]
बुध विन जगत बूडगी[12] बाधी[13]।
अकल हिया री रह गई आधी,
खोपी में खेड़ापे खाधी ॥५२॥
चाह नीर मिलगो चित चायो,
हेर भलो हुवो हित हरखायो।

१—स्वर्ग। २—शरीर। ३—लोहा। ४—शस्त्र। ५—मूर्ख। ६—वर पक्ष मंडली, बरात। ७—कन्या पक्ष वाले। ८—पशुओं। ९—ग्रहण करने योग्य। १०—ग्रहण न करने योग्य। ११—मिली। १२—डूब गई। १३—सारी, कुल।

पेला उंण मीठो जल पायो,
तारां सूं अेंठो[1] खल[2] लायो ॥५३॥
ढीलो मूंडो मेले ढेरा[3]
टिकगा पांणी पीवण टेरा[4] ।
डलां[5] उठे कर दीधा डेरा,
चाटे हिलगा चाटण चेरा ॥५४॥
सद् विद्या विन राह न सूझे,
उर अन्तर में जीव असूझे।
बीजां[6] नैं फिर फिर मग बूजे,
दूजा घाले मारग दूजे ॥५५॥
लम्पट हुयगो थल जल साई,
लम्पट हुयगा लोग लुगाई ।
कम्पत लोली डाल सुकाई,
चम्पत हुयगी सब चतुराई ॥५६॥
इतरे लाभ बथूलो[7] आवे,
कहर क्रोध डंडूल कहावे,
छित पर कांम धुन्ध नभ छावे।
पात्र विवेक निजर नहिं पावे ॥५७॥

१—जूठन । २—दुष्ट । ३—मूर्ख । ४—डफोल । ५—डफोल । ६—दूसरे । ७—हवा का गोटा ।

चाह करीर[1] कली नृप चटके,
भँवर छेल वेश्या घर भटके।
पत महुआ सम दानीं पटके,
क्षत्रिय वंश बांस मिल खटके ॥५८॥
वीर पुरुष निज प्राण बिहावे,
जिण ऊभां निज धर्म न जावे,
मांस मिले नह तो मर जावे ।
खूटो सिंघ घास नहिं खावे ॥५९॥
अन्त असाड दयानन्द आयो,[2]
छोणी[3] ज्ञान घुमड घण छायो।

१—एक पौधा विशेष । २—जोधपुर नरेश महाराजा श्री जसवंतसिंहजी साहब ने जब स्वलिखित खास रुक्का महाराणा साहब उदयपुर को भेजकर स्वामी दयानन्द को अपने यहां बुलाया तब उन्हे शाहपुरा (मेवाड़) से ले आने के लिए राज्य की ओर से इस काव्य के रचयिता कविवर उमरदान लालस और महाकवि चन्द बरदाई के वंशधर ब्रह्मभट्ट नेनूराम भेजे गये थे। संवत् १९४० की ज्येष्ठ बदी ८ (ता० २९-५-१८८३ ई०) को स्वामीजी जोधपुर पहुँचे और इसी दिन जोधपुर नरेश व राज्य के प्रधान मंत्री महाराज कर्नल प्रतापसिंह स्वामीजी की सेवा मे उपस्थित हुए । Vide Maharaja Sir Pratap's Autobiography Chapter XXX. Mss. Page 310. ३—जमीन ।

सावण हरिकर[1] सुख सरसायो,
भादो अम्मृत झड़ बरसायो ॥६०॥
बहे व्याख्यान वल़ोवल[2] वाल़ा[3],
नीर निवाण[4] ताल नद नाल़ा ।
पड़े प्रेम घर घर परनाल़ा,
जुगती जल़ मेटी त्रिस ज्वाल़ा ॥६१॥
थिर आसोज बेद मग थाटो[5],
लम्पट बालि रावण[6] कुल़ लाटो[7] ।
भँवँताँ कर्म जोग पड़ भाटो[8],
वातो में मचगो कल़ल़ाटो[9] ॥६२॥

१—हरियाली । २—जोर से चलना । ३—नालें । ४—तालाव ५—ठहरा । ६ यह लंका का राजा और ब्राह्मण विश्रवा का पुत्र था । वेदपाठी होते हुए भी रावण का चरित्र महानिन्दित था । इसी से यह भगवान् रामचन्द्र द्वारा (विभीषण के सिवाय) सकुटुम्ब मारा गया । ७—दमन किया । ८—पत्थर । ६—हाहाकार । वातो-जोधपुर नरेश के अनुरोध से स्वामी दयानन्द पांच मास तक ज़ोधपुर मे हज़ारो की उपस्थिति मे वेदोपदेश करते रहे। देश के मंदभाग्यता से यहाँ की प्रसिद्ध वेश्या नन्हीं भगतन ने अपने एक विशेष कृपापात्र (पापी पुरुष) को लालच देकर उसके द्वारा स्वामीजी के ब्राह्मण रसोईए कलिया या कल्लाजी जगन्नाथ को वहकाया और दूध मे विष घोलकर आश्विन बदी १२ शनिवार (२९ सितम्बर) की रात को स्वामीजी को पिला-

दयानन्द-दर्शन

लावनी

कित गयो कलानिधि[1] हिय कुमदनि[2] हितकारी। टेर॥
आर्य्यन को स्वामी दयानन्द उपकारी।
गौ ब्राह्मण[3] की गरहा गरहित गोस्वामी,

दिया। इससे यह निर्भीक ऋषि कार्तिक बदी ३० (ता० १० अक्टूबर) की रात को अजमेर नगर मे "ओ३म्" शब्द के साथ यह कहते हुए कि "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" परमेश्वर की गोद मे जा बैठे। इस घटना से भारतवर्ष भर में हाहाकार मच गया। (देखो जोधपुर के वयोवृद्ध रावराजा तेजसिह राष्ट्रवर लिखित "ऋषि दयानन्द को विष ही दिया गया" नामक लेख 'आर्य मार्त्तण्ड' साप्ताहिक अजमेर भाग ३ अंक ५ तारीख ३१ मार्च १६२५ ई० पृष्ठ ५)।

१—चन्द्रमा। २—चॉद को देख कर खिलने वाला कमल। ३—शिला लेखों आदि से ज्ञात होता है कि विक्रम संवत् की बारहवीं शताब्दी के आस-पास तक ब्राह्मणों मे न तो जातियाँ थी और न पंच गौड़ और पंच द्रविड़ के दो मुख्य भेद थे। सब ब्राह्मण "ब्राह्मण" कहलाते थे। सं० १२०० के बाद सम्भवत मांसाहार और अन्नाहार के कारण यह भद हुआ और पीछे नगरो, देशो आदि के नाम से ब्राह्मणों की भिन्न-भिन्न जातियाँ हुईं। जैसे नागर ब्राह्मण, गौड़ ब्राह्मण, श्रीमाली ब्राह्मण, पुष्करणे ब्राह्मण, जांगिड़ ब्राह्मण, मैथिल ब्राह्मण, दाहिमा ब्राह्मण इत्यादि। (देखो वयोवृद्ध महामहोपाध्याय रायबहादुर पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, अजमेर कृत "मध्यकालीन भारतीय संस्कृति" पृष्ठ ४३-४४ और पूने के रावबहादुर सी० वी० वैद्य कृत "हिस्ट्री आफ मिडिएवल इंडिया" जिल्द २ पृ० ३७५-८१)

करुणानिधान करुणामय नित निसकामी[1]।
इस आर्य्यावर्त्त को रक्षक अन्तर्यामी,
निज आज्ञापालन भेज दियो घन[2] नामी ॥

दोहा

उदर ब्राह्मणी अवतर्‍यो, पद सन्यासी पाय।
चतुर नराँ चित में चढ्यो, दयानन्द गुरु दाय[3]॥
आनन्द-कन्द[4] जगवन्द चन्द उजियारी ॥आर्यन०॥ १

गुजरात देश में जन्म लियो गुणग्राही,
अवधीच[5] वंश बिच अंशुमान[6] उमगाही[7]।
आठवें वर्ष उपनयन भयो अवगाही[8],
चुप बालकाल में विद्या चित से चाही ॥

१—त्यागी। २—बहुत। ३—पसन्द। ४—जड़, मूल। ५—गुजरात के सोलंकी राजा मूलराज (सं० ९९८-१०५२ वि०) ने सिद्धपुर मे "रुद्रमहालय" नामक बड़ा शिव मन्दिर बनवाया और उसकी प्रतिष्ठा के वक्त कुरुक्षेत्र, कन्नौज आदि उत्तरी प्रदेशों के ब्राह्मणो को बुला कर उनको वहीं रक्खा। वे उत्तर (उदीची) से आने के कारण "औदीच्य" कहलाये। गुजरात में बसने के बाद इनकी गणना पंचद्रविड़ों में हो गई परन्तु वास्तव में ये उत्तर के गौड़ ही हैं। मारवाड़ में जो गोरवाल ब्राह्मण जाति है वह औदिच्य ही है। गोल गांव में बसने से वे "गोरवाल" कहलाने लग गये। ६—सूर्य्य। ७—हर्षित होना। ८—बीतने बाद।

दोहा ।

धन्य मात-पितु धन्यघर, नाम धन्य निरधार ।
शरणाया[1] साधार[2] सुत, आतम को आधार ॥
जस छायो जायो आयो आँख अगारी[3] ॥आर्य्यन० ॥२॥
शिवरात्री मैं शिव दरशण गयो सुकेरो,
अवलोके आखू[4] शिव जब हुओ उजेरो ।

१—शरणागतो को । २—सहारा देने वाला । ३—आगे । ४—चूहा । स्वामी दयानन्द का जन्म-नाम मूलशंकर था । सं० १८९४ की शिवरात्री (ता० ८-२-१८३८ ई० गुरुवार) को अपने पिता के साथ शिव-पूजन मे लगे हुए मूलशंकर ने एक चूहे को शिव मूर्त्ति से चावल खाते और ऊपर दौड़ते हुए देखकर विचारा कि "जो शिव अपने ऊपर से एक तुच्छ मूसे (चूहे) को नही हटा सका, वह संसार का कल्याणकारक स्वामी नहीं हो सकता ।" इस विचार ने न केवल मूलशंकर को दयानन्द बनाया बल्कि भारतवर्ष के धार्मिक, सामाजिक और पोलिटिकल—राजनैतिक इतिहास मे परिवर्त्तन कर दिया । सं० १९१७ की कार्तिक सुदी २ बुधवार (ता० १४-११-१८६० ई०) से मथुरा मे प्रज्ञाचक्षु विद्वान स्वामी विरजानन्द सरस्वती (पंजाब के सारस्वत ब्राह्मण) मे वेद विद्या पढ़कर गुरु की आज्ञा से दयानन्द ने वैसाख सं० १९२० वि० (अप्रैल १८६३ ई०) से वेद प्रचार और बड़े बड़े विद्वानो से शास्त्रार्थ करना शुरू किया । और वेदो को-जिनका नाम भी शायद विरले ही विद्वान् जानते थे—उनको जर्मनी से मँगवाकर सत्य वैज्ञानिक

यह अँधाधुन्ध परिपाटी महा अँधेरो,
घर त्याग नोसरयो घनानन्द[1] को घेरो[2] ॥

दोहा

नैष्ठिक[3] ब्रह्मचारी निपुण. भयो सन्यासी भूर।
इकदम आर्यावर्त्त को दुख कीनो सब दूर ॥
अति उत्तम आयु अपनी आय उधारी[4] ॥आर्यन०॥३॥
उद्धारक आर्यावर्त्त घोर अगवानी,
गुरु बिरजानन्द[5] समीप गयो ब्रह्म ज्ञानी ।
प्रभु पाणिनीय व्याकरण प्रमाण प्रमानी,
पढ़ महाभाष्य अभ्यास पिछान पिछानी ॥

और आध्यात्मिक भाष्य करके सायण, महीधर आदि के असंभव अशुद्ध अश्लील अर्थों से लोगो को बचाया । जिससे वेदों का महत्व फिर से चमक उठा और इसे ईश्वरीय ज्ञान और सर्व संसार के धर्मों का आदि श्रोत (Fountain-head "वेदोऽखिलो धर्म मूलम्") होने का लोगो को निश्चय हो गया। इसीसे स्वामीजी कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रंथ, कलकत्ता, प्रयाग आदि के विश्वविद्यालयो (यूनिवर्सिटिज) मे एम. ए, बी. ए, कोर्स तक में पढ़ाया जाता है। १—अत्यन्त आनन्द। २—झुण्ड। ३—अखण्ड। ४— सुधारी। ५—स्वामी दयानन्द के गुरु जो प्रज्ञाचक्षु (अन्धे) थे।

दोहा

पद पदार्थ सम्बन्ध पुनि, प्रत्यय आगम लोप ।
आरस[1] पोरस[2] शुभ अशुभ, ग्रन्थ हृदय धर गोप[3] ॥
बेदन की बेदन[4] भेदन भली बिचारो ॥ आर्यन० ॥४
बेदोपबेद ब्राह्मण बिधि युक्त बिभ्यासे[5] ,
आगम रु निगम व्याख्यान बिधान अभ्यासे ।
पंडित हुय सत्यासत्य प्रमान प्रकासे,
निज बल तें नित्यानित्य निदान[6] निकासे ॥

दोहा

सांगोपांग[7] हि स्वर सहित, अक्षर शुद्ध उच्चार ।
श्रोत[8] स्मार्त[9] सुधार किये, आर्यावर्त्त उधार ॥
वेदों[10] को व्याख्या बिमल करी बलिहारो ॥ आर्यन० ॥५
गोतम सो गरवो[11] न्याय माझ निरधार्‌यो,
बेदान्त शास्त्र बिच बेदव्यास सम सार्‌यो ।

१—ऋषि रचित । २—मनुष्य रचित । ३—गुप्त । ४—पीड़ा । ५—प्रकटे । ६—तात्पर्य, सिद्धान्त । ७—पूरा, यथार्थ । ८—वेदधर्मी । ९—स्मृति अनुसार चलने वाले । १०—वेद चार हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद । वेद शब्द का अर्थ है "ज्ञान" या जानना । वेदों को हिन्दू (आर्य) जाति सबसे प्राचीन ग्रथ ही नहीं मानती बल्कि इनको अनादि काल से मानती है । यूरोपीय विद्वानों की धारणा है कि वेद ईसामसीह के जन्म से आठ हजार वर्ष पहले रचे गये थे और संसार भर मे ऋग्वेद से प्राचीन कोई ग्रन्थ नहीं है । ११—गहरा ।

वैशेषिक में कणा[1] मुक सो वल विस्तार्यो.
पातंजलि पाठ पतंजलि[2] जेम प्रचार्यो ॥

दोहा

सांख्य शास्त्र में कपिल[3] सम, सृष्टिक्रम समझाय।
मीमांसा में जैमिनी,[4] करमकांड[5] करवाय ॥

षटशास्त्रन शिक्षा, शिक्षासहित सुधारी ॥ आ० ॥६॥
सत बक्ता श्रद्धाशील समीक्षक[6] शूरो[7],
पुरुषारथ पूरण प्रेम प्रतिज्ञा पूरो।
दुर्व्यसन दुराग्रह[8] दूषण सों दृढ़ दूरो,
अनभंग[9] उतंग[10] उमग न अंग अधूरो ॥

दोहा

जग जीतन की जोव में जगी अखंडित जोति।
दयानंद दिगविजय किय, अपने बल उद्योति ॥
गंभीर गिरा[11] गुणहीण गाढ गब[12] गारी ॥आ०॥७॥

१—आर्यों के पदार्थ विज्ञान (वैशेषिक दर्शन) के निर्माता। २—इन्होंने ऋषि पाणिनी (६०० ई० पूर्व) के सूत्रों पर भाष्य बनाया है। विद्वानों ने ऋषि पतंजली का समय ईसामसीह के १८० वर्ष पूर्व माना है। ३—इनका बनाया सांख्य शास्त्र षड्दर्शन की श्रेणी में माना जाता है। इसमे प्रकृति और पुरुष का निरूपण है। ४—इनके बनाये दर्शन शास्त्र का नाम पूर्व मीमांसा है जिसे "जैमिनि दर्शन" भी कहते हैं। यह कृष्ण द्वैपायन (वेदव्यास) के शिष्य थे। इनके पुत्र सुमन्तु और सुत्थान ने वेद की संहिताये रची है। ५—संस्कार, क्रियायें। ६—आलोचक, जाच के साथ हूबहू दर्शाने वाला। ७—वीर। ८—खोटी, रूढ़ी। ९—अटूट। १०—ऊँची। ११—वाणी। १२—घमंड।

पल भर पुराणं सामैं डटणे[1] नहिँ पाई,
जैनन की जड़ता जड़ तैं गरज[2] गमाई।
बायबिल[3] कर बटका[4] बटका बिहँस[5] बगाई[6],

१—ठहरना। २—गर्जना करके। ३—यह ईसाइयों की धर्म पुस्तक है। बाइबिल के मायने पुस्तक के हैं। इसके दो हिस्से है—एक नया और दूसरा पुराना। कुल १२ पुस्तकें है जिन हरेक को "इनजील" कहते हैं और कुल पुस्तक को बाइबिल। इस पुस्तक में हजरत ईसा मसीह (जीसस् क्राइस्ट) के उपदेशो का संग्रह है जिनको ईसा के देहान्त के बाद उनके चेलो ने संग्रह किया। ईसा मसीह के १२ मच्छेरे चेले थे। ईसा का जन्म अब से करीब दो हजार वर्ष पूर्व पारस देश मे जोरडिया शहर के पास बैथलम ग्राम में हुआ। इसकी माता मरियम कुमारी थी जिसकी सगाई यूसफ नाम के बढ़ई (खाती-सुतार) से हुई थी। कंवारी (अविवाहिता) के गर्भ से ही ईसामसीह पैदा हुए। जैरूसलम के यहूदी राजा ने ईसा के उपदेशों का विरोध कर उसे सूली पर चढ़ा दिया। ईसाई मत का कोई नया सिद्धान्त नहीं है। ये मत बौद्ध धर्म और यहूदी मत के आधार पर बना है। ईसामसीह की शिक्षा-दीक्षा भारत-वर्ष व तिब्बत मे बौद्धों के मठों से हुई थी। इसी ईसामसीह के जन्म (वि० सं० ५७ फागुण वदि ३ शनौ) से ईसवी सन् (ता० १ जनवरी सन् १ ई०) प्रारम्भ माना जाता है जो रोम (इटली) के एक विद्वान् पादरी ने चलाया था। इस मत में कई फिर्के हैं जिन मे रोमन कैथलिक (मूर्तिपूजक) और प्रोटेस्टेन्ट (मूर्ति विरोधी) मुख्य है। ४—टुकड़ा। ५—हँस करके। ६—फैंकदी।

अटबट[1] कुरान[2] की छान रु छार उड़ाई ॥

१—ऊटपटांग । २—मुसलमानो का मुख्य धर्मग्रन्थ "कुरान' जिसका अर्थ है–पढ़ना, एकत्र करना। ये पुस्तक मुसलमान लोग खुदा से फरिश्ते जब्रील के जरिये मुहम्मद साहब पर मक्के और मदीने मे उतरी हुई मानते है। हजरत मुहम्मद पढ़े लिखे बिलकुल नहीं थे परन्तु देशाटन व सत्संग से अनुभवी होगये थे। इनका जन्म वि० सं० ६२७ (ई० स० ५७०) में मक्के के पुजारियो के घराने में हुआ। उस समय मक्का मे मूर्ति-पूजा का बड़ा जोर था। मुहम्मद ने ईश्वर के एक होने तथा केवल उसी की उपासना करने का प्रचार और मूर्ति का खंडन किया। अरब लोगो ने उनका कट्टर विरोध किया, परन्तु वे अपने मार्ग पर अटल रहे। विरोधियो ने उन्हे इतना सताया कि सं० ६७६ मे वे तुरन्त मक्का छोड़कर मदीने चले गये। इसी समय (यानी वि० सं० ६७६ सावण सुदि २ बुध ता० १५-७-६२२ ई०) से मुसलमानी संवत् (हिजरी सन १ ता० १ मोहर्रम) का आरम्भ होता है। कुरान मे पैगम्बर मुहम्मद साहब की जीवनी है और इसके सिद्धान्त व कथाएँ पारसी, यहूदी और ईसाई मत से मिलती-जुलती है। ये पुस्तक मुहम्मद के जीवन काल मे नहीं बनी। मुहम्मद के मुँह से सुनी सुनाई आयतो (वाक्यो) को उनके समकालीन लोगो ने बाद मे लिख डाली। मुहम्मद ने अपने प्रचार के लिए १२ मनुष्यों की एक टोली बनाई। सं० ६८६ (ई० स० ६३२) मे ६३ वर्ष की आयु मे मुहम्मद साहब का देहान्त हो गया। खलीफा अबूबकर (सं० ६८६-६६१ वि०) ने कुरान के जुदे जुदे हिस्सो को एक किताब के रूप मे लाने की योजना की। अबू के मरने पर जब कुरान मे गड़बड़

दोहा

एकहि वेद अनादि है, आधुनीक[1] है अन्य[2]।
धर्म धुरन्धर धीरधर धन्य धन्य तूँ धन्य ॥

वसुधा[3] बिच बंके[4] बंकी[5] बान बिथारी[6] ॥आ०॥८

पाखंड खंड द्व दंड अखंड[7] पुजायो,
धरनी तल को बल बंड[8] प्रचंड धुजायो[9]।
छल छंद[10] बिनंडन[11] दंड बिनंड छुड़ायो,
आर्यन कुल-मंडन मंड अफंड[12] उड़ायो ॥

होने का सुना तो खलीफा उस्मान ने अबूबकर वाली प्रति में एक प्रति ठीक कराई और बाकी सब प्रतियाँ कुरान की जला दी गईं। अतः खलीफा उस्मान का ही ठीक कराया हुआ कुरान अब सारे संसार में चालू है और कुछ लोगों के सिवा, बाकी सब इसको सम्पूर्ण "कुरान शरीफ" मानते हैं। इसमें ११४ सूरतें (अध्याय), कुल अक्षर ३,२३,६७१ हैं। कई सारे का सारा "कुरान" कंठस्थ कर लेते हैं जो "हाफिज" कहलाते हैं। मुसलमानी धर्म्म में ७२ सम्प्रदाय (फिरके) हैं जिसमें "सुन्नी" और "शिया" मुख्य हैं। सुन्नी मुसलमानों का कहना है कि कोई शिया मुसलमान न आज तक हाफिज हुआ है और न आयन्दा में हो सकेगा। १—नये, आजकल के। २—दूसरे। ३—पृथ्वी। ४—बांका। ५—शानदार। ६—फैलाई। ७—एक ईश्वर। ८—जोरदार। ९—हिलाया। १०—छांटना। ११—पाखंडी। १२—स्वांग।

दोहा

वरणाश्रम[1] की विवस्था[2] बाँधी बड़े विचार।
कंठी तिलक उथाप[3] किय, आदि[4] धर्म आचार॥
कुपि[5] नास्तिककों किये, आस्तिक कर किलकारी[6]।आ।।६

१—हिन्दुओं के चारवर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था गुण-कर्मानुसार होती थी। आपस में खानपान में कोई रोकटोक नहीं थी। हाँ, शुद्धता का विचार अवश्य रखा जाता था। गुप्तवंश के क्षत्रिय राजाओं के राज्यकाल (अर्थात् ईसामसीह की ७वीं-आठवीं शताब्दी) में वैदिक धर्म में बड़ी उथलपुथल होकर अनेक मतमतान्तर बढ़ गये व पुराने रीत-रस्मों में गड़बड़ होने से आर्य्य (हिन्दु) जाति के टुकड़े-टुकड़े होने लग गये। देश भेद, धन्दे और मतभेद से ४ वर्णों के स्थान में सैकड़ों जातियाँ हो गईं और परस्पर विवाह सम्बन्ध की बात तो दूर रही, खाने पीने में भी बड़ा भेद हो गया। होते-होते आज हिन्दू समाज में २,३७८ जातियाँ हो गईं। कई जातियां तो ऐसी हैं कि उनकी संख्या १५ खानदान से अधिक नहीं है और उन्हीं १५ घरों में उनका विवाह आदि सम्बन्ध होता है। (देखो डाक्टर श्रीधर वी० केतकर कृत "दी हिस्ट्री आफ कास्ट इन इण्डिया" पृ० ५-७ और आर० सी० दत्त कृत एन्सिएंट हिस्ट्री आफ इण्डिया)। २—व्यवस्था, प्रबंध। ३—मना करना। ४—सनातन, प्राचीन। ५—क्रोध करके। ६—ललकार।

अबिणासी[1] को हलकारो जगमें आयो,
लोकन में शक्ति अलौकिक लारै लायो।
श्रुति समाचार को सार पुकार सुनायो,
धर्मी सुख धार अधर्मी सीस धुनायो[2] ॥

दोहा

काशी की हाँसी करी, लाँबी दे ललकार।
पिञ्जन[3] पाखे[4] तूल[5] तिम, उड़ते फिरे अगार[6] ॥
हा भारतवर्ष-केसरी अरी[7] भयकारी॥आर्य्य०॥१०॥
भय ध्वंस संयमी[8] बक[9] प्रशंसा भारी,
मुख आगे छिपते फिरते मांसाहारी।
कलियुग में दूजो प्रगट भयो कँसहारी,
थिर[10] हंस[11] बंस अवतंस[12] कीर्ति किय धारी॥

१—ईश्वर। २—हिलाना। ३—पिंजारे का औजार। ४—पास। ५—रुई। ६—आगे। ७—शत्रु। ८—साधु। ९—बाकी। १०—स्थिर। ११—सूर्य। १२—भूषण।

दोहा

मेद-पाट[1] मेवाड़-मणि, सज्जन[2] राण सधीर।
यावदार्य्य[3] कुलकमलको, बन्यो दिवाकर[4] वीर॥
हा परमहंस निज हंस हंस द्युतिहारी[5] आर्य्य०॥११॥
सन उन्नीसौ चालीस छोह[6] छक छायौ,
इत जेठ महीनें जेठ तिमर[7] हर आयो।

१—मेवाड़, उदयपुर राज्य। मेद अर्थात् मेव या मेर जाति का अधिकार रहने से इस भूमि का नाम मेदपाट (मेवाड़) पड़ा। कई विद्वान् मेर (मेव, मेद) लोगों की गणना हूणों में करते हैं परन्तु शाकद्वीपी ब्राह्मण (सेवग, भोजक या मग) लोगों की तरह ये अपना निकास ईरान की तरफ़ के शाकद्वीप (शकस्तानं) से बतलाते हैं। (देखो वयोवृद्ध महामहोपाध्याय रायबहादुर पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत "उदयपुर राज्यका इतिहास" पृष्ठ १ सं० १९८५ वि०)। २—महाराणा सज्जनसिंह जो सं० १९१६ आषाढ़ सुदी ६ को जन्मे, सं० १९३१ में राजसिंहासन् पर बैठे और सं० १९४१ पौष सुदी ६ को स्वर्ग सिधारे। ये बड़े विद्यानुरागी और विद्वानों के गुणग्राहक थे। ३—पृथ्वीभर के आर्य्य (हिन्दू)। ४—सूर्य्य। ५—कान्ति को फीका करने वाला। ६—प्रेम। ७—अन्धेरा।

मरुधराधीश[1] मिलि जशवंत मोद[2] जतायो,
बस चार मास आसन अम्मृत बरसायो।

दोहा

सब विधि की सेवा सधी[3], आदर भयो अमाप[4],
माननीय गुरु मानियो, परतापी परताप[5] ॥
नहिं रही कसर इक आध नैन निरधारी॥आर्य्य०॥१२॥
चित बिपदा बारधि[6] पार करन को चाहो,
अदबिच में आती नाव भँवर में आई।
दुरभागिन को हा दैव भयो दुखदाई,
धन पोल[7] पहूँच्यो धारधूस[8] ले भाई ॥

दोहा

बड़ी बड़ी आसा बही, हुई निरासा हेर।
बिखम[9] दासके वेव[10]तें, गिरयो रसा[11] गिरि[12]मेर[13]॥
धर हरयो भरयो निग्रोध[14]गिरयो जसधारी।आ०।१३

१—मारवाड़ (जोधपुर) के महाराजा जसवंतसिंह जिन्होंने सं० १६४० वि० में खास पत्र भेजकर दयानन्द सरस्वती को अपने यहाँ बुलाकर धर्मोपदेश कराया। २—आनन्द। ३—बनी। ४—बेशुमार। ५—जोधपुर के प्रधान मंत्री व तत्कालीन नरेश के छोटे भाई कर्नल महाराज प्रतापसिंह बहादुर। ६—समुद्र। ७—फाटक, दरवाजा। ८—डाकुओं की मंडली। ९—उल्टे। १०—भाग्य। ११—पृथ्वी। १२—पहाड़। १३—मेरु पर्वत। १४—वट वृक्ष।

जसवंत[1] जस जलद[2]

कवित्त

मारवार मौर[3] या असार भव पार भयो,
ताही निस तार विसतार हत्ता हत्तालों।

१—इनका जन्म सं० १८९४ आसोज सुदि ८ (ता० ७-१०-१८३७ ई०) को अहमदनगर (महीकांठा—गुजरात) में हुआ और सं० १९२९ फाल्गुण सुदि ३ को अपने स्वर्गीय पिता महाराजा तख्तसिंह के उत्तराधिकारी हुए तथा सं० १९५२ कार्तिक बदि ८ (ई० १८९५ ता० ११ अक्टूबर) को स्वर्ग सिधारे। ये नरेश बड़े उदार चित्त, मिलनसार और बुद्धिमान थे। इनको कसरत का बड़ा शौक़ था। अनेक राजा महाराजा आदि आपसे मिलने और जोधपुर देखने को आये थे। आपका अतिथि सत्कार प्रशंसनीय था। इनका समाधि स्थान (थड़ा) संगमरमर का बना हुआ जोधपुर में देखने योग्य है। जोधपुर के राठोड़ राजवंश व जागीरदारों का इतिहास तैयार करने के लिए आपने सं० १९४४ माघ सुदि ७ शुक्रवार (२०-१-१८८८ ई०) को राज्य का "तवारीख महकमा" स्थापित किया। इस महकमे को क़ायम हुए कितने ही वर्ष हुए और दो अढ़ाई लाख रुपये खर्च होचुके है परन्तु अब तक उसके प्रयत्न रूप कोई ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं रचा गया। महाराजा साहब को सन्तान में एक महाराज कुमार (सरदारसिंह जी) और दो रावराजा थे। (देखो "मारवाड़ राज्यका इतिहास" दूसरी आवृत्ति पृ० ३२६ सन् १९२५ ई०)।
२—बादल, घटा। ३—मुकुट।

जागी प्रजा सधर[1] खरागी अनुरागी जिन्हें,
खबर अभागी आनलागी लोह तत्ता[2] लों।
हाहा श्री हुजूर पुरनूर जसवंत जी, सी,
प्यारे दुखपूर प्रज्ञा[3] है बघूर[4] पत्तालों।
हिंदुस्थान की जबान धर्मस्थान धजा तूटी,
करुना निधान फूटी कूक कलकत्ता लों ॥१॥
सुन्यो खास गयो सूक हिय में उठै है हूक[5],
कूक कूक थाके चूक चित में चढै नहीं।
अति अकुलावैं त्यों तुलावैं जसवंत जोर,
महिमा महीपन की मन में मढै नहीं।
जोलों सिरदारसिंह राज अभिसेस पत्र,
पितु सी प्रसंसा प्रजा पालक पढै नहीं।
कुढ कुढ काया तोलों कल्पना बढ़ै हैं केती,
कृपासिंधु करक[6] करेजै की कढै नहीं ॥२॥
आयां आन[7] देतो सनमान खान पान देता,
थान देतो दान देतो जानदेतो[8] जीसे ना।

१—पतिव्रती, सौभाग्यवती। २—गर्म। ३—बुद्धि। ४—हवा का वधूला। ५—पीड़ा। ६—खटकन। ७—इज्जत। ८—जाने देता।

राजा महाराजा रावराजा[1] कविराजा केते,
एक न ममाजा ऐसो उरतें[2] असीसे ना।
महिमा महीस[3] तें सईस[4] लौं सुनी है मुख,
मारू[5] धराधीस[6] की रहीस[7] सुन रीसे ना।

१—जोधपुर के राजाओं मे यह चाल ठेठ से चली आती है कि चाहे जिस जाति की परस्त्री को पॉव में सोने का गहना पहिना कर उसे जब वे परदे मे (उपपत्नि रूप) रख लेते हैं तब वह "पड़दायत" नाम से कहलाती है और उसके असली नाम के साथ आदर-सूचक "रायजी" शब्द जोड़ दिया जाता है। जिस पड़दायत पर उसके पति का विशेप प्यार होता है वह "पासवान" कहलाती है। रानियों मे जैसे "महारानी" का उच्च पद होता है वैसे ही पड़दायतो मे पासवान का होता है। इन पड़दायतो व पासवानो से जो पुत्र उत्पन्न होते है वे "भाबा" कहलाते थे। परन्तु सं० १९१९ भादो बदि १० (ई० १८६३ ता० २२ सितम्बर) से वे तीन पीढ़ी तक रावराजा कहलाते हैं। (देखो "नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १ अक २ सं० १९७७ पृष्ठ १७४ सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता मुन्शी देवीप्रसाद मुंसिफ, ऐसिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमे तवारीख जोधपुर का लेख" और "चीफ्स ऐन्ड लीडिंग फेमेलिज इन राजपूताना, पाँचवाँ संस्करण सन् १९२४ ई० पृष्ठ १९ जोधपुर राजवश चेप्टर २" तथा पँवार नारायणसिंह महामंत्री कृत रावणा-राजपूत दर्शन द्वितीयावृत्ति सन् १९२६ ई० पृष्ठ २७)। २-हृदय से। ३—राजा। ४—घोड़े का नौकर, सईस। ५—मारवाड़। ६—भूमिपति, राजा। ७—राजवी।

ज़ेर[1] जिय जोयो जसवंत गिर मेर[2] जैसो,
हेर हेर हार्यो हाहा दूजो फेर दीसे ना ॥३॥
रैत[3] रिछपाल और दीनन दयाल देख्यो,
मोट[4] महिपाल पन मनमें मन्यो नहीं।
अपनो सु अपनो परायो सो परायो पेख्यो,
दगा देन दिल जाको स्वपने सन्यो[5] नहीं।
सिथल मरुस्थल के निबल निभान-हारो[6],
सबल सदीव सत्व विहल[7] बन्यो नहीं।
सोधा सुधाकर[8] सों अक्रोधा[9] अविरोधा[10] एक,
जोधा जसवंत जैसौ जननी जन्यो नहीं ॥४॥
ज्वाल[11] जैसो जुलम कुटंबीद्रोह काल कैसौ,
भाल जैसो भिच्छुक[12] भदासा[13] भेव[14] भगतौ[15]।
आदर अमी[16] सो अनआदर जहर जैसो,
कादर[17] कहर कैसो जीव मांय जगतो[18],
वैभव[19] विशाल जसवंत नरपाल वाह।
मिंदर के अंदर पुरंदर[20] लां पगतौ[21]।

१—गिरा हुआ। २—मेरु-पहाड़। ३—प्रजा। ४—गर्व। ५—सुना, सटा। ६—निबाहने वाला। ७—कायर। ८—चन्द्रमा। ९—विना क्रोध। १०—विना विरोध। ११—आग की लपट। १२—माँगने वाला, मँगता। १३—भद्दा। १४—भेद, भाव। १५—भाग जाता। १६—अमृत। १७—कायर। १८—जाना जाता। १९—सम्पत्ति। २०—इन्द्र। २१—दीखता।

दैनों जाकों दाख जैसौ लेनों लाख लाख जैसौ,
आक सो अदेनों[1] लोभ लून जैसौ लगतौ॥५॥
वंस-वाट[2] बैन-वारो[3] दान छौल दैनवारौ,
लैनवारौ लोभ लव लेस न लगारौ[4] भौ।
दीरघ दुधारो दुख दारद[5] दलन हारौ,
भूप जसवंत को भरोसौ उर भारो[6] भौ।
घटना[7] घटारौ[8] बर[9] बंडता[10] घमंड वारौ,
भूरि[11] भुजदंड[12] वारौ एक उनिहारो[13] भौ।
सज्जन सुखारौ सोइ दुज्जन दुखारौ दृढ़,
सबको सहारौ तखतेस कौ दुलारौ[14] भौ॥६॥
भूपन में भूप औ अनूप रूप रूपन में,
सुन्दर स्वरूपन में साहस[15] सुरेश[16] कौ।
मांन[17] मिट जातौ मोटों[18] हट[19] हट जातौ हेर[20],
दान दट जातौ दुःख देसको विदेस कौ।
छम्या जाकी हीतें सब भेले भए छत्र धारी,
बलिहारी वातें वंस दीपतो दिनेश कौ।

१—कंजूसपना। २—रास्ता। ३—चलने वाला। ४—बिल्कुल, ज़रा भी। ५—दरिद्र। ६—बड़ा भारी। ७—चरित्र। ८—रचने वाला। ९—श्रेष्ठ। १०—जोरावरी। ११—बड़े। १२—बाहें, हाथ। १३—चेहरा। १४—लाड़ला, पुत्र। १५—समान। १६—इन्द्र। १७—गर्व। १८—बड़ों का। १९—हठ। २०—देख कर।

खैर[1] कौ खजाना खूटो मैर[2] को समंद फूटो,
आनंद कौ कंद तूटौ नंद तखतेस[3] कौ ॥७॥

१—दयादान। २—दया। ३—जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह को मोडासा (ईडर राज्य) के राठोड़ ज़ालमसिंह ने जालोर के घेरे के वक्त बड़ी सहायता दी थी। इससे महाराजा ने इसकी शाखा में होने से अहमदनगर के महाराज तख्तसिंह का गोद लेने को मृत्यु समय कहा। क्योंकि महाराजा के विवाहित रानियों से कोई पुत्र जीवित न था। उपपत्नियो से १० पुत्र (रावराजा) थे, परन्तु हिन्दू धर्म और राजपूताने के रीति-रिवाजो के मुताबिक वे गद्दी के अधिकारी नहीं हो सकते थे। इसलिये अहमदनगर (मही‍कांठा गुजरात, से डेढ़ हजार सहचरों सहित आकर महाराज तख्तसिंह सं० १९०० मगसिर सुदि १० (ता० १-१२-१८४३ ई०) को जोधपुर की गद्दी पर बैठे। इनका जन्म सं० १८७६ जेठ सुदि १३ को और देहांत स०१९२९ माघ सुदि १५ बुधवार (ता० १२-२-१८७३ ई०) को हुआ। ये बड़े स्वाभिमानी नरेश थे। सं० १९२७ कार्तिक बदि १३ को जब वाइसराय लार्ड मेयो ने अजमेर मे राजकुमार कालेज खोलने को दरबार किया और वहाँ महाराजा तख्तसिंहजी को उदयपुर नरेश के बाद दूसरी बैठक न देकर तीसरी बैठक देना तय हुआ तो ये दरबार मे शरीक न हुए और बड़े लाट से मुलाकात बिना किये ही लौट गये। इससे वाइसराय ने इनकी सलामी की तोपें १७ से १५ कर दी थीं। इनका इतिहास "तखत विनोद" नाम से ब्रह्मभट्ट (भाट) कविराजा बाघसिंह (बाघजी) के बनाने पर इन्होंने उसे सं० १९०८ वैशाख बदि १४ को "लाखपसाव"

उन्नीसो अराती[1] आयो बावनो विजाती[2] बैठो,
कातो बद[3] काल काती आठां दिन आनको।
घाती वार सुकर[4] सुडुकर[5] लगाई घाती,
जबैं याद आती ना सुहाती है जहान को।
चार बजे पूरे पैंतीस मिन्ट ख्याती गुन,
तज्यो जसवंत तन थिरा[6] सुख थान को।
छाती नां समाती दब जाती जोय जीव जर्‍यो,
हिंद पच्छ पाती पर्‍यो नाती[7] नृप मांन[8]को ॥८॥

(लख प्रशाद) पुरस्कार और ताम्रपत्र से दो गाँव दिये। (देखो महामहोपाध्याय पं० हरप्रसाद शास्त्री सी० आई० ई०, एम० ए० कृत "प्रिलिमिनरी रिपोर्ट आन दी आपरेशन इन सर्च आफ मेन्युस्क्रिप्टस आफ बार्डिक क्रानिकल्स" पृ० १२ कलकत्ता सन् १९१३ ई०)। १—शत्रु। २—दोगला, वर्णशंकर। ३—कृष्ण पक्ष, बुरा। ४—शुक्रवार। ५—कड़ी। ६—पृथ्वी। ७—पोता। ८—इनका जन्म सं० १८३९ माघ सुदि ११ (ता० १३ २-१७८३ ई०) को हुआ और जोधपुर की राजगद्दी पर सं० १८६० मगसिर वदि ७ (ता० ५-११-१८०३ ई० शनिवार) को बैठे। इन्हें अपने जीवन में शुरू से अन्त तक लगातार आपत्तियों का सामना करना पड़ा, परन्तु फिर भी ये विद्या, साहित्य, इतिहास, संगीत और कला-कौशल की उन्नति में दत्तचित्त रहे। ये स्वयं कवि और गान-विद्या तथा योग के अनुरागी थे, जैसा कि प्रसिद्ध है:—

जोध बसाई जोधपुर, ब्रज कीनी ब्रिजपाल।
लखनेऊ काशी दिली, मान करी नेपाल ॥

न्योतो दे बुलाए नृप पांनो दे जिमाए पांत,
भांतो[1] नहिं भायो पुत्र ब्याह में विफंद[2] को।
हांतो[3] कर जान्यो हस ऊंचो कर जान्यो हाथ,
नांतो[4] कर जान्यो नांहि निठुर-निकंद[5] को।

इन्होंने चित्रों और संस्कृत व भाषा की हस्त लिखित पुस्तकों का एक संग्रह करके जोधपुर के किले में "पुस्तक प्रकाश" नाम से एक पुस्तकालय सं० १८६१ पौष बदि १ (ता० १७-१२-१८०४ ई० सोमवार) को स्थापित किया था। कई वर्षों के परिश्रम से इन्होंने मारवाड़ के राजवंश की एक ख्यात सं० १८८२ वि० में बनवाई थी और इन महाराजा ने भाषा ग्रन्थ कविराजा महाकवि बांकीदास आसिया से पढ़े थे। बांकीदास बड़ा ही निर्भीक और सत्यवक्ता कवि था। महाराजा ने इस कवि को दो वार "लाख पसाव" पुरस्कार दिये, परन्तु खरी-खरी सुनाने पर तीन बार देश निकाला भी दिया। फिर भी महाराजा इस सच्चे कवि का बड़ा मान करते थे। बांकीदास का संग्रहित २८०० सौ "ऐतिहासिक बातों" का हस्त लिखित ग्रन्थ बड़े महत्त्व का है। सं० १८७४ में जब कनफटे नाथों के बजाय गोकुलिये गुसाँइयों से युवराज छत्रसिंह ने गुरुमंत्र सुना और आयस भीमनाथ आदि की प्रतिष्ठा में फर्क आया, तब कविराजा बाँकीदास ने एक सवैया कहा जिसका एक पद यह है—"मान को नन्द गोविन्द रटे तब गंड फटे कनफट्टन की" (देखो वीर विनोद मेवाड़ का वृहद् इतिहास, जोधपुर प्रकरण)। १—अन्तर। २—बखेड़ा। ३—"हाँ" करना। ४—"नाहीं", ना करना। ५—दुष्टों को मारने वाला।

वैसो जसवंत बली उरमयो[1] असाध्य[2] व्याधी[3],
मुरझ्यो मुखारविंद[4] मांगन[5] मलिंद[6] को।
राजलोक[7] रोतो रह्यो हाहाकार होतो रह्यो,
कोतो[8] कहां गयो परपोतो जयचंद[9] को ॥६॥

१—उलझा। २—लाइलाज। ३—पीड़ा। ४—मुख कमल, मुँह। ५—जाचक। ६ भौंरा। ७—रानियें, स्त्रियें। ८—कहां तो। ९—जोधपुर के महाराजा जो राठौड़ हैं, वे अपने को महाराजा जयचन्द्र के वंशज मानते है। इसी लिए प्राचीन ऐतिहासिक खोज के शुरू होने तक कन्नौज का राजा जयचन्द्र राठौड़ माना जाता था। परन्तु जब जयचन्द्र और उसके पूर्वजो के लगभग ७० ताम्रपत्र और शिलालेख मिल गये जिनमें कहीं उसके वंश का नाम "राठौड़" (राष्ट्रकूट) नहीं पाया गया। किन्तु सूर्यवंशी "गाहड़वाल" (गहरवार) लिखा हुआ मिला। तब से योरोपियन व भारतीय विद्वान् "राठौड़" और "गाहड़वाल" वंशों को अलग-अलग मानने लगे। राठोड़ो की करीब १०८ शाखाएँ ख्यातो (हस्त-लिखित मारवाड़ी ऐतिहासिक बहियों) मे मिलती हैं, परन्तु उनमें कहीं भी "गाहड़वाल" शाखा का नाम निशान तक नहीं है। ऐसे ही किसी शिलालेख, ताम्रपत्र, ऐतिहासिक संस्कृत काव्य, मुणहोत नैणसी की ख्यात तथा भाटों की अनेक पोथियो में से एक में भी कहीं गाहड़वाल (गहरवार) को राठोड़ों की शाखा नहीं लिखा है। इसलिए अब ऐतिहासिक विद्वानों का मत है कि गाहड़वाल और राठोड़ एक नहीं हैं और जोधपुर का राठोड़ राजवंश कन्नौज के गाहड़वाल राजा जयचन्द्र का वंशज नहीं है, बल्कि कन्नौज प्रान्तीय बदायूं नगर के राष्ट्रकूटो (लखनपाल) का वंशधर है। संयुक्त प्रान्त (यू० प०) मे गाहड़वाल और राठोड़ आपस मे विवाह सम्बन्ध भी अब तक करते है।

भाखैं केते भौरो संभु[1] आयो कैलाश भूति,
गरबो[2] गनेश गावैं खलु[3] ना खबरजू।
बलि हरचंद[4] चोलैं कलिको करन[5] केते,
विक्रम[6] वदान्य[7] वैसे उचरे अबर[8] जू।

१—शंकर। २—बड़ा, गौरव वाला। ३—निश्चय। ४—ये अयोध्या के सूर्यवंशी राजा के पुत्र थे। सत्यता के पालन मे इन्होंने बड़े-बड़े कष्ट उठाये. परन्तु अपने सिद्धान्त मे अटल रहे। ५—महाभारत युद्ध के प्रसिद्ध वीर और दुर्योधन के परम मित्र। यह राजा बड़ा दानी था। महाभारत मे इसका जन्म कुमारी कन्या कुन्ती के गर्भ से होना लिखा है। इसलिए ये पाँडवो के भाई थे। ६—लोग इन्हे उज्जैन का परमार राजा और विक्रम संवत् को चलाने वाला कहते है, परन्तु पुराने शिलालेखों, ताम्रपत्र और ऐतिहासिक पुस्तकों में इस विषय का कुछ भी वृत्तान्त नही मिलता है। यदि उज्जैन के मुञ्ज, भोज (सं० १०७८-१०९९ वि०) आदि परमार (पंवार) राजाओ के समय मे भी ऐसा मानते तो वे राजा अपने शिलालेखो आदि में वीर विक्रम के वंशज होने का गौरव प्रकट किये बिना कभी नही रहते। नई खोज से विद्वान्. सम्राट् चन्द्रगुप्त (दूसरे) को ही विक्रमादित्य मानते है। क्योंकि उस के विरुद (खिताब) विक्रम, विक्रमादित्य, सिंह विक्रम, अजित विक्रम आदि मिलते है। इस राजा का नाम इस संवत् के साथ जुड़ जाने से इसका नाम "विक्रम संवत्" हो गया हो। (देखो जॉन ऐलन सम्पादित "गुप्तो के सिक्कों की सूची")। ७—श्रेष्ठ। ८—दूसरे।

कहैं के कनैया कामदेव अवतार केते,
ऊमर उचारैं जीव जो थो सो जबरजू।
जरियैं ना मोहागिन धरियैं अब धीरज को.
मरियैं नां रोय सब करियैं सबरजू ॥१०॥
देख्यो जसवंत सुख सुख ना दिखायो दुःख,
चाह्यो जसवंत जाके चिंता नांहिं चितमें।
धेयो[1] जसवंत जोइ धरा धन धाम धारै,
सेयो जसवंत सोई संपत अमित[2] में।
आसा जसवंत राखी और के न आसावंत,
वासा[3] जसवंत वस्यौ वासना न वित[4] में।
जाने जसवंत जे जहान में अजाने नांहि,
माने जसवंत ने न छाने[5] रहे छिन[6] में॥११॥
वैदक विरुद्द[7] वाचै वेदान्ती बखाने वृत्ति[8],
शास्त्री सो सुजस सैली[9] रटता रहा करै।
श्रौत स्मार्त्त कार्य आर्य हव्यकव्य[10] श्रद्धा[11] सोभा,
च्यारों वर्णाश्रम ये चितमें चहा करै।
हाहा जसवंत मरु[12] नाथ के त्रिदिव[13] जातों,
नास्तिक निचोरै नीति आस्तिक अहा करे।

१—आराधना की। २—बेशुमार। ३—घर। ४—धन।
५—छुपे। ६—पृथ्वी। ७—यश। ८—स्वभाव। ९—रीति।
१०—श्राद्ध। ११-दृढ़भावना। १२—मारवाड़, मरुस्थल।
१३—स्वर्ग।

जैनी जस जपै जाको पुरानी[1] प्रसंसा पढ़ै,
क्रिसानी[2] कुरानी[3] कथा कीर्तन कहा करै॥१२॥
आर्य्यावर्त अखिल[4] मलाका[5] ऽस्साम[6] ब्रह्मा[7] ही में,
तिब्बत[8] में चीन[9] में कौचीन[10] में किनारै में।

१—पुराणों को मानने वाले, पौराणिक। २—ईसाई, क्रिस्टियन। ३—मुसलमान। भारतवर्ष में मुसलमान ७ करोड़ ८० लाख हैं। राजपूताने में १० लाख ७० हजार और मारवाड़ राज्य में १ लाख ६० हजार हैं। दिनोदिन इनकी गिनती बढ़ती जाती है। ४—तमाम, सारा। ५—पूर्वी प्रायद्वीप यानी इन्डोचीन के स्ट्रेटस सैटलमेन्ट का मलाका नामक टापू जो सिंगापुर वन्दरगाह के उत्तर पश्चिम में २४० मील पर है। ६—भारत मे उत्तर पूर्व बंगाल प्रान्त का एक भाग जिसका प्राचीन नाम कामरूप और अब "आसाम" है। ७—बंगाल प्रान्त के पूर्व का देश, विधाता, ईश्वर। ८—हिमालय के उत्तर के एक देश का नाम। इस तिब्बत (भोट) देश की उन्नति का समय ईशा की ७ वीं शताब्दी है। इसी वक्त वहाँ बौद्ध-धर्म का प्रचार हुआ और भारतीय भाषा के ३० अक्षर वहाँ की लिपि में लिये गये तथा "ल्हासा" नगर राजधानी बना। ९—भारत के उत्तर पूर्व का चीन देश। १०—दक्षिण भारत का एक देशी राज्य जो बड़ी उन्नति पर है।

अफ़गानि[१] बलोचिस्थान[२] अर्ब[३] में ईरान[४] ही में,
कासगार[५] खीवा[६] कंद[७] बलख[८] बुखारै[९] में।
नाम जसवंत जसधारी को न जाने कौन,
रूम[१०] मांहीं रूस[११] मांहीं राजे दरबारे में।

१—भारत का पड़ौसी राज्य अफगानिस्तान। इसकी राजधानी अब काबुल है। ८ वीं शताब्दी तक इस देश में हिन्दू राज्य था। २—भारत के पश्चिमोत्तर का देश जो अफगानिस्तान के दक्षिण में और भारतवर्ष के सिंध प्रान्त के पश्चिम में है। ३—एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिम कोने पर यह देश है जहाँ मुहम्मद जन्मा था। ४—फारस देश, परसिया। ५—पूर्वी तुर्किस्तान का काशगर शहर। ६—पश्चिमी तुर्किस्तान मे एक शहर। ७—एक शहर का नाम। ८—पश्चिमी तुर्किस्तान का एक इलाका। ६—पश्चिमी तुर्किस्तान मे। १०—तुर्किस्तान (टर्की) का दूसरा नाम। ११—संसार का सब से बड़ा एक देश जो यूरोप और एशिया दोनो महाद्वीपों के उत्तरी भाग मे फैला हुआ है। और अब वहाँ प्रजातन्त्र राज्य है। इस देश मे बड़ी बड़ी नदियाँ और बड़े बड़े मैदान और जंगल हैं।

एसिया[१] में योरप[२] में एफ्रिका[३] ओसीनिया[४] में।
उभय अमेरिका[५] में भूमंडल भारै में ॥१३॥

१—पूर्वी गोलार्द्ध का पूर्वी भाग जो पृथ्वी के सब महाद्वीपो से विस्तार और आबादी में बड़ा है । इसमे १ अर्ब १ करोड़ तीस लाख आदमी निवास करते हैं । इस महाद्वीप मे भारतवर्ष, ईरान, अफगानिस्तान, ब्रह्मा, श्याम, तिब्बत, चीन, जापान, जावा-सुमात्रा, अरब, और तुर्किस्तान नामक देश हैं । यूरोप निवासी (गोरे लोग) अपने विस्तार के लिये दूसरे देशों मे जा बसे हैं परन्तु ऐशिया निवासी अपने ही देश मे गिनती बढ़ाते जाते हैं जिससे जीवनक्षेत्र दिनोदिन कठिन होता जाता है । परन्तु जब तक भारत स्वतन्त्र नही हो जाता तब तक विदेशो में जा बसना है भी आपत्तिजनक । २—पूर्वी गोलार्द्ध के वायव्य कोण का महाद्वीप । विस्तार मे यह सबसे छोटा है परन्तु विद्या, शक्ति, हुनर, योग्यता में सबसे बढ़कर। ठंडा देश होने से इसके निवासी गोरे रंग के हैं। आबादी ४७ करोड़ ५० लाख है। इसमे इङ्गलैंड (विलायत), स्काटलैंड, आयरलैंड, फ्रांस, जर्मनी, रूस, पोर्चुगाल, इटली, ग्रीस, आस्ट्रीया, होलैंड, बेलजियम, स्वीटजरलैंड, स्पेन आदि देश हैं । यहाँ के निवासी अपने को आर्य्य वंशज मानते है। ३—पूर्वी गोलार्द्ध का पश्चिमी हिस्सा। इसकी आबादी करीब २५ करोड़ है और रकबा एक करोड़ ५० लाख मील मुरब्बा है। ४—अमेरिका महाद्वीप में टापुओ के झुण्ड के एक प्रान्त का नाम है। ५—पश्चिमी गोलार्द्ध का महाद्वीप जिसका पता कोलम्बस साहब ने सन् १४९२ ई० की १२ अक्टूबर (वि० सं० १५४९ भादो बदि ७)

चित्र रामचंद्र को पवित्र पत्र प्रक्षित[१] को,
जान्यो मैं विचित्र ब्याज जैचंद[२] के खाता को।

शुक्रवार को लगाया था। ज्योतिषी अमेरीगो साहब ने पहले पहल इस नई दुनिया का हाल लिखा था इससे इसका नाम "अमेरिका" होगया। १७ वीं सदी मे अंग्रेजो की अच्छी बस्ती यहाँ बसी। क्षेत्रफल १ करोड़ ५५ लाख वर्गमील और आबादी १४ करोड़ है। ग्रामोफोन, सिनेमा, बिजली, आदि कई अद्भुत वस्तुओं की ईजाद यहां से हुई है। इस महाद्वीप का पुराना नाम 'पाताल देश" है और अर्जुन यहाँ ही व्याहा था। १—तृतीय पांडव अर्जुन का पौत्र और वीर अभिमन्यु का पुत्र राजा परीक्षित एक नागवंशी क्षत्रिय के हाथ से मारा गया था। २—कन्नौज के इस प्रतापी राजा का राज्य पांचाल देश (गंगा यमुना के बीच का दोआब) और काशी (बनारस) से परे तक फैला हुआ था। इसका राज्याभिषेक सं० १२२६ आषाढ़ सुदि ६ रविवार (ता० २१-६-११७० ई०) को हुआ और सवत् १२५० (हि० ५६०=ई० ११६३) मे ये चंदावल (इटावा) में सुलतान शहाबुद्दीन गौरी के साथ के युद्ध मे काम आया। इस का अपनी कन्या संयोगिता के स्वयंवर (विवाह) के लिये राजसूय यज्ञ करना और अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान का संयोगिता को हरण करना तथा इसके फलस्वरूप जयचन्द्र गाहड़वाल का विभीषण बन कर मुसलमानो को भारत पर चढ़ा लाना। ये सब बातें कपोल कल्पित है। इनका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है। यदि ये सब बातें सत्य होती तो इनका जिकर जयचन्द्र के शिलालेखो, ताम्रपत्रों, आदि मे अवश्य मिलता। न ये घटनाएँ पृथ्वीराज चौहान के समय मे बने "पृथ्वीराज विजय" में

पैमाना[1] प्रथू[2] को औ बयाना[3] बीर विक्रम को,
माना परवाना मान[4] दाना बलि दाता को।
नीराकर्न कर्न को सुचर्न चक्रवर्तिन को,
पर्न[5] कल्प-पोदा[6] को सु सार्टिफिक्ट[7] साता[8] को
दीनन को दाता जगत्राता[9] जसवंत जैसो,
खोसलीनो[10] वाता[11] क्यों नमूनो मांनधाता[12] को। ४
कुप्पा थो अमी[13] को जमीदारों को जहांन जानै,
सीतल समीर अरथीन[14] तन ताता को।

ही, न विक्रम की १४ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बने "हम्मीर महाकाव्य" में इनका कहीं भी जिक्र है। (देखो नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १ अंक ४ में सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान् महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर ओझा का लेख पृष्ठ ४०६ माघ सं० १९७७ वि०, फरवरी सन् १९२१ ई०, तथा विद्याविनोद कुँ० जगदीशसिह गहलोत कृत "मारवाड़ राज्य का इतिहास" द्वितीयावृत्ति पृष्ठ ५७२ दिसम्बर सन् १९२५ ई० और "क्या जयचन्द्र देश-द्रोही था") पृष्ठ २। १—माप करने का यन्त्र। २—यह इक्ष्वाकु वंश का पाँचवाँ राजा था। जिसने अपने अश्वमेध यज्ञ में ब्राह्मण आदि को बड़ा दान दिया था। इसके पिता वेन को हरिवंश पुराण में बड़ा दुष्ट व दुराचारी लिखा है। ३—शाही। ४—जोधपुर नरेश मानसिंह। ५—पत्ता। ६—कल्पवृक्ष। ७—प्रमाणपत्र। ८-शान्ति। ९—रखवाला, रक्षक। १०—छीन लिया। ११—विधाता। १२—यह सूर्यवंशी राजा युवनाश्व का पुत्र और बड़ा दानी राजा था। इसकी रानी शशिमती राजा शशिबिन्दु की पुत्री थी। १३—अमृत। १४—इच्छुकों का।

गल्ला[1] सुभगाथा को पवित्रता को पल्ला[2] थो वो,
अल्ला थो मुसल्लावों को मल्ला थन माता को।
अत्र थो प्रसिद्ध आतपत्र[3] मात्र आर्य्यन को,
छत्र छत्रधारिन नछत्र सुख साता को।
जाता रहा लेके वो अमोल रत्न दाता जसू[4],
पोल में विधाता पायो मोल मांनधाता को ॥१५॥
विक्टोरिया[5] ईश्वरी के दाता वैसराय[6] आवैं,
दान कानून दैंन सर्व सुख सत्ता को।

१—संग्रह। २—वर्त्तन, पलड़ा। ३—छाता, छत्र। ४—महाराजा जसवन्तसिंह। ५—इङ्गलंड की महारानी और भारतवर्ष की राजराजेश्वरी विक्टोरिया जिसने सं १९१४ वि० के गदर के बाद अँग्रेज बनियो की ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अन्त कर भारत के राज-काज की डोरी अपने हाथ मे सँभाली। ता० १ नवम्बर सन् १८५८ ई० को इस दयालु रानी ने अपने घोषणा पत्र में भारतवासियों को वचन दिया था कि "मेरे राज्य मे सारी प्रजा के साथ एकसा वर्त्ताव होगा, कोई अपनी जाति, धर्म अथवा रंग के कारण किसी ओहदे से वंचित नहीं किया जायगा और सरकार किसी के धर्म-सम्बन्धी मामलों मे दस्तनदाजी न करेगी"। इसका लोगों पर बड़ा असर पड़ा और महारानी की उदारता की सर्वत्र प्रशंसा होने लगी। इसी पत्र में देशी राजाओ को गोद लेने की आज्ञा दी गई। कानून-कायदे ठीक किये गये और जाव्ता दीवानी, ताजीरात हिन्द और जाव्ता फौजदारी बन कर सारे भारत मे चालू किये गये। २२ जनवरी सन् १९०१ ई० को ८२ वर्ष की आयु में इस महारानी का स्वर्गवास हुआ। ये भारतीय प्रजा के सुख दुःख का बड़ा ध्यान रखती थीं। ६—बड़ा लाट।

मांनधाता रामचंद्र धर्मराज[1] विक्रम से,
लिबरल[2] पधारे लार्ड, मेट उनमत्ता को।
लेट लार्ड भूप जसवंत को रिटायर[3] भो,
पार्लीयमैन्ट[4] परलोक पूगौ पत्ता को।
कंसरवेटिव[5] कलीकाल पारटी[6] प्रबल या में,
कौन लाठ ह्वैहैं देखैं कीर्ति कलकत्ता को ॥१६॥

२

[सवैया]

होय कृपाल कृपा न करी हरि,
सो तुमको कलि काल सिखायो।
ऐसे अमोलक बालक को अह,
हा हमने नहिं लाड[7] लिखायो।
दे युवराजपनो सिरदार[8] कों,

१—युधिष्ठिर। २—उदार। ३—अवसर आन। ४—राज सभा। ५—संकीर्ण, ओछे। ६—मंडली, टोली। ७—प्यार, दुलार। ८—महाराजा जसवन्तसिंह के इकलौते औरस सुपुत्र प्रजाप्रिय महाराजा सरदारसिंह बहादुर। ये सं० १६३६ माघ सुदि १ को जन्मे और सं० १६५२ कार्तिक सुदि ७ को राजगद्दी पर बैठे, और ३१ वर्ष की आयु में सं० १६६७ चैत्र वदि ५ (ता० २०-३-१६११ ई०) को स्वर्गवास हुए। सं० १६५५ से इनके स्वर्गवास तक सब राज्य-काज इन

पाछे नहिं परलोक पिखायो[1]।
भो भगवंत भलो न करो दृग,
श्री जसवंत को अंत दिखायो ॥१॥
श्री जसवंत की सोची नहीं सुन,
पोची[2] करी परलोक पठायो।
क्यों कलिकाल के भिक्षुक पच्छिन,
को बट-प्राग[3] प्रलम्ब कटायो।

के प्रधान मंत्री काश्मीरी पं० सुखदेवप्रसाद काक के ही हाथ मे रहा। सं० १९६३ (सन् १९०५ ई० मे महाराजा साहब के कण्ठमाल (Scrofula) का रोग हो गया और ३-४ दफे चीरा लगाये जाने पर भी हर आपरेशन के बाद गाँठे फिर आने लगी। अन्त में अँग्रेजी इलाज से तंग आकर महाराजा ने देशी दवा कराने का विचारा। अतः कार्तिक सुदि ८ बृहस्पतिवार (ता० २५ नवम्बर १९०६ ई०) से आपने अपने गुरुवर ब्रह्मनिष्ठ महात्मा देवीदान संन्यासी से इलाज कराना शुरू किया और करीब डेढ़ मास मे रोग सदा के लिए जड़ से मिट गया। आप के ही अनुरोध से दूर जंगलों व एकान्त श्मशानों से आकर संन्यासीजी सं० १९६३ मगसिर वदि २ (ता० २१ नवम्बर) से जोधपुर शहर से ५ मील दूर के गाँव चौपासनी के पास पहाड़ों मे एक रमणीक एकान्त स्थान (देवीदान-देवस्थान) मे रहने लगे। (देखो इतिहासवेत्ता श्रीजगदीशसिंह गहलोत कृत "जीवन-चरित" महात्मा देवीदान संन्यासी पृष्ठ ७ सन् १९२१ ई०) १—दिखलाया। २—बुरी। ३—प्रयाग का वट वृक्ष।

हाल अधीनन हीनन को हद,
दीनन को सुख द्वार ददायो ।
हाथन कों कहियें कहा हे हरि,
वातें अनाथन नाथ उठायो ॥२॥
पागयो तूं सु उठा गयो हा पुन,
सालम पोलम सोलमौं सोनो ।
हीन भये हम वा विन हा हिय,
छीन लयो तखतेस को छोनो[१] ।
रोनो है ये मन में निस वासर,
जाके जिसो जग होनो अहोनो[२] ।
हो गुनवंत जो राम लियो हर,
श्री जसवंत सो स्याम सलोनो ॥३
केस अस्वेत[३] हुते कछु कायक,
पूरी भई नहिं वेस[३] पिधायो ।
सेस[५] असेस[६] किते घर कारज,
ऐसी समे निज ध्वेस इधायो[७] ।
वा विधि पेस करी सुव्यथा वपु,
वो गुर लेलयो कान बिंधायो ।

१—बच्चा । २—नहीं होना । ३—काले । ४—उम्र ५—बाक़ी । ६—बेबाक़ी । ७—जताया ।

देस तजे मरुदेस दिनेश्वर,
श्री जसवंत नरेश सिधायो ॥४॥
राजन में सुरराज समो मह्रा,
राजन में महाराज समेलै[1] ।
पाज[2] अपाहिज सर्व समाज सु,
पुन्न जहाज मिलै भव[3] पैलै[4] ।
काज अकाज करै करता कछु,
लाज लगै नहिं दै फिर लैलै ।
तूं जसवंत प्रथी सिरताज,
गरीबनवाज गयो किन गैलै[5] ॥५॥
औध तिहारि ये बावनो[6] हो अब,
आवनो है नहिं बात अधूरी ।
वा विधि कों विरमावनो[7] हो चित,
चावनो मौलत होति मंजूरी ।
श्री जसवंत सुहावनो हो दिल,
भावनो हो सु भयो किम दूरी ।
ठीक यहां ठहरावनो हो जग,
जावनो हो नहिं तेरो जरूरी ॥६॥

१—बराबर । २—सेतु, पुल । ३—संसार, लोक । ४—अगले । ५—रास्ते । ६—सं० १९५२ का वर्ष । ७—बिलमाना ।

लाखन[1] को धन लाखन[2] दे दृत,
लाखन[3] के मुख ले जस लारो।
लाखन को पनराखन हारो रु,
लाखन को लखिये रुखवारो।
श्री जसवंत सु लाखन को सुख,
लाखन लोगन साख सहारो।
पेखिये भाखन[4] "लाख मरो पै,
मरो मत लाख को पालनहारो" ॥७॥
इतके न रहे न रहे उतके गत,
कागन[5] की सु बनी वस बेरे[6]।
हेरे कछू नहिं सूझत है मन,
मांझ असूझत सांझ सवेरे।
घेरे रहैं घर बाहिर में दुख,
एरे भए दिल खात दरेरे[7]।
नेरे सुनो जसवंत नरेश्वर,
तेरे बिना हम मेरे न तेरे ॥८॥
वे धन धाम धराधिप वे गुन,
ऊठ गयो पिंडतें कछु प्यारो।

१—लाखों रुपयों का। २—लाखों मनुष्यों का। ३—लाखों मनुष्यों। ४—कहावत। ५—जहाज पर बैठा हुआ कौवा। ६—जहाज के डूबने पर कहाँ जावे। ७—फाड़े।

नैन रु बैन सबी नृप के निज,
नाथ निहारबो बोलबो न्यारो।
श्री जसवंत जहांन कों संभ्रम,
ऐसो कियो जु सवाय[1] इसारो।
वा बिन और की और भई अब,
वो कछु और हतो उनिहारो ॥६॥
राजराजेश्वर बागराई[2] बस[3],
आनंद सों मधु[4] पान पियो है।
लालच लाग के लोक को लोक में,
दांम कछू नहिं लेस लियो है।

१—निराला, दूसरे से अधिक। २—जोधपुर के एक राजमहल का नाम जो महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम (सं० १६६५–१७३५ वि०) की महारानी जसवन्तदे हाड़ी (कल्याण-देवी) ने अपनी एक कृपापात्र दासी (दरोगन) "रायकी" के नाम से इस महल व बाग को बनवाया था। इस रानी ने एक तालाब जोधपुर में "कल्याणसर" भी बनवाया जो अब रातानाडा कहलाता है। यह "रायका बाग" नामक महल महाराजा जसवन्तसिंह (द्वितीय) का प्रिय निवास स्थान था और वर्त्तमान जोधपुर नरेश भी सपरिवार यहीं निवास करते हैं इसी महल के पास ही राज्य की कचहरी व दफ्तरों के विशाल भवन हैं। (देखो "गाइड टू जोधपुर" पृष्ठ २३ सन् १८६० ई०)। ३—रह कर। ४—शहद।

कीरत जाकि हजारों करैं नर,
दान हजारों हजारों दियो है।
श्री जसवंत जियो है जहां लग,
कीयो है जाको भलो हि कियो है॥१०॥
लाभ हुतो जिनकों जितनों लख,
हानि हुई उतनी फिर हानै।
कूप परैं गिरतैं कि गिरैं कि,
मरैं कि जरैं मन एक न मानै।
वार पुकार सु हार गए बस,
छार भए तन छानैहि छानै।
पीव गयो जसवन्त जिन्है पुन,
जीव दसा निज जीव हि जानै॥११॥
सांझ कथा सु चकोरन के चित,
बांझ व्यथा[1] न प्रसूत प्रमांनै।
घायल की गत घायल के घट,
ठोठ[2] अघायल सो किम ठांनै।
जैर कि घूंट भरै अमली जिम,
पांन पियूख परै नहिं पांनै।
और पगी नहिं पीय कि आकृति[3],
जाकै लगी जिय जो जिय जांनै॥१२॥

१—पीड़ा। २—अनजान। ३—शकल, सूरत।

हां हरि होवहिंगे अनुकूलहिं,
फूलहिंगे हम बे फिकराई ।
श्री सरदार कबूलहिंगे कुल,
मूलहितें पितु की प्रभुताई ।
झूलहिंगे दिलतें दुख दूरहि,
ज्यौं छबि पिंजनि तूल[1] हि छाई ।
जो जसवन्त की सूलहि सालत,
भूलहिंगे सुत[2] देख भलाई ॥१३॥
पावहिंगे सिरदार प्रभू पन,
लावहिंगे सुथ जो कुल लारी ।
आनंद के घन छावहिंगे इत,
खावहिंगे अरि कों घर खारी ।
जे दुखने उड जावहिंगे जब,
गावहिंगे गुण मंगलचारी ।
वे जसवंत भूलावहिंगे अब,
आवहिंगे दिन आंख अगारी ॥१४॥
साल अठारह पै सिरदारसि,
पाट प्रभा युवराज हि पातो ।
औ पितु पास सपूत सिरोमणि,
राज के काज कों बूझन आतो ।

१—रुई । २—पुत्र, महाराजा सरदारसिंह बहादुर से मतलब है।

पान[1] धरे सिर प्रीति प्रतीति सों,
श्री नृप तूं निज नीति सिखातो।
आब चढै तैं ये रत्न अमोलक,
और को औरहि औ हुय जातो ॥१५॥
आंब के आंब है आक के आक है,
ये क्रम सृष्टि सदा निजरायो[2]।
पेख्यो प्रतच्छ हि मच्छ[3] के वच्छ[4] कों,
खच्छ है पैरनो कोन सिखायो।
श्री सरदार उदार अनूपम,
ऊमर के इत बारहि आयो।
देख्यो नचीतो[5] है वीतो सबी दुख,
जीतो रहो जसवंत को जायो[6] ॥१६॥

३

(गीत जांगड़ो)

आवै जद याद गसा[7] तद आवै,
देख दसा दुखियारी।
रसां[8] गयो तूं हा राजेश्वर,
छोड़ जसा[9] छत्रधारी ॥१॥

१—हाथ। २—देखा गया। ३—मछली। ४—बच्चा। ५—निश्चिंत। ६—पुत्र। ७—मूर्च्छा। ८—पृथ्वी। ९—महाराजा जसवन्तसिंह (दूसरे)।

रही स्वछंद रैत तव राजस[1],
सुभ अमंद सुखियारी ।
आणंद कंद एक दम उठग्यो,
तखननंद अवतारी ॥ २ ॥
राजसथान रटै कविराजा,
कीरत दांनकहांणी ।
गयो जहांन हूंत[2] गुण ग्राहक,
मान हरौ माझांणी[3] ॥ ३ ॥
हर[4] घड़ियो हित सूं निज हाथां,
जड़ियो गढ जोधांणै[5] ।
झल झलाट करनो नग झड़ियो[6],
पड़ियो लम्ब पयांणै ॥ ४ ॥
अटे सोध अवरोध अचांणक,
बोध मोद बिसराए ।
प्राणनाथ हा नाथ जोधपुर,
गौख[7] सौध[8] गणणाए[9] ॥ ५ ॥
हा हा दिये घरोघर हेला[10],

१—राज्यकाल मे । २—से । ३—जबरदस्ती । ४—ईश्वर ५—जोधपुर । ६—गिर गया । ७—झरोखा । ८—राज-भवन, महल । ९—ग़मी छा जाना । १०—आवाजें ।

पुर जण हिए प्रलापा ।
जिये जिके नहिं जिये जांण जग,
किये अनेक कलापा[1] ॥ ६ ॥
धुवी[2] चराकां हा दिन धौले[3],
मादिन[4] सोर मचायो ।
नाद[5] सुवाद्यन[6] पत्ति निसादिन,
मादिन नहीं सुहायो ॥ ७ ॥
व्याकुलतां घुलनां वलतां वह,
मरघट पुलतां[7] माली[8] ।
अकुलतां अंतिम असवारी,
चवरां ढुलतां चाली ॥ ८ ॥
झग झग उठै हिया में झालां[9],
दृग दृग दृग जल डारै ।
मग मग लखै आवतौ मारू[10],
पग पग प्रजा पुकारै ॥ ६ ॥
बरसण लागा वैण विरंगा[11],
नरसण लागा नीठा[12] ।

१—प्रपंच । २—जगी । ३—सफेद । ४—स्त्रियें । ५—आवाज । ६—अच्छे बाजों की । ७—चली । ८—मस्ती के साथ, ठाठ से । ६—ज्वालाएँ, आग की लपटें । १०—मालिक, मारवाड़ी । ११—बेस्वाद, विरह के । १२—कृपावंत ।

परसण लागा पाव दुहेला.
दरसण छैला दीठा ॥१०॥
उरध लिलाड नीरभव आंखैं,
नाक कीर छिब न्यारी ।
दंत भुजा वछ[१] दौर धीर धर,
उर तसबीर उतारी ॥११॥
राग रंग उछरंग[२] रचाणा,
वाग राईके वाकी ।
सोग अथाग सिंधु बिच सारों,
त्याग पधारण ताकी ॥१२॥
दीनदयाल छेह[३] नहिं देता,
सदा अछेह[४] सभावां ।
पण तज देह अवेह[५] पधारो,
एह अनेह[६] अभावां ॥१३॥
दुग्घर वेला[७] कठण दुहेली[८],
उर धर म्हे अकुलावां ।
मुरधर धणी मसांण मेलने,
पुरधर[९] जाण न पावां ॥१४॥

१—छाती। २—उत्सव, जलसा। ३—किनारा। ४—बेशुमार ५—अब। ६—अप्रेम। ७—समय। ८—कठिन। ९—शहर।

मन मांणीगर[1] विन सुरझांणा,
तन हांणी अब आता ।
जांणी धन वस मुसकल जुडणा,
अन पांणी अन दाता ॥१५॥
करे सुमार भलाई कितरां,
जेट तुमार जमाडी ।
और खुमार चढी नहिं अंतर,
एक तुमार[2] अगाडी ॥१६॥
झर गुण याद कियो कललाटो[3],
ज्यूं नभ फाटो जाएं ।
गोटम गोट दियो गणणाटो,
सणणाटो समसांणे[4] ॥१७॥
प्रेत करम कीन्हां मूं पैला,[5]
और वैत[6] नहिं आयो ।
देवकुंड[7] उणरैत झूंड हग,

१—भोगी। २—तंगी। ३—रोना। ४—मसान में। ५—पहले। ६—दाव। ७—जोधपुर किले के पास ही यह तालाब है, जो महाराजा अभयसिंह (सं०१७८१—१८०५ वि०) ने बनवाया था और एक इमारत भी तैयार कराई जो अधूरी रह गई। महाराजा जसवन्तसिंह ने अपने जीवन-काल मे सं० १९४१ में अपनी एक रानी का

दैत-कुंड[1] दरसायो ॥१८॥
दाहा सब होतां दैसोती,
स्वाहा चव[2] समसांणे।
आहाहव हुयग्यो अरियों उर,
हा हा रव[3] हिंदवांणे ॥१९॥
हाथ धोय बैठा साहिनै,
साराइ खोइ सनेही।
होय अनूप राख हुयगी वा,
दोय घड़ी में देही ॥२०॥
सास उसास आपरी सोभा,
नास हुयांइ निजरावै[4]।
फूल गयो तोइ खास फूलरो,
वास कदे न विलावै[5] ॥२१॥
गूंघै गोली तन गुडकावै,
ऊंघै नींद न आवै।
सूंघै सुजस इतर तव साजन,

अन्तिम संस्कार यहीं कराया था। तब से मंडोवर के स्थान मे राजवंश की श्मशान-भूमि यही है। (देखो मारवाड़ राज्यका इतिहास पृ० २२२ सन् १९२५ ई०) १—दैत्यों का हौज। २—कह कर। ३—आवाज। ४—दीखती है। ५—जाती है।

मूँघै[1] मोल मुलावै[2] ॥२२॥
हा मा बाप हमीर[3] हीडाऊ[4],
सुपहां दीप[5] सवाया।
अगलो पाप फिरै कोइ आडो,
आप निजर नहिं आया ॥२३॥
धोय धोय तन चख जल धारा,
रोय रोय नर नारी।
जोय जोय थाका जग जांमी[6],
कोय न लागी कारी[7] ॥२४॥
छबर छबर आंसू घर छिडकी,
उर में सबर न आई।
जबर पयांणै गौ जगपालक,
पाछी खबर न पाई ॥२५॥
आठों पौर अंगीठा[8] ओपम,
उर मीठा बच आंणै।
मौजां देतां नैण मजीठा,
जो दीठा[9] सो जांणै ॥२६॥
लिया कनौजी दल निज लारै[10],

१—महँगा। २—खरीदते हैं। ३—साहसी, हिम्मत वाला। ४—विशाल मूर्ति। ५—गर्व। ६—रक्षक। ७—तजवीज। ८—अंगीठी। ९—देखे। १०—पीछे।

गुण फौजी बलगाजा ।
एकरसूं आजे[1] चित-चौजी[2],
मन मौजी महाराजा ॥२७॥
तो बिन हाय खाय तन तिवरां,
इंवरां[3] जगत इसारां ।
सिवरां[4] थने[5] हिंदवा सूरज,
बिवरां[6] नहीं बिसारां ॥२८॥
पांखां[7] खोस गयो प्रभु प्यारो,
नित नांखां निसकारो[8] ।
नहिं झांखां[9] तोहि हुवै न न्यारो,
आंखां सूं उणियारो ॥२९॥
डूलाया किणरा नहिं डूलां,
फूलाया नहिं फूलां ।
झूलाया थारा म्हे झूलां,
भूलाया नहिं भूलां ॥३०॥
असरण सरण बणाई यूंही,
जनम मरण पुल जैडी[10] ।

१—आना, पधारना । २—मन उमंग वाले । ३—चलते हैं । ४—याद करते है । ५—आपको । ६—वर्ताव । ७—पाँखें । ८—शोक भरे श्वास । ९—देखते हैं । १०—जैसी ।

तारण तरण गयो जसवंत तूं,
कारण करण कचेडी ॥३१॥
तूं मर अमर हुयो तखतावत,
ले जस सूंमर[1] लाखा।
घूमर[2] आव जसू पूरण घण,
ऊमर री अभिलाखा[3] ॥३२॥

४

[दोहा]

अलख अजोनी आतमा, अचल अनूप अनंत।
तूं मारै तारै तुहीं, भिले-भिले[4] भगवंत ॥१॥
तूं ऊंचा खैंचै तिके, जग ऊंचा हुय जाय।
मन खांचै तूं माढवां, जिके रसातल जाय ॥२॥
जसधारी जसवंत नृप, हौ खांविंद हिंदवांण।
अनवीं मुरधर रै अदिन, जोखमियो घण जांण ॥३॥
तपधारी तखतेस रो, सुत मोभी सुभियांण।
धरा हूँत मुरधर धणीं, पूगो सुरग पयांण ॥४॥

१-मूम की सम्पत्ति। २—घूम कर। ३—इच्छा।
४—धन्य है, धन्य है।

उगणीसै बावन उरज[1], आठम कवि[2] वद ईस ।
चार बज्या जसवंत चल्यो[3] पूरा मिंट पैंतीस ॥५॥
जीव दियो जसवंत जद, चमके लोक अचंभ ।
थिर[4] पर राजसथांन रो, थंभ गिरयो रण-थंभ[5] ॥६॥
हा जसवंत हक बक हुवो, अकबक[6] लोक अजांण।
महपत पोतो मांन रो, पड़ियो गुण अप्रमांण ॥७॥
हांणी नृप जातां हुई, लेखण सकै न लेख ।
पाटोधर धर पौढियौ, आइयो लेख अलेख[7] ॥८॥
जत्र तत्र फबतौ जसौ, लियां छत्रवट[8] लाज ।
छत्र हुतो छत्र धारियों, अत्र ढयो दिन आज ॥९॥
प्रांण पठै[9] जसवंत प्रभु, अठै नहीं अवसेस ।
जठै-तठै[10] जोवै जगत, कठै[11] गयो कमधेस[12] ॥१०॥

१—कार्तिक मास । २—शुक्रवार । ३—देहांत हुआ । ४—स्थिरा (पृथ्वी) । ५—योद्धा । ६—अवाक् । ७—ईश्वर । ८—क्षत्रियव्रत । ९—भेजे । १०—जहाँ तहाँ । ११—कहाँ । १२—राठोड़ो का स्वामी । कहते हैं कि राठोड़ो के किसी पूर्वज का सिर कट जाने के बाद भी उसका कबंध (धड़) शत्रु से लड़ता रहा । इससे उसके वंश वाले कबंधज कहलाये । कहीं कमधज नाम का कोई राजा होना भी लिखा है जिसके वंशज "कमधज" कहलाये (देखो मारवाड़के ग्राम गीत पृष्ठ १२६) ।

साथ झुरै[1] जसवंत सह, दुखी अनाथ दयाल।
हाथ न आवै हे हरी, कमधां नाथ कृपाल ॥११॥
तो समान तोलूं तुला, खांबद जसवंत खैंग।
तेज लैण जावै नृपत, सूरज मंडल सैंग[2] ॥१२॥
एकै चेलै[3] सब अधिप[4], एकै चेलै आप।
तोई बिरोबर नह तुलै, जसवंत तो जस जाप ॥१३॥
हलकोड़ो ऊंचो हुवै, सुपह बिरमियों साथ।
नृप जसवंत नीचो निमैं, सोने ज्यूं समराथ ॥१४॥
जस सुण औ जसवंत रौ, होवै इचरज हिंद।
ऊंचा गुण सो क्यूं अहो, नीचो जाय नरिंद ॥१५॥
नीर फवारां निरखलौ, लाभै जसवंत लाभ।
जितरो नीचो है जमी, उतरो ऊंचो आभ[5] ॥१६॥
अलंकार मांहीं अहो, बस देखियें बिचित्र।
लहै ऊंचता लैणनें, पूरा पुरुष पवित्र ॥१७॥
दांन जिसो नह दूसरो, दांन स्वरग रो द्वार।
जो दांनी जसवंत नै, सब जांणै संसार ॥१८॥
जसवंत नृप रो जगत में, इक्को[6] नांम उदार।
सुदतारों रौ सेहरौ,[7] दाता रों दातार ॥१९॥

१—रोते हैं। २—तमाम। ३—पलड़ा मे। ४—राजा। ५—आकाश। ६—अद्वितीय। ७—सिर का भूषण।

लोभ लाय में लाख गुण, जबरोडा जल जाय।
कनक दांन रा कीच में, के औगण कलजाय[1] ॥२०॥

ज्यूं चीजां जसवंत री, चुण चुण चित सूं चाय।
लोभी जस तज लेगयो, सज्जन-रांण[2] सराय[3] ॥२१॥

तिम लेतां सज्जन तणा, सानंद हुयो सरीर।
जिम देतां जसवंत रो, हौ मन अत हमगीर[4] ॥२२॥

चित में जैड़ी चुगलरै, चुगली वाली चाय।
इँउँ आनी जसवंत उर, देवण वाली दाय[5] ॥२३॥

जग मांही जसवंत रौ, सीधो हुतो सुभाव।
दिल उज्जल नहिं बदलतौ, रंक मिलौ चाहै राव ॥२४॥

इँउँ कैतौ जसवंत अधिप, विमल विचार विचार।
इल[6] सबलां रै आसरै, निबलोड़ा नर नार ॥२५॥

मांण मेल कोई मांनवी, छित आवै घर छाड।
उणरो रखणी आबरू[7], लखलां सूं की लाड[8] ॥२६॥

दुखी देखियां दीनने, दाता देत दयाल।
देस काल अरु घुसत दिस, करैन आंख कृपाल ॥२७॥

१—नीचे धँस जाते हैं। २—उदयपुर के हिन्दुआ सूरज महाराणा सज्जनसिंह। ३—सराहना करके। ४—प्रसन्न, साथ। ५—पसंद। ६—पृथ्वी पर। ७—इज्जत। ८—प्रेम।

लाखां धन दे लोक नै, मरद मरोड़ै मूंछ।
सापुरसां[1] रै सींग नहिं, पामर[2] रै नहिं पूंछ ॥२८॥

इधकारी अनरा अवस, मुसकल में नर मात्र।
जाचण आयां जीवनै, कहैं कुपात्र कुपात्र ॥२९॥

जसवंत कोई जीवने, कदे न कह्यो कुपात्र।
तैं समज्यो तखतेस तण[3], सनमुख हुयो सुपात्र ॥३०॥

जसवंत दीनां जीवने, राजी होवे राम।
नालायक सूं की नहीं, की लायक सूं काम ॥३१॥

जसवंत जग में जीवड़ा, सो न लखै हिय सुन्य।
स्वारथ हांती सारखो, परमारथ सो पुन्य ॥३२॥

जसवंत कैतौ जीवनै, पोषण में नहिं पाप।
काफ़र[4] नहिं दैणो कहै, वेइज काफर आप ॥३३॥

देतां दत आडी दियै, वो ऊँधो उपदेस।
सांनीवालों री समझ, लासांनी नहिं लेस ॥३४॥

पसू पसू कह पुरुष नै, आघो[5] करे अनर्थ।
पसू जिसा वे पुरुषड़ा, आवै और न अर्थ ॥३५॥

साकट[6] कह कह बेसमझ, दीन हटावै दूर।
साकट वेहिज समझणा, सींग बिनां बेसूर ॥३६॥

१—भले आदमियो के। २—नीच, पापी। ३—पुत्र। ४—मलेच्छ, कमीन, नीच। ५—दूर। ६—बैल।

खुधा त्रिषा पीड़ित पुरुष, तन त्यागंत अतीव।
अभवी[1] कह न अनाप[2] दै, जेहिज अभवी जीव ॥३७॥
जसवंत केतौ जाचनै, लेजावो सब लोग।
उत्तम मद्धम अधम रो, राख्यो एक न रोग ॥३८॥
कै अभवी -काफर कहै, कहै कुपात्र कुजात।
आ हदवालां री अकल, बेहद री नहिं बात ॥३९॥
पाई पुन परताप सूं, दुरलभ मांनव देह।
बिपता हूँत बचावणी, ग्यांन मुगत रो गेह ॥४०॥
मांनवियों चूको मती, आयो मौसर[3] एह।
देह देह धन दीन नै, लाभ जनमरौ लेह ॥४१॥
जसवंत ग्यो इण जगत नै, वेला पुल बतलाय।
सो वेला पुल, हुय सम्मुख, जाचक विमुख न जाय॥४२॥
गया श्राद्ध तीरथ ग्रहण, सरब परब समुदाय।
है सारा इण हाथ में, हलै तो हाथ हलाय ॥४३॥
दांन कियां मिलसी दुगुण हरि दीना दुय हाथ।
ओखांणो[4] जग ओलखौ[5], हाथ दियौ सो साथ ॥४४॥
हाथ थकां कर हाथ सूं, हाथ ऊपरै हाथ।
हाथ मसलतां हाथ सूं, हाथ पड़े जम हाथ ॥४५॥

१—अभव्य। २—अन्न-जल। ३—मौका, सुभीता, मृत्यु-भोज। ४—कहावत। ५—पहिचानों।

हाथ आथ दे हाथ सूं, हाथ आथ[1] हुयजाय।
हाथ आथ नहिं होवसी, हाथ आथ दुहूँ जाय ॥४६॥

हाथ न अपणै होवसी, हरी हाथ जयहार।
पटक हाथ पिछतावसी, पाछे हाथ पसार ॥४७॥
दांन हाथ सूं नह दियौ, अपणै हाथ अनाथ।
गयौ हाथ सूं सब गरथ[2] हाथ छतां पर हाथ ॥४८॥

अपणी सरधा सम अवर, दान देत सुदतार।
इण ऊपर होवै अमर, साख भरै संसार ॥४९॥
आछी बातां दोय इण, सब जांणत संसार।
कै सिमरण करतार रौ, सिमरण कै सुदतार ॥५०॥

सब जांणत संसार ये, किणसूं छिपी न कोय।
जोड़ै बाजै जगत में, दाता करता दोय ॥५१॥

लेत नांम जिण समय लख. नट चढ बरत निहार।
रहै प्रथम दातार रौ, कहै फेर किरतार ॥५२॥
जग ज्यां रो मांगण जलम, ईश्वर दियो अलीन।
दांम छतां ऊतर दिये, मांगण हूँत मलीन ॥५३॥

मनै समझ मोटो मिनख, जाचण आवै जीव।
वो इडं[3], जावै दिवस वो, दोजे मती दईव[4] ॥५४॥

१—धन (अर्थ)। २—धन। ३—बिना पाये, विमुख। ४—हे ईश्वर।

जसवंत आवण जांणतौ, दुखियो पैलां द्वार।
सुखियो कदे न संचरै, बीजां मांगण वार ॥५५॥

कादर दूजां रो करै, अन आदर अदतार।
आयां रो आदर करै, आदरवंत उदार ॥५६॥

बार बणायर बैठतौ, मिजलस मिजलस मौड़।
पड़दै में नहिं बैठतौ, दूजां ज्यूं घुस दौड़ ॥५७॥

बैतौह आयो बारलौ[1], मारवाड़ रै मांय।
जसवंत भूप जुहारियौ[2], कसर[3] न राखी कांय ॥५८॥

मोटां छोटां मुसदियां, बुलवातौ दरबार।
जसवंत खातर जीव का, सारां[4] लेतौ सार[5] ॥५९॥

काम सूंप कीनौ नहीं, दोस विनां कोइ दूर।
कियो गुनो तोइ माफ किय, हा जसवंत हजूर ॥६०॥

धिनो धिनो जसवंत धणी, नृप कीन्हौ तैं नेह।
जकां निभाया जीवतां, छिलक न दीनौ छेह ॥६१॥

एक नं कदे उतारीयौ, दिल सूं मरजीदांन।
तैं राखी तखतेस तण, अपणाए रो आंन ॥६२॥

१—बाहर का, विदेशी। २—नमस्कार किया। ३—कमी।
४—सब की। ५—सम्भाल।

हाडोती[1] हिल मिल हुई, मेल कियो मेवाड़[2] ।
घर जसवंत रै घुमँड[3] नै, ढूकी घर ढूंढाड़[4] ॥६३॥

जगजांमी जसवंत री, हुयो बड़ौदे[5] हेत ।
प्रीत बधावण परसपर, सुपहां[6] किया सचेत ॥६४॥

कदे न राखी कुरब री, करड़ाई सूं कांण ।
सारां घर ज्यूं समभियौ, जसवंत नै जोधांण ॥६५॥

१—बूंदी और कोटा राज्यों की भूमि का नाम । २—उदयपुर राज्य । ३—उमड़ कर । ४—जयपुर राज्य का पुराना नाम । इस राज्य की भूमि का प्राचीन नाम "मत्स्य देश" मिलता है । कालान्तर में ऊजड़ या बन हो जाने से इसका नाम "ढूंढाड़" पड़ा । कछवाहा महाराजा सवाई जयसिंह (दूसरे) ने अपने प्रधान-मंत्री बंगाली पंडित विद्याधर की राय से सं० १७८४ सावण सुदि ७ (सन् १७२७ ता० १४ जुलाई शुक्रवार) को जयपुर नगर की नींव रख कर आंबेर के बजाय जयपुर को राजधानी बनाया । इस शहर के सब बाजार, गली, कूंचे लेनडोरी से नाप कर बनवाये गये थे । पक्के परकोटे में शहर दो मील लम्बा और सवा मील चौड़ा है । बाजार ४० गज चौड़े हैं । हिन्दुओं के बनाये हुए सब शहरों में जयपुर बड़ा सुन्दर है । यह भारत का "पैरिस" कहलाता है । शहर की आबादी १ लाख ४४ हजार है । ५—गुजरात का मराठा गायकवाड़ वंशी बड़ौदा राज्य जो अपने को राठौड़ क्षत्रिय बताते हैं और भारत में एक बड़ा उन्नत राज्य है । ६—राजाओं को ।

बडभागी दीना विविद, संपत हित सनमान ।
संप[1] राखणौ सीखियौ, थिर चित राजसथान ॥६६॥

ज्यूं बधियौ जसवंत रौ, गवरमैन्ट[2] हित गाढ[3] ।
दोयण[4] सरब दबाविया, चौड़ै छाती चाढ ॥६७॥

गैरा[5] राजी हुय गया, आयोड़ा अंगरेज ।
लाखां दिरब लगावतां, जसवंत करी न जेज ॥६८॥

रेल[6] अणायर रैत रौ, दुख कीन्हों नृप दूर ।
दुनियां काल दुकाल में, पावै अन भरपूर ॥६९॥

नहर सुधार रु नीर री, दाटी[7] सैर[8] दुमार[9] ।
मैरवांन मुरधर महिप, हैर[10] गया म्हे हार ॥७०॥

मन तन परमानंद में, सानंद रह्यो सदीव ।
सात सुखी संसार में, जसवंत समौ न जीव ॥७१॥

कीरत सूं हुय गौ कमंध, जग वल्लभ जसवंत ।
कीरत री महमा करै, इल में संत असंत ॥७२॥

करणी कीरतवंत री, रैणा अंत रहंत ।
सब दानां रौ सेहरौ, कीरत दांन कहंत ॥७३॥

१—एकता, स्नेह । २—अंगरेज सरकार । ३—प्रेम । ४—शत्रु । ५—खूब । ६—रेल, धुआँ गाड़ी । ७—मिटा दी । ८—शहर । ९—पानी का अकाल । १०—हाय ।

कीरत लीजो कल मही, राजा राणा राव।
अमर हुवण इल ऊपरै, और न एक उपाव ॥७४

४

[सोरठा]

पुल[1] धिन बैठो पाट, तिण दिन तूं तखतेस रै।
उणदिन मिटी उचाट, जोधांणै रो नृप जसा ॥१॥
समपे[2] लाखपसाव[3], गांव पटा औधा[4] गरथ।
चौरंग लक्षमी चाव, जिण तिण घर कीन्हौ जसा ॥२॥
आणंद मंगल आह, नित दंगल[5] होता नया।
पण जंगल पनसाह, जस खाटण[6] लीन्हौ जसा ॥३॥
घड़ियौ[7] घाट सुघाट, नारायण निज कर निपुण।
ठसकीला[8] वो ठाट, जो किम भूलीजै जसा ॥४॥
खेडेचा बिन खोड, परमेश्वर रचयो पुरुष।
जसवंत थारी जोड, नर दूजो दीसै नहीं ॥५॥

१—समय। २—दिये। ३—लाख रुपये का इनाम जो भाट, चारणो को राजा रईस देते है। यह इनाम नक़द रुपये मे नही दिया जाता है किन्तु हाथी, घोड़े, ऊंट, रथ, रत्न, ज़मीन व धान आदि के रूप मे दिया जाता है। इन सबका मूल्य करीब १५-२० हजार रुपये के होता है फिर भी यह "लाखपसाव" (लक्षप्रसाद) ही कहलाता है। ४—पद, अधिकार। ५—खेल, अखाड़ा। ६—संग्रह करना। ७—बनाया। ८—अदाओ वाला।

धन तन जोबन धार, घमंड करै मनमें घणा।
निरग्रब[1] तनै[2] निहार, जीता[3] म्हे खांविंद[4] जसा॥६॥
आछा घणा अनेक, एक एकसूं गुण[5] अधिक।
उणियारौ ऊ[6] एक, जग तूं थो खांवद जसा॥७॥
बहु मीठा बच बोल, हित अतौल कर हेतवां[7]।
मोल[8] बिनां तैं मोल, जग लीनौ खांवद जसा॥८॥
धिन थारो धणियाप[9], धिन धिन तूं मुरधर धणी।
धिन दिन दरसण धाप[10], जे करता खांवद जसा॥९॥
घण मोला घोडाह, घण मोली केइ घोडियां।
थुथकारिय[11] थोडाह, जगमें तो जोडा जसा॥१०
यूं तौ सौख अनेक, किया जौख मूं थैं कमंध[12]।
अजब सौख नृप एक, जग घोडाँरो हौ जसा॥११
घोड़ा के घरजाम, घर जांमी के घोड़िया।
ऊभोडी[13] आरांम, जग लेतो थारी जसा॥१२॥

१—निराभिमान। २—तुझ को। ३—जिया करते। ४—पति, मालिक। ५—सं० १६२६ पौष बदि १० को महाराजा साहब ने फलोधी शहर की लटियाल माता के मंदिर का फैसला दिया कि "हमारे पूर्वज महाराजा रामसिंहजी की खास आज्ञा से इसके पुजारी ढोली (नक्कारची-डूम) हैं। अतः उनके स्थान में मंदिर की पूजा तो अब ब्राह्मण करे परन्तु भेट पूजा (चढावा) नक्कारची लोग ही लेवेंगे। क्योंकि हम अपने पूर्वजो की आज्ञा को टालना नही चाहते।" ६—वह ७—प्रेमियो से। ८—मूल्य। ९—अपनाइत, मालिकी, संरक्षता। १०—जी भर के। ११—नजर लग जाने के डर से जो थूक डाला जाता है उसे कहते हैं। १२—राठौड़। १३—खड़ी।

बातां गई बिलाय, सुपनौ होकै सांपरत[1] ।
कैतां कई न जाय, जियरी जिय जांणै जसा ॥१३॥
सुख देग्यो समराट[2], तोटो रोटी रौ न तौ ।
आठां पौर उचाट, जावै नह जियरी जसा ॥१४॥
जीवण मरण अजांण, नहिं गैला[3] सैणा[4] नहीं ।
अधमरियां ऐनांण[5], जांणां म्हे म्हांरा जसा ॥१५॥
खावण पीवण खैर, सैर करण चीजां सरब ।
हाहा तो बिन हैर, जैर[6] जिसो जग है जसा ॥१६॥
जीणा जां लग जोय, पीणा गुटका जैर पिण ।
लाखीणा दृग लोय, जियमूं नह भूलां जसा ॥१७॥
संग रमे तव सांम[7], वे उमंग ऐसां करी ।
तू रंग गयौ तमांम, जग बिरंग[8] लागै जसा ॥१८॥
नहिं बोलां तौ नीच, जो बोलां निलजा जपै ।
बसणौ दोजक बीच, जग हसणौ बाकी जसा ॥१९॥
सुण सातां मुख सोय[9], चुण वातां चरचा चलै ।
घुण[10] लकडी तन घोय, जिणरी कुण जांणै जसा ॥२०॥
दीसै बायर दौर[11], जलियोडा छांणा ज्युँही ।
तन रौ सारौ तौर[12], जी लेग्यो थारौ जसा ॥२१॥

१—प्रत्यक्ष । २—सम्राट्, राजाओं के राजा । ३—पागल । ४—समझदार । ५—लक्षण । ६—जहर । ७—हे स्वामि । ८—सूना, फीका । ९—मन्सा । १०—घुन, दीमक । ११—आकार । १२—तेज ।

उर जीवण नहिं आस, वास करम बाकी बसै ।
सौरौ[1] है नह सास, जिय दोरौ[2] थां बिन[3] जसा ॥२२
घट में औघट-घाट[4], घड़ी घड़ी घड़ता रहां ।
वैसी कद औ-बाट[5], जिय दुखियारौ हे जसा ॥२३॥
राजा औ महाराज, घर घर में बैठा घणा ।
सारां रो सिरताज, जगतूं ग्यो खांवद जसा ॥२४॥
महपतियां[6] मरजाद, बांका पण राखै विविध ।
सीधापणै सवाद, जसार लियो खांवद जसा ॥२५॥
लसकर राखै लार, धन जस कारण धर धणी ।
एकल फिर असवार, जस लीनो धनदे जसा ॥२६॥
अत छोटै उनमांन, रैणी[7] तूं रैनौ[8] रसा ।
देवण विरियां दांन, जद मोटौ वणतौ जसा ॥२७॥
राजावां री रींज, सुखदाई सारां सुणी ।
खांवद थारी खीज, जग निहाल करती जसा ॥२८॥
राजी हुय रीजांह, रात न बाकी राखतौ ।
चीजां पर चीजांह, जद देतौ खांवद जसा ॥२९॥
वुवो[9] जिकण तूं बाट, चितसूं बाट चितारसी ।
थैं कीना सह थाट[10], जग में पग पग है जसा ॥३०॥
माफ करण मा बाप, खून कियोडा खलक नैं ।
आप सिरीखा आप, जग मांही दूजा जसा ॥३१॥

१—सुखी । २—दुःखी । ३—आप के बगैर । ४—घाटगढ़, संकल्प विकल्प । ५—यह रास्ता । ६—राजा लोग । ७—रहनी । ८—रहता । ९—चला । १०—आनन्द ।

सन्त असन्त सार

दोहा

तंडण[1] कर कविता तणों[2], घालूँ[3] चंडण[4] घूब[5] ।
भंडण जोगे भेख रो, खंडण करणो खूब ॥१॥
मोडां दुग्गह[6] मालिया[7], गाचर फोगे गाल ।
भोगै सुन्दर भाँमणी[8], मुफत अरोगै[9] माल ॥२॥
खीरां[10] बांनो[11] ज्यूँ खरा, बीरां[12] छांनी[13] व्याघ[14]।
ध्यांनी पग धारा धरे, सीराँ[15] काँनी साध ॥३॥
जाई कहे मोडिया, करे कमाई कीर[16] ।
बाई कहे जिण बेन[17] रा, बणें जँवाई बीर ॥४॥
आज काल रा साध रो, ब्याज बुहारण[18] बेस[19] ।
राज माँय झगड़ै रुगड़[20], लाज न आवै लेस ॥५॥
बड़ी हवेली बीच में, हेली[21] सूँ मिल हाय ।
वण सतगुरु छेली[22] वखत, चेली सूँ चिप जाय ॥६॥
झोटाँ[23] ज्यूँ साधू झपट, जोटाँ दे जुग टाल ।
चेली सूँ चोटाँ करै, रोटाँ हित रुगटाल[24] ॥७॥

१—मथण । २—का । ३—मिला देना । ४—तीव्रता । ५—वाँकापन । ६—दोहरे । ७—कमरा, महल । ८—स्त्री । ६—खाते । १०—अंगारे । ११—राख । १२—वीरों के । १३—छुपी । १४—पीड़ा । १५—हलुआ । १६—भील । १७—बहिन, भगिनी । १८—बटोरना । १६—भेष । २०—मूर्ख । २१—सखी । २२—अन्तिम । २३—पाडिया । २४—कपटी ।

जणियाँ[१] जणियाँ नें जिकाँ, धणियाँ[२] बिनली धूँस।
मिल भणिया[३] अब मेट दूँ, हुरकणियाँ री हूंस[४] ॥८॥

२

दोहा

ऊमर सत उगणीस में. बरस छतीसै बीच।
फागण अथवा फरवरी निरख्या सतगुरु नीच ॥९॥

(छन्द गगर निसाँणी)

तो सतगुरु ताया[५], अरथ न आया
गरथ[६] हि व्यर्थ गमन्दा[७] है.
पीछे पिछताया ठीक ठगाया
भाया भूरि[८] भमन्दा है।
मोडाँ सूँ मिलिया भीतर भिलिया
सिलिया रस सोधन्दा[९] है,
मुख तें रट रामा दिल बिच दाँमाँ
बामाँ[१०] घट बोधन्दा[११] है ॥१॥
गुरु आप अज्ञानी जुगत न जानी
चेला मुक्त चहन्दा है,
करणी रा काचा साध न साचा
बाचा बहोत बकन्दा है।

१—कितने ही । २—बिना पतियों वाली यानी विधवाएं ३—पढ़े लिखे । ४—इच्छा । ५—तपाया । ६—धन । ७—खोया, गमाया । ८—खूब । ९—खोजते है । १०—स्त्री । ११—चिंतवन करना ।

अन्धै को अन्धा घर के कन्धा
चल कर पार चहन्दा है,
नगटा निरदावे[1] जमपुर जावे
खररर खाड[2] खपिन्दा है ॥२॥
ग्धानी तन गोरा ठोरम-ठोरा[3]
चादर में चिलकन्दा[4] है,
हे मदवा हाथी साथण साथी
खाथी[5] चाल चलन्दा है।
रस्ते में रस्ता खब्बा[6] खस्ता[7]
हस्ता[8] खूब हिलन्दा है,
मसकरियाँ माँडे भड़वा भाँडे
गुंडा बाँध गळन्दा है ॥३॥
हंसी पर हंसा मुख में मंसा
आसा थित ऊगन्दा है,
पोढै परियंका[9] सदा निसंका
श्रीखंडस[10] सूंगन्धा है।
धन लेवत धीठा[11] देत न दीठा[12]
मीठा ठग मोहन्दा[13] है,
जग चोरी-जारी प्रभु सूँ प्यारी
स्यारी[14] विध सोधन्दा है ॥४॥

१—बिना उज्र । २—खड्डा । ३—हृष्ट पुष्ट । ४—चमकना । ५—तेज । ६—कन्धा । ७—सटा लेना, लगा देना । ८—हाथ । ६—पलंग । १०—चन्दन । ११—बेशर्म, धृष्ट । १२—देखना । १३—मोह लेना । १४—सियारनी, शृगालिनी ।

लम्पट खल लुच्चा बीजू[1] बुच्चा[2]
टुच्चा पण टोकन्दा है,
चाकर रा चाकर ठाकर ठाकर
बाकर[3] वण बोकन्दा[4] है ।
लोलुप हुय लड़धा खावण
खुड़दा[5] पड़दा में पैसन्दा[6] है.
भायां सूं भागे आयां[7] आगे
बायां[8] ढिग[9] बैसन्दा है ॥५॥
रमणीं बरहीनां[10] निरख नबीनां
राम राम रणकन्दा[11] है,
कन्द्रप रा[12] कीटा[13] फवतन फीटा[14]
भँवर गुफा भणकन्दा[15] है ।
कामी अरु क्रोधी बेद बिरोधी
परगट नरक पड़न्दा है.
भगनी नहिं भोगा जुगतन जोगा
अद बिच सन्त अड़न्दा है ॥६॥

१—एक छोटा सा जीव जो पशुओं को गुदा द्वारा पेट में घुस कर पेट फाड़ डालता है। २—बिना बालों के। ३—बकरा। ४—अधिक आयु का। ५—पैसा। ६—धँस जाना। ७—आने पर। ८—स्त्रियें। ९—पास। १०—विधवा। ११—रटना। १२—कामदेव। १३—कीड़े। १४—निर्लज्ज। १५—गूँजना।

बेहद रा बासी हद में हांसी
आसीबिख[1] उफणन्दा[2] है,
खूटोड़ा[3] खोला[4] गाफल गोला
भोला इश्क भणन्दा[5] है।
आस्तिक बिन इन्दुक नास्तिक निन्दुक
सास्तिक[6] मत सोखन्दा[7] है,
तज धर्म त्रिदंडी अधिक अफंडी
पाखंडी पोखन्दा[8] है ॥७॥

पढिया नहिं पाटी[9] घट में घाटी
तल ताटी तोड़न्दा है,
करणी में फिर फिर घिरणी में घिर घिर
फिर फिर सिर फोड़न्दा है।
फिरिया नहिं फेरू मारग मेरू
तेरू पार तिरन्दा है,
बकवाद बिखेरू हिये में हेरू
गेरू रंग गहरन्दा है ॥८॥

अनहद नहिं आरी बिखम[10] बिकारी
धन धारी धोकन्दा है,

१—सांप, सर्प। २—उगलना। ३—गये-बीते, अयोग्य।
४—ढीले। ५—पढ़ना। ६—शास्त्र का। ७—सुखाने वाला।
८—पुष्ट करना। ९—पाठ। १०—उल्टा।

अगली घर ऊँची चेडत[१] चूंची[२]
कड़ कूंची कोकन्दा है।
पावण नें पेड़ा भल पण भेड़ा
नेड़ा[३] नहिं निसरन्दा है,
कुपियां सूं कुपिया लुपिया लुपिया[४]
रुपियां सूं रीझन्दा है ॥९॥
विलला[५] ग्रन्थ बांचे रसिक न राचे
छ्व छाती छोलन्दा[६] है,
निकमा नर नारी वारम्बारी
बलिहारी बोलन्दा है।
नांणों[७] नारायण प्रद[८] पारांयण[९]
रामायण रोसन्दा है[१०],
छल बल कर छांनें मतलब मांनें
मूरख गल मोसन्दा[११] है ॥१०॥
अज भेक उजागर नर खर नागर
गुण सागर गूँजन्दा है,
नाभा[१२] कृत नांमी कथा निकांमी[१३]
भ्रम गांमी भूँजन्दा है।

१—चिपाना, सटाना। २—आग। ३—नजदीक। ४—छिपे हुए। ५—विरला। ६—छिलना। ७—रुपया पैसा। ८—देने वाला। ९—मुक्ति। १०—घोटना। ११—दबाना। १२—एक प्रसिद्ध साधु जिन्होंने भक्तमाल पुस्तक बनाई, यह जाति के डाम (डूम यानी नक्कारची) थे। देखो नवलकिशोर प्रेस लखनऊ को "भक्तमाल" दूसरी आवृत्ति सन् १९२६ ई० पृष्ठ ४७। १३—बेकार।

कर खेचातांणी चूंदी[1] कांणी[2]
सुरबांणी[3] सोकन्दा है,
गद पद गन्धासय मद मन्दाशय
छन्दाशय छेदन्दा है ॥११
गध गाया गावे छापा छावे
जेहकाया[4] जेहकंदा है,
गुण औगुण गोफा[5] तरकन तोफा[6]
बोफा[7] सुण बहकन्दा है।
मणि बन्धन बन्धा बन्धन बन्धा
अन्धाधुन्ध अणन्दा है,
धूरत दे धोका बोड़ा[8] बोखा
चोखा[9] रस चाखन्दा है ॥
जुग तरण जुहारे[10] परण पधारे
चरण कमल चूपन्दा है,
अन्तर अभिमांनी गदर गुमानी
बक ध्यांनी ब्रूयन्दा है।
मन फेल[11] न भावे[12] सेल सुहावे
डेल चक्र डोलन्दा है,

१—कम देखने वाली। २—एक आंख वाली। ३—संस्कृत भाषा। ४—बिठलाना। ५—पत्थर फेंकने का जाल। ६—दर्शनीय, सौगात। ७—मूर्ख। ८—दांत टूटे हुए। ९—अच्छा। १०—प्रणाम करना। ११—फितूर, उत्पात। १२—समाना।

खट चक्रन खोले तक्र[1] बितोले
एक चक्र ओलन्दा है ॥१३॥
कर नवल किसोरी संघर सोरी[2]
मरियादा मेटन्दा है,
बिसफल बैरागी त्रिभवन त्यागी,
भागी भुज भेटन्दा है।
चेली चिरताली निज नखराली
चितवाली[3] चीतन्दा है,
करड़ी[4] कर कन्धर[5] बन्धर बंधर
जालंधर जीतन्दा है ॥१४॥
गलियां में गोता खावत खोता
बोता मार बहन्दा है,
हित में बड हांणीं जो नित जांणो
चित में नार चहन्दा है।
विषयां वाला ठीकर ठाला
अद्-काला[6] ऊगन्दा[7] है,
साहब मन मोला[8] टोगड़ टोला
पोला पग पूजन्दा है ॥१५॥

१—छाछ । २—आसानीसे । ३—चंचल । ४—बांकी, शानदार । ५—गर्दन । ६—बेवक्त । ७—ऊगना । ८—फीके ।

भांडां रा भाई हांडां हाई
रांडां में रोवन्दा है,
ठतोड़ा आंसू फिरता फांसू
जिग्यासू[1] जोवन्दा है।
परब्रह्म न पाया सद् सरमाया
माया मद माणन्दा[2] है,
द्विज चरण दबाया कलपित काया
छाया जल छांणन्दा है ॥१६॥
जग में कहे जोगी भीतर भोगी
सोगी[3] सम सोवन्दा है,
महिलानें मोगी गूंगी गोगी
रोगी जिम रोवन्दा है।
सांगी सतहींणां है जतहींणां[4]
मत हींणां मांगन्दा है,
पागल सिस पाया दागल[5] दाया
भागल[6] सिर भांगन्दा है ॥१७॥
अति खूंणा[7] ऊंडा[8] थूंडम-थूंडा[9]
कूंडापन्थ करन्दा है,

१—जिज्ञासु, जरूरत वाला। २—भोगना। ३—शोकार्त्त। ४—ब्रह्मचर्य से हीन। ५—कलंकित। ६—टूटा हुआ। ७—कोना। ८—गहरा। ९—ठूंसना।

मूंछां बिन मुंडा भासत मूंडा
भरसूंडा[1] भभकन्दा है।
लड़थड़ गल् लंजा हतरस हंजा
मनमथ कांम मदन्दा है,
जारी कर जोरी सठ सिर जोरी
कोरी हाय कथन्दा है ॥१८॥
चेली अरु चेला मांडे मेला
कांम विकल किलकन्दा[2] है,
नित हांजी नांजी पूरा पाजी
ताजी रांड तकन्दा है।
बातां रा ब्याल् सरब सियालू
ऊंनालू ऊंगन्दा है,
जूता जतलाया मन मत लाया
बतलाया बीखन्दा[3] है ॥१९॥
लीकां[4] कुल् लोपी जगत न जोपी
खोपी[5] में खावन्दा है,
जरकावण[6] जोगा मूंसल मोगा
गोगा गुरु गावन्दा है।

१—मुँह। २—किलोले करना। ३—दुःखित होना। ४—मर्यादा, कानून। ५—खोपड़ी। ६—पीटना।

विसवास वढावे अंट में आवे
कंठक मल काटन्दा है,
विट[1] रक्त बहावे नहिं निजरावे[2]
चुपका है चाटन्दा है ॥२०॥
अवधू अठ मासे नगद निकासे
चोमासे चिपकन्दा है,
भांमण भरमाया गुरु गरमाया
सरमाया सिरकन्दा है।
चेलीरा चेला अजक अकेला
बेला बास बसन्दा है,
सब धन कर स्वाहा उठता आहा
हा हा हास हसन्दा है ॥२१॥
जागरणा जागे लाज न लागे
ढागांढिग ढूकन्दा है,
सुर झीण न साजे बीण न बाजे
करमहीण कूकन्दा है।
गरधब-वत गावे डर डमगावे
हरखावे हूकन्दा है,
बिन तप व्रत बसिया कन्द्रप कसिया
भग रसिया भूकन्दा है ॥२२॥

१—जाली। २—देखना।

खावण नें खाथा मारत माथा
गाथा ग्यान गिटन्दा है,
तन खातां तिवरण बातां बिवरण
सिंवरण नांम सिटन्दा है ।
अगहर उद्धारक ते भवतारक
खारक दाख खुरन्दा है,
ले स्वाद लुभावे पाद पुजावे
घट में नाद घुरन्दा है ॥२३॥
लखणांरा-लाडा[1] ईश्वर आडा
पाडा गुरु पोढ़न्दा है,
बद सास बिकारी एव उधारी
इधकारी[2] ओढ़न्दा है ।
साकर सिरसाली थिर भर थाली
अगलाकर ऊगन्दा है,
जग तृण सम जांणे मोजां मांणे[3]
भांणे भोज भरन्दा है ॥२४॥
बेसुरत विचारा बिलखत बारा
तुरत पुरी तरसन्दा है,
कैइ अन्धा कूवे बोला बूवे[4]
पांगलिया पीसन्दा है ।

१—कुलच्छणी । २—अधिकारी । ३—भोगना । ४—चलना ।

रातूं दे रोडा[1] लूला खोड़ा[2]
दुखियारा दीसंदा है,
झोली झड़कावे पोली पावे
टोली सूं टालन्दा है ॥२५॥
पासीगर[3] पूरा साजा सूरा
भूराळू भालन्दा है,
जे आतां जातां पेच पजातां
बातां बद बूजन्दा है।
बोदा[4] बतलावे खोदा खावे
सोदा पण सूजन्दा है,
जद मोको जोवे सांजां सोवे
अर्ध निसा उचकन्दा है ॥२६॥
अन बिन आयोड़ा धन धायोड़ा
खायोड़ा खूंदन्दा है,
प्रथमा पच्चीसो चुप चोतीसो,
बर्ष गांठ बांचन्दा है।
हरिजन हथियारा है हुसियारा
न्यारा हुय नाचन्दा है,

१—पचना। २—लँगड़ा। ३—चालाक, जालसाज। ४—निकम्मा।

रमणी में राजी कुल़ में काजी
हाजी हूँस हरन्दा है ॥२७॥
कर खूंन कुपातर सून सुपातर
लातर कुछ लचकन्दा है,
परव्रत पिमांनां बिरगत[1] बांनां
कांनांफूस करन्दा है।
बूढा अरु बाल़ा के मुख काला
चालागर[2] चुल़कन्दा[3] है,
खापट गुल़ खावण गुठ पुल़ गावण
झटपट से झुलकन्दा है ॥२८॥
के गूदड़ कपटी अँसल अपटी
हांडी झेल हिलन्दा है,
मेंणांरा मांजी बेणां बांजी
सेणां डर सालन्दा है।
खूनी खल खंचल़ ऊनी अंचल़
मूनी मिल़ मुलकन्दा है,
सब सित्यानासी ऊठ उदासी
हांसी मुख हिलकन्दा है ॥२६॥
भगता री भाजी संगत साजी
बाबाजी बोलन्दा है,

१—विरक्त। २—जालसाज। ३—इच्छा करना।

रथ में सूं राली बेवण वाली
हाली रथ हाकन्दा है।
राजन के राजा मुढ महाराजा
ताजा घर ताकन्दा है,
बण बाट बटाऊ घण धुन धाऊ
घण खाऊ घूमन्दा है ॥३०॥
बस होत बधावा चोहट चावा
झट छावा झूमन्दा है,
संखां ढिग संखा अधम असंका
फूड़ फूड़ फूंकन्दा है।
रण सिंगा रूड़ा आगे ऊड़ा[1]
धूड़ धूड़ धूकन्दा है,
जाखेड़ा[2] जोड़ी[3] घोड़ा घोड़ी
पधरावे पुलकन्दा है ॥३१॥
चोजां चटकाला गुरु गटकाला
मटकाला मुलकन्दा है,
माथा हद मसले, अकेद असले
धसले, जद धूजन्दा है।

१—जबरदस्ती का भोजन, भोजन खिलाने की लाग-कर (टैक्स)। २—ऊंट। ३—बैलों की जोड़ी।

छित कुल भ्रम छांडे गुरुगम गाडे
माडे[1] चख मूदन्दा है.
चामर कर चोला झांमर झोला
पांमर पद पूजन्दा है ॥३२॥
मेले पग मंडा अग्र अखंडा
रंडा प्रिय राचन्दा है,
पढ दुरस प्रमादी मुरसद[2] मादी
महन्त पुरुष माचन्दा है।
ले लाभ लगोटी अधम अगोटी
नाभकवल निरखन्दा है,
काती रा कुत्ता बहु दे वुत्ता[3]
चिप छाती चीरन्दा है ॥३३॥
सीरो[4] सीरावे भ्रम धीरावे
निरदावे नीरन्दा है,
लपसी[5] लपकावे तपली तावे
आपा सीच उठन्दा है।
चेली चोलां में मन मोलां में
रोला में रूठन्दा है,

१—खोटे साधु। २—चेले, भक्त। ३—धोखा। ४—हलुआ। ५—अधकचरे गेहूँ का गुड़ की चासनी के साथ घी से पकाया भोजन जिसे दूसरे प्रान्तों में पतला हलवा भी कहते है।

पकवान परूसे रलपट[1] रूसे
फरगट सुख फेंकन्दा है ॥३४॥
मांखण मुख मोड़े जगकर जोड़े
रोड़े सूंठ सुकन्दा है,
गुरुयांन गपोड़े चरचा चोड़े
झोड़े झूट झुकन्दा है।
पांणी कुण पावे जांजी जावे
चारूं वर्ण चिकन्दा है,
खड़ूरा खाडू अनमी आडू
लाडू खाय लुकन्दा है ॥३५॥
शरणागत सोधे प्रेम प्रबोधे
गोधे[2] जिम गाजन्दा है,
अणभे अण रागी पर भव पागी[3]
बग बागी बाजन्दा है।
सतगुरु सेनांणी वांचत वाणी
पाणीं छाण पिवन्दा है,
अण छांण्यों ओही लावत लोही
जोही पाय जिवन्दा है ॥३६॥
पर पीड़न पेखे दया न देखे
लेखे बिन लूटन्दा है,

१—फालतू। २—साँड़। ३—खोजी।

परमेश्वर पावे आ अभिलाखे
छद्मीं[1] क्यूं छूटन्दा है।
सावल[2] नहिं सांधे कावल[3] कांधे
चावल जेर चुगन्दा है।
जी फरकन जांणें अरक[4] न आंणे
भव भव नरक भुगन्दा है ॥३७॥
समजावे सोही वेरी वोही
द्रोही हुय दाभंदा[5] है,
पिंड में नहिं पांणी निज निरमांणी
सठहांणी साभन्दा है।
राजा अरु रांणां करहा कांणां
दांणां तीन दिखंदा है,
इक निजर न आई धुन धीठाई
सुन आईन सिखंदा है ॥३८॥
क्यूं कांम कमावे तन मन तावे
खावे भोग खटन्दा है,
बिद्वाहाँ बांसे सोगन सांसे
कांसे रोग कटन्दा है।

१—कपटी। २—बुरी तरह। ३—अच्छी तरह। ४—सार। ५—जलना।

जीतो रो बायां जाय जिमायां
सांयां[1] काज सरन्दा है,
धंधे में धंधा अंधम अंधा
मूरख भाज मरन्दा है ॥३६॥
पंडित सब पुरखा सींठन[2] सिरखा[3]
ग्यानी खाय गपिन्दा है,
दूजे किए दीठी मिली सो मीठी
ए दृढ़ नेम अपन्दा है।
हैणीं सो हेला चित दे चेला
अब तो मोज उड़न्दा है,
सब बेसंसारी विनां विचारी
वारी गृह बूड़न्दा[4] है ॥४०॥
गया सो गुड़का[5] खबर न खुड़का
वुड़का[6] नहिं बोलन्दा है,
जुड़ जुड़ बहु जावे पता न पावे
अगला नहिं आवन्दा है।
सिख सोचन सूंना ऊठ अभूनां
धूना मार घड़न्दा है,

१—आशा बँधाना। २—अश्लील। ३—समान। ४—डूबना।
५—बीता। ६—आवाज़।

साहब मन मोहा दुख सूं दोहा
लाहां लोह लड़न्दा है ॥४१॥
गेवर रज गेरे हेवर हेरे
खर घेवर खावन्दा है,
अवगत[1] अविणासी है सुखरासी
हांसी दुख होवन्दा है।
मुरधर[2] में मोडा नीच निगोडा[3]
नाहक कान कपंदा[4] है,
निरभय नीसांणां सद सेनांणां
जन ऊमरेस जपंदा है ॥४२॥

खोटे सन्तां रो खुलासो

दोहा

चांम चांम बकना बहे, दांम दांम चित देत।
'गांम गांम नाखे[5] गिंडक[6], राम नाम में रेत ॥ १ ॥

छन्द छप्पय

अे मिलतांई अेंठ भूंठ परसाद भिलावे,
कुल में घाले कलह माजनों धूड़ मिलावे।

१—ईस्वर। २—मारवाड़। ३—निकम्मे। ४—काटना। ५—डाले। ६—कुत्ता।

कहे बडेरां[1] कुत्ता देव करणी नें दाखण,
ऊठ सँवारे अधम मोड चर जावे मांखण।
मुख राम राम करज्यो मती म्हांरो कह्यो न मेटज्यो।
चारणां वरण साधां चरण भूल कदे मत भेटज्यो ॥१॥

दोहा

खल तिणरी खोटी करे, पापी अन जल पाय।
मोको लागां मोडिया, चेलो मूं चिप जाय ॥ २ ॥

छप्पय

मारग में मिल जाय धूड़ नाखो धिक्कारो,
घर मांहीं घुस जाय लार[2] कुत्ता ललकारो।
झोली मांला झाड़ रोट गिंडकां नें राली,
दो जूनांरो दोय करो मोडां रो कालो।
कुल न्यान[3] होण फीटा कुटल जिके बिगाडू जात रा।
मम सेंण बात सुणज्यो मती रहण न दीज्यां रात रा॥२

दोहा

गृह धारी ओड़ां गिणां, नर थोड़ा में नेक।
भेक लियोड़ा में भला, कोड़ाँ मांहीं केक ॥३॥

१—पुरखा, पूर्वज। २—पीछे। ३—ज्ञाति जाति, क़ौम।

छप्पय

स्यांन[1] छोड वहे साध रसा माता पितु रोवे,
सुत तिरिया दुख सहे जिकण दिस फेर न जोवे।
तूंग वधाड़े ढगल मूंछ मुख घुरड़[2] मुंडावे[3],
जन्मभूमि में जाय भीख ले जन्म भंडावे।
नर देह धार सोचो नरां गोली दे के गौर री,
निज लाज सरम पाखे नहीं ऐ कद राखे ओर री ॥३॥

१—इज्जत। २—बहुत। ३—साधु लोग अधिकतर हृष्ट-पुष्ट किसान को चेला मूँड़ते हैं और किसान भी साधु होने में बड़ा आराम समझता है। मेहनत से छूट जाता है और घर बैठे अच्छा खाने-पहनने को मिल जाता, बाबाजी या महाराज की पदवी पा जाता, और बौहरोंके कर्जेसे बच कर दूसरों के माल से मालोमाल भी हो जाता है। इस सम्बन्ध में मारवाड़ दरबार की ओर से छपी सरकारी मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८६१ ई० के पृष्ठ ३०५ पंक्ति ११ में यह लिखा है:—

माथा मुँडाया तीन गुण गई माथे री खाज।
मलवा छोड़ा चोधरयाँ हासल छोड़ा राज ॥
माथा मुँडाया तीन गुण गई माथे री खाज।
पहिलां माथे काढता अब बोरन लागा व्याज ॥

["चाँद" वर्ष ८ खण्ड १ संख्या १ सन् १९२९ नवम्बर पृष्ठ २५६]।

दोहा

सांडां ज्यूं ऐ साधड़ा, भांडां ज्यूं कर भेस ।
रांडां में रोता फिरे, लाज न आवे लेस ॥४॥

छप्पय

जिकण लाज नें जीव कांम निस दिवस कमावे,
जिकण लाज नें जीव काज कर भला कहावे।
जिकण लाज नें जीव घरा पहली उठ धावे,
जिकण लाज नें जीव आज लग देता आवे।
ग्यारही वरण सुण जो चतुर पाज पुकारे पेज में,
आ लाज सरम कुल री अबे साध गमावे सेज में ॥४॥

दोहा

खाय खला खर खलक में, पला पाप रा पेख ।
सला भलांरी आ सदा, भला न लेवे भेख ॥५॥

छप्पय

रुल्या खुल्या रजपूत बिरांमण मिलगा विटला[1],
वैश्य मिल गया विकल शूद्र कुल रलगा सिटला ।
चोड़े धाड़े चोर ढंग बिन ढेढस ढेढी,
जिके नहीं किण जोग मिल्या घर घर रा मेढी ।
थांप ज्यो मती वांरा चरण कांप कांप रो कोचड़ो,
झांपती देर मुख फेर ज्यों खांप[2] खांपरो खोचड़ो ॥५॥

१—भ्रष्ट। २—जाति वंश, चालू गोत्र ।

दोहा

मोदारे आडा वहे, मोदा मिलनें सँग।
भूकोड़ा भँवता फिरे, लाडू खावे लँग ॥६॥

छप्पय

मारवाड़ रो माल मुफत में खावे मोडा,
सेवक[1] जोसी सँग[2] गरीबां दे नित गोडा।
दाता दे विन दांन मोज मांणें मुसंडा,
लाखां[3] ले धन लूट पूतली पूजक पंडा।

१—सेवग या भोजक जाति जो ओसवाल वैश्यों की याचक और प्रायः जैन मन्दिरों की सेवा करती है। २—सत्र। ३—साधुओं मे आजकल बहुत से साधु माया आदि में लगे रहते हैं; और उनमे सच्चे साधु के लक्षण नही मिलते। इसी से उन बनावटी साधुओं के लक्षण जोधपुर रियासत की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई० सं० १९४८ वि०) भाग ३ पृष्ठ ३०५ पंक्ति ७ मे इस तरह लिखे हैं:—

जो तूँ चाहे धन और माया, दादू पंथी होजा भाया।
जो तूँ चाहे इन्द्रियांको भोग, जा खेड़ापे ले ले जोग ॥
जो तूँ चाहे निन्दा रो कोड़, शाहपुरे को होजा मोड।
जो तूँ चाहे भिनज विन जणी, तो गाढ़े को होजा निरंजणी॥
जो तूँ चाहे भोजन खाया, होजा रामसनेही भाया॥

—Vide The Castes of Marwar page 88 lines 8. (Published by order of the Marwar Darbar in 1894 A. D.)

जटा कनफटा जोगटा खाग्वी पर धन खावणां,
मरुधर में कोड़ा मिनक करसा[1] एक कमावणां ।।६।।

दोहा

सांधा जोड़े साधड़ा, साधां तोड़े संग ।
दरसण दे लेवे दिरब, आंदा भींत अनङ्ग ।।७।।

छप्पय

देदे दरसण दोड़ कितां घर सूनां कीनां,
देदे दरसण दोड़ लूट केतां धन लीनां ।
देदे दरसण दोड़ भेद घर रोले भारी,
देदे दरसण दोड़ निलज भागे ले नारी ।
त्यागो फल दरसन तणों करदे खोटी करसणां,
कर जोड़ इतो थोरो करूं दीज्यो मेरो दरसणां ।।७।।

दोहा

बिदर-सहेल्यां[2] बीच में हँस हँस मारे होड ।
चेली सूं चूके नहीं मोको लागां मोड ।।८।।

छप्पय

फबे जूत सिर फूल पत्र सोई पटक पछाड़े,
फल ढूंगां में फाड तोय बांसां मूं ताड़े ।
धक्का मुंक्की धूप दीप लातां री देवे,

१—किसान । २—दासियां, डावड़ियां ।

नाक भांग नैवेद् साध पद इण विध सेवे।
घट मार दंड घंटा घुरे ठीक कलेजो ठारती,
उतारे कोईक सेवक[1] इसा आं सन्तां री आरती॥६॥

—— ——

असन्तां री आरसी[2]

दोहा

आवे मांड अपार रा खावे वटिया[3] खीर।
बाई कहे जिण वेंन रा वणें जँवाई वीर॥१॥
गुरु गुंगा गेला[4] गुरू गुरु गिंडकां रा मेल।
रूंम रूंम में यूं रमें ज्यूं जरवां[5] में तेल॥२॥

छन्द त्रोटक

सत बात कहे जग में सुकवी,
कथ कूर[6] कथे ठग सो कुकवी।
सत कूर सनातन दोय सही,
सत पन्थ वहे सो महन्त सही॥१॥
सतसङ्गत की महिमां सुनके,
गुरु महातम की गरिमां[7] गुनके।

१—यहां भक्त से अर्थ। २—दर्पण, कांच। ३—घी वाली रोटी। ४—पागल। ५—जूते, पगरखी। ६—झूठा। ७—बड़ाई।

करु बोलन के बिसवास रए,
गुरु गोलन[1] के हम पास गए ॥२॥
फँस गये हम मोडन फन्दन में,
बहु काल रहे तिन बन्धन में।
हित हांनि हुई हद हीरन की,
निकसी वह खांन कथीरन की ॥३॥
निरखे गुन औगुन नैंनन तें,
बिरखे[2] पुन सो चुन बैंनन[3] तें।
कृपया सु दयानन्द स्वामिय की,
जसवन्त[4] भया जग जांमिय[5] की ॥४॥
सुनिये वसुधाधिप[6] साधनकी,
विधवा मृगि मारन व्याधन[7] की।
रस भोगिय रोगिय रैवन के,
क्रम लोगिय जोगिय कैवन के ॥५॥
महि लूटन कों दल मोडन को,
गृह ही जन भंजन गोडन को।
मुख देखन के अवधूत मती,
जन पूजत जांनन काञ्ज जनी ॥६॥

१—गुलाम, गोलक। २—बरसना। ३—जबान से। ४—जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह। ५—रक्षक, पहरेदार। ६—राजा। ७—शिकारी।

तन लाल गुलाल प्रवाल[1] तरे,
भल भोग नितम्ब[2] निनम्ब भरे।
कसिया तन घोट लंगोट कसी,
बिषिया रस अन्तर बीच बसी ॥७॥
तन झीनिय चादर तांनन कौं,
मन आस वधे सुख मांनन कौं।
मिल वाह[3] कहे धुन मोरन को,
चित चाह रहे धन चोरन की ॥८॥
चटका मटका लटका चुगली,
बन अन्तर भाव छटा बुगली।
अनुरंजन[4] खंजन[5] अंखन में
झपके लपके त्रिय झंकन में ॥९॥
मुदु[6] वायक[7] बोध दिये महिला[8],
प्रिनि लागन काल किये पहिला।
महि पुन्न प्रताप हि साध मिले,
हहरे जमराज निकेत[9] हिले ॥१०॥
धुरतें[10] अन भंजन नांम धरे,
अमहीं अमतें मन बुद्धि भरे।

१—मूंगा। २—छाती। ३—आवाज। ४—प्रेम। ५—सुन्दर नेत्रों वाला, एक पक्षी विशेष। ६—कोमल। ७—वचन। ८—स्त्री। ९—घर, निकेतन। १०—शुरू से।

कुल लाज मजाद सुत्याग करो,
सुभ साध समाज सदा सुमरो ॥११॥
धुर आस तजो अन की धन की,
मिल भेट करो तन की मन की।
सत भाव कहूं जग या सपना,
अघि[1] अन्तर दाव करे अपना ॥१२॥
कर भाव संसार असार कहे,
गुन नार निहार बिकार गहे।
मुख हाजर बोलत पुन्न मही,
नँहकार[2] करे जस पाप नहीं ॥१३॥
दुत भाव तजो दुनियां पगली,
गुरु ग्यांन गहो समजो सगली[3]।
सुन स्वार[4] विचार तजो सबही,
अज काम करो सो करो अबही ॥१४॥
ठग नीत सनातन रीत ठहो,
कर भेट अतीत[5] की देह कहो।
प्रगटाय सबे मुख रांम पढे,
चित काम समुद्र कि बेल चढे ॥१५॥

१—पापी। २—इन्कार, ना देना। ३—सब। ४—कल। ५—साधु।

सिधवा[1] लख नीरज से निकसे,
बिधवा लख वारज[2] से विकसे[3] ।
सब काज भया जग में सिधवा,
बड भागण तूं ज भई बिधवा ॥१६॥
सत पाय उपाय डिगाय सती,
पद गाय रिझाय छुडाय पती ।
अति लेखग राग चित्राम[4] अटा[5],
छिब मोहत हे जिन देख छटा ॥१७॥
नित नार उदार अपार निसा,
जन[6] खोवण जार हजार जिसा ।
चब नार निहार बिचार रचे,
निरखे जिम वादर[7] मोर नचे ॥१८॥
श्रम रामसनेहिय नांम धरे,
क्रम रांडसनेहिय भांड करे ।
मुख वाच[8] करे लगनी मगनी,
उर ध्यांन धरे ठगनीं अगनी ॥१९॥
अति[9] हार रखे निज आसन में,
मद बींद[10] लसे रिव मासन में ।

१—सिद्ध पुरुष । २—कमल । ३—खिलना । ४—चित्रकारी । ५—मकान । ६—ब्रह्मचर्य । ७—बादल । ८—वाणी । ९—ज्यादा, बहुत । १०—दुल्हा, पति ।

पग सन्त धरे गृह पावन कां,
　　　　　　नित आवत नार बधावन कां ॥२०॥
मग नीठ[1] चले पग मंडन पें,
　　　　　　डग धीर हले जग डंडन[2] पें।
मिल जात कुजात जमात महीं,
　　　　　　निज घात[3] कथा विन बात नहीं ॥२१॥
पकवांन जलेबिय पावन कौं,
　　　　　　गहरी धुनि रागनि गावन कौं।
नव नार सुयार[4] निजारन[5] कौं,
　　　　　　धर नूतन वस्त्र सु धारन कौं ॥२२॥
मन मोज बेरागिया मांखन में,
　　　　　　चित चोज[6] सु साकन[7] चाखन में।
खट ही रितु मोज अखंड खरी,
　　　　　　घर आनद की सब जात घरी ॥२३॥
दस गांम ठगे जरसी[8] दरसी,
　　　　　　सत दांमन[9] सी बरसी सरसी।
अत आग महीं हिय अन्धन कां,
　　　　　　बहु लागिय कंठिय बंन्धन कां ॥२४॥

१—मुश्किल से। २—ठगना। ३—धोखा। ४—अंच्छा-प्रेमी। ५—देखने को। ६—प्रसन्नता। ७—साग, तरकारी। ८—पूँजी। ९—बिजली।

नित पाठक[१] नार नसावन कां,
हिय हाटक[२] हार हँसावन कां।
छिल गादर कादर[३] छंटन में,
बड आदर चादर वंटन में ॥२५॥
सब सोक तजे तरनी[४] सरनी,
घर मेसरनी[५] घरकी घरनी।
कलदार[६] कलाधिप[७] भेट किए,
दिल सूं निज सीन प्रसाद दिए ॥२६॥
मुकती समजी झख मारन में,
जुगतो सब नार निजारन में।
बुगला कर चैन[८] पोटाय[९] पतो,
कर चेलिय कन्थ बनें कुमती ॥२७॥
कथ कोन करे कटकी कटके,
पग अंक धरें पटकी पटके।
बननेटिय[१०] ले पितु बैठन में,
भननेटिय[११] ले धन भेटन में ॥२८॥

१—पाठ करने वाला, मास्टर। २—सोना। ३—कायर। ४—तरुणी, जवान स्त्री। ५—माहेश्वरी वैश्य जाति की स्त्री। ६—अंग्रेजी रुपया। ७—चन्द्रमा जैसा। वचन। ८—९—बहका लेना। १०—अनबन करा देना। ११—तड़पना।

सब भांत कही हम सोगन की,
मिजले सिटले[1] महि मोगनकी।
अनभायन जोयन आड करें,
पुन आय न कोय न खाड परें ॥२६॥
मत मोडन के मद मेटन कों,
भव भूर कवो जन भेटनकों।
भ्रम भञ्जन कौं भल छक्क भर्यो,
कवि ऊमर त्रोटक छन्द कर्यो ॥३०॥

२

(राग आसावरी)

मोडां मांनों रे राम का मार्यां,
बूडो मत विनां विचार्यां ॥टेर॥
भजन करे बुगला भगतीसूं,
पास बैठावे प्यार्यां।
धोको दे दिनरा धीजावे,
आतण[2] रा असवार्यां॥ मोडां०॥१॥
कांम करे कछू काज करे नहीं,
निरखै बैठा नार्यां।

१—कहकर बदलने वाले। २—सन्ध्या, शाम।

आ थूं लेले आ थूं लेले,
मते मते मनवारयाँ ॥ मोडां० ॥२॥
माल ऊडावे आवे मस्ती,
तन पर लावे तयारयाँ ।
जद बेवां सूं हेत जणावे,
सेजां रमें सिकारयाँ ॥ मोडां० ॥३॥
बायां ऊपर बांण चलावे,
गावे कृष्ण को गारयाँ ।
ऊमर कहे अकल रा आंधां,
समझो रे संसारयाँ ॥ मोडां० ॥४॥

३

(पद राग सोरठ—अस्ताई गिर्नारी)

बणियो नहीं आछो काम, बीर युंहीं बीतो बेहड़लो[१] ॥टेर
फन्दा में मोडां रे फँसगो, रुलगो रेहड़ली ।
भेक[२] धारतां कीदी भूंडी, कुबधां[३] केहड़लो[४] ।बणि०॥१
मात पिता की छोडो मोबत, मोजां मेहड़ली[५] ।
सात जात मोडां सूं सांधी, नाहक नेहड़ली[६] ॥बणि०॥२

१—आयु । २—भेष, साधु होना । ३—बदमाशियां । ४—खराब । ५—भोगी । ६—प्रीति ।

दूध दही खाया दूजां रा, दीपी देहड़ली[1] ।
नदियां सूं सूं नी मिल जासी, खूनो खेहड़ली[2] ॥बणि०॥३
ग्यांन बिनां थें यूंही गमाई, ऊमर ओहड़ली[3] ।
छल सूं बाजी हारयो छी छी. छेला छेहड़ली[4] ॥
बणियो नहीं आछो काम, धीर यूंही धीनी बेहड़ली ॥४॥

४

(पद राग आसावरी)

साधां रे थाना में घण आई, कोई न कठण कमाई डेरा॥
हुवो साधू सबल[5] हररानो, तुपको चाल चलाई ।
लम्बी चोड़ी सठ लोकां ने, मानी ज्युहीं मनाई ॥
साधां ॥ १ ॥

रामदास हररांन गुरांरी, गुरु महिमा सब गाई ।
प्रकट भनंग भुजंग[6] डरे पर, प्रबल चलो परवाई[7] ॥
॥ साधां० ॥२॥

दयालदास सुन रामदास रे, परचो[8] फेर पजाई[9] ।
मानों लाय[10] लगी मुरधर[11] में, ऊपर आंधी आई ॥
साधां० ।३॥

१—शरीर । २—राख, धूल । ३—निकृष्ट । ४—आखिरी । ५—बलवान । ६—सर्प । ७—पूर्वदिशा की हवा । ८—परिचय का ग्रन्थ । ९—चलाई । १०—आग । ११—मारवाड़ ।

बेता[1] बाट बडेरां[2] वाली, छलसूं चाल छुड़ाई।
बरणाश्रम कुल लोक वेद री,आछी धूड़ उड़ाई ॥४॥
झूठा शिव शास्त्र सब झूठा, झूठा जगत झुठाई।
कोप विवस्था कर्मकांड री, एकण साथ उड़ाई ॥५॥
मात पिता सूं सतगुर मोटो, बरनी बहुत बड़ाई।
केधां[3] बेचण बोर कूंजड़ी[4], दाखां छिब दरसाई ॥६॥
साखो पद बद गाय सुणावे, साध संग सुखदाई।
साध ठिकांणें थे ठग सारा, दोहूँ लोक दुखदाई ॥७॥
पाँव पुजाय रू चनण चढ़ायो, कनक[5] डंडोत कराई।
विधवावां ठेके ले बैठा, ठीक ठई ठकुराई ॥८॥
नव द्वारां रा रसिक नवेला[6], अलबत भग इधकाई।
देख विचार द्वार दसवें दिस, बिलकुल राख बगाई ॥९॥
प्रदर निहार पेट में पेसे, दे दारांन[7] दवाई।
आ कुण जांणें गाथ अनोखी, खल[8]गुल[9] साथ खवाई १०
मिन्दर, तीरथ, मंत्र, व्रत माला, मोटी भूल मिटाई।
पिंडनखदरसणघतनिलजापण,फिरक्योंसिरड़[10]फँ ताई

१—चलते हुए। २—पूर्वजों। ३—प्याज, कांदा। ४—साग, सब्जी, फल-फूल बेचने वाली मुसलमान स्त्री। ५—सोना। ६—नौजवान। ७—स्त्रियो को। ८—खली, तिल आदि का तेल रहित चूर्ण। ९—गुड़। १०—सिड़, पागलपना।

मिनख लुगायां होकर गेली, है चेली हरखाई।
पामर गुरुनें परखावण री, पले नहीं परखाई ॥१२
कंठी बांध पराई कांमण, लेवे कंठ लगाई।
लुल लुल लगन पगन लागण री, जागण[1] माय जगाई१३
भोग भोगले भालो[2] भुरजा[3], क्यारूं तरफ चिणाई।
अंगरेजां सूं कांई इक इक्का, बंगला लेय बणाई ॥१४
काम करे नहीं काज करे कछु, सीरो चरे सदाई।
सीत-प्रसाद[4] नांम धर सोधां[5], खूबहि अंठ खवाई ॥१५
सर्व सिरोमणी होवण मारू, लागा करण लड़ाई।
मोक्ष गियोड़ा ऋमि मुनियां में, अब चिच टांग अड़ाई१६
खेड़ापा सीथल दोई खोटा, जाहर ठगी जमाई।
ऊमरदांन गुरू कर आं नें, गेला स्यान[6] गमाई ॥१७

४

मान मन एक गृहाश्रम मोटा।
तेरे कबू न आवे टोटा ॥ १ ॥

तजै मती तिरिया, पितु, माता, छोडिन घोरो[7] छोटा।
धोती छोडि बनै मति धूरत, लेकर घोट[8] लंगोटा ॥२॥

१—जागरण। २—देखो। ३—बुर्जे। ४—जूठा प्रसाद (भोजन)। ५—लुच्चे, धूर्त। ६—शान, इज्जत। ७—रास्ता। ८—डंडा।

मोडा अेक बहुत है महिला, ज्यूं भैंसिन में सोटा[1] ।
दे छांटा नारी परबोधे[2], खसम बतावै खोटा[3] ॥३
करामात का बिन करतूती, गपी चलावैं गोटा[4] ।
राम राम कर रांड बिगाडै, प्रगट पाप का पोटा ॥४॥
पाखंडी बड[5] नग्न पंथ पर, घूमै ले कर घोटा ।
सतो मरद होवे जो सच्चा, लाव भरादे लोटा ॥५॥
वेद पढ़े बिन समुझि बावरा, दे मत सूना दोटा[6] ।
ऊमरदान भला इक इसमें, अवरा[7] शुभ का ओटा[8] ॥६॥

५

मोडां मांनूं रै राम रा मारियां ॥ टेर ॥
छुपकै छुपकै घी लोगां रो, पधरावो[9] भरि पारियां[10]।
पाप चोकणां भव पैलै में, खूब करैला ख्वारियां॥
वाणीं लिखि गया साध बिचारो,मुकति हुवै मन मारियां
मारण में निति ही झखमारो,लज मारो कुल लारियां[11]॥
जीमण नै थे निति जावो, विधवावां घर वारियां[12]।
साध होय मन नह सरमावो,जगमें करि करि जारियां ॥

१—सांड, भैंसा। २—उपदेश देना। ३—बुरा। ४—घोल। ५—धसना। ६—टिप्पा। ७—दूसरा। ८—रक्षा। ९—खाते हो। १०—घी रखने का मिट्टी का बर्तन। ११—पीछे। १२—वारना लेना।

६

सबसाधूड़ा सड़ियां है रे, सब साधूड़ा सड़िया है रे।
सड़ियां रे भेला[1] बेसड़िया[2], संगति करतां मड़िया[3] है॥
रामदास[4] रो मारग रूड़ो[5], उणरै नह आभड़िया[6] है।
घर घर सूं नींसर नै घोडो, खाली ऊजड़ खड़िया[7] है॥

१—शामिल। २—भले। ३—जानना। ४—यह जोधपुर जिले के गांव खेड़ापे के मेघवाल (भांबीहरिजन) जाति के शार्दूलजी के पुत्र थे (देखो मारवाड़ सेन्सस रिपोर्ट सन १८६१ ई० पृष्ठ २८५)। तपस्वी रामदासजी का जन्म सं० १७८३ फागुन वदी १३ शुक्रवार (ता० १८-२-१७२६ ई०) को और देहान्त सं० १८५५ आषाढ़ वदी ७ मंगलवार (ता० ५-६-१७६८ ई०) का हुआ था। इन्होंने सं० १८०६ वैशाख सुदी ११ सोमवार (ता० १३-४-१७५२ ई०) को सीथल (बीकानेर) के रामस्नेही महात्मा हरिरामदास संन्यासी से दीक्षा ली थी। रामदास जी स्वयं गृहस्थी थे और अपना कारबार (जुलाहापन) करते हुए अपने शिष्यों को भी गृहस्थाश्रम में रहते हुए पंथ पर चलने का उपदेश करते थे। इनके स्वर्गवासी हो जाने पर इनके पुत्र महंत दयालदास ने गेरुए कपड़े पहनने आदि के नियम बना अपना भेष चलाया था। रामदास ने खेड़ापा गांव के बाहर पहाड़ी की तलहटी में अपने आश्रम की नींव सं० १८३४ फागुन वदि ४ बुधवार (ता० २६-२-१७७७ ई०) को रक्खी थी जहाँ हर वर्ष होली के दूसरे दिन इस शाखा के साधुओं का एक मेला होता है। इसमें कबीर, दादू, हरिदास, रामदास और दयालदास की वाणियों की कथा "पंच वाणी" के नाम से होती है। ५—अच्छा। ६—लगना, छूना, सटना। ७—हांकना।

दिसा भूल होयोड़ा दुसटी, आथण रा आथड़िया[1] है ।
ग्यान तुरी[2] चढि लोभ गधेड़ै, चौड़े धाड़ै चडिया है ॥
अरजी देय कचेड़यां[3] ऊंधां[4], लाज छोडिनै लड़िया है ।
कांजी[5] मांहिं पनोती[6] की सा, देखो हुवा दुधड़िया[7] है
है गादी री खाच हुई हद, तन खिण खिण तडभड़िया[8] है
मलणूँ कीधो खाजि मिटावण. वासै बुरा बिगड़िया है ॥
उंणी पांव[9] में कोढ ईरखा, गलै अंग गडबड़िया है ।
लुचां वाणी माथै लीनीं, भूठा रा नख भड़िया है ॥
रामदास हरराम‌दास रै, बाड़ै गोधा बड़िया है ।
जठीतठीनूं करकर जुरड़ा[10], खिलखावण खडभड़िया[11] है
अध सूकोड़ा काम न आवै, दाम न दे अणदड़िया है ।
गायां उछंरगो[12] गोहरि[13] सूं, पोठा[14] लारै पड़िया है ॥
स्याल[15] मौत आवैज्यूं सांप्रत. गांवतरफ गड़वड़िया[16] है
हया गमावण इण हवाल[17] में, ऊमर सूं अवअड़िया[18] है ॥

१—अन्धाधुन्ध चलना। २—घोड़ा। ३—यह रचना सं० १९५० की है जब कि महन्त पद आदि का मामला जोधपुर जज की अदालत मे चल कर उसका अन्तिम फैसला सं० १९५१ भादों बदि ७ (ता० २३-८-१८९४ ई०) को हुआ । ४—उल्टा । ५—खटाई । ६—ग्रह दशा । ७—दूध । ८—तड़पना। ९—खुजली। १०—बाड़ में सेंध लगाना । ११—खड़बराट करना। १२—रवाने हुई। १३—गायो के रहने का स्थान। १४—गोबर। १५—सियार, गीदड़ । १६—भागना । १७—दशा । १८—भिड़ना ।

७

(राग भैरव प्रभाती)

सैनो में समझावे सतगुरु ॥ टेर०॥

सुण समझे कोइ सुघड़ सयाणाँ भोंदू सुण भमजावे ॥१॥
आयां साधन देवे उत्तर वाञ्छित वस्तु बतावे।
व्हे जेड़ी कर देवे हाजर पद ऊंचा जद पावे ॥२॥
चतुर होय कोई चेला चेली ऊठ सँवारै आवे।
दरसण कर साधां रे दड़के[1] पावां में पड़जावे ॥३॥
मिनखा जन्म अमोलक मूरख पांचर[2] फेर न पावे।
हिलमिल हँसणों वेवल बसणों ओ मोसर[3] कद आवे ॥४
काया कोट काच सो काचो जनन करन्तां जावे।
भण गुरुज्ञान नफो इक भाया अरथ और के आवे ॥५॥
पसू खाल[4] की बणें पगरखी[6] पेर पेर सुख पावे
अर्थ खाल थारी नहिं आवे, लेवो[7] अरथ लगावे ॥६॥
डहक्योड़ा[8] डोले केई डोफा[9] गाफल जन्म गमावे।
राजो भेख मात्र ने राखे सेजाहीं सुख पावे ॥७॥

१—तुरन्त। २—पामर, पापी । ३—अवसर, मौका ।
४—दूसरा। ५—चमड़ा। ६—जूता। ७—दीमक, कीड़े। ८—बहका हुआ। ९—मूर्ख।

देख कांम हे जमदूनां सूं जूतां सूं जरकावे[१] ।
अबधूनांरे सरणें आपद[२] छूनांहीं छुट जावे ॥८॥
मांरो थांरो कर माया में, उलझ्योड़ा उलजावे ।
कुलबे[३] लगे गुरांरी कूंची[४] खट ताला खुल जावे ॥९॥
नाभ कवल में नाच नचावे सब रग रग सणणावे[५] ।
अनहद नाद बजे इकतारा[६] गगन मंडल गणणावे ॥१०
जन्मभूमि में करे जातरा[७] पाप प्रबल पिल जावे ।
पुन्न पाछला होवे पूरा आ मनमें जद आवे ॥११॥
जोई जुगत करम री कीरत जपी न मुख सूं जावे ।
सुघड़ सुणों साधां रो सूजस ऊमरदांन उड़ावे ॥१२॥

८

सेंनो में समझावे सतगुरु ॥ टेर ॥
साध सँगत विन मुकति न सुपनै सतगुरु बोल सुणावै ॥
पुन्य बड़ेरां रा है पूरा आ मनमें जद आवै ॥ १ ॥
प्रेमामगन रामरस पूरण सागे[८] शबद सुणावै ॥
सनमुख हुय सरधासूं सुमरण सासो सास समावै ॥ २ ॥

१—मारना । २—दु.ख । ३—गुप चुप । ४—चाबी, कुजी ।
५—बिजली दोड़ना । ६—एक बाजा । ७—यात्रा, सफर ।
८—असली

ससो सास सम्हातां समरण तन मन खूब तपावै ।।
लोह लुहार तँणी गति लागै मारोमार मचावै ।। ३ ।।
मारो मार मचायां मनवो आप अेक घर आवै ।
अेकठोड आयां मूँ अनुभव वस सुध बुध विसरावै।।४।।
आठों पहर अखाड़ै आनँद झरणाँमृत झरजावै ।
हरदा बीचि हुवै हरियाली ठीक आखठर जावै ।।५।।
सामृत मिल्या मिलै सुख सागे धुनिमै ध्यान धरावै ।
कुलवै लगै गुरांकी कूंची खट ताला खुल जावै ।।६।।
चिपै गूंद ज्यूं चत चिप जावै खाद खुद नहीं खावै ।
नैंण मूंद अपणै मूं निरखै बूंद में बूंद समावै ।।७।।
अरधे उरध उरधमिल अरधे हेक मेक होय जावै ।
छनमें गुरु कृपासूं छूटै आवागवण उठावै ।।८।।
हिलै न चलै परस्पर हरसै दरसै सुख दरसावै ।
बारैई मास अमीरस बरसै परसे तन परसावे ।।९।।
परचै घट हुयगा पद पूरा छूटा और छुटावै ।
ऊमर देखैला अविणासी ईणभव मोज उडावै ।।१०।।

ओलम्भा (उल्हाना)

(पद राग प्रभाती)

दां ओगण दुखदाई नैं रे, दां ओगण दुखदाई नैं।
तों[1] में ओगण तार[2] नहीं है, ओगण भाग अन्याई नैं॥टेर
दीये सूं निज कंवर देखियो, हिये लियो हुलराई नैं।
मा बाजण[3] नैं बलियो-मूंढो[4], ओ अलियो[5] सुत[6] जाई नैं
झपटी नहीं आँख झबकाई, लेगी नह लपकाई नैं।
लख लाणत[7] मिनकी[8] नैं, लागी उण बेला[9] नह आई नैं॥
जिण कुलरो खोटो दिन है, जद निघ जनमैं निरताई नैं।
बालापणो जवानी बोई, बोवण[10] चहत बुढाई नैं॥
गैलो[11] गांव, गांव गैले, नैं गिणै नहीं गरवाई[12] नैं।
चित जिदांरो कर्‌यो चूरमूं, कनै राखि कडवाई नैं॥
पढियां विनां मूढ पग फावे, पढियां विचै पुमाई[13] नैं।
उणरै ढिग कोई रहै आदमी, तो क्योंहिक कसर कुमाई नैं
अपणैं माहिं अकल नह असी, खुदही लखै खराई नैं।
मानैं नहीं कह्यो अह्मारो, बद नह तजै बुराई नैं॥

१—तुम, तेरा। २—जरा भी। ३—कहलाने को। ४—ललचाना (मारवाड़ी मुहावरा)।५—खराब। ६—पुत्र। ७—धिक्कार। ८—बिल्ली।९—वक्त। १०—पागल। ११—डुबोना। १२—घमंड में। १३—खुश होकर।

गांगो[1] गिणांक[2] बूझ बुझाकड,ऊंधी अकल उपाई नैं।
सेखसली[3] नैं कुण समझावै, बस इण पोपांबाई[4] नैं॥
गंडक[5] गिणै न गिणै, गधेड़ो गोधो[6] गिणैं न गाई नैं।
चिड़ो कमेड़ी मारण चाहे, ओ अपणै ढिग आई नैं॥

१—गांगला तेली जिसकी कथा प्रसिद्ध है। २—गणितकार, हिसाबी। ३ शेखचिल्ली जिसकी मूर्खता प्रसिद्ध है। ४—सय्यद गुलाबमीया मीरमुंशी कृत पालनपुर की तवारीख के सफे ५ में पोपांको जालोर (अब जोधपुर राज्य में) के चौहान राजा बीसलदेव बालेचा की रानी लिखा है। जब इसका पति राठोड़ों द्वारा धोखे से मारा गया तब यही राज काज करने लगी। इसकी ग़फ़लत व बदइन्तज़ामी से राज्य मे बड़ी गड़बड़ फैली। इससे सं० १४५० वि० मे इसके सेनापति बिहारी पठान यूसुफ़ख़ां (पालनपुर वालों का पूर्वज) ने राज्य की बागडोर अपने हाथ मे ले ली और रानी मय अपने दो नाबालिग पुत्रों के ईडर राज्य (महीकांठा गुजरात) मे भाग गई। बाद मे उधर उसके पुत्रो ने भीलनी को व्याह ली। इस रानी पोपांबाई के मूर्खतापूर्ण कई क़िस्से लोगों मे प्रचलित हैं। इसके राजप्रबन्ध के विषय मे यह पद्य भी प्रसिद्ध है:—

धोखा है प्रधान चमाचेरी जाकी पासवान।
बड़ी बैन गप्प सो फिरत अति ऐंठिये॥
छोटी बैन पोल ताकी राजन मे पेठ धणी।
जेठी बैन भूल ताकी सबै बात सेठी है॥
जलो जन्ता भरतार, गड गप्प न्यात जात।
कंवर है गपोडीमल जोर जंत जेठी है॥
आलम है पिना वाको, मात है अंधेर वाकी।
पोपाबाई आई सो कचैरी कर बैठी है॥

५—कुत्ता। ६—बैल, बलद।

२

(राग प्रभाती)

दोस नहीं थारा में दोसत, दोस तिहारी दाई नै ॥टेर॥
नाला साथे नाड़ न काटो, धाई रांड बधाई नै ।
मात पिता में दोसण मोटो, प्रथम मिल्या सुख पाई नैं।
जग दोनां मिल ओ निपजायो हिया फूट हरखाई नै ॥
पेट मांय खोटी पुल पड़ियो, मेटण कुल मगजाई[1] नै।
गिरियो हाय गजब रो गोलो, अेब-गेब[2] रो आई नै॥
कर दिल काठो[3] दियो न दाटो, मन माठो मुरझाई नै ।
उरसूं काठो आगे पड़िया, ओ भाटो[4] जद आई नै ॥
पेट कपूत सपूत परखियो, खोद न दीनो खाई नै ।
लख लांणत मिनकी नें लागी, उण बेला नहिं आई नै॥
पढणीं बेला में पग फावे, पढयां विचै पोमाई नै ।
करे दखोल जिकां सूं कोई, लाधे त्यार लड़ाई नै ॥
मारण मारण समझे मूरख, तारण लखे न ताई[5] नै ।
रात दिवस हिंसा सूं राजी, कर दे मात कसाई नै ॥
महा कपूत मुलक रे मांही, लेंण सपूत लड़ाई नै ।
पोल मांय ऊमर पद पढियो, सुघड़ लेख सुघड़ाई नै॥

१—गौरव । २—अजब गजब । ३—कठिन । ४—पत्थर ।
५—बड़ी माता ।

वैराग्य-वचन

(भजन घुड़दौड़)

टेर—मूढ़ मन क्यूं घुड़दौड़ मचावे,
खाली गोता खावे । मूढ़० ॥

रात दिवस के रेस[1] कोस[2] में वाजी लाव बनावे।
जाकी पार कोई हूय जावे वेनिंग[3] पोष्ट[4] बतावे ॥१॥
हिया फूट होवे नित हलको खूब धाप नहिं खावे।
भक्ष्याभक्ष्य विचार न भावत चाह[5] रोज चटटावे ॥२॥
लोकलाज कुल रीत लोप के मस्तक मूंछ मुँड़ावे।
लागी लगन नींद नहिं लेवे घोरे प्रान घुंमावे ॥३॥
पुरुष बडां सूं होय न प्रीती जोग पास नहिं जावे।
छके मोद छोरां[6] में छेलो संगत नींच सुहावे ॥४॥
लोभी लपक गोल[7] कप[8] लेवण चक्कर अश्व चलावे।
वाटर[9] जम्प[10] उलंघ बावरो केइक टट्टी कुदावे ॥५॥

१—Race घुड़दौड़। २— Course मैदान। ३—Winning. जीत। ४— Post. थम्भा। ५—चाय। ६—लड़के। ७—Goal. लक्ष्य। ८—Cup. प्याला। ९—Water पानी। १०—Jump. कूदना। वाटर जम्प एक खेल विशेष जिसमे आँखों पर पट्टी बाँधकर पानी के घड़े सहित दौड़ना होता है।

रोके तुरंग बेग को राखे अपनी घात उपावे।
जीतन की जांनें बहु जुगती जन्म हारतो जावे ॥६॥
जीत पोष्ट के पास जावतां चाबक चोट चलावे।
लाख जतन करदे ललकाराँ जीत ओर लेजावे ॥७॥
थेटम-थेट[1] तुरंगम[2] थाके पेंड[3] चलण नहिं पावे।
हार जुवा नित हय खरीदे गाफल दाम गमावे ॥८॥
देखे डाव पीठ दुसमण की धीमी चाल धपावे।
पूरे वेग करे जब पट्टी लख ममरेज लगावे ॥९॥
घट में दौड़े घोड़ा घोड़ो और दाय नहिं आवे।
न्याय धर्म नीती निज न्यारी कांम सुद्ध छिटकावे॥
मूढ़ मन क्यूं घुड़दौड़ मचावे ॥ खाली० ॥१०॥

धर्म-कसौटी

(राग आसा)

टेर—समझ सठ आतम ज्ञान अज्ञानी,
माया बादी गूढ़ मसकरा मूढ़ महा अभिमानी ॥
काली कांणी कोझी[4] कांमण अपणीं परणीं[5] आछी,
अबछर[6] आभ अवर अरधंगा[7] पदमण धरिये पाछी॥

१—नियत स्थान। २—घोड़ा। ३—डग भर। ४—बदसूरत
५—विवाहित स्त्री। ६—अप्सरा, सुन्दर स्त्री। ७—स्त्री।

तीन दिनां सूं साक मिले तोई धोको हिये न धारो,
सूंक[1] लेर पधरावे सीरो[2] नहिं नीको निरधारो ॥
सांच बोलियां टुकड़ा सूका मिल जावे सोई मीठां,
कूड बोल पकवांन करावे धूड़ बराबर धीठा ॥
हात कमाई घाट[3] हरक सूं पतली गट गट पीणीं,
घोर रेत सम चेत घमण्डी चोर लियोड़ी चीणीं[4] ॥
अंग दया घर घोर अन्धारो पूनम सी छवि पावे,
दयाहीण घर दीन दिवाली काली रात कहावे ॥
बिसन बिनां दस बीस बरस बिच मरणो सुर्ग सिधाणो,
विसनी नर सौ बरष जिये वपु पूगे नरक पयाणो ॥
सुकृत लगन स्वाधीन सदाई सदा मगन सुख रासी,
सनमुख सम्पत लगत अग्नि सो, पराधीन दुख पासी ॥
विभचारी बैरी बद वंचक[5] छल बल कपटी छानो,
महामोह हिंसक मूरख सूं मरणो उत्तम मानो ॥
कामी क्रोधी कृपण कलंकी कुटिल कजाक[6] कसाई,
चोर चुगल चालाक चतुर सूं भोलो आछौ भाई ॥
ऊंच नींच अन्तर नहिं एको राम भजे सोइ रूड़ो[7],
परमेश्वर ने नहीं पिछाणें चार बरण में चूड़ो[8] ॥

1—रिश्वत। 2—हलुआ। 3—मक्की का मोटा दला हुवा आटा पानी में पका कर गाढ़ा बना लेने पर "घाट" कहलाता है, राब। 4-शक्कर, खाँड। 5—ठग। 6—चालाक। 7—अच्छा। 8—मेहतर, भंगी।

आतम अन्तर सार अहरनिस तार निरन्तर तोफा.
पांणी पाहण[1] में परमातम बाहर ढूंढत बोफा[2] ॥
जोग जुगत जगदीश्वर जपणा अपणां जन्म उधारे,
ऊमरदान अनूपम आशय बिरला बात विचारे ॥

२

(राग सारंग)

टेर—मना मान रे कह्यो ।

जांन ह्वे अजान में सुजान क्यूं रह्यो ॥ मना० ॥
साह ह्वे असाह चाह दाह तें सह्यो ।
राह छोड अहा तूं कुराह क्यूं गयो ॥ मना० ॥१॥
राज काज रीत नीत बूझतो रह्यो ।
बाट आन्धरे कि यार सूझतो बह्यो ॥ मना० ॥२॥
चेन को कुचेन में गमावनों चह्यो ।
सेन साथ नेंन को गमावनों रह्यो ॥ मना० ॥३॥
राम नाम साजना में लाजनो रह्यो ।
गाजनां गिंवार गोल भाजनो गयो ॥ मना० ॥४॥
कोर को सुधार ज्ञानी गोर तें कियो ।
आपनों उधार पानीं घोर तें पियो ॥ मना० ॥५॥

१—पत्थर । २—मूर्ख ।

कौ सवाल कीन जो जवाब दे दियो ।
राम को जवाब देन जाव ना रियो ॥ मना० ॥६॥
ओर की निहार ऐब आजलूं जियो ।
आपनें किये कि ओर फोर तूँ हियो ॥ मना० ॥७॥
आपनों ईं भायो ऊमर काम तें कियो ।
देव को सुहायो जहां पांव नां दियो ॥ मना० ॥८॥

२

मना मान रे कह्यो ॥ टेर ॥

दान को विधान छिमा ध्यान में छयो ।
मतिराम विसरि जाहु नाम कान में कह्यो ॥१॥
जवानी के जोर धंधा धोर में रह्यो ।
धर्मकों धकेल गैल पाप की गयो ॥२॥
गैलको असूल[1] सूल धूल में गह्यो ।
मूलकों गमाय मूल फूल क्यों रह्यो ॥३॥
भाम चाम भोग सोग रोगको सह्यो ।
रामतैं विजोग काहु भोग नां रह्यो ॥४॥
लीन औ अलीन भीन चीन्ह[2] तैं लयो ।
लीन है अलीन दोऊ दीन[3] तैं गयो ॥५॥

१—उद्देश्य, सिद्धान्त । २—जानना । ३—धर्म ।

रोल है डफोल डावाडोल में रह्यो।
मानखो[1] अमोल गोल मोल में गह्यो ॥६॥
ओरको कुकाम गाम गाम में कह्यो।
आपने अकामको जु नाम ना लयो ॥७॥
कीचसो गलीच काम भूलि तैं भयो।
नीच काम बीच अजौं नीच तू नयो[2] ॥८॥
गैर कामही तैं गैब गूजनू[3] गयो।
आपनीं ही ऐबतैं अमूझनूं दयो ॥९॥
वाद औ विवाद को सवाद तैं सह्यो।
रावरो[4] निनाद ऊंट पाद ज्यूं गयो ॥१०॥
ग्यान कों चुरायो लवै लागतो गयो।
जागतो घुरायो जवैं भागतो भयो ॥११॥
दूसरे बुरे न रहो रोध तैं दियो।
आपने बुरेपै अहो क्रोध ना कियो ॥१२॥
दारतैं कुदार[5] पैर पोच में दियो।
कार कों बिगार सोच लारसैं[6] कियो ॥१३॥
सांच झूठ झूठ सांच राचतो रह्यो।
रूपकूं कुनाव नाव[7] नांवतो[8] रह्यो ॥१४॥

१—मनुष्य। २—नया। ३—गर्जना। ४—आपका। ५—खराव स्त्री। ६—पीछे से। ७—जहाज। ८—चलाते रहना।

बोलके कुबोल भगो टोल तू भयो।
माल तोल व्याज साल[1] पोल में सह्यो ॥१५॥
राजके विहीन सत्यसिंधु तैं रह्यो।
भाजके अधीन दीनबन्धु के भयो ॥१६॥
छन्द है सुछन्द ओ अनंद को कह्यो।
मन्दमती ऊमरो विफन्द में फयो[2] ॥१७॥

४

(राग सोरठ पश्चिमी)

टेर—जिवड़ा जुगत न जांणी रे,
मुक्त होवण री मनमें मूरख उगत न आंणी रे।
ओ३म् अथ अखिलेश्वर अविणासी अज अगवांणी रे।
विश्वम्भर घट घट में व्यापक वेद वखांणी रे ॥जिव०॥१
परमेश्वर री आज्ञा पूरण नहीं पिछांणी रे।
पागलपण सूं फिर फिर पूजे पाहण पांणी रे ॥जिव०॥२
भगल भागवत[3] पेट भरण री कुटिल कहांणी रे।

१—धक्का, घाटा। २—फंस गया। ३—इसमें श्रीकृष्ण चन्द्र की अनेक लीलाओं की विचित्र कथाएँ लिखी हुई हैं।

सत्यारथ[1] सुणियां बिन सांप्रत होसीहांणी रे॥जिव०॥३
परधन हरण परायण पांमर वञ्चक वांणी रे।
ते झूंठी बुगलां री बातां नाहक तांणी रे॥ जिव०॥४
चार सम्प्रदा ठग चोरां री छार न छांणी रे।
ऊमरदान ज्ञान बिन ऊमर अन्त उडांणी रे॥जिव०॥५

१—अखंड ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द ने वेद शास्त्र और नाना प्रकार के धार्मिक ग्रन्थो की छानबीन करके निर्भीकता और स्वतन्त्रता से इस ग्रन्थ (सत्यार्थप्रकाश) को लिखा है। इसमें वैदिक धर्म का सत्य रूप दिखाया है और संसार के अन्य मत मतान्तरों के सत्यासत्य का तुलनात्मक विचार उन मतों के प्रमाणिक ग्रन्थों के आधार पर किया है। भारतवर्ष मे जागृति फैलाने वाला यह अपूर्व ग्रन्थ है। जो बातें इस ग्रन्थ में आज से ५० वर्ष पूर्व दयानन्द ने लिखी थी और आर्य्यसमाज अपने प्लेटफार्म से कहता था वही बातें आज इण्डियन नेशनल कांग्रेस (राष्ट्रीय महासभा) के मञ्च से कही जाती हैं। वास्तव में दयानन्द भारत के राष्ट्र-निर्माता थे। उनसे मातृभाषा हिन्दी का भी बड़ा उपकार हुआ है। स्वयं गुजराती होते भी उन्होंने जो कुछ लिखा सब हिन्दी में लिखा और ऐसी सरल हिन्दी में जिसे सब लोग सहज ही समझ सकते हैं। स्वामीजी ने छोटे बड़े १७ ग्रन्थ लिखे थे।

५

(सील रो पद-राग आसावरी)

समज मन सील[1] सदा सुखदाई।
सील बिनां न सिधाई ॥ स० ॥ टेर ॥
धुरतें[2] सील फरस[3] घर धार्‍यो, विसय विकार विहाई
क्षत्रिय मार अवनि[4] निक्षत्री, वार इक्कीस बनाई ॥
हनूमांन[5] नें सील मई हुय, चूक न दृष्टि चलाई।

१—ब्रह्मचर्य। २—शुरू से। ३—महर्षि जमदग्नि के पुत्र थे इनका इक्कीसबार पृथ्वी निक्षत्रिया करना गप्प है। क्योंकि उनके जीवन काल में ही भगवान् रामचन्द्र आदि प्रतापी क्षत्रिय राजा मौजूद थे। ४—पृथ्वी। ५—इनके पिता पवनदेव और माता अञ्जना थी। यह (हनूमान) पूंछ वाले वानर (बन्दर) नहीं थे परन्तु वे क्षत्रिय (राजपूत) वंशावतंस मनुष्य थे। वानरवत चेष्टा करने से ये और इनके साथी सुग्रीव आदि वन-वासी वनचर, वानर और वानर के सब पर्यायवाची कपि, शाखा-मृग आदि नामों से पुकारे जाते थे। जैसे आज भी मालवा के निम्बहाड़ा स्थान के मनुष्य नाहर (सिंह) कहलाते हैं। अभी थोड़े दिन की बात है जब सन् १६०५ ई० में रूस जापानियों के बीच युद्ध हुआ तो जापानियों की कूद-फांद देख कर रूसियों ने उनका नाम "Yellow Monkeys" पीले बन्दर रख दिया था (जापानियो का रंग कुछ पीला होता है)। यह शब्द जापान निवासियों के लिये वर्षों तक रूस देश में काम में आता रहा। रूस वालों के लिए Russian Bear रूसी

गार्‌यो मान असुर को गरज्यो, जब ही लंका जराई ॥

रीछ (भालू) और अँग्रेजों के लिए British Lion (ब्रटिश सिंह) या John Bull (जानबुल-जान बैल) ऐसे प्रसिद्ध शब्द हैं जो आज भी सब योरप वाले और संसार के कई देशों के लोग काम में लाते हैं। नागवंशी राजपूत प्रसिद्ध हैं जिनके वंश में उड़ीसा के कालाहण्डी आदि राज्यों के राजा हैं जो अपने को साभीमान से "नाग" कहते हैं। क्या वे नाग अर्थात् सर्प थे ? नहीं, नाग की तरह क्षात्र क्रोध धारण करने से या अपने किसी पूर्वज के नाम पर वे नाग कहलाते हैं। देखो केप्टेन ठा० केसरीसिंह देवड़ा, गलथनी कृत राजपूत जाति को सन्देश पृ० ३ सन् १९२४ ई० और आचार्य रामदेव कृत "भारतवर्ष का इतिहास" पृष्ठ ३३६।

१—कई लोगों ने मान रखा है कि हनूमान समुद्र फांदकर भारत से लंका में गये। यह सर्वथा ही अयुक्त है क्योंकि वाल्मीकि रामायण में समुद्र तैरकर हनूमान का जाना पाया जाता है। "तितीर्षति" शब्द से कोई अन्य अर्थ निकलता ही नहीं है। इस समय भारत और लंका के बीच ५८ मील का फासला है। भारत और लंका के बीच मनार व रामेश्वर नामक दो टापू हैं जो ३५ मील हैं। अतः समुद्र भाग केवल २३ तेईस मील है। उस समुद्र भाग में भी जल बहुत थोड़ा रहता है। जब कि फ्रान्स और इङ्गलैण्ड के बीच की इङ्गलिश चैनेल नाम खाड़ी को (जिसकी चौड़ाई प्रायः २१ मील है) कई बलवान तैराक तैर जाते हैं। और भारत में भी प्रयाग विश्वविद्यालय का उत्साही विद्यार्थी रवीन्द्र चैटर्जी (बंगाली) १८ वर्ष की आयु में सवा उन्नीस घण्टे में ४३ मील तथा तेईस वर्ष की उम्र में सन् १९२७ ई० में अरबसागर में साढ़े १२ घंटे में ३०

रामचन्द्र[१] नें सील राख के, कसर न राखी काई।
रावन[२] बंस खोय के राघव, विजय निसांन बजाई॥
लिछमन जती सील व्रत लेके, सांव्रत अंग समाई।
बरष चतुर दस बन रघुवर की, करी कठिन सिवकाई॥
सील व्रत भीषम नें साध्यो, बरनी व्यास बड़ाई।

मील और अभी सन् १९३० ई० (संवत् १९८६ विक्रमी) में वह ४ घंटे पैंतीस मिनट में २५ मील (प्रयाग से गंगाजी में) तैर गया तो हनूमान जैसे बाल ब्रह्मचारी राजपूत तैराक वीर का भारत और लंका के बीच के २३ मील समुद्र भाग का तैरना कभी भी नामुमकिन नहीं माना जा सकता ।

१—अयोध्या के महाराजा दशरथ के यह पुत्र थे। इन (रामचन्द्र) का त्रेतायुग के मध्य मे होना हिन्दुओं मे माना जाता है। अतः त्रेता के आधे ६,४८,००० वर्ष और द्वापर के ८,६४,००० और कलियुग के ५०३१ गत वर्ष जोड़ने से रामचन्द्रजी को हुए आज (सं० १९८६ वि०) तक १५,१७,०३१ वर्ष होते है। उधर आजकल के विद्वान् (लोकमान्य तिलक आदि) ग्रहों के स्थानों के अनुसार. ज्योतिषीय विचारों द्वारा भगवान् रामचन्द्र का समय विक्रमी संवत् से २२०० वर्ष पूर्व ही निरूपण करते है यानी अब तक ४,१८७ वर्ष होना बताते है। २—रावण के एक शीश और दो ही भुजाएँ थीं। सीता के सामने जब वह आया था मनुष्य मालूम होता था। जो लोग उसे दश सिर तथा बीस हाथ वाला कहते है वे भूल में हैं। "दस शीश" का अर्थ जिसके शीशमें दस साधारण सिरों के बराबर शक्ति हो। महर्षि वाल्मीक ने इसी अभिप्राय से दशग्रीव आदि शब्दों का प्रयोग किया था परन्तु बादमें पौराणिक

चूक कृष्ण ने रथी चक्र को, सील प्रताप कीनी ।
सील-प्रताप¹ सकल ही संपत, अंगरेजें घिरानी ॥५
एक सील बिना आर्य्यावर्तको, गेय हहरानी ।
सील सहित सिवराज² सिधारे, छके मदपानी ॥६॥
————————— औ, ई रह्यो एक कानी ।
समय (सन ५०० ई० से नी, सारी सेन सिटानी³ ॥७॥
विक रूपको न समझ दारू⁴ जुगल अश्व कट जानी ।
क्या रामचन्द्र जी के पिता की, छूर करी रजधानी ॥८॥
उनके पास केवल दश रथ थे ! चर टाट⁵ कुटानी⁶ ।
ही दश रथो पर चढ़ा करते थे ? , पीछे लगे पछतानी ॥६
१—ब्रह्मचर्य की बदौलत ।
हासिक वहियों) से ज्ञात होता है इल खूब पिटानी ।
के अधिपति राणा अजयसिंह (मातभई प्रानी ॥
कुँवर सज्जनसिंह सीसोदिया गृह- ॥१०॥
उसके चौथे वंशधर भैरवसिंह (भोसाजी) के वंशज कहलाये । इसी भैरवसिंह की १५ वी पीढ़ी मे वीर शिरोमणि छत्रपति शिवाजी हुए, जिन्होने दक्षिण में आर्य्य सभ्यता की रक्षा करके स्वराज्य की स्थापना की थी । इनका जन्म पूना से ५० मील दूर शिवनेरी के किले मे वि० सं० १६८६ चैत्र बदि ३ शुक्र (ता० १६-२-१६३० ई०) की रात को तथा राज्याभिषेक सं० १७३१ ज्येष्ठ सु० १३ शनिवार (ता० ६-६-१६७४ ई०) को और देहान्त सं० १७३७ चैत्र सुदि १५ (द्वि०) रविवार (ता० ४-४-१६८० ई०) को हुआ । इनके वंश मे अब दक्षिण मे कोल्हापुर की बड़ी रियासत है ।

रामेचंग[1] के कटक काट के, पट्ट करी पतसाई ॥
रावन[2] बंस...स[2] की सेन्या, लेती फिरत लराई ।
लिछमन जती ... लोकन की, हिम्मत खूब हराई ॥
बरष चतुर दस बन... स...ायो, दयानन्द सुभदाई ।
सील व्रत भीषम नें ...र्यो काशी विजे कराई ॥
...त्रोत्पत्ति फल पाई ।
...ला नेह निभाई ॥

मील और अभी सन् १६३० ई० (स...
वह ४ घंटे पैंतीस मिनट में २५ मी...
तैर गया तो हनूमान जैसे बाल रूपी भवन की नींव बादशाह
भारत और लंका के बीच वे... (औरङ्गजेब) ने धर्मान्धता के
कभी भी नामुमकिन नहीं ...दगर्ज, चालाक और हिन्दू धर्म का

१—अयोध्या के महाराइयों के होते भी यह बहुत पढ़ा
का त्रेतायुग के मध्य में होना ... और सदाचारी था। मृत्यु तक
के आधे ६,४८,००० वर्ष ...ने सिवाय दूसरो पर उसे कुछ
के ५०३१ ... अजी के इन्साफ में किसी जाति या अफसर की
...यह नहीं करता था। इसका जन्म-हिजरी सन् १०२७
ता० १५ जिल्काद [मगसर बदि १ वि० सं० १६७५ ता० २४-१०-१६१८ ई०] को हुआ था। अपने बूढ़े पिता सम्राट शाहजहाँ को कैद कर हि० स० १०६८ ता० १ जिल्काद [सावण सुदि ३ सं० १७१५ = ता० २३-७-१६५८ ई०] को दिल्ली के तख्त पर बैठा और २८ जिल्काद १११८ हि० (फागुन बदि १४ सं० १७६३ = ता० २१-२-१७०७ ई० शुक्रवार) को औरंगाबाद (दक्षिण) में मरा। इसके वक्त में मुल्की मालगुजारी की सालाना आमदनी २४, ०५, ६१, १४० रु० से करीब ३६ करोड़ तक थी। २—यूरोप का रूस देश। ३—बख्तर।

कोटन ऋषी सील के कारन, परम मुक्ति परदल कांनो।
ऊमरदान अब सील अराधत[1], पर ‌ फौज घिरांनी ॥५
‌ खाय हहरानी।
६ ‌ नटिके मदपांनी ॥६॥
(राग आ ‌ ी, केद रह्यो एक कानी।
‌ नी, सारी सेन सिटानी[३] ॥७॥
समज मन स दोरू[४], जुगल अश्व कट जानी।
तेरे कबहू न अबकी, धूर करी रजधानी ॥८॥
जन्में जीव अकेलो जग में; कातर टाट[५] कुटानी[६]।
अन्त काल में जीव अकेलो, ‌ में, पीछे लगे पछतानी ॥६
धर्म बिना देखो धरनी में, भ‌ दल खूब पिटानी।
धर्म प्रताप धरापति धारत, रजधा‌ मातभई प्रानी ॥
पून्य प्रताप होय अंग पूरन, पाप प्रत‌ जानी ॥१०॥
प्रथम विचार पाप को पापी, कर मत ‌
धन नह चले चले नह धरनी, दुरग च‌
सुन नह चले जीव के साथे, चले न‌
दरसण देख करे नित दांतण, रहे ‌
पून्य खीन[२] तैं करत पयानो[४], धनी छोर

१—सेवन करना। २—रास्ता, सफर। ‌ इनकार करना। ४—
रवालगी। ५—अर्द्धांगनी, आधा शरीर यानि ‌ , मारी गई। ७—शत्रु
‌ वी):—
पीली सेना
‌ एक (काल)
एक (मोह)
दो (अज्ञान, अविचार)
‌ ा दो (आलस्य, प्रमाद)
‌ ी दो (काम, क्रोध)
‌ ८ (अशुभ कर्म)

रामेचंग[1] के वमाधुरी मोहनि. चन्द बदन चित चंगी।
रावन[2] बंस—स[2] के न आवत. कामनि नेन कुरंगी ॥६॥
लिछमन जती रे लोक धारयो. रान दिवस इकरंगी।
बरष चतुर दस बनेर् स तापी. निरभय तेज उनंगी ॥७॥
सील व्रत भीषम नें राख्यो जोधी. एक धर्म गुन अंगी।

न कर मन बात कुढंगी।
मील और अभी सन् १९३० ई० (के लंगी ॥८॥
वह ४ घंटे पैंतीस मिनट में २५ मी—
तैर गया तो हनूमान जैसे बाल क्पी
भारत और लंका के बीच वे (औ १—राग आसावरी)
कभी भी नामुमकिन नहीं रँज जोत न जानो।
१—अयोध्या के महाराज
का त्रेतायुग के मध्य में होना अज्ञानी ॥ जु० टेर ॥
के आधे ६,४८,००० वर्ष दर रचवायो. तामेंसेन सजानो।
के ५०३० ॰ अजी के इ. अने कफ, मँल्योजुद्ध मेदानी ॥१॥
अथवा यह नहीं करता थे
ता० १५ जिल्काद [मगस[2] की आई, इत तें अपनी आनी।
१०-१६१८ ई०] को हुआ कारन. भिरे महा अभिमानी ॥२॥
को कैद कर हि० स० १०६ न के माहीं. बोल्यो मोटी बानी।
सं० १७१५ = ता० २३-७-
और २८ जिल्काद १११८ फिर चूक्यो, गढ नँहँ सज्यो गुमानो ॥३॥
ता० २१-२-१७०७ ई० शु की लखिये, हुई इते बड हानी।
में मरा। इसके वक्त में मुल्क तोरड़ो[3]. कियो प्रथम कुरबानो ॥४॥
२४, ०५, ६१, १४० रु० से
यूरोप का रूस देश। २—व २—शत्रु। ३—ऊँट।

निज दल छोड़ उजीर[1] नीसर्‌‌यो,कायर परदल कांनी।
अरी भट हाथ अपार अचांनक,घरकी फौज घिरांनी॥५
लागो दाव दुकिस्त लगाई, हठ्यो खाय हहरानी।
घबरायो घोरन को घेर्‌यो, पद नटिके मदपांनी॥६॥
करी[2] अपनें को अगर कीनों,केद रह्यो एक कानी।
मदत मिली नाहीं मन मानी,सारी सेन सिटानी[3]॥७॥
दूजो ऊंट मर्‌यो बिन दारू[4],जुगल अश्व कट जानी।
उडतो किस्त लगी इक अबकी, धूर करी रजधानी॥८॥
उजीर को एरे कर आतर, कातर टाट[5] कुटानी[6]।
बीती बात पर्‌यो अरि[7] बसमें, पीछे लगे पछतानी॥९
ऊमरदांन विवेक बिना बपु, पेदल खूब पिटानी।
बुरद भई न भई चोमोरे, प्याद मातभई प्रानी॥
जुगत बिन सतरँज[8] जीत न जानी॥१०॥

१—वजीर, दीवान। २—हाथी। ३—इनकार करना। ४—दवा, शराब। ५—खोपड़ी। ६—पिटवाई, मारी गई। ७—शत्रु
८—सतरंज के पद की कूंची (कुञ्जी—चावी):—

लाल सेना	पीली सेना
१—राजा एक (जीव खुद)	१—राजा एक (काल)
२—वजीर एक (वैराग्य)	२—वजीर एक (मोह)
३—ऊँट दो (ज्ञान, विचार)	३—ऊँट दो (अज्ञान, अविचार)
४—घोड़ा दो (उद्यम, पुरुषार्थ)	४—घोड़ा दो (आलस्य, प्रमाद)
५—हस्ती दो (सील, संतोष)	५—हस्ती दो (काम, क्रोध)
६—पेदल ८ (शुभ कर्म)	६—पेदल ८ (अशुभ कर्म)

८

(पद)

मन मांनि रे मर्‌यो ।
मान को प्रयान[1] आन कान मेंपर्‌यो ॥ टेर ॥
रेत रेत रेत में परेत सो पर्‌यौं ।
स्याम बार सेत[2] है सचेत सो कर्‌यौं ॥१॥
काल है, अंदेस[3] नां संदेस औ कर्‌यौं ।
देसतैं बिदेस वास त्रासतैं डर्‌यौं ॥२॥
काल हैं कराल श्रो कराल भाभर्‌यौं ।
दूसरे मरे विहाल[4] हाल हूँ ढर्‌यौं ॥३॥
यादितैं सुकात गात जात जी जर्‌यौं ।
पाहि मां अचाहि आहि आपनां मर्‌यौं ॥४॥
हो गरीग बहो गरीब हीयतैं हर्‌यौं ।
कालको गरीब कौं करीब नां कर्‌यौं ॥५॥
धींगतैं अधीन है सुदीननां धर्‌यौं ।
दीन साथ दीन है सुदीनतैं दर्‌यौं ॥६॥
देख काल दीनकौं अदीनको डर्‌यौं ।
नामहौं गरीब के निवाजको धर्‌यौं ॥७॥

१—जाना । २—सफेद । ३—शक । ४—बेहाल ।

कोन कोन गोन या जिहांन नां करयों।
आपनी चलाय कोन कोन ह्यां आं अरयों ॥८॥
देख कोन कालचक्र चालनां दरयों।
कोर कोर खून चून चूनसो करयों ॥९॥
धारिकै विचार काल गालमें धरयों।
पांन[1] के बघूर[2] जान पान[3] सो परयों ॥१०॥
धायकैं भ्रसंसनीय[4] धामतैं धरयों।
कामतैं प्रसंसनीय काम नां करयों ॥११॥
धेयको विधान साधि ध्यांन नां धरयों।
गेय[5] को अग्यानतैं प्रमान नां परयों ॥१२॥
क्रेय[6] औ बिक्रेय[7] कथा काजतैं करयों।
श्रेय[8] को विश्रेय[9] साज लाज नां मरयों ॥१३॥
स्वान्त[10] को सुसान्ति सान्ति सोवनूं करयों।
धोवनूं न कीन ताहि रोवनूं परयों ॥१४॥
कामको अराम जाम[11] जाममें करयों।
रामहैं कहैं नहीं बिराम नां करयों ॥१५॥
गांम गाम ग्राम मैं कुनाम तैं करयों।
नांमको बिदाम[12] साथ धाम नां धरयों ॥१६॥

१—हवा, पवन। २—हवा का गोटा। ३—पत्ता। ४—निन्दनीय। ५—जानने योग्य। ६—खरीदना। ७—बेचना। ८—अच्छा। ९—बुरा। १०—अपना हृदय। ११—पहर। १२—मुफ्त।

ओरको भलो निहारि रोकिबे अरयौं ।
आपनूं बुरो बिहार डोकिबे डरयौं ॥१७॥
ओर जो बुरे भले प्रवाह का परयौं ।
तू न क्यूं भलो बनैं भलो भलो भरयौं ॥१८॥
भार ओर मार सार सास्त्रको भरयौं ।
आप नहीं मार सूई पार नां परयौं ॥१९॥
धूत ओर को निहारि चोरिकैं धरयौं ।
सूचिका[1] प्रदान भू विमान कों वरयौं[2] ॥२०॥
सांममें बिश्राममें तमाम सूं डरयो ।
दीह[3] में हराम क्यूं न राम सूं डरयो ॥२१॥
कामनों सदोख जानि पोखतैं करयो ।
मोखको अदोख मानि तोख[4] नां तरयो ॥२२॥
भोगबे कूं जून खून गूंनतैं भरयो ।
काम चून[5] को रोट न लूंन[6] को करयो ॥२३॥
धर्म को सुधार हो सु धार में धरयो ।
आपनूं उधार[7] सौ उधार[8] में अरयो ॥२४॥
बारलो[9] असेस[10] सोध[11] बोध तैं करयो ।
सोधनां विसेस मांहिं सोध नां करयो ॥२५॥

१—सुई । २—लेना । ३—देह । ४—सन्तोष । ५—आटा । ६—लवण, नमक । ७—उद्धार । ८—बाकी रक़म ।
९—बाहर का । १०—कुल । ११—शुद्धि ।

काम क्रोध लोभ मोह पासमें परयो।
आसको बिनासकैं निरासनां अरयो ॥२६॥
गर्व में अखर्व[1] खर्व[2] गर्वनां गरयों।
पर्व[3] में विपर्व पर्व बासनां[4] भरयों ॥२७॥
थानको कुथान थान मान नींसरयों।
होयसों सुथान हा विहान[5] बीसरयों ॥२८॥
हूं जहां अरामखोर तू जहां तरयों।
तूहिं पार तार मार पाव में परयों ॥२९॥
हैं बुरे मदीय[6] सो कबूल में करयों।
अच्छ हैं त्वदीय अच्छ लच्छ में लरयों ॥३०॥
पार या सँसारको बिचार नां करयों।
वार पार वारतें निसार नां करयों ॥३१॥
ऊमरा असार मांहिं सार का धरयों।
राम नाम सार हैं असार सो सरयों ॥३२॥

९

दोख निज दीह[7] न दीसै[8] रे,रसा[9] अवरां[10] पर रीसै[11] रे
बात निज हाथ बिगाडीरे आई सोइ पांत अगाड़ीरे ॥टेक

१—बड़ा। २—छोटा। ३—पुण्य दिन। ४—इच्छा। ५—सुबह। ६—मेरा। ७—दृष्टी से। ८—देखना। ९—भूमि, संसार। १०—दूसरों पर। ११—गुस्से होना।

पाणीं नह पाऊंरे प्यारा सैनांणी न सरोर।
कांणो[1] कहै चिनारा कोझो[2] तैं आंणी तसवीर ॥१॥
कह्यो बुलाय कांचलो करजी,[3] चितसूं मरजी चाढ।
गान निहारि त्रिया कृस[4] गरजी,[5] दरजी ऊपर दाढ॥२
हंसक[6] पाव हंसगत हसहस, अंसक वृथा उदंत।
बांझ नारि कुल-लोक[7] विधुंसक,[8] कहत नपुंसक कंत॥३
बाजो पर साजो चढ बैठे, है राजी विन होस।
पड़ै सवार आप खुद पाजी, दे ताजी[9] सिर दोस॥४॥
तुरत निहार सूझ तन त्रासै, नैणां नासै नींद।
स्वामी कहै सूंघि निज खासै, क्यूं वासै कोपीन॥५॥
भोज न गिणै चढावै मूंढो, जोजन दूरो जाय।
खोज न करै निकालै, खोड़ां[10] आंदो[11] भोजन मांहि॥६
फल अंगूर देखि दृग[12] फाटा, तारा[13] ऊंचा ताय।
पलटी लूंकी[14] देय पलाटा, खाटा[15] औ कुण खांय॥७॥
चल रंगरेजा मैं नहिं चाहूँ, भल नहिं सोभा भंग।
अलमित देखिर जलै अंगमें, रांड कसूंमल रंग ॥८॥

१—एक आंख वाली। २—खराब। ३—करना। ४—पतली। ५—खीजना। ६—बिछुवे, पांवो का एक जेवर। ७—मर्यादा। ८—नाशक, मिटाने वाला। ६—घोड़ा। १०—दोष। ११- रोगी। १२—आंख। १३—पेड़। १४—लोमड़ी। १५—खट्टे।

बोखो[1] आय अभागै बैठै, रस पागै प्रिय रोल[2] ।
मूरख रै लागै तन मिरचां, त्यागै तुरत नमोल[3] ॥९॥
माच क्रोध सटकै मुख मोड़ै, पटकै आच[4] पसार ।
पुण[5] गुण नाच कुवाच प्रकासै, नकटो काच निहार १०
कामी कूड़ प्रपंच घणाकर, झूड़[6] करै तन झेर ।
ऊ[7] साध्वी दिस धूड़ उडायर, फूड़ बतावै फेर ॥११॥
धाड़ो पाड़ण सगुणा[8] वैणां, ताकि जलावै तांद ।
सांथो[9] देतां रात सरावै, चोर बुरावै चांद ॥१२॥
रूठर[10] कहै अतर नह रूड़ो[11], तूठ[12] न देऊं तार ।
पूठ फिराय पोनसी[13] जंपै[14], गांधी ऊठ गँवार ॥१३॥
समझावै बहूधीत[15] सयाणां, वाचक नींत विनीत ।
संख सेत है रीत सदा री, पांडुर[16] पीत प्रतीत ॥१४॥
विविधि बजंत्री बीण बजावै, सुघड़ झीण सुर सार ।
बोलो[17] कहै खीण[18] है वंचक, हीण बजावण हार ॥१५
वण साधू निज नाम विसारो, छल धारो मद छाक ।
नरक पधारो देय नगारो, तिरण कँदारो[19] ताक[20] ॥१६

१—विना दांतो वाला । २—मजाक । ३—पान । ४—हाथ । ५—फिर । ६—पुराना, जीर्ण । ७—वह । ८—शकुन । ९—सैंध लगाना । १०—नाराज होकर । ११—अच्छा । १२—खुश होकर । १३—पीनस रोग वाला । १४—कहे । १५—पण्डित, बहुत जानने वाला । १६—पीलिये का रोगी । १७—बहरा । १८—दुखी । १९—रास्ता । २०—तकना ।

जारी करतां जाय जमारो[1] थिर न विचारो थाक।
बुधि थांरी रो है बलिहारो, ऊमर खारो आक[2] ॥१७॥

जोधारां रो जस
वीर बत्तीसी

[छन्द नाराच—जोधां रो]

कहूँ भटा[3] समत्थ[4] कै दया समत्थ सत्थ[5] दे,
समत्थ अत्थ साधने समत्थ में समत्थ जे।
अखंड ब्रह्मचर्ज के सिखंड[6] खंड अज्ज[7] के,
सधीर[8] ही[9] हमीर[10] से गंभीर[11] भीर[12] गज्जते[13] ॥१
धुरा सुघाट[14] घाट[15] के कपाट[16] छत्ति[17] के धरें,
घनं प्रतच्छ[18] तच्छ के प्रदच्छ स्कच्छ के घरें।
सुशील सभ्य साच्छरं[19] श्रुति प्रमान सोहनें,
अभंग पुत्ति[20] ओज के मनोज[21] मूर्ति मोहनें ॥२॥

१—आयु। २—आक का पेड़। ३—योद्धा। ४—समर्थ। ५—साथ। ६—मुकुट। ७—आर्यावर्त देश यानी भारतवर्ष। ८—धैर्यवान। ९—हृदय। १०—रणथम्भोर गढ़ के सुप्रसिद्ध चौहान राजा हम्मीर। देखो पृष्ठ ३० की पाद टिप्पणी। ११—गहरी। १२—संकट का समय। १३—नाश करने वाले। १४—सुघड़। १५—बनावट। १६—किवाड़। १७—छाती। १८—प्रत्यक्ष। १९—पंडित। २०—पूर्ति। २१—कामदेव।

अमोल तोल मोल के प्रचोल चोल[1] अँख[2] के,
अडोल डोल कन्ध के विडोल ने असंक के।
विशाल भाल[3] कन्धरा रसाल छत्ति युत्थरे,
रहें पदग्ग[4] रेखतें सुदेषतें अरी डरे ॥३॥
प्रचंड बाहु दंड के भये प्रचंड पिंड में,
घमंड को घटायदे मिलेन सो भुमंड[5] में।
डरे न सिंघ-डोल[6] ते स्व[7] डोलते डरावने,
करोल टोल[8] टोल कोल[9] कोल[10] ते करावने ॥४॥
प्रगल्भ[11] कंठ पेल देत कंठ कंठिराव[12] को,
दुहत्थ[13] हत्थ[14] ठेल देत हत्थलैं प्रदाव को।
उन्हें न भीत[15] और अभीत[16] व्हेन त्यां अगे,
भगेन वाह जान दे नवाह नाचरे भगे ॥५॥
मिले न मीढ[17] मीढ के अरीढ[18] रीढतें[19] अरी,
करे न ईढ[20] और की उन्हें न ईढ को करी।
चरित्र में विचित्र ज्यूं पवित्र में पवित्र जे,
अमित्र के अमित्र त्यूं सुमित्र के सुमित्र जे ॥६॥

१—लाल। २—आँख। ३—ललाट। ४—पाँव का अगला भाग। ५—पृथ्वी मंडल। ६—आकार। ७—अपना। ८—समूह। ९—वादा, प्रतिज्ञा। १०—सूअर। ११—वाचाल, ढीठ, व्यापक। १२—सिंह। १३—दो हाथों से। १४—हाथ। १५—डर। १६—निर्भय। १७—बराबरी। १८—बिना पीठ दिखाये। १९—नाश करना। २०—ईर्षा, शत्रुता।

अद्वेस और ऐश्वरीय जीवना[१] जर्यो करे,
मान्या करें मंतव्य की कर्त्तव्य को कर्यो करे।
अमैं प्रत्यूह[२] व्यूह[३] पे समस्तु भ्रु ह[४] लौं भिरी,
क्रमैं प्रत्यूह ओपमा दुरूह[५] दन्त ली किरी ॥७॥
प्रमांन शास्त्र मात्र को स्वपंडतं स्वयम् पढ़े,
गुनीन अग्ग[६] मन्य है व्यभ्यास[७] अन्य में बढ़े।
प्रकांड[८] पाठ पाठ के त्रकर्मकांड[९] को करे,
तने त्रई उपासनां ब्रह्मांड ज्ञान तें तरे ॥८॥
अधर्म को न आदरे सुधर्म कों सदादरे,
करे नहीं अन्याय कर्म धर्म न्याय को धरे।
सुसीख हेति सीखके तमाम तीख आत में,
भले सरीक ईख के न भीख मांगते भमें ॥९॥
चिराय नव्य नव्य नम्नु भव्य भव्य में चहे,
द्विजन्म पाय हव्य कव्य हव्य वाट में दहे।
धरा सुधेनु दूय दूय दूय दूय[१०] घू[११] धरे,
क्रतू[१२] समान राजसूय भूय भूय भू करे ॥१०॥

१—हिम्मत। २—विघ्न, बाधा, अटकाव। ३—युद्ध का सेना मंडल। ४—भँवारा। ५—कठिन। ६—आगे। ७—विशेष अभ्यास। ८—बड़े। ९—कर्त्तव्य, उपासना और ज्ञान। १०—दोहन कर करके। ११—निश्चल। १२—सत्ययुग।

उच्चार काट अन्य बाट वेद वाट में वहे,
निराठ[1] दाट[2] घाट की नहीं सम्राट की सहे।
बिठोर वाहुदंड कों उदंड ठोरते वहें,
विघोर शस्त्र अस्त्र झाट[3] टाट[4] फोरते वहें ॥११॥
बिजेत[5] बांन जेत[6] के निसांन[7] घोरते बहे,
रसा अरेत[8] रेत[9] को मुखग्ग[10] टोरते[11] रहें।
अगोट चोट देन कों सघोट गोट पें अटे[12],
हँसे प्रखोट मोट को बिफोट कोट[13] तें हटें ॥१२॥
खरां कहे खरा खरा धरा धुजावते वहें,
विकार हैं कुजा कुजा भुजा खुजावते वहें।
विवक्कि[14] वक्र[15] हे अवक्र[16] चक्र चेंठते बहें,
विवक्र लंबकन्न[17] के दुकन्न[18] एठते बहें ॥१३॥
नटालि दे भटालि[19] की जटालि[20] ऐंचते नभें[21],
अरीन मुच्छ मुच्छ दें खमुच्छ खेंचते अभें।

१—बिल्कुल, कड़ी। २—धमकी। ३—झपट। ४—खोपड़ी। ५—जयवान, विजयी। ६—जय। ७—बजाते। ८—दूसरों की प्रजा। ९—रैयत, प्रजा। १०—अपने आगे। ११—ले चलना। १२—चलना। १३—किला। १४—कुपित होकर। १५—टेढ़े। १६—सीधे। १७—एक बिलाव, गदहा। १८—दोनों कान। १९—वीरावली, वीरो की पंक्ति। २०—जटा। २१—निर्भय।

चलाक रूठ पूठ के अंगूठ चांपते चलें,
हरांमखोर[1] सुंड-मुंड[2] झुंड कंपते चलें ॥१४॥
निनाद बन्ध अन्ध के दुरून्ध ओटते[3] नदें,
महांन लंठ[4] संठ के कुकंठ घोटते मदें।
हलाकुअेल सेल[5] ते सदा उथेलते हलें,
चितार पेट भेट के चपेट[6] मेलते[7] चलें ॥१५॥
बिलोक लोक लोक को प्रलोक लोक की बदें,
तृलोक सोक मेट देत फेट दे जदे तदे।
लखान मान जान के समांन सस्त्रतें लरें,
अमान थान आंनतें प्रमांन अस्त्रतें परें ॥१६॥
स्व बंस को सुधारने विजाति[8] को बिगारनें,
मनें सु मृत्यु वारलों अने समान मारने।
दयालु है न सर्वथा वृथा दया मया दटें,
मिले जु गुंड मुच्छ मुंड थुंड ऊट कें थकें ॥१७॥
सनिद्धि[9] स्वामि के सदा पिनिद्ध पां परया करें,
लरें नहीं सुलोक तें कुलोक तें लरया करें।
अरें न और के अगें अराक[10] तें अरया करें,
डरें न तीन काल दीन बाल तें डरया करें ॥१८॥

१—देश द्रोही, हरामखोर। २—हृष्ट पुष्ट। ३—तोड़ते। ४—दुष्ट। ५—भाला। ६—थप्पड़। ७—मारते हुए। ८—मलेच्छादिक। ९—पास। १०—अड़ने वाले।

बडे सरोस जोस में भरोस अत्थने वहें,
रसा अरोस कोसलों भरोस और के रहें।
थिरा उथत्थ थत्थ तें विथत्थ थत्थते वहें,
असी प्रतत्थ[1] तत्थ[2] के प्रतत्थ तत्थते रहें ॥१६॥

वसू[3] प्रचंड[4] दंडतें प्रचंड[5] दंडतें वहें,
वितंड चंड[6] दंड दें अदंड[7] खंडते वहें।
बिमोह मोह मोह में विद्रोह द्रोहिपें बढे,
कृतांत भांत कोह[8] में कुकोह कोहिको कढें ॥२०॥

सुचाल चाल चाल के कुचाल चाल हैं कदा,
अरी विचाल चाल हैं अचाल चाल हैं अदा।
अकाल तें अकाल से अकाल काल हैं तदा,
सुकाल में दुकाल से अकाल काल हैं सदा ॥२१॥

ठठोर[9] सत्रु गोठ[10]की जबांन गोठ[11] लें जबें,
बडी मठोठ में बहें दु होठ दन्त तें दबें।
चलें न पून दून तें खऊंन लूंन ते लचें,
बचै न कून भून तें स्त्र खून चून तें बचें ॥२२॥

१--शास्त्र। २--सत्य। ३--द्रव्य। ४--बड़े ५--जबरदस्त ६--घोर। ७--निर्बल तथा धार्मिक। ८--क्रोध। ९--हंसी। १०--मंडली। ११--भेट।

सिकार सूर[1] सिंघ[2] की हकार हत्थतें हनें,
वनें अतुल्ल जोध पें न कुल्ल गोध[3] से बनें।
हटी पुमाय[4] हत्थतें हलें घुमाय हत्थि[5] को,
प्रखेल अन्त खेल में खिलाय दें प्रमत्थि[6] को ॥२३॥

विसाद तोप साद में वहे न हत्थि हत्थतें,
हसें समत्थ काम देय हत्थिको स्व हत्थतें।
हलें हमल्ल मल्लकों करीन ढल्लपें हलें,
पहे न ढल्ल[7] घल्लकें स्वढल्ल और की बनें ॥२४॥

घिरें मथोल घोलतें न ओल ओल में घलें,
चिरें चन्दोल गोलतें चमू हरोल में चलें।
अनत्थ[8] नत्थ नत्थ लें अनत्थ कों निभाय लें,
रिजैं करे निहालरें खिजें खुधाल खायलें ॥२५॥

मुरें अतोल झोलदें अमोल बोल मिट्ठतें,
दुखी पिछांन दान दें अखें विहांन इट्ठतें।
विद्वान दान मान दें विधान ह्वे विज्ञानतें,
निदांन रीझ खोजतें सुचीज दे निधांनतें ॥२६॥

वहेजु बाट बाट में पिता पिता महा वहें,
सुखी सुवाट ते सदा दुखी दुवाट में दहें।

१--सूअर। २--सिंह। ३-- सांड। ४--प्रसन्न होकर।
५--हाथी। ६--मतवाला। ७--रक्षा। ८--अनर्थ।

शरीर संसकार सार नीर छीर से सनें,
विध्वंस वेरि वंस को प्रसंसनीय ते बनें ॥२७॥
धरा सुजांन पाव फुंक फूंक के धरा करें।
लखे समीप काल को न कालतें डरा करें।
निकाम आम-भांम[1] को अनुंग्गिया[2] भजे नहीं,
निदांन प्रांन दांनलों प्रतग्गिया[3] तजें नहीं ॥२८॥
रसा[4] बिधान ध्यान के विज्ञान ज्ञान के रहें,
बपू अधीर पीर में न नीर नॆन ते बहें।
डुकार ब्रह्म द्वार व्हें हकार इक्क हत्थदें,
दुराग्रही विबाद बाद को सवाद सत्थदें ॥२९॥
परीश्रमीं परास्त दें विजेत व्हें परीश्रमीं।
परीश्रमी न नास्त व्हें अजैत हें परीश्रमीं ॥
करें प्रलाप जाप के त्रताप[5] में अनुंद्यमीं,
लगें दरिद्र लच्छपें समुद्र छुद्र उद्यमीं ॥३०॥
स्वतन्त्र मन्त्र तन्त्र सें युरोपियन्बदाबदी,
खराब अज्ज अज्जके[6] खुसांमदी खुसांमदी।
कहां ब्रटेन[7] भूति हा जनें प्रसूति केसरी[8],
असेस अेस देस की विशेष ब्याति वेसरी ॥३१॥

१—हर किसी को, जैसे तैसे को। २ - नौकरी (अनुज्ञा)। ३—प्रतिज्ञा। ४—पृथ्वी। ५—तीन ताप, मानसिक, वाचिक, कामिक। ६—आज के, वर्तमान। ७—अंगरेज, बृटिश। ८—सिंह-शेर।

सुभग्ग देस को जहां सुभग्ग औतरे सही,
अभग्ग अज्ज देसको अन्देस औतरे अही[१]।
इला[२] अधिछ अच्छ की गुनी गुनावलीं गही,
बतीस लच्छ बच्छ कीं कथी बतीसका कही ॥३२॥

राठौड़ दुरगदास[३] री औरंगजेब ने अर्जी

[छन्द पज्झटिका]

स्वति श्री दिल्लीपुर सुथान ।

१—सांप। २—पृथ्वी। ३—वीर दुरगादास (दुरगदास) राठोड़ का जन्म सं० १६९५ वि० के दूसरे सावण सुदि १४ सोमवार (१६-६-१६३८ ई०) को हुआ था। इसका देश प्रेम, वीरता, सदाचार और स्वार्थत्याग आदि गुण अनुपम थे। इसी वीर ने सं० १७३५ में बालक महाराजा अजीतसिंह (जोधपुर नरेश) को दिल्ली से बादशाह औरंगजेब के जबड़े से बचाकर मारवाड़ की तरफ पहुँचाया था। जब कि बादशाह ने मारवाड़ हड़पने की इच्छा से स्वर्गीय महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) की रानियों आदि को दिल्ली में राजा रूपसिंह की हवेली में रोक रखा था तो गोरां धाय ने मेहतरानी (भंगन) का स्वांग भर कर बालक अजीतसिंह को टोकरी में लेटाकर पहरे से बाहर पहुँचाया और सपेरे के भेष में मुकन्ददास खीची (चौहान), अजीतसिंह को लेकर आबू की तरफ छद्मवेश ने पहाड़ों में चला गया। जहां पर मुकन्ददास की संरक्षता में पुरोहित जयदेव के घर में बालक महाराजा का लालन पालन हुआ। दुर्गा बाबा की अध्यक्षता में राठोड़ सेना

सल्तनत[1] मुगल[2] कुल सावधान ॥
दरगाह[3] सदर[4] दौलत दराज[5] ।
ताला[6] बुलंद[7] इस्लाम[8] ताज[9] ॥१॥

ने ३० वर्ष तक औरंगजेब से लोहा लिया और इस दुर्गदास के ही बाहुबल, पराक्रम, तथा बुद्धिबल से औरंगजेब को निगला हुआ मारवाड़ का राज्य फिर उगलना पड़ा था। किन्तु काल की गति देखिये कि इस स्वामिभक्त को बुढ़ापे में महाराजा ने अपने मुँह लगे खुशामदियो के कहने से सं० १७७३ के क़रीब "देश निकाला" दे दिया और वह वहाँ से उदयपुर महाराणा की सेवा में जा रहा। जैसा कि किसी चारण कवि ने कहा है:—

महाराजा अजमाल री, जद पारख जांणी ।
दुरगो देशां काढ़ियो, गोला गांगाणी ॥

+ + +

पिड री हुती प्रतीत, साकदड़े देखी सही।
इण घर याही रीत, दुरगो सफरां दागियो ॥

१—राज्य। २—तुर्किस्तान के पास का इलाका मंगोलिया जहाँ के निवासी मुग़ल कहलाते है। ये मुग़ल बड़े दुष्ट और असभ्य थे। १३ वीं शताब्दी में ऐशिया मे इनका बड़ा जोर था। भारत के इतिहास में बादशाह बाबर के वंशधर मुग़ल कहलाते हैं जो ग़लत है क्योंकि बाबर तो तुर्क था न कि मुग़ल। ३—दरबार, बड़ा दरवाजा। ४—खास। ५—बहुत अर्से तक रहना, चिरायु होना। ६—किस्मत, भाग्य। ७—तेज। ८—मुसलमान। ९—मुकट।

आदाबअर्ज[1] उम्मेदवार ।
परवरिशि[2] करहु परवर्दिगार[3] ॥
बंदगी करैंगे महरबान ।
ज़िंदगी बकस क़िबले-जिहान[4] ॥२॥
हुक्काम[5] हुकम हाजिर हजूर ।
करिये न तदारुक[6] बेकसूर ॥
देखियें दर्द हम बेगुनाह ।
पेखियें बिरद आलम-पनाह[7] ॥३॥
खाँविंद[8] चहत खुद खलक[9] खैर ।
गफ्फूर[10] ग़ैर इन्साफ़ ग़ैर ॥
मालिक नहिं खालिक[11] मुसलमीन ।
अल्ला हैं रब्बल[12] आलमीन[13] ॥४॥
काबिल[14] कलाम[15] कहियन[16] करीम[17] ।
रहमान[18] इल्म[19] रय्यत[20] रहीम[21] ॥

१—प्रणाम, मुजरा । २—मदद, पोषण । ३—मालिक । ४—बादशाह । ५—हाकिम, अफसर । ६—दंड, प्रबन्ध, जुर्माना । ७—संसार का रक्षक, राजा । ८—पति, स्वामी । ९—दुनिया । १०—कसूरों को माफ़ करने वाला, खुदा, ईश्वर । ११—पैदा करने वाला । १२—पालने वाला । १३—सब प्रकार के जीव, संसार । १४—लायक । १५—बात । १६—कहना । १७—उदार, दातार । १८—दयावान । १९—ज्ञान । २०—प्रजा । २१—दयालु ।

खातरी नजर भर करहु खोज।
हम हैं न सजा लायक हनोज[1] ॥५॥
जल्लाल[2] जुल्म[3] इजहार[4] जाब।
होयगो क़यामत[5] में हिसाब ॥
बद[6] सदी[7] बदी[8] नेकी निहार।
देखेंगे दोजख[9] बहिश्त[10] द्वार ॥६॥
तोहीन[11] अदालत अल-किलीक[12]।
लिल्ला[13] वजूद[14] हैं लाशरीक[15] ॥
मालुम मुलायजे[16] करहु माफ़।
आलिम[17] हैं आलमगीर[18] आप ॥७॥
ऊगौ दिन अंन्धाधुंध आक।
किहूँ ताकरु घर दक्खे कज़ाक[19] ॥
अहदी[20] डेरिन पै अधम आय।
दुख देत खुदा खुद लगत दाय ॥८॥

१—अब तक। २—शान शौकत। ३—अत्याचार। ४—ज़ाहिर करना। ५—मुसलमानी मत के अनुसार वह अंतिम समय जिसमें ईश्वर सब मृतको का एक साथ इन्साफ करेगा। ६—बुरा। ७—हमेशा। ८—बुराई। ९—नर्क। १०—बहिश्त = स्वर्ग। ११—अनादर, अपमान। १२—छोड़ दो। १३—खुदा के लिये। १४—मौजूद। १५—विना किसी सहायक के। १६—नजर गुजराना। १७—संसार। १८—ससार का मालिक। १९—लुटेरा। २०—सरकारी सिपाही।

द्रढ दंत दबिब देखत दुसार ।
आवत न पार दुख सिंधु पार ॥
आपकी इजाजति चहत अग्ग ।
सुरधरा[1] जान को देहु मग्ग[2] ॥९॥
सब अबलावों पै महर[3] माफ़ ।
खलज़ुल्म सरे तैं है खिलाफ़ ॥
जो हुक्म करहिं सिर धरहिं जोय ।
है हल्फ दोगलापन न होय ॥१०॥
ठावे हम ठक्कुर सुकुल[4] ठीक ।
नोकरी चहत नज़दीक नीक ॥
सुभ स्वामिधर्म्म सेवक सुशील ।
अनुसरन असुर ईमान[5] ईल ॥११॥
बिलकुल बिसारि बैदिक बिधान ।
कब हू पढि हैं नहिं हम कुरान ॥
कटि सिखासूत्र[6] सुन्नत[7] कराय ।

१—मारवाड़ । २—रास्ता । ३—कृपा । ४—अच्छा कुल वाले । ५—धर्म, नीयत । ६—चोटी व जनेऊ । ७—मुसलमानों की एक रस्म (संस्कार) जिसमे लड़के की लिंगेन्द्रिय की सुपारी के ऊपर के ढक्कन के आगे का भाग (चमड़ा) काट दिया जाता है । इसे कही कहीं "मुसलमानी करना" भी कहते हैं । ऐसा मानते हैं कि बिना इस संस्कार के कोई पक्का मुसलमान नहीं माना जाता । खतना (सुन्नत) का कुरान मे जिक्र नहीं मालूम होता है । स्त्रियों की सुन्नत नहीं होती है ।

जावैं न मदीने[1] प्रान जाय ॥१२॥
जुम्मे[2] मसजिद सामिल जमात[3] ।
कमध्वज[4] नहिं चाहत करामात[5] ॥
कल्मां[6] नहिं भरिहैं पान[7] कान ।
मारेहु न व्हे हैं मुसल्मान ॥१३॥
संध्योपासन तजि बाँग[8] साज ।
निस दिवस वुजू[9] रोजा[10] निवाज[11]॥
सामर्थ सिंह हम नहिं शृगाल ।
गौ मांस नाम पै देत गालि ॥१४॥

१—अरब देश का एक नगर । २—शुक्रवार । ३—टोली । ४—राठोड़ । ये अपने को सूर्य्यवंशी मानते है परन्तु प्राचीन शिलालेखो व ताम्रपत्रो मे इनको चन्द्रवंशी लिखा मिलता है । ५—चमत्कार । ६—मुसलमानों का गुरु मंत्र "लाइला इल्लिल्ला मोहम्मद रसूल अल्लाह"। हिन्दुओ का कल्मा गायत्री मन्त्र है। ७—हाथ (पाणि)। ८—पुकार, नमाज से पहले मुल्ला मसजिद मे जोर से (अजां) (आवाज) देता है जिसे लोगो का बुलावा समझिये। ९—हाथ पांव धोना। १०—मुसलमानो के १२ महीनो मे से एक महीना रमजान है, इस महीने मे जो मुसलमान रोजे (व्रत) रखते हैं वे दिन मे न कुछ खाते हैं और न पीते हैं। बीड़ी तमाखू तक भी दिन मे नही पीते। ११—ईश्वर प्रार्थना । मुसलमान दिन रात मे पांच बार नमाज पढ़ते है जो कि अरबी जबान मे है। ठीक पश्चिम की ओर मुख करके पढ़ते हैं।

अल्लाह मुहम्मद सिर उठाय।
मगरिब[1] मक्के[2] मन्नत[3] मनाय ॥
चच्चे मामूंकी धी[4] चकार[5] ।
बिसमल्ला[6] करैं न बार बार ॥१५॥
जसवंत जुवति जे जहहिं जीव।
दहनोदय दहंही प्रथक पीव ॥
नश्चिन्त पतिव्रत लोक नेम ।
प्रत्येक करहिं परलोक प्रेम ॥१६॥
हठ बादसाह नहिं परहिं हत्थ।
मरुधराधीस रनवास मत्थ[7] ॥
सो असंभावनां है समत्थ ।
बद कांड भरत ब्रह्मांड बत्थ ॥१७॥
कुल-नासकरन कुल कुल-कुठार।
क्यूं कमलन बन दै दहनकार[8] ॥
पोमावत खर पर पार पंखि ।
निरमल जल में छल छार नंखि ॥१८॥

१--पश्चिम । २--अरब देश के एक शहर का नाम जहाँ मुहम्मद जन्मा । ३--आजिजी, खुशामद । ४--पुत्री । ५--योनि से मतलब है । ६--हरेक काम शुरू करते अल्लाह (खुदा) का नाम लेना । ७--ऊपर । ८--जलाने वाला।

जसवंत जमी काबुल जब्रून[1] ।
खत्री[2] कुल गारति करत खून ॥
नाम्वरी[3] नियत हम जियत नाहिं ।
आकासन आवहिं मुट्ठि मांहि ॥१६॥
हैं हिरस[4] जोधपुर हरन हाल ।
खालसो करन खाली खयाल ॥
किल मारवारि बस करहिं कोय ।
हम हंस-बंस[5] निरबंस होय ॥२०॥
सुरतान गृहन मोखन सुजान ।
हिंदवान भानको करन हान ॥
गल फेरि छुरी जैचंद गोत ।
अप्पनूं पोत करियें उदोत ॥२१॥

१—परसिया मे जुबलिस्तान नामक इलाका । २—क्षत्रिय । महाकवि सूर्यमल्ल चारण, बून्दी ने अपने ग्रन्थ वंशभास्कर मे दिल्ली पंजाब आदि की तरफ रहने वाली "खत्री" जाति को शूद्र लिखा है । (देखो वंशभास्कर तीसरा भाग पृष्ठ ७६ मध्य पीठिका) । परन्तु शायद मुसलमानी काल मे विपत्ति के समय मे ये क्षत्रिय से "खत्री" कहलाये और दलाली व दूकानदारी का कार्य करने लगे है । टन्डन, महेरा, कपूर, चोपड़ा, ककड़, बक्कर, आदि इनकी प्रसिद्ध खाँपें (अल्ल) है । बंगाल के सुप्रसिद्ध बड़े जमीदार "महाराजा बर्द्वान" इस खत्री जाति की कपूर अल्ल से है । ३—कीर्ति । ४—ईर्षा । ५—सूर्यवंश ।

सीहा[1] के कुल संभव सदीव।
जीवका हेत हसि देत जीव ॥
उर मंडोवर[2] तब करहु आस।
निज सीह मूल निर्मूल नास ॥२२॥
पन प्रबल पिसन[3] पिक्खैं न पिठ्ठ।
रजबट बटदै रठ्ठोर[4] रिठ्ठ ॥
द्रुत[5] मरुधन्वा[6] लीजैं दबाय।
जब राज बीज निर्बीज जाय ॥२३॥

१—मारवाड़ के राठोड़ राजवंश का मूल पुरुष सीहा जिसका सं० १३०० वि० के आसपास कन्नोज की तरफ से मारवाड़ मे आना माना जाता है । इसकी मृत्यु का एक शिलालेख सं० १३३० कार्तिक बदि १२ सोमवार (ता० ६-१०-१२७२ ई०) का जोधपुर निवासी पंडित नेनूराम ब्रह्मभट्ट जोधपुर को सं० १६६७ वि० को मिला था। यह लेख बहुमूल्य और महत्व का है। इसी सीहा राठोड़ के १४ वे वंशधर राव जोधा ने सं० १५१६ मे जोधपुर बसाया। जोधा के द्वितीय पुत्र बीका ने बीकानेर बसाया। (देखो सं० १६५० का कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्तनकं काव्यम् पृ० २४; कविराजा बांकीदास ऐतिहासिक वाते संख्या २६११)। २—जोधपुर शहर से ६ मील दूर मंडोर गांव जो पहले मारवाड़ की पुरानी राजधानी थी। ३—(पिशुन) शत्रु । ४—राठोड़ । यह शब्द राष्टोर से राठउड़ और राठोड़ बना है। परगना बालीके गांव कोयलवाव के सं० १२८८ माघ सुदि १ सोमबार के राठोड़ पुनसिह के शिलालेख मे "राठडड़" शब्द लिखा है। ५—जल्दी। ६—मारवाड़।

कर में नहिं चूरी करन कानि।
पगहैं न पगरखी[1] धरन पानि ॥
करबाल[2] ढाल दिस कर कयास[3]।
ओलंदेहैं नहिं अनायास[4] ॥२४॥
मन भृमर मनोरथ विरथ[5] मोज।
चंपक[6] वत चांपावत[7] सचोज[8] ॥
जैतावत[9] दैंगे जुद्ध झाट।
कूंपावत[10] नवकोटी[11] कपाट ॥२५॥
करनोत[12] कुतूहल करत कोड[13]।
कहै गोयंदासोतां[14] न होड[15] ॥

१—जूता। २—तलवार। ३—ख्याल। ४—अकस्मात, यकायक। ५—फजूल। ६—एक सुगन्धित पुष्प पोधा जिसपर भौंरा नही बैठता। ७—जोधपुर नरेश राव रिड़मल के राजकुमार चांपा के वंशधर चांपावत राठोड़। ८—उत्साही। ६—राव रिड़मल के पोते पचायण के पुत्र जेता के वशधर जैतावत राठोड़। १०—राव रिड़मल के पोते महेराज के पुत्र कूंपा के वंशज कूपांवत कहलाये। ११—नौ किले। कहते हैं कि जिस समय पंवारो का राज्य मारवाड़ मे था तब उनकी मातहती में आबू, मंडोर, किराडू, जालोर, अमर-कोट, थरपारकर (सिन्ध) पूंगल, अजमेर, और लुद्रवा (जैसल-मेर में) नामक ९ किले थे। इससे मारवाड़ नवनोटि कहलाती है। (देखो "मारवाड़ राज्य का इतिहास पृष्ठ ७७ सन् १९२५ई०) १२—राव रिड़मल के पुत्र करण के वंशज "करणोत" कहलाये। वीर दुरगदास राठोड़ इसी शाखा का था। १३—प्यार, उत्साह। १४—मेड़ता के मेड़तिया राठोड़ वीर राव जैमल के पुत्र गोवि-न्ददास के वंशधर "गोयन्ददासौत" कहलाये। १५—बराबरी।

आहव[1] उछाह वर अधिक ऊह ।
दूदावत-मेडतिया[2] दुरूह[3] ॥२६॥
निज कर्मसोत[4] पैंडैं न बीह ।
उदावत[5] अैंडैंगे अबीह[6] ॥
उछरंग[7] अंग रिड़मल अभंग ।
जोधाहर[8] नाहर[9] रूप जंग ॥२७॥
अट्ठों दिकपालन सम असंक ।
निरखियें अट्ठ मिसलन[10] निसंक ॥
ईसाज्ञावर्ती अचल अग्घ ।
मारवा राव मुरधर महग्घ ॥२८॥
ढव्वन[11] भट भूमी बनत ढाल ।
करवाल शत्रु काटन कराल ॥
स्वांमी संसद सुबरन समान ।
जालमन कोह पै लोह जान ॥२९॥
चित उज्जल संदल मलय चूर ।
कंटक हित कंटक तरु करूर ॥

१—युद्ध । २—मेड़ता के स्वतन्त्र राजा राव दूदाजीराठोड़ के वंशधर गांव के नाम पीछे "मेड़तिया" राठोड़ कहलाये । ३—बांके । ४—राठोड़ राव जोधाजी के पुत्र कर्मसी के वंशधर । ५—जोधपुर नरेश राठोड़ राव सूजा के पुत्र ऊदा के वंशधर । ६—निर्भय । ७—उत्साह भरे । ८—सूरवीर, बहादुर । ९—सिंह । १०—जमात, समूह । ११—योद्धा ।

तन असित घ्राण[1] मृगमद[2] असींग ।
हठ अरिन अमल व्है जात हींग ॥३०॥
धुर धरम धारणां नीरधार ।
दुसमन दल दावानल[3] दुधार ॥
गुनिजन गरीबतैं अति गरीब ।
जबरनकी अैंचत अपरि जीब ॥३१॥
बंदगी बैर भरि देत बोट ।
परमेसुर पै नहिं धरत पोट ॥
आसार दान दातार अत्र ।
सब महा सूम सूंपन स्वसत्र ॥३२॥
बैरो तरवर हमहैं बयार[4] ।
तारुन्य तरुन तत्पर तयार ॥
पावहु पवित्र प्रहरन प्रसाद ।
पिहुक्ख प्रयान पक्खर प्रनाद ॥३३॥
सन्निद्धि सुभट समरन समींक ।
इक्कतैं इक्क उद्धत अनीक[5] ॥
दुर्योधनपुर देसक दरोल ।
हैं दुर्गदास बेसक हरोल ॥३४॥

१—नाक । २—कस्तूरी । ३—अग्नि । ४—पवन ।
५—सैनिक ।

प्रारब्ध प्रतिज्ञा दृढ़ प्रतीत।
पुरुषारथ प्रज्ञा परम प्रीत॥
रनबंका ध्वज धज धुर रहंत।
हैं कौन हूस रट्ठोर हंत॥३५॥
सूरजकी बीरत बरन साख।
जुलमीं की चीरत हम जनाख॥
हह सानसाह किन घूक होय।
दुष्टी के करदैं टूक दोय॥३६॥
मुल्ला काजी मंगहु मयाद।
फतवा[1] लीजै मेटन फसाद॥
सबकी हैं मालेकम सलाम।
अब जल्दी कीजैं कतल आम॥३७॥
साफल्य स्वप्न संपति समान।
पानी मंथन में घृत प्रमान॥
चांचल्य[2] चित्त सिद्धांत चूक।
सब सेखसली[3] के हैं सलूक॥३८॥
नहिं बहुत बोलबो सुभट नींत।
प्रत्यूह भविष्यत हैं प्रतीत॥

१—आज्ञापत्र, फैसला। २—जल्दबाजी। ३—गप्पी, शेख-चिल्ली जो मूर्खों में प्रधान था।

यह दुर्गदास अक्खत[1] अडोल।
बलि विपद डिगहिं नहिं डगहिं बोल ॥३६॥
इक रक्खोगे मुख बचन याद।
सब चक्खोगे सनमुख सबाद॥
सिर कूटोगे फिर सुबह साम।
तोबा कर छूटोगे तमाम ॥४०॥
मिरजा दधि मथिहौं समर माट[2]।
नवरंग[3] रंगजैहैं निराट[4]॥
विक्रय करि निद्रा व्यसन बाम।
किंथ करत उजागर कवन काम ॥४१॥
प्राणान्त पहुमि परिणामयस्य।
रट्ठोर सकल सम्बत रहस्य॥
हस्ताक्षर हेरहु हिय हुलास।
दुर्द्धर दुरूहरू[5] दुर्गदास[6] ॥४२॥

१—कहता है। २—दही मथने का मटका। ३—बादशाह औरंगजेब। ४—बिल्कुल। ५—कठोर आत्मा। ६—सं० १७७५ मंगसर सुदि ११ शनिवार (२२-११-१७१८) को दुर्गदास का देहान्त ८० वर्ष की आयु में रामपुरा (अब इन्दौर राज्य में हुआ (दिन अठाई मास त्रण, वर्ष असी वढ़वार। अतरा भुगते दुरगसी गऊ धर्म रखवार॥)। अंतिम संस्कार सिपरा नदी के तट पर उज्जैन में हुआ। जहाँ एक छत्री भी बनी हुई है। जिस दुर्गादास ने

इत्यादि युक्तियुत बच उदार।
सरकार श्रवन भेजे सु द्वार॥
पथ धान कर्न पौरष प्रकास।
पहुँच्यो दल औरँगजेब पास॥४३॥
यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य।
आरण्य-रुदन[1] वत भो अयोग्य॥
प्रिय जाट पुत्रि वत प्रश्नपेस।
पितु कति पपीलिका[2] बिल प्रवेस॥४४॥
स्वछन्द कियो निज काम सोर।
उड़ि गयो चन्द्रकी बाम ओर॥
उपमा कबि ऊमर दै अमोल।
ततकाल समय टंकार तोल॥४५॥

हिन्दू साम्राज्य स्थापित करने के लिए और मारवाड़ की रक्षा के लिए असंख्य कष्ट सहे उस वीर का देश में कहीं भी एक भी स्मारक (यादगार) तक नहीं है, यह दुःख की बात है। हिन्दुआ सूरज महाराणा प्रताप की प्रस्तर प्रतिमा मेवाड़ मे हल्दीघाटी के मैदान में स्थापित की जाने की योजना हो तो चुकी है। इसी प्रकार दुर्गादास का स्मारक कहीं उचित स्थान पर (मारवाड़ में) संगमरमर की मूर्ति रूप में स्थापित होना चाहिये। (विस्तृत देखो कुँवर जगदीशसिह गहलोत रचित "वीर दुर्गादास राठौड़" सचित्र जीवन चरित जो प्रेस में छप रहा है)।

१—वन मे रोना। २—चिउँटी।

प्रताप-प्रशंसा

कवित्त

विरुद् बडाई तेरी गावाँ मैं प्रताप[1] बली,
जैसी कविताई गुरू दीनीं मोज बानी में।

१—ये जोधपुर नरेश महाराजा तख्तसिंह के तीसरे राजकुमार थे। इनका जन्म सं० १६०२ कार्तिक वदि ६ मंगलवार (२१-१०-१८४५ ई०) को हुआ था और ये बचपन से ही बड़े होनहार व वीर थे। सर प्रताप ता० ७-२-१८७६ ई० से लेकर ३०-१-१६०२ ई० तक जोधपुर राज्य के प्रधान मंत्री (मुसाहिब आला) के पद पर रहे। राजपूताने के राजवंशियों मे आप ही प्रथम थे जो १-४-१८८७ ई० को जहाज में बैठ कर विलायत यात्रा की। स्वामी दयानन्द सरस्वती के आप बड़े भक्त थे और ये भी कहा करते थे कि यदि मेरे ऊपर स्वामी जी के सत्संग का प्रभाव सं० १६३६ (ई० १८८३) मे न पड़ता तो मैं ईसाई हो जाता। "अपनी आत्मकथा मे सर प्रताप ने स्वामीजी व आर्यसमाज के कार्य की अच्छी प्रशंसा की है। आपके प्रधान मंत्रित्व में जोधपुर राज्य की बड़ी उन्नति हुई व कई सुधार हुए। नुकते-मौसर (मृतक भोज) कानूनन बंद हुए। शराब आदि के ठेके हुए, अदालतों का संगठन हुआ, कानून कायदे बने, रेल, तार, डाक, स्कूल, सफाखाने आदि परोपकारी संस्थाओं की स्थापना हुई और सं० १६४० में उर्दू की जगह हिन्दी लिपि का प्रचार अदालतों में हुआ। सं० १६४१ में आप ने एक आम हुक्म निकाला कि "राज्य के सब कर्मचारी देशी गाढ़ा (खादी-रेजा) कपडा पहिन कर कचहरी आदि में आवे।

खादी सुघराई सरसाई सूरताई सांची,
बांकी बीरताई जियेमांहिं जैसी जानी मैं।
कसर न काई हरखाई बुद्धि मेरी हेरि,
उकत उपाई मनभाई जैसी मानी मैं।
वाकबांनी[1] रांनी की निसांनीं[2] तैं निसानीं[3] अनेक,
दूध कहौं दूधछानी पांनी कहूं पानी मैं ॥१॥
मास दस माता के उदर रहे महिमा तैं,
राजपद पावे या कहावे राजकुल मैं।
गायो कवि गुनकै बतायो वाको महाबीर,
खायो जाय खंड मैं न खायो जाय गुल मैं।
ऐसी परिपाटी पेख हिये अवरेख अहो,
दिव्यगुन देख तेरे कौन समतूल मैं।
बारह महीनें गर्भवास मैं निवास ग्रह,
पातल[4] पधारयो भूमि धन्य धन्य घुल मैं ॥२॥

इस खादी के लाभ व विदेशी वस्तुओं की हानियाँ जताने के लिये आपने सं० १९४५ वि० में मझकले तवारीख के सुपरिन्टे- एडेण्ट पं० ठाकुरप्रसाद व्याकरणाचार्य (आर्योपदेशक) से "भारत रक्षा" (The safety of India) नाम की पुस्तक हिन्दी में छपवाई। सं० १९४६ में राज्य के खर्चे से आर्योपदेशक स्वामी भास्करानन्द को इंगलैण्ड, अमेरिका आदि में प्रचारार्थ भेजा।

१—सरस्वती। २—ध्वजा। ३—बानगी, नमूना। ४—प्रतापसिंह।

माता मोद मान्यों पिता मान्यों मोद पूर्ण पुत्र,
जन्म निर्विघ्न जन्म धरा जस धारातें ।
निरख सुखार सभ्य आनन्द अखारा नत्य,
अरीकुल आरा भयो[1] प्यारा शुभ आरा[2] तें ।
नांम पितु दीनों निरधारा तें प्रताप धाम,
ठाम ठाम आदर तें ठीक हिय ठारा[3] तें ।
कृष तन पाचक पचायो पितु छायो पारा,
वार पार-वारा[4] फार पार भयो परातें ॥३॥
बालकपनें के कै विनोद कर बार बार,
विहस बधायो मन जनक जनीको तैं ।
सिसुतामें चर्म खडग सैंधव सुहाये सदा,
सहज दिखायो सौख फनीं ज्यूं मनीको तैं ।
और की उबेल[5] आनों पूरो पन झेल झेल,
खेलबो पसन्द कीनो बाहनी[6] अनी[7] को तैं ।
नाम परतापसिंह प्यार को पितुतें पायो,
व्यूढ[8] बरदान बडा धन्वय धनीको तैं ॥४॥
भ्रात स्वसा[9] मातातें सनेह को भंडार भर्‍यो,
तात को रिझायो त्योंहीं आनन्द अघायो तूं ।

१—छोड़ने वाला । २—समय । ३—ठंडा किया । ४—समुद्र । ५—मदद । ६—सवारी वाली सेना । ७—फौज । ८—सेना की आकृति । ९—बहिन ।

ख्वास[1] पासवांन[2] कृपापत्र भृत्य[3] राष्ट्र[4] भर,
सुघर सुचाल सभ्य[5] सबको सुहायो तूं।
काहूको न बुरो न कीनों दान सनमान दीनों,
लोभ को न पन्थ लीनों धर्म रुख धायो तूं।
शोभा किस्तूरी जैसी दूर दूर फैली देस,
हाजर हजूर हिय भूरि मन भायो तूं ॥५॥
सीख्यो अश्व-विद्या[6] को परिच्छा नर खूब सीख्यो,
सीख्यो हेत विद्या सावचेती सुद्ध सीख्यो तूं।
सीख्यो बंकी पाठसाला आला[7] एक-डंकी[8] सीख्यो,
सीख्यो दाव भाला त्यों विलाला[9] जुद्ध सीख्यो तूं।
दांन देन सीख्यो आन राखन को सीख्यो दिव्य,
सीख्यो थान ज्ञान ध्यांन मान मुद्ध सीख्यो तूं।
साहस शरीर सीख्यो नीर छीर प्रीति सीख्यो,
सीख्यो धीर रीति बड बीर बुद्धी सीख्यो तूं ॥६॥
नीचके न बैठो पासा खासा खासा चाही नेकी,
राखी प्रभू आसा आसा और की न राखीं तैं।

१—खास नौकर, दासीपुत्र। २—पास रहने वाले नौकर, उपपत्नी या रखेली स्त्री। ३—सेवक। ४—देश, प्रजा। ५—शऊरदार, सुधरा हुआ। ६—घोड़े का इल्म। ७—अव्वल दरजे की। ८—अद्वितीय आज्ञा, एकमात्र शासन। ९—गहरा।

हासा ओ तमासा ल्हासा[1] ल्हासक न कीनों हासा,
चिन्हों ना तमासा न तमासबीनों चाखी तैं ।
सिच्छा[2] स्वय सिच्छा सिच्छा दीनी सेन सिच्छा सत्रू,
इच्छा स्वय इच्छा की सुइच्छा अभिलाखी तैं ।
सत्य में प्रमत्त सूर दूर हो असत्य देख,
सत्य सत्य साखी भयो राजी सत्य साखी तैं ॥७॥
देह साथ छाया जैसे कर्म साथ काया देखो,
माया साथ उद्यम के शम्भू[3] महामाई[4] के ।
ध्यांन साथ सिद्धी जैसे ज्ञान साथ रिद्धी गेह,
नीतो साथ निद्ध नव शेष[5] रघुराई के ।
बुद्धी एकदन्त वन्त वन्त सन्त गुरू मन्त्र जैसे,
मारू कन्त बास जसवन्त बाग राईके ।
जालंधर चाह ठेल वाह तूं प्रताप बीर,
दुलभ[6] दुबाह[7] मेल भयो साथ भाई के ॥८॥
नीतिवांन गुनवांन समय सुजांन जांन,
गुनके निधान सूर सुरिन्ध स्वदेश के ।
क्षत्रिय कुल धर्म्म में निपुन पर्म्म परमारथ,
स्वारथ अचाह धुर धरम धरेस[8] के ।

१—प्रसन्नता खेल खुशी । २—शिक्षा, दण्ड । ३—महादेव । ४—पार्वती । ५—लक्ष्मण (रामचन्द्रजीके सहचर बन्धु) ६—दुर्लभ । ७—दो हाथ । ८—राजा ।

दीनन के दाता जगत्राता जसवन्त जैसे,
विमल विधाता सब बातन विशेष के।
पातल प्रकाश पायो खास खास खूबी खुद,
निकट निवास कीनों जैपुर नरेश के ॥६॥
मित्रता मिलापी मेल प्रीति की पवित्रता त्यों,
विविध विचित्रता विधान बडपन के।
रहन अनोखी रीति सहन स्वभाव सीधो,
कहन सुनन कथा यथा तौर तन के।
दूर दर्सताई सो सुहाई देश देसन में,
पाई प्रभुताई जैसी मांझ निज मन के।
आदर अनेकन कों सादर करन शुद्ध,
पातल प्रबुद्ध भयो योग्य जन जन के ॥१०॥
अष्टचत्वारिंश[1] लच्छ[2] अच्छ में कलित भई,
ऊन विच राजधानी मानी मन मापी कों।
कर्म्मचारी वितिक्रमी कर्म्म सब वितिक्रम,
थिराथंव थम्बन वितिक्रम ऊथापी कों।
विवस्था विपाद वादा वादको विवाद वाढ्यो,
मेटन फिसाद याद कीनों जस जापी को।
प्रबल प्रधान पनों दैन जसवन्त प्रभू,
जैपुर तें लीनों टेर पातल प्रतापी को ॥११॥

१—अड़तालीस, ४८। २—लाख।

सोंप्यो राजधानी भार सार सरकार सोंप्यो,
चाराचार करन विचार सोंप्यो सूरा कों।
दैन सोंप्यों लैन सोंप्यो चैन औ प्रचैन सोंप्यो,
सैन सुख सोंप्यो स्वामी रैन दिन रूका कों।
समुख प्रमुख राज काज सब सोंप्यो साज,
सुख को समाज सोंप्यो देख दुख दूरा कों।
न्याय निरधार सोंप्यो वारपार वार सोंप्यो,
सब को सुधार सोंप्यो भाग भरपूरा को ॥१२॥
आछो इन्तजाम कीनौ लाख मुख वाह लीनों,
दीन सुख दीनों लोही पीनों खूब लुचों को।
घट के घमंडी के अफंडो[1] ऊठ डंडी[2] लागे,
नीचे किये नीचों को अनीचे किये ऊंचों को।
उडगे उचंगे बंके लफंगे चंगे मार्ग लागे,
अभागे सभागे भये ठोर दीनें डुचों[3] को।
प्रबल प्रमाथी श्रीप्रताप मस्थ[4] हाथी जेम,
नाथ सब ही के नाथीसाथ भयो सुचों[5] को ॥१३॥
रीती को लिहाज विपरीत ना लिहजा राख्यो,
राख्यो मान मानके न हांन बीच राख्यो तें।

१—पाखंडी। २—रास्ता। ३—निकम्मो को। ४—मतवाला।
५—सत्यवानों।

चाख्यो जग जग तें अजस को न चाख्यो एक,
चाख्यो स्वाद स्वामी धर्म पर्म स्वाद चाख्यो तें।
आछो अभिलाख्यो सूंक[1] लैन अभिलाख्यो नाह,
सुख अभिलाख्यो दुःख दाट अभिलाख्यो तें।
भयोना प्रमत्त औ प्रमत्तों को हटाये भूरि,
भाख्यो ना असत्य भूल सत्य सत्य भाख्यो तें ॥१४॥
आलस न राख्यो अंग निरालस चाल्यो नेक,
कालस[2] न लागी काय सालस सफाई तें ।
सावचेती राखी साची काची ना सम्हाई कहूं,
राची कुलरीति परतीति प्रगटाई तें ।
मूरख मलीन महा हरांमी हरांमखोर,[3]
चोर चाम-चोर[4] चाह चाहना न चाही तें।
काई जो रजाई[5] की हटाई सुखदाई भूरि,
भव्य भव्य भाई भव्य[6] दिव्य दरसाई तें ॥१५॥
कीनों कांम आठूं जाम धांम ना अरांम कीनों,
सीत घाम चीनो नाह चीन्हों नांम नेकी तें।
आपनों बिगार्‌यो एन[7] धनी को उबार्‌यो धन,
कादर ह्वै कीनों नाह आदर अनेकी[8] तें।

१—रिश्वत, घूस। २—कलंक, कालिमा। ३—देशद्रोही, राज विद्रोही। ४—व्यभिचारी। ५—राज्यप्रथा। ६—सुन्दर। ७—घर। ८—बुराई, अन्याय।

नर्म ठोर नरम भयो गर्म ठोर भयो गर्म,
सर्म्म ना सुहाई सून्य छद्म[1] छेका छेकीतें ।
राज नुकसान थान प्रान देन भयो राजी.
आनतें जमाई आछी आह एकाएकी तें ॥१६॥
चालबाज चाल चीन चाल ना चलन दीन्ही,
चालतें चलांन कीन्हो ऐसी चाल चाल्यो तूं ।
हाजर हजूर में सहूरतें सहूर साध्यो,
कीनों ना कसूर हीय हिम्मततें हाल्यो तूं ।
सूंकतें सिफारसतें हाजरी खुसांमदतें,
जालो जाल डाल थाके झिल्यो[2] नाह झाल्यो[3] तूं।
पुन्य को पसार्‌यो पुञ्ज[4] पापको प्रजार्‌यो पूर[5],
महलनतें मल्ह्यो पेख पल्यो[6] नाह पाल्यो[7] तूं॥१७॥
जमाखर्च जोर जोर्‌यो तंगी[8] को उतग[9] तोर्‌यो,
मूंजिनको[10] मान मोर्‌यो मेल ऐसो मेल्यों तें ।
फजुली प्रसाद फेर्‌यो हिकमत हिसाब हेर्‌यो,
पूरन प्रताप पेर्‌यो पाजी पेल पेल्यो तें ।
छैलापन गैल छोर्‌यो घोरको निसांन घोर्‌यो,
जोरतें सजोर जोर्‌यो खेल ऐसो खेल्यो तें ।

१—कपट । २—थँभा । ३—थामा हुआ भी । ४—ढेर । ५—प्रवाह । ६—रुका । ७—रोका । ८—रुपयों की कमी । ९—शिखर । १०—सूमों को ।

और कोन ओज ओरयो व्याज सिंधूबीच बोरयो,
चित्त नाह चोरयो पत्ता ठीक दुःख ठेल्योतें ॥१८॥
हा हा हू हू हव्यो नाह नाथ काज नव्यो नाह,
लाखनतें लव्यो नाह बात ऐसी बांधी तें।
फेटनतें फव्यो नाह घातनतें घव्यो नाह,
आग्रहतें अटयौ नाह ओट दीन्हीं आंधीतें।
म्लेच्छनतें[1] मिटयो नाह सूरनतें सिटयो नाह,
खूटल[2] पै खिटयो[3] खास गंधली न गांधीतें।
क्रूरनतें कटयो नाह दुसमनतें दटयो नाह,
पटयो श्रीप्रताप[4] पन्थ सीध खूब सांधीतें ॥१९॥

१—म्लेच्छों से, यवनों से, मुसलमानों से। २—गया-बीता, नालायक। ३—खीझा। ४—सर प्रताप ने कई युद्धों में अंग्रेज सरकार की सहायता की और खुद शरीक भी हुए। इससे गुजरात की ईडर रियासत के महाराजा चुने जाकर ता० १२-२-१९०२ ई० को आप वहाँ गद्दी पर बैठे। ता० २०-७-१९११ ई० तक आपने वहां का राज्य किया और बाद में अपने दत्तक पुत्र (भतीजे) को गद्दी पर बिठा कर आप जोधपुर के बालक महाराजा के अभिभावक (रीजेन्ट) बन कर जोधपुर आगये। ७० वर्ष की आयु में १७ वर्ष के जोधपुर नरेश को लेकर आप जर्मन युद्ध में भी पधारे थे। ता० ४-९-१९२२ ई० को ७७ वर्ष की आयु में आप का स्वर्ग-वास जोधपुर में हो गया। आप बहुत ही कम हिन्दी पढ़े-लिखे थे। केवल टूटे-फूटे अक्षरों में अपने दस्तखत अँग्रेजी में कर

कुल रजपूत मजबूत करतार कीनों,
रंग मजबूत मजबूत रजपूती में ।

सकते थे तब भी कई पढ़े-लिखे कर्मचारियों के कान उमेठते थे। उमर भर कई बड़े-बड़े अँगरेजों के सत्संग में रहे और ५-६ बार विलायत गये, तब भी वे शुद्ध अँग्रेजी नहीं बोल सकते थे। न वे शुद्धताई की परवाह करते । जैसे-तैसे अपने विचार प्रकट कर देना ही उन का उद्देश्य रहता था। जैसे, Resident Sab, I dog, you dog shut up in the van, तात्पर्य यह है कि रेजीडेण्ट साहब ! मेरे और आप के कुत्ते दोनों अच्छी तरह से कुत्तागाड़ी में बंद कर दिये गये हैं। "म्हारो बेटो" और "लेकिन" शब्द सर प्रताप के तकियाकलाम थे। सादगी इनमें बहुत थी, यहाँ तक कि घोड़े पर बाजार में निकलते, तो फटे व पत्ती (पैबन्द) लगे हुए कोट या कुरता पहिने हुए आने-जाने में कोई संकोच नहीं करते थे । अपनी इकलौत राजपुत्री का तत्कालीन बेड़ा ठाकुर के साथ व्याहते समय तो आपने सादगी की हद कर दी थी । उस में न हाथी, न घोड़ा, न फुलवाड़ी और न कोई ढोल ढमका था । विवाह केवल वर-माला डाल कर हुआ था और लोगों को तो इस आदर्श-विवाह के समाचार तक भी विवाह हो जाने के पश्चात् ही ज्ञात हुए थे । जोधपुर नरेश महाराजा सरदारसिंह जी के विवाह में वेश्याओं का नाच-गान तथा शराब खाना-खराब का सेवन सर प्रताप के ही आग्रह से सं० १६३६ में नहीं होने पाया था। और महाराजा सुमेरसिंह जी का विवाह भी आपने ही बड़ी सादगी से (बिना किसी बारात व ठाट बाट के) जामनगर नरेश की बहिन से सं० १६७२ वि० में कराया था । इन में

चाल मजबूत ढंग ढाल मजबूत कीनें,
माल मजबूत मजबून रुयो भूती[1] में।
तौर मजबूत मजबूत दौर भूमीतल
गौर मजबूत मजबून करतूती में।
सिर मजबूत तैसे धर[2] मजबूत शुद्ध
मन मजबूत मजबूत मजबूती में ॥२०॥
ओघ उरझायो सुरझायो ताकूं सार सार,
नाहीं मुरझायो मौज सुन्दर मचायोतें।
गुनी गुन गायो जस छायो या जहांन बीच,

आत्मिक बल साधारण मनुष्यों से कई गुणा अधिक था, पर बिना किसी सिद्धान्त के जब चाहे जिस के साथ जैसा बर्ताव करना आदि बातें ऐसी थीं जो लोगों को ऐसे वीर पुरुष में अखरती थीं। उपपत्नियों से आप के ४ पुत्र (रावराजा) हैं। लेफ्टिनेण्ट जेनरल हिज़ हाईनेस महाराजा सर प्रताप के स्मारक रूप जोधपुर रेल्वे स्टेशन के सामने उनकी घोड़े सवार विशाल मूर्ति (स्टेचू) मय वाचनालय के स्थापित करने का प्रस्ताव स्थानिक आर्य्यसमाज ने ता० ९-९-१९२२ ई० को किया और कुछ सौ का चंदा भी उसी सभा में हो गया परन्तु वह बंद कर दिया गया। ऐसे महानपुरुष का स्मारक बनना अति आवश्यक है। (विस्तृत देखो इतिहासज्ञ कुँ० जगदीशसिंह गहलोत कृत "महाराजा सर प्रताप" का जीवनचरित जिसकी प्रथमावृत्ति सन् १९१७ ई० में छपी।)

१—संपदा। २—धड़ (शिर के नीचे का भाग)।

चार को उधार चाह्यो रहस रचायो तें ।
खैर[1] को न चून खायो मैरको भरयो डमायो,
पातल पुजायो जसवन्त को जचायो तें ।
मारवार पायो सुःख दुःख को हटायो दायो,
उर उमगायो राज जबर जमायो तें ॥२१॥
फीटन[2] कों फेट[3] दीन्ही मर्म पर्म मेट दीन्ही,
भूमि भूप भेट दीन्ही ऐसो उपकारी तूं ।
लाग-बाग[4] रेट[5] कीन्ही लूट काहू की न लीन्ही,
भारो बुद्धी भोनी भूती धन्य जसधारी तूं ।
चोरों के चपेट दीन्ही सबकी सहेट[6] चीन्ही,
पेटकी न सार कीन्ही पुरुष प्रकारी तूं ।
थेट[7] की सम्हाई चाल खेटकी[8] खुसी बिथार,
बिमल प्रतापसिंह बंका बलिहारी तूं ॥२२॥
रोकी तैं कुरीति रीति सुरीति कों भोकी[9] साथ,
ताकत[10] त्रिलोकी एसो मत अवगाह्यो तैं ।
सत्यासत्य सारासार नित्यानित्य वारापार,
हिताहित धार हिय दोसन को दाह्यो तैं ।

१—मुफ्त, पुण्य, धर्मपुण्य । २—धृष्टों को । ३—धक्का । ४—लगान, टेक्स, कर ।५—भाव, एक बात । ६—संकेत स्थल (चालबाजी)। ७—आदि की, शुरू की । ८—योद्धा । ९—रलाई, मिलाई । १०—तकती है ।

नसां को कियो तें नास रसां को कियो न रास,
दसां तें जियो उदास चित्त सुद्ध चाह्यो तैं।
पीछे पछतायो एसो काम ना उपायो एक,
पातल प्रसिद्ध स्वामी धर्म को सराह्यो तैं ॥२३॥

२

(दोहा)

मुरधर में पातल[1] मरद, इक्को[2] रतन अमोल।
लोकां ने तो लादसी[3], मरियां पाछें मोल ॥१॥
ओलखियो[4] पातल अवस, सिरे[5] धर्म इक सांम।
आप बुराई लै अखिल[6], करे भलाई कांम ॥२॥
कै[7] मारे तारे किता, रसा[8] जिको रजपूत।
कहे "कपूत" "कपूत" कुल, समजो जिको सपूत ॥३॥
तपे सूर[9] परतापसिंह, सब कूकै संसार।
आथमियांसूं[10] ओलखे, उण बिन घोर अन्धार ॥४॥
सूतो लख संसार सब, पातलसूं पुल-जाय[11]।
मरण दशा में मइँद[12] रे, जीव न नेड़ो जाय ॥५॥

१—कर्नल प्रतापसिंह । २—एक ही, अद्वितीय । ३—मिलेगा, मालूम होगा । ४—पहचाना । ५—श्रेष्ठ, उत्तम । ६—सारी, सब । ७—कितने ही । ८—जमीन पर । ९—सूरज । १०—अस्त होने से । ११—टल जाता है । १२—सिंह (मगेन्द्र) ।

केहर[1] टल़ जावे कठे, तन सूं ओलो[2] ताक।
हाके[3] सामों हुलसणों[4], है सूबर हुसनाक[5] ॥६॥

कल़में इव पातल कमध, करे काम किलकार।
मन में आछो समज ले. सब रोवो संसार ॥७॥

नर नाहर कमधज[6] निडर है छल बल हुंसियार।
काम कोई पातल़ करे, है कुण रोकण हार ॥८॥

पातल़ ओलखले पुरुष. निरभय करत निहाल।
झटपट घोड़ा झोकदे. कूकत रहे कंगाल ॥९॥

ओछी बुध रा आदमी. इण नें लखे न एक।
पातल़ जिसड़ो पातल़ो, नेकी में है नेक ॥१०॥

घट पातल़ उबजो घणों, रण थंमण राठोड़।
थे मरियां सूं थाहरी, ठाल[7] रहसी ठोड़[8] ॥११॥

थिरा[9] सरब हूँ थाकगो. निजर निहार निहार।
पातल़ थारा गुण प्रगट, है कुण धारण हार ॥१२॥

१—सिंह। २—ओट, बचाव। ३—चिल्लाहट। ४—सामने आने वाला। ५—साहसी। ६—राठोड़। ७—खाली। ८—जगह। ९—पृथ्वी।

साचो तूं तूं सूरवों, तूं दाता दै त्याग[1] ।
पौहुमी[2] में पातल प्रसिद्ध, खलां विडारण खाग[3] ॥१३॥

१—विवाह आदि खुशी के मौक़ों पर राजपूत जो बधाई की रक़म चारण, भाट आदि याचकों को देते है उसे "त्याग" कहते हैं। चारण इसे बहुत लड़-झगड़ कर मांगते हैं। राजपूत भी लोभवश चारणों को अपमानित और लज्जित करने से नहीं चूकते। इससे चारण जाति के नेता महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास (उदयपुर) और महामहोपाध्याय कविराजा मुरारदान आसिया (जोधपुर) ने चाहा कि चारण प्रसन्नता से अब "त्याग" को तिलाञ्जलि दे देवे। परन्तु वे सफल न हुए। तब लाचार हो उन्होंने सरकारी "वाल्टर कृत राजपुत्र हित-कारिणी सभा" (सन् १८६८ ई०) से "त्याग" की रक़म की परमावधि और वांटने के नियम बनवा दिये। भांडियावास (पचपदरा मारवाड़) के आसिया चारण बुधदान ने त्याग कम करने या बंद करने वालों पर जल कर यह कविता कही थी:—

जासी त्याग जकारां घर सूं जातां खाग न लागे जेझ।
घर रो तोल न बांधो धणियां त्याग तणी किह बांधो तोल?
जासी त्याग जकां का घर सूं जाती धरती करै जुहार।
दीजै दोस किसूं सिरदारां जमी जाणरा अंक जरूर॥

अखिल भारतीय चारण सम्मेलन प्रथम अधिवेशन (सन् १६२१ ई०) पुष्कर ने भी "त्याग प्रथा" को निन्दनीय घोषित कर "त्याग" मांगने वाले चारणों के साथ सहभोज न करने का प्रस्ताव पास किया। २—पृथ्वी। ३—तलवार (खड्ग)

सारी बातां समझणों, सारी वातां सुद्ध ।
जाहर अरिया जाचणों, पातल धिनों प्रवुद्ध ॥१४॥
धिनों धिनों आखे धरा, धिनों सुधार्यो धाम।
हव इल[1] में धिन धिन हुवो, कीना धिनधिन काम॥१५
सूरा धीरासा पुरुप, अण भंगी अनुमान।
आप जिसाहा आपरे, दोला[2] मरजीदान[3] ॥१६॥
बदां[4] कनें तो वद वसे, नेकां पासे नेक।
मनतो सारीसा मिले, आ लोकोक्ती एक ॥१७॥
जस पातलरो जगत में, ओ भरियो अणपार ।
नीपण निज पावे नहीं, पोथी लिखियां पार ॥१८॥
दूहां में दरसावियो, पढ पढ जस परताप ।
साचो जस कावणों सुणो, आप सिरीसा आप॥१९॥
वणियों रहो पातल वपू[5] आ ऊंमर आसीस ।
इणरी बीसी[6] इं अवे, बणिया दोहा बीस ॥२०॥

तोपां री तारीफ

(छन्द नाराच)

विसाल[7] भाल[8] तोप[9] को विसाल जाल वित्थुरे,

१—पृथ्वी। २—नजदीक। ३—कृपापात्र। ४—बदमाश। ५—शरीर। ६—समय। ७—बड़ा। ८—ललाट। ९—शुक्र-नीति आदि प्राचीन राजशास्त्र के ग्रन्थों मे "शतघ्नी"

धमंक[1] भू धुजावनीं धमंक[2] मेघलों घुरे।
महान रंज[3] द्‌ब्बुनी अरीन[4] द्‌ब्बुनी[5] मही,
कथे कबीर[6] ने कही चिराव की चही चही ॥१॥
तनू प्रबन्ध तोपके तुरंग[7] कन्धते तने,
भुजालि[8] आलि[9] भोलितें बहे विभा[10] विभावनें।

और "नालिकास्त्र" नाम से तोप बंदूकों का वर्णन मिलता है। परन्तु सं० ७६३ वि० (ई० सन् ७०६) में मुसलमानो के प्रथम बार सिन्ध प्रांत पर चढ़ाई के काल से लेकर सं० १६०० वि० तक भारतीय और विदेशी इतिहासों में तोप बंदूकों का प्रयोग होने का प्रमाण नही मिलता है। शायद इस बीच मे उनका लोप हो गया था और उनके स्थान मे पत्थर के गोले फेंकने वाले यंत्र "मंजनीको" (मर्कटी यंत्रो) तथा नैफना (गाढ़ा द्रव पदार्थ) की गोलियों से क़िले तोड़ने आदि का काम लिया जाता था। इसके बाद फिर बादशाह बाबर से सुल्तान इब्राहीम लोदी और महाराणा सांगा के दोनों युद्धो (सं० १५८२ व १५८४ वि०) मे तोपों बंदूकों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इस युद्ध से ७०-८० वर्ष पहले गुजरात, मालवा और दिल्ली के सुल्तानों से सुप्रसिद्ध महाराणा कुम्भा के अनेक युद्ध सं० १४६० से १५२५ वि० तक होते रहे, उनमें कहीं बंदूको व तोपो का वर्णन नहीं मिलता, इससे सिद्ध होता है कि सवा चार सौ वर्ष से भारतवर्ष मे तोप बंदूकों का फिर से प्रचार हुआ है। १—घोर। २—आवाज। ३— शोर। ४—शत्रुओं की। ५—दवानेवाली। ६—प्रसिद्ध महात्मा कबीर। ७—घोड़ा। ८—बुर्जे। ९—पंक्ति। १०—कान्ति।

बरिट्ठ[1] में बरिट्ठ जे बहेक तिब्र सालितें,
गरिट्ठ[2] में गरिट्ठ ते गुरे कती गजालि[3] तें ॥२॥
प्रधांन गोल कप्र मोर सोर[4] कोस[5] संग्रहे,
उदग्ग खग्ग[6] मग्ग[7] में विबग्ग अग्ग की गहे।
चमूय शस्त्र अस्त्रलेय दिव्य दिग्विजे चढ़ें,
श्वसुद्ध ऊम्म रेसकी विसुद्ध भारती बढ़े ॥३॥
बनै बरोल बाहनी हरोल हीय हारसी,
हलें हयन्द[8] हेसतें सजें गयन्द[9] सारसी।
खलांत[10] केतु[11] पन्ति[12] दन्ति[13] पन्ति पत्र भेडुलें,
तूखार पक्यु रेखरे अत्तक्यूरेन्नभेतुले ॥४॥
उड़े तुरंग तें रजी समग्ग[14] धावती अटे[15],
छके छकांन छावती छिता[16] विछावतो छटे।
नटे निसांन नादत्यूं तमाम धांम में तनें,
बितांन[17] आंन रेनु[18] को अचांन[19] भांन[20] केवने ॥५॥

१—श्रेष्ठ। २—गाढ़ा, दृढ़, बड़ा। ३—हाथियों की पाँत। ४—चिल्लाहट। ५—खजाना। ६—तलवार, पक्षी। ७—रास्ता। ८—घोड़े। ९—हाथी। १०—दुष्टों का संहार। ११—ध्वजा। १२—पंक्ति, लाइन, कतार। १३—हाथी। १४—सारी, तमाम। १५—चलती है। १६—पृथ्वी। १७—चंदोवा, तम्बू। १८—धूलि। १९—अकस्मात्। २०—सूर्य।

दिसा दिसान मान तोप माननीय की दगे,
अडोल चक्र नक्र[1] मक्र[2] आंन नीय व्है अगे ।
विपत्थ[3] पत्थ पत्थ[4] से विपत्ति को बहावनी,
खिजे समत्थ[5] मत्थ[6] पें समत्थ अत्थ[7] खावनी ॥६॥
खरे अराति[8] खेत[9] खेत हेल कों खतावनी,
सदा अबोध बोध बोध सोध कों सतावनी ।
चलें कुचार बार कों सुचार में चलावनी,
हलें हसन्ति हिक्कली[10] हरम्म[11] को हलावनी ॥७॥
गिनो मदन्ध सोख जोख गोख[12] को गिरावनी,
फबें फिसाद मन्द कों सु फेट दे फिरावनी ।
हरांम खोर च्चोर कों कुहक्क दे हरावनी,
कराल कंठ कंकनीय डंक्कनी[13] डरावनी ॥८॥
घुराय गेल की छटा कटी घटा घुमावनी,
पराति धार छार में पछार के पुमावनी ।
तमाम शत्रु संग की प्रतापतें तपावनी,
खलांन कोम भोम खोम तोम[14] को खपावनी ॥९॥
लसे प्रताव तावदे लदाव को लदावनी,

१—मगर। २—मत्स्य। ३—उल्टे, शत्रु। ४—अर्जुन। ५—संपूर्ण। ६—सिर। ७—धन। ८—दुश्मन। ९—रण-क्षेत्र। १०—अकेली। ११—भवन। १२—महल। १३—डाइन। १४—ढेर।

सदैव वेरि मींच[1] बीच मींच को सदावनी।
भिरे अभित्ति[2] भित्ति[3] को सवुज्ज[4] के भवावनी,
बिनां प्रस्वेद[5] वित्त कों कुरोर हां कमावनी ॥१०॥
गनीम गड्ढ गव्वतीय गब्भ को गमावनी,
जहांन आंन मांन जोर सोर ते जमावनी।
रही प्रतच्छ रच्छसी[6] दुगच्छ गच्छ दच्छवनी,
लगें विपच्छ[7] लच्छ[8] पें भुजाग वच्छ[9] भच्छनी ॥११॥
घुमाव लोल गोलकी प्रघत्त[10] बोलती घलें,
हरोल गोल धोलदें चन्दोल चोलती[11] हलें।
विध्यं जनेच्छनी प्रचोल गोल घोलही वहें,
सतोल तोल तोल सें वितोल तोलती वहें ॥१२॥
हुसो अमोल खोल देत झोलते खगोलको,
अमाय तोल मोल लेत गोल दे भुगौल को।
प्रसिद्ध पोल पार हेत टोल दे पहार में,
अडोल डोल टोल खेल अप्पने अहार में ॥१३॥
चलें चन्दोल चेंन में हरोल दग्गती चलें,
दरारहेत दुग्ग[12] को चिरार चुग्गती चलें।

१—मृत्यु। २—निर्भय (किला)। ३—दीवार। ४—बुर्जों समेत। ५—पसीना। ६—राक्षसी। ७—शत्रु। ८—लाखो। ९—बच्चे। १०—बड़ा घाव। ११—लाल करती। १२—किला।

प्रकोट चोट मार कोट लोट पोट है जहां,
प्रवेस कोट रोक देन वप्प[1] वप्परे[2] कहां ॥१४॥
उड़ें कपार काटतें विलग्ग अग्गला अटें,
फबें बुरा लचालतें अकाल खुप्परी फटें।
अवज्ज[3] बुज्ज[4] के अरें सु बुज्ज-बुज्ज[5] बेरला,
कहे इला भली सला बचें नहीं किला किला ॥१५॥
बना विहार तें वहे मना किये नहीं मने,
इसा महा अभग्ग नित रंडनी जनें।
नमें सुसील आवते दुसील जावते नमें ॥१६॥
अनेक पें अनेक हत्थ इक्क सत्थ अच्छटे,
पहार छार-छार व्हे प्रषी प्रहार पच्छटे।
भुलम्ब[6] अम्ब-खास[7] कें प्रबम्ब बम्ब की भरें,
प्रलम्ब लम्ब थम्ब पें प्रपत्त सम्ब सी परें ॥१७॥
पिनिद्ध बद्ध बद्ध रे अनुद्ध अद्धरे परे,
दुसार पार दुग्गव्हे प्रद्धुग्ग पद्धरे परे।
अखंड खंड मंड पें अदंड दंड दंडव्हें,
हिकंड[8] खंड दो नहीं अखंड खंड-खंड[9] व्हें ॥१८॥

१—शरीर। २—गरीब, बेचारे। ३—आवाज। ४—बुर्ज। ५—पूछ पूछ कर। ६—थंभे। ७—आम खास। ८—एक (टुकड़ा)। ९—टुकड़े-टुकड़े।

प्रचंड लोट पिंड के धक्के प्रचंड के परें,
वितुन्ड तुंड तुंड[1] लों भगे अभंडव्है भरें।
प्रजोध जोध कुप्पिके[2] प्रधाव[3] धप्पि देपरें,
महा गरूर-पूर[4] शूर दूर दूर तें मरें ॥१६॥
अभीति[5] वीति कूंड देय चंड-मुंड[6] ज्यों अरें,
अकाल चंड[7] चंडिका[8] अखंड[9] संड लों तरें।
सुनूर[10] सूर संभके[11] निसंभ[12] से हसेनचें,
कृपालि[13] कालिका[14] अगें न वालि वालिका वचें ॥२०
महा गंभीर धीर वीर इक्कनीर तें मुरें,
दुखी अभीर नेंन नोर मीर पीर तें दुरें।
चलन्ति फैर फैर पें वितैर जैर की चलें,
हठी हमीर[15] से प्रवीर हैर ठैर के चलें ॥२१॥
धरा प्रचार धूर में समग्ग[16] वग्ग[17] कों धरे,
मुरें अराति[18]मग्ग[19]में न पग्ग अग्ग[20]में परें।

१—मुख। २—कुपित होकर। ३—धावा। ४—घमंड से भरे। ५—निर्भय। ६—दो बड़े प्रबल राक्षस जिनको देवी दुर्गा ने मारा। ७—कठोर, महादेव। ८—देवी। ९—तीनो लोक। १०—सुन्दर। ११—सँभलकर। १२—एक महा बलवान राक्षस जिसे देवी दुर्गा ने मारा। १३—महादेव। १४—देवी का विकराल रूप। १५—टिप्पणी पीछे दी जा चुकी है। १६—सम्पूर्ण। १७—भाग, वर्ग। १८—शत्रु। १९—रास्ता। २०—आग।

कृपा कटाच्छ गोल की विलोल जाहि धां कमें,
रजै बिक्रात[1] सान्त में कृतान्त[2] आन्तमें रमें ॥२२॥
प्रयाति चोल-गोल[3] की भनंक पोल में परें,
घपे प्रसूर पूर लें वियांन[4] थांन में धरें।
चिरे वहित्थ[5] हत्थि[6] के चिकार चूर चूर ह्वैं,
भिरे भटालि[7] भाल में भिखार भूर-भूर[8] ह्वै ॥२३॥
छिता[9] अफंड[10] छंडके[11] प्रचंड ज्वालतें चिपे
भगें कलूर भूरिभैंस तूर तूर ह्वै भजो,
मरे विशूर[12] शूर[13] के मकूर कन्न ले मजो ॥२४॥
वगोत्र गो हहा अवैंन वाह वाहते बमें,
भगो भगो अहासु[14] भीरु[15] चाह चाहतें भनें[16]।
मुरें अवांन वांनले प्रयान[17] में कठा मठा,
अरेन प्रांन फायदें बिफायदे सठा[18] सठा[19] ॥२५॥
धुरीन तोप की अलात घोर सोर पें धरें,
प्रदीपमान हेति अच्छ[20] स्वच्छ अच्छ[21] में परें।

१—मारने को तैयार। २—यम। ३—लाल गोला। ४—सूना। ५—पसवाड़े। ६—हाथी। ७—वीरो की सेना। ८—चूरा। ६—पृथ्वी। १०—ढकोसले। ११—छोड़कर। १२—रोयकर। १३—सूअर। १४—अरे! जल्दी १५—डरपोक। १६—बोलते हैं। १७—रवानगी। १८—मूर्ख। १६—सिटना। २०—सुन्दर। २१—आँख।

दुदन्ति कामनी घरे जरे अरी जुदा जुदा,
हमन्ति हे मुदामनी गुदांत मोह सें गुदा[१] ॥२६॥
धुनन्ति[२] सोर घोर तें असिम्म[३] अग्गि[४] उच्छरें,[५]
जरे अगालि ज्वालतें तथा तरावली[६] तरें ।
अभग्गि[७] अग्गि के अगे[८] सुभग्ग[९] भग्गते[१०] सुनें,
उदग्ग पग्ग विग्गि[११] आसु[१२] पग्ग[१३] लग्गते उनें ॥२७
दुजीह[१४] कूर[१५] मूर[१६] को प्रदूर दूरती दहें,
विघांन वक्र चक्रतें प्रचक्र[१७] चूरतो वहें ।
निपांन थांन थांन में विघूर पूरता वहे ॥२८॥
विशाल गोल-कावलो[१८] कंपाल[१९] झम्पती[२०] बहै,
विसाल ध्याल-ध्याल[२१] में विहाल[२२] दम्पती[२३] बहै
मदे[२४] अमांन[२५] मांन[२६] तें बिमांनु ढप्पनो[२७] बहै,
वदैं पसू बसू मती विनम्म कम्पती बहै ॥२९॥
गिराब गड्ढ[२८] गड्ड[२९] को विगड्डु[३०] छड्डुती बहै,

१—अधोद्धार । २—आवाज करती । ३—वे शुमार । ४—आग । ५—उछलती है । ६—पहाड़ के नीचे का हिस्सा । ७—अभागी । ८—आगे, सामने । ९—संयोग, सौभाग्यशाली । १०—भागते । ११—जल्दी । १२—प्राण, जल्दी । १३—पांव । १४—सांप, दुष्ट । १५—खोटा । १६—जड़ । १७—मंडल । १८—गोलो की मात्रा । १९—सिर । २०—गिराती, फोड़ती । २१—घर घर । २२—दुखी । २३—पति पत्नि । २४—घमंड मे । २५—बेशुमार । २६—अहंकार । २७—ढाँकती । २८—किला । २९—खड्डा । ३०—बिगाड़ कर ।

बकारि[1] बैरि बृन्दको डकार डड्ढती बहै।
बडे निसंक बंक[2] की विबंक[3] कढ्ढती बहै,
रहेसु संक रंक की विसंक[4] बढ्ढती बहे ॥३०॥
चिदन्ध[5] मन्द कन्ध के सुबन्ध खोलती चले,
हिलोल अन्ध धुन्ध के प्रबन्ध डोलती हले।
वृथा अजुज्ज जज्जतें प्रजुंज्ज जंडती वहे,
विसाद पुंज्ज पुंज्ज[6] के प्रभुंज्ज गुंज्जती वहे ॥३१॥
छली विजति तत्तिकी सुछत्ति छोलती वहे,
बिजेत[7] नंत[8] रेत[9] पेसजेत[10] बोलती वहे।
रिपुग्ग दैत्य कंस सी[11] अजेत[12] सुल्लती[13] रहे,
विजेत बीर बंश की विनेत[14] घल्लती बहे ॥३२॥
नरेस देस देस के निदेस[15] मानते रहे,
रुखारनो-पहार वा सुसार आनते रहे।
खरे प्रचीस खेतते करें त्रतीस[16] दे कढें,
प्रतीस का असीस दे कवी त्रतीसका पढें ॥३३॥

१—बतला कर, सावधान करके। २—बांका। ३—टेढाई। ४—शंका। ५—अन्धा, घमण्डी। ६—ढेर। ७—जीती हुई। ८—आज्ञा मनाई हुई। ९—रय्यत, प्रजा। १०—जय समेत। ११—भगवान श्रीकृष्ण का मामा। १२—हारे हुए। १३—जय पाए हुए। १४—आज्ञा, हुकूमत। १५—हुक्म। १६—भागना।

क्षत्रियां रा सांचा गुण

दोहा

काछ[1] दृढ़ा कर बरंषणा, मन चंगा[2] मुख मिट्ठ।
रण शूरा जग वल्लभा[3], सो हम चाहत दिट्ठ ॥१॥
रंगलक्षण रजपूत बात मुख झूठ न बोले,
रंगलक्षण रजपूत काछ परनार न खोले।
रंगलक्षण रजपूत न्याय धर तुल निज तोले,
रंगलक्षण रजपूत अडर केहरि[4] इम डोले।
परजा पालण पुत्रां सम केहण[5] प्रांण कपूत रा,
मादक[6] अलीण[7] मेले न मुख प्रिय लक्षण रजपूत रा ॥२
हरष सोच नहिं हिये सुजस निन्दा नहिं सारे,
जीवण मरण जिहांन लग्यो हे प्राणीं लारे[8]।
पाप पुन्न रो पूर अनादी चलियो आवे,
कमव्या[9] जेड़ी[10] करे भली भूंडी भुगतावे।

१—लंगोट। २—अच्छा। ३—प्यारा, प्रिय। ४—सिंह। ५—लेने वाले। ६—मदिरा। राजपूत लोग पहले बहुधा शराब नहीं पीते थे। अलमसऊदी (१२ वीं सदीं में) लिखता है कि यदि कोई राजा शराब पीले, तो वह राज्य करने के योग्य नहीं समझा जाता था (देखो इलियट कृत हिस्ट्री आफ इण्डिया जिल्द १ पृ० २० और महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत मध्यकालीन भारतीय संस्कृति पृष्ठ ४५ सन् १६२८ ई० में प्रकाशित)। ७—मांस। ८—पीछे। ९—कमाई (कर्म)। १०—जैसी।

रथरूपी पिञ्जर रचक सकल नियन्ता सांम रो,
और रो डर नहीं डर अवस रात दिवस उण रांम रो ॥३

अबार रा राजपुरुषां रा आचरण

छप्पय

कुकड़ा[1] रो गुण काम, काक गुण भक्षण कीनों,
जुध करण रो जोध, श्वान गुण सांप्रत लीनों।
अण५ढ़ियां में आंण, खरो गुण लीनो खर रो,
धाड़ा[2] चोरी धर्म, घमंड गुण कीनों घर रो।
मदपांन मगन मांदा[3] रहे, देय हकीमां दान जू,
परणी[4] तज पातर[5] रखे, खरा गुणां री खांन जू ॥१॥

१—मुर्गा।२—डाका ।३—बीमार, रोगी ।४—विवाहिता स्त्री।५—ये हिन्दू वैश्याऐं है, जिन्हे मुसलमानो से सम्बन्ध रखने की तलाक़ है । राजपूताना प्रान्त में इनके भाई बाप "जागरी" कहलाते हैं । ये लोग अपने को राजपूतों के वंशधर बताते हैं। कहते हैं कि विपत्ति में यह पेशा इनकी बहन-बेटियों ने शुरू किया था। जागरी अपना विवाह जागरियों में करते हैं और गरीब व ग्रामीण दरोगा जाति में भी कर लेते हैं । पातरें मांस दारू खाती पीती हैं और इष्ट कालिका माता का रखती हैं। ये अपने मकानों के ऊपर मालिये (कमरे) नहीं बनाती। वे सदा छप्पर और खपरेल (कवेलू) की मेड़िया रखती हैं । यदि कोई दो मंजिला पक्का मकान बनाती भी हैं तो तीसरे खंड पर वही छप्पर होगा । इस बात से पातर और भगतण के घर की पहिंचान

पढ़े फारसी प्रथम, म्लेच्छ[1] कुल में मिल जावे,
अंगरेजी पढ अवल, होटलां[2] में हिल जावे।
पच्छ[3] ग्रहे प्रालब्ध, नहीं पुरुषारथ नेड़ो[4],
चोखे मत नहिं चाय, भाय आवे मत भेड़ो[5]।
नित असल त्याग सीखे नकल,
छाज[6] न रहे रहे छाणणी[7]।
कुलखणां मांय मोटी कसर, आदत खोटी आंणणी ॥२
दारू मांस द्पट्ट[8] अमल[9] अण माप अरोगे[10],
चमड़पोस[11] रे चीठ[12] भँवर[13] माद्क[14] सुख भोगे।
परणीं नें परहरे, गेर सुन गोदी धारे,
जोबन मद में जोध; सटक[15], सुरलोक सिधारे।
शश[16] शिकार तीतर सुभट, कुरजां चिड़ी कबूतरा,
भायां सूं नित उठ भिड़े, परम धरम रजपूतरा ॥३॥

होती है, क्योंकि भगतनों में यह रस्म नहीं है। (देखो मारवाड़ की कौमों की उत्पत्ति भाग ३ पृष्ठ ३७८-७९ सन् १८९१ ई०)।
१—मुसलमान, । २—अँगरेजी रंग ढंग के भोजनालय, ढाबा। ३—पक्ष, मत। ४—नजदीक। ५—बुरा। ६—सूप। ७—चलनी। ८—खूब। ९—अफीम। १०—खाते हैं। ११—चमड़े का हुक्का। १२—सट कर, चीप कर। १३—शौकीन। १४—शराब। १५—फौरन। १६—खरगोश।

छन्द पद्धरी

मिलके लख गोरन[1] मती एक,
इत एक एक की मत अनेक।
उत रेल तार उद्दम अपार,
गौरव, इत विद्या बिन गिंवार ॥१॥

नसानिवारण

दोहा

नसां काड लीवी नसां, नसां कियो सब नास।
नसां न्हाखिया[2] नरक में, अड़ी[3] नसां में आस ॥१॥

दोहा

चालाक तो चंडू[4] पिए, भोला पीए भंग।
अलीए[5] सूं आगा रहे, रजपूतां नें रंग ॥२॥

१—अँगरेज़ लोग। २—डाल दिये। ३—रुकी हुई। ४—नशे के लिए नली से पिया जाने वाला अफीम का किवाम। ५—मांस।

तमाखू री ताड़ना

कुंडलियां

समज तमाकू[1] सूगलो[2] कुत्तो न खावे काग,

१—यह एक विदेशी चीज है जो इंगलैंड के राजा जेम्स प्रथम के राजदूत सर टामस रो के द्वारा वादशाह जहाँगीर के दरवार में वि० सं० १६७४ (ई० १६१७ = हि० १०२६) मे "विलायती तौफा" के रूप मे पहले पहले भारत मे आई। इस तमाखू का नाम संस्कृत ग्रंथों मे तो क्या फारसी किताबों में भी नही पाया जाता है। अमरकोष के वनौषधि वर्ग मे जहाँ सब तरह की वनस्पतियाँ गिनाई हैं वहाँ तमाखू का नाम तक नही है। विदेशी वणिको के धूर्त प्रयत्नो से ही तमाखू का भारत मे सर्वत्र प्रचार हुआ है। सखिया से भी अधिक नशेदार यह वूटी है। यही कारण है कि इसे भूखे मरते गदहे, भैसे, गाय, वैल, सूअर, हाथी, घोड़े आदि चौपाये तक नहीं खाते। वे इनके पत्तों को दूर से ही सूंघ कर चल देते है। साँप भी तमाखू के खेत में नही जाता है। खेद है कि तमाखू की उपज दिनो दिन वढ़ती जा रही है। करीव ६० करोड़ के मूल्य का तमाखू भारत में हर वर्ष वोया जाता है और ५ करोड के करीव विदेश से आता है। सिक्ख लोग तमाखू का खाना पीना व सूंघना हराम समझते है। ऐसी ही विसनोई जाति भी तमाखू सेवन पाप मानती है। राजपूताना प्रांत मे पुष्करणा और श्रीमाली ब्राह्मण इसके पीने से तो यहाँ तक वचते है कि जो कोई पी भी ले तो उसे जाति वाहर कर देते हैं परन्तु खाते, सूंघते जरूर है और इससे उनके नहीं पीने की महिमा पीने वालों में कुछ नही है। तो भी उनका नही पीना उनको वहुत सी खरावियों से वचाता है (देखो इतिहासवेत्ता कुँ० जगदीशसिंह गहलोत कृत "भारत में तमाखू")। २—वुरी।

ऊंट टाट खावे न आ अपणो जाण अभाग।
अपणो जाण अभाग गजब नहिं खाय गधेड़ो,
शूकर[1] भूंडी समज निपट निकलै नहि नेड़ो।
बुरा पशू बच जाय अहरनिस[2] खाय न आखू[3],
बड़ा सोच री बात तिका निर खाय तमाखू ॥१॥

छप्पय

पातर भगतण[4] पेख परम मन में सुख पाई,

१—सूअर। २—अहर्निश, रातदिन। ३—चूहा। ४—संयुक्त प्रान्त आदि मे ईश्वरभक्त स्त्री को भगतण कहते हैं परन्तु राजपूताना प्रान्त मे हिन्दू वेश्या को कहते हैं। भगतणों की उत्पत्ति रामावत व निम्बावत साधुओ से है। इनके भाई बाप "भगत" कहलाते हैं और वे अपने को प्रायः साध ही बताते हैं। जोधपुर के महाराजा विजयसिंहजी के राज्यकाल में सं० १८२२ वि० मे कई रामावत व निम्बावत वैरागियों (वैष्णवों) की पुत्रियों ने मन्दिरों मे गाना बजाना सीख कर रंडियों का धन्धा अख्तियार किया तब से इस भगत जाति की उत्पति हुई है। भगतणों का धर्म वैष्णव और इष्ट हनूमान जी का है। मांस, सलगम, गाजर, कांदा और लहसन से ये परहेज करती हैं परन्तु मुसलमानों को अपने पास रख लेती हैं, चाहे उनका छूआ ये नही खाती। भगतो के विवाह सम्बन्ध भगतों में होते हैं या ग्रामीण रामावत व निम्बावत घरबारी साधुओं में। इनके यहाँ भी पातरो की तरह "जाई कसब कमावे और आई नहीं कमावे।" जागरी कौम की तरह भगतो में भी विधवा विवाह नहीं होता है। भगतणें गाने बजाने में पातरों

मिलियां मच्छी मार करे ज्यूं मोद कसाई ।
नकटे बूचो निरख अंग अंग में उफणायो,
बोले गूंगो बोल सबद गुण इधक सुणायो ।
न्यात[1] मेनरा[2] मिल निपुण पांमर सांसी[3] परखिया,
अमलिया देख भारी अधम होका धारी हरखिया ॥२॥
तारत[4] रो निज तनय नारदों[5] ओर सनातो,
मार अमोलक मित्र सदा उलटी संगाती ।

से होशियार और खबरदार होती हैं। इनके यहाँ धनीमानी लोगों का ही आना जाना रहता है। भगत लोग रामानन्दी तिलक लगाते हैं और वाजे वाजे जनेऊ भी पहिने रहते हैं। (देखो मर्दुम-शुमारी रिपोर्ट राज मारवाड़ सन् १८६१ ई० पृष्ठ ३८० और "चाँद" नवम्बर १६२६ ई० पृष्ठ २३२ में जोधपुर निवासी मुंशी पुरुषोत्तम-प्रसाद गौड़ 'नम्वर" का सचित्र लेख)। १—ज्ञाति, जाति। २—भंगी। ३—यह एक जुरायम पेशा कंजर सी कौम है। यह लोग मेहतर (भंगी) का जूठन खा लेते हैं और उनका कफन लेते हैं। इनकी स्त्रियाँ भंगियों के यहाँ गाना बजाना व नाचना भी प्रायः करती हैं। इनके कोई झगड़ा ब्याह शादी का होता है तो भंगी आकर उसका इन्साफ करते हैं, नहीं मानें तो मारते और दंड देते हैं। ये कौम एक जगह टिक कर नहीं रहती है और सदा घूमती रहती है। इस कौम में विधवा विवाह नहीं होता है चाहे औरत कितनी ही कम उमर में विधवा हुई हो (देखो मर्दुम-शुमारी रिपोर्ट राज मारवाड़ सन् १८६१ ई० पृष्ठ ५८५-८७)। ४—पाखाना, टट्टी। ५—पेशाव घर।

पाद तणों परधांन गादरो सांप्रत गोटो,
असुभ चले को अनुग सूतरो भाई मोटो।
हिया सूं भोड़ होको हमें राज भलेंई राख लो,
आप सूं अरज इतरी अवस चुपके पांणीं चाख लो॥३॥
भरियो भरियो भणें प्रथम आरम्भ पहिचांणों,
भाड़ो भाड़ो जपे जुगन आखर में जांणों।
चुगल सुरन्दर चाव रो टहल नारी घरटूंटी,
मोरो माथो मेल फेर हिरदे री फूटी।
राम सूं बिमुख रोवण रसा धूम्रपांन मुख में धरे,
तूं देख सिकल होके तणी क्यूंरि अकल हांणी करे॥४॥
पिये तमाखू कापुरस[1] सापुरसां[2] हिय साल।
सालै निस दिन समभणां चालै चाल कुचाल॥
चाल खोटी चलै चूकग्या नर चतुर।
अहह[3] सोचै न अति दुर्व्यसन दुसह उर[4]॥
टुलक[5] आखू[6] अकल घरो घर टीवणां[7]।
पुरस कापुरस जे तमाखू पीवणां॥५॥
हूको लेतां हाथ में चेतो गयो चुलाय[8]।
पड़ै घमाघम पदमणां अधमाधम[9] अकुलाय॥

१—बुरा आदमी। २—भला आदमी। ३—अफसोस है।
४—हृदय। ५—विरला। ६—चूहा, ऊंदरा। ७—फिरने वाले।
८—खिस जाना। ९—नीचों से भी नीच।

डरड़[1] अकुलाय आघा[2] पड़ै आय अत ।
पड़ावै माजनूं लाजनूं[3] खो अपत[4] ।
रीझलै तमाखू दामदै रोकड़ा ॥
इकंड भूंडा लगै हाथ में होकड़ा[5] ॥६॥
सुखो देनै सहज देय दै फांसी देखो ।
मिरघी[6] लकवै[7] मांहि उभय अन्तर अवरेखो ॥
जान्हूँ डैरू जोय विगत दुख भेद बतावो ।
आधासीसो[8] आंखि जुवर कुण सूल जतावो ॥
ब्राह्मणरु गाय हित्या विषै नीच ऊंच निरखो नमण ।
तिम अमल तमाखू तोलिलो कुण घटतो बढतो कमण[9]
ज़ेर हवालै जाण चढावै गद्दै चोड़ै ।
बेड़ी लीनां बहै खास पग घरदै खोड़ै[10] ॥
बरणँ दोढीबंध देत इक देस निकालो ।
बूडो पाणीं बीचि बिसनसूं काया बालो ॥
खाणनै पीण आघा खिसक लागा लपक लकूंदरा ।
इम अमल तमाखू है उभै एकण बिल रा ऊंदरा[11]॥८

१—जबरन। २—आगे, अगाड़ी। ३—इज्जत, प्रतिष्ठा ४—बेशर्म। ५—हुक्का। ६—रोग विशेष, मिर्गी। ७—रोग विशेष, पक्षाघात। ८—आधे शिर में दर्द होना। ९—कौन। १०—कैदी भाग न जाय इसलिये उसका पैर एक प्रकार के काठ के यन्त्र में बंद करने की प्रथा। ११—चूहा।

अमल लियां तन अजक भाल धरणो भिड़िजासी।
हूको पीनां हाथ सहस गुण मन सिड़जासी ॥
अमल लियां सूं उदक[1] एक पीढी मुख आगै।
हूको दै निज हाथ सात पीढी जल सागै ॥
नहिं सही जाय जद ह्वै निडर कही जाय मोटी कथा।
बय बखत अमोलक है वृथा विमल हिये खोटी व्यथा॥६

तीन लोक को मोल जाय तन सुकवि जगावै।
हीरो लागो हाथ पुनरभव फेर न पावै ॥
ठाला भूला ठोठ[2] कुबुध नहिं छोडै काल्हा[3]
पुण्य गया परवार व्यसन जद लागा बाल्हा[4] ॥
बिन राम भजन खोवै बखत उलझ अमल होकां अठै।
इक सास अंनपुलमें अहह कोड़ि महोर मिलणूं कठै१०

ग्रीध[5] निहारयो गूद चील बूथां पर चाली ॥
हरियो दीठां हेप हरस तीडियां हाली ॥
कुत्ते दीठो करक जरख[6] दिस खर रुख खांची।
ढोल पड़ियो ढोर कागलां दीठो कांची ॥
तन अखत रोड डोले तिके उर अन्तर सूं आफले।
इम पिमण घूंट पेछू उमग होका दीठां हाफले ॥११॥

१—पानी। २—मूर्ख। ३—पागल। ४—प्यारा। ५—गीदड़। ६—जंगली पशु विशेष, लकड़बग्घा।

खाट बलद हल खोलह जाट री ढाणी[1] जोवै।
नासै टूव्है निलज खास अपणूं घर खोवै॥
हूकै सूं निज हेत भलो भूंडौ नह भालै।
मांहिं वलै मा बाप बारणै[2] छाणां[3] बालै[4] ॥
नरकनैं कमर बांधी निठुर घिरै न किणरा घेरिया।
अमलियां हूँत इधका अपत हूकाधारी हेरिया॥१२॥

खातोरी खातोड़ गूंजता जावै गाजी[5] ॥
बाधै जो लोहार रामजी मिलग्यो राजी।
गो वलग्यो निज गांव थाट घर मंगल थाया॥
मुड़दो देख मसाण चिलमियां[6] चाढण चाया॥
असल सूं नकल मीठो असल गुरगम हींणां गम नहीं।
अमलियां हूँत देखो अपत हूका वाला कम नहीं॥१३

कीच निहारयां कनैं भैंसरो चलणूं भारी।
पैल बलद पग प्रगट खिसै नह दीठां खारी[7] ॥

१—खेत में किसान के रहने की झोंपड़ी। २—दरवाजा, फाटक। ३—गोबर के कण्डे, ईंधन। ४—जलावे। ५—ऊंट की एक किस्म। ६—चिलम भरने को। ७—चारे की चौकोन डलिया।

सांपंड सनमुख सीत ऊँट नँह चुलै, अनाड़ी ।
देखै मोसर[1], डूम[2] अरै नह पैंड अगाड़ी ॥
दिन रैणं पंथ बहतां दुसट सैंण घणां उर सालणां।
इण भांत पियणवाला अकड़ हूको देखि न हालणां॥१४
मैंणो[३] पेंणू मेर[४] बावरो[५] बिलला बैता ।

१—मृतक भोज, राक्षसी खाना । २—ढोली, नकारची । ३—यह एक पहाड़ी जाति है जो पहले चोरी डाके का धन्दा करती थी। कहते है कि मेव (मेर) और मीना (मेणे) एक ही जाति है और पहले इनमें आपस में विवाह सम्बन्ध भी होते थे। ये बड़े निर्भीक, बहादुर और बेरहम होते हैं। स्त्री और पुरुष दोनो मजबूत होते हैं। मर्द अधिक लम्बे नही होते, नाटे, चौड़े और गठीले होते हैं। चोथिया और पदिया नाम के बड़े प्रसिद्ध व वीर डाकू मारवाड़ में हुए हैं। ३—देखो पृ० ६३ की टिप्पणी संख्या १ । ४—यह जुरायम पेशा जंगली जाति है । चोरी, डाका और ठगाई इनका पेशा था। परन्तु अब राज्य ने इन्हें भी खेती के धन्दे पर लगाया है । ५—पंजाब में ये लोग "बावरिया" कहलाते हैं क्योंकि जाल लगा कर ये शिकारी जानवरों को पकड़ते हैं। मेवाड़ में इन्हें "मोघिया" और ढूंढाड़ (जयपुर) में "बोहरा" और गुजरात में वाघरी भी कहते हैं। गांवों में चौकीदार भी ये रखे जाते हैं।

भालो थोरी¹ भील² रातरा मांगै रैता ॥

१—यह कौम भीलों में से है। इनमे कुछ लोग आहड़ी और नायक भी कहलाते है। आहड़ी तो बहुत ग़रीब हैं और वे जानवरों का शिकार करके या मजदूरी से अपना पेट पालते है। राजपूतो के घोड़ो की साईसी या दूसरी नौकरी करते है वे "नायक" कहलाते है। थोरी 'नायक" पदवी से बड़ा खुश होता है। ये पाबूजी राठोड़ के पुजारी होते है या उनकी पड़ यानी तस्वीरे दिखाते फिरते हैं वे "भोपे" कहलाते है। २—यह एक प्राचीन जाति है जिसका उल्लेख संस्कृत ग्रन्थो मे छठी शताब्दी में भी पाया जाता है। इनका विश्वास है कि ईश्वर ने इन्हें चोरी और लूट मार करने के लिए ही पैदा किया है। मेवाड़ के गहलोत (सीसोदिया) नरेशो को इस जाति ने बड़ी सहायता दी थी। राजपूताने के डूंगरपुर, बांसवाड़ा, देवलिया (प्रतापगढ़) कोटा आदि नगरो के नाम इस जाति के किसी प्राचीन शासक (राजा) के नाम से ही पड़े है। पहले उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा राज्यों मे राजतिलक के समय एक भील अपने अंगूठे के लोहु से राजा का तिलक करता था। इससे ज्ञात होता है कि राजपूत राजा पहले के समय मे इस वीर जाति का बड़ा सम्मान करते थे। उदयपुर के महाराणा अमरसिंह दूसरे (वि० सं० १७५५—१७६७) के राज्य काल तक तो भीलों द्वारा राज्याभिषेक होने का प्रमाण मिलता है। उदयपुर के राज्यचिह्न मे एक ओर भील का चित्र आज तक रहता है। राजपूतों के साथ पुराने समय से ही भीलों के घनिष्ठ सम्बन्ध रहने की स्मृति मे अजमेर के राजकुमार कालेज (मेयो कालेज) के चिह्न मे भी ढाल की एक ओर राजपूत और दूसरी तरफ भील को भी खड़ा पाते हैं।

मोची[1] डेढ[2] चमार जान[3] में ढोली जावै।
चढ़ै चिलमियां चाह नाच नींचा' घर नाचै॥
डूबगी बात सब देस री खूब असुभगुण खाटियो।
पान[4] रोध्यान धरियां पछै सांसी गिणै न साटियो[5]॥१५

ये जाति सदा स्वतन्त्र प्रकृति, युद्धप्रिय, चंचल और शीघ्र भड़कने वाली और वहमी भी है। धनुष, बाण, भाला इनका शस्त्र है। इनमे सच्चाई, अतिथि सत्कार, एकता, स्वामि भक्ति आदि कई गुण हैं। कोई भील किसी की रक्षा का वचन दे दे तो वह उसकी रक्षा के लिए प्राणों पर खेलने मे जरा भी संकोच न करेगा। इनके गीतों मे वीर रस अधिक पाया जाता है। परन्तु गीत दूसरे लोगों को अटपटे लगते और न वे आसानी से समझ में आते हैं। इसी से कहावत प्रसिद्ध है.—

कांई चारण री चाकरी कांई आरण री राख।
कांई भीलरो गावणो कांई साटिये री साख॥

१—चमारों का एक भेद। २ मेघवाल, भावी, जो चमारो का एक भेद है और कपड़े भी ये बनाते हैं। ३—बरात। ४—तमाखू। ५—यह एक कसब कमाने वाली नीच जाति है जिनके यहाँ गाँवों के नीच लोग प्रायः जाते हैं। बैलों का साटा यानी बैल से बैल बदल लेने का सौदा करने से "साटिया" नाम पड़ा है। ये लोग औरत का साटा भी आपस मे कर लेते हैं। जैसे एक के पास युवा और अच्छी स्त्री है और दूसरे के पास नहीं है, तो यह कुछ रुपये देकर उस से अपनी स्त्री बदल सकता है। लोग इन्हे अछूत समझते हैं। ये लोग एक ब्राह्मण कौम से अपना भाई चारा बतलाते हैं। (देखो मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई० पृष्ठ ३९१)।

मालजदा[1] मन मांहिं रांड सूझै दिनराती।
मालजादि मन मांहिं यार सूझा अकुलातीं ॥
उल्लू उरमें आण खतम अंधां रो खुभियो।
चार तरफ चांदणू चोर सूझै चित चुभियो॥
दुसमणां लाभ दानां दहण खुली न कानां खिड़कियां
नर परम धरम बूझै नहीं हूको सूझै हिड़कियां[2] ॥ ७६॥
चोरी करसी चोर जार करसी नित जारी।
हिंसा हिंसावान जवा[3] रमसी जूवारी ॥
भड़वा भड़वापणू चुगलिया चुगली चासी ।
ठग ठग लेसी ठोठ कुलतिया कर्म करासी ॥
सांप्रत कुबाण छोडै न सठ पात कुलच्छण पालसी।
संसार मांहि अवगुण सरब ज्यू हूकोहि सामल हालसी
नकटारी नहिं न्यति बिलग[4] बोला[5] रो बाडो ।
बूचां[6] रो नहिं बास ज्यूं न गूंगा रो जाड़ो[7] ॥
गुंडांरो नह घाट साट नह है सूमां रो ।
चोखो मेलो चलै डार[8] भेलो डूंमां रो ॥
इण जनम और परजनमप्रद सब कलं क सब साथमें।
मधिलोक बसै मैला मिनख जांरै हुक्काहि रैला हाथमें॥

१—व्यभिचारी। २—पागल कुत्ते जैसे। ३—जुआ। ४—जुदा। ५—बहरा। ६—सूने कान वाला। ७—समूह, झुंड। ८—झुण्ड।

नवी 'हुवोड़ा', नीच डबी भर लेवै डाकी।
बैठ सभारै बीच करै मनवार कजाकी ॥
दे पटपोरा दोय नांक में दाबै नीकां[1]।
मूंढो खांघो मोड़ छड़ाछड़ खावै छींकां ॥
अंग में आय निसदिन अड़ै झड़ै नहीं मल झाड़ियो।
जगदीस पाक कीनों जिको बिललां नाक बिगाड़ियो १६
'लाव तमाखू लाव' पाव पुल चैन न पावै।
'रांड सूयगी रांड' जुलम सब रैन जगावै ॥
ध्यांन तमाखू धरै ग्यांन गुण धूल गडाणूं।
दोय हाथ प्रभु दिया एक धरि दियो अडाणूं[2] ॥
डाबी न फरूकै देखकर जलै आंख मम जींवणी।
साथियाँ कठै तू सीखियो पीव तमाखू पींवणी ॥२०॥

छप्पय

पल पल मांहीं पिये चूंपकर चिलम्या चाडे।
धन रो कर कर धुंवों कई इण मांही काडे ॥
आंणे रोज उधार करज कर टाट[3] कुटावे[4]।
निज तन रो कर नाश ओगणी सास उठावे ॥
बुढापे संग्या होवे बुरी, जग में भूंडो जीवणों।
हजारां मांय ओगण हुवे पण वी होको पीवणों ॥२१॥

दोहा

कंथा तूं कांई करे हाय तमाखू हेत।
टका एकरी टाट में दिन ऊगांई देत ॥२२॥

१—भली भांति। २—गिरवी रखना। ३—खोपड़ी। ४—पिटावे।

छप्पय

जरदो[1] पिवण न जोग नासिका[2] नरक निसांणीं।
मांन कलू[3] मनवार उत्तम सब रीत उडांणीं ॥
तम्माकू में तुरत धरम धन होवे हांणी।
खाणों बडो खराब बात जाहर जग जांणी ॥
श्रीमुख सिड़े सेदखानां[4] जिसो नाक भरे ज्यूं नारदो।
भव जांण नरक भोगे जका नें लांनत दे ललकार दो २३

अमल[5] रा ओगण

दोहा

गैलै[6] बहता गुड[7] पड्या, अैले अमली आप।

१—तमाखू के सूखे पत्ते। २—नाक। ३—कलियुग। ४—पाखाना। ५—शराब से भी अमल (अफीम) अधिक हानिकारक व जहरीली वस्तु है। इससे बल वीर्य का क्षय हो जाता है। शरीर के सारे रस जल जाने से भूख बहुत ही कम लगती है। हौसिला भी जाता रहता है। कई मूर्ख माताएं अपने छोटे बच्चो को चुप-चाप पड़े रहने के लिए अफीम खिला देती हैं। जिससे कोमल बच्चे सदा के लिये बीमार, दुर्बल और निस्तेज हो जाते हैं। उनके शरीर का रक्त, मांस, हड्डी भीतर ही भीतर नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है और अनेक बच्चे छोटी उमर में ही मर जाते हैं। इस अफीम ने चीन वासियों को आलसी और निकम्मा बना दिया था। परन्तु अब वहाँ की सरकार ने प्रजा की भलाई के लिए १२ करोड़ रुपये की आमदनी का विचार न कर चीन में अफीम का व्यापार बन्द कर दिया है। ६—रास्ता। ७—गिरना।

लै लै करतां लागिगो, पैलै भव रो पाप ॥१॥
ताकत[1] डोलै तीसरा,[2] साथरवाड़ा[3] सोद ।
पैलां घर पटकी पड़ै, माखांरै मनमोद ॥२॥
तीस बरस कुसती करी, पड़ गुड़ उथल पथल्ल ।
तैं दीधो गोड़ा तलै, अइयो मींतं अमल्ल ॥३॥
अमल उगावै अंगमें, निपट घुलावै नैंण ।
आंडांनैं बैठा अपत, डचिया[4] घालै डैंण[5] ॥४॥
समल हुवा कपड़ा सकल, भमल हुवो घट भंग ।
कमल बदन कुम्हलायगो, अमल खायगो अंग ॥५॥
मैले ऊपरै मांखियां, गणणांटा लै गैल ।
हैंकड कठीनैं हालिया, डबी[6] खलींगण[7] डैल[8] ॥६॥

कुंडलिया

भेख बिगाड़ै जगतनैं, जगत बिगाड़ै भेख ।
ओलै बाबा अमलड़ो, दुनियामें सुख देख ॥
दुनियामें सुख देख तार आचेला तीखी ।
सतगुरु को परसाद सुधामद घूंटन सीखी ॥

१—तकते हुए । २—मृतक के पीछे तीसरे रोज जो भोजन होता है उसे कहते हैं । ३—मृतक के पीछे १२ दिन तक शोकार्त बैठने की बैठक । ४—मुँह से काट खाना । ५—बूढ़ा । ६—अफ़ीम की डिब्बी जिसे "टसरिया" भी कहते हैं । ७—ओधाने को । ८—डाली ।

सोफी सबद सुणाय चोर रंग देत बिगाड़ै ।
बैरागी नैं जगत जगतनैं भेख बिगाड़ै ॥७॥

छप्पय

मोटी माफी मांग अमलदारां सूं अड़स्यां ।
देश सुधारण दशा लाख विध थासूं लड़स्यां ॥
करस्यां बात कबूल भलो सू भाषण सुणस्यां ।
गुणरी है नहिं गरज चोज कर औगुण चुणस्यां ॥
कर प्रगट दोष खंडण करूं धीठ रोश मत धारज्यो ।
आज रो बखत भूंडो अमल वडपण राज विचारज्यो
म्हांनैं गिणज्यो मूढ अमलियां ओगणगारां ।
करणा पर उपकार लार थांनैं ललकारां ॥
निज कीनों थे नास कहो किण रक्षा करस्यो ।
बान खारी हे बपण मोत बिन नाहक मरस्यो ॥
जग नीच कांम कीनों जिको सुखथे लीनों स्वाद रो ।
दुख दूर हुवे सबदेसरो ऊमर कहे सो आदरो ॥६॥
ठ.कर कूंडा ठीकरा खरा दोला राखै ।
खूंखैं[1] में खैंखार[2] पड़यारे ढिगला[3] पाखै ॥
दांतण कुरला दुहूँ ऊठि नह करै अभागी ।
अंग छागी असलाख लखां मांख्यां मुख लागी ॥

---

१ —कोना । २—खाँसी का थूक, कफ आदि । ३—ढेर ।

खीच[1] रा डला खावै खिसक नींचतला कुल नालरा।
नित मीच आंख बैठे निलज भिछ अमल भूपालरा१०
दिन में बेला दोय जगतमें मरे रे जीवै।
बीगड जावै बाणि टुलक[2] अमलांनैं टीवै ॥
घर घर मांहीं घूम लाखबिधि ओलण ल्यावै।
हसै खलक मुख हेर पलक भर चैन न पावै ॥
ऊतरै अमल उण बखत में मिनख चिड़ाघर मारदो।
बस बाक[3] काड[4] बैठा रहै नाक झरै जिम नारदो[5]११
बासै अति बिकराल महा मुख तारत[6] मोखो।
है कूंडो इक हाथ हाथ हेकण में होको ॥
बभकै[7] बगलां बुरी बुरी काछां युंहिं बासै।
बासै भूंडो बिंचर नींद नैणांरी नासै ॥
बिकरंद बासहूंला बिबिध हाय हमैं हूं हारगी।
भरतार मती मुगताय रै निलज जीवतोहि नारगी[8]
तीन दिनां लग ताक जिके झाड़ै[9] नहँ जावै।
जावै तोही जुलम ऊठ बेगा[10] नहँ आवै ॥

१—बाजरी को ओखली में कूट और उसका छिलका उतार कर चौथाई हिस्सा मोठ मिला पानी में पका के गाढ़ा बनाया जाता है उसे खीच कहते हैं। २—घिर कर। ३—मुँह। ४—निकाल कर। पेशाब करने का स्थान। ६—पाखाना, टट्टी। ७—दुर्गन्ध देता है। ८—नर्कपना। ९—पाखाना जाना। १०—जल्दी।

खेंखारा कर खास मांहि तारत झख मारै ।
हेला देहे हाक बारला थाकै बारै ॥
अमलरी पिंक[1] लागी अटल सुखलूटै वे सुलखणां।
सवेरा सांझ दोनूं समै कांभकंझनै कुलखणां ॥१३॥
कपड़ा काला कीट नीठ उठ ऊठ निरोघे ।
मींट अमलरे मांय शींठ कुचरे जूं सोधे ॥
भलेन उतरे भींट धीठ जद सीस धुणावे ।
प्रात झाट पादरी साट पांवडा सुणावे ॥
कर कांम इसो मांवें कुसल लाज न आवे लेस री ।
अमलियांकरी देखो अवे दुसह दसा इण देस री ॥१४॥
फीटो मूंडो फाड़ नाड़ करलेवै नींची ।
छिवी रहै जल छाख मिली आंख्यां अधमींची ॥
झपकी लेतां झेर झुंड लालां झर जावै ।
जाय सभामें जठै मोत बिनही मर जावै ॥
लुलिलुलि लपाक झोटालिवै ऊंचा नीचा आवता ।
नमि नमीं नाक अमली निजल जमीं लगावै जावता १५
मूंडो खाघो[2] मेल हाथ खाघड़ो[3] हिलावै ।
सीस धरणि दिस सिथल मुरड़ खांघड़ो मिलावै ॥
डील खांघड़ो दुलड़[4] झपक खांघड़ो झुकावै ।
दोस खांघड़ो दिवै रोघ खांघड़ो रुकावै ॥

१—मस्ती । २—टेढ़ा । ३—कन्धा । ४—दोहरा ।

जीवतो हुवो मुरदै ज्युंही अबै देख मुख आरसी ।
कह कंत सोच तार न कियोतैं जद लियो निजारसी[1] १६
करम फूटगा कहो कवणनें जायर केवां ।
दुषद्या[2] मांहें दुसह रात दिन धुकता रेवां ॥
जोय जोय जी जले, कोय नहिं लागे कारी ।
इष्ट बडेरां असल नसल बीगड़गी न्यारी ॥
नाग रा झाग पोवे निलज झांक आग चख में झड़े ।
अंगरेज मुलक दावण अडे ऐ जूवां सूं आथड़े[3] ॥२०॥
जूंवां सिर में जुलै जुलै डाढी में जूंवां ।
जूंवां कपड़ां जुले, मिले, छुटकारो मूवां ॥
मरे नहीं झकमार तिके जीवण नें ताना ।
मारे जूंवां मसल, रहे रंगिया नख राता ॥
तावड़ बेठ तिग तिग तिरे रमों भिकारां रावनो ।
ऊनरे अमल बस व्हे नहीं जूंवांरो ई जावनो ॥२१॥
पड़ियो सेडो पेखि भवन भेडो[4] भणणावै ।
भींतांहिं सेडैभरी गरट मांख्या गणणावै ॥
आवै देख उबाक थूकरा थेचा[5] थाया ।
उतर्‌या सूत अणूंत मूंत रेला नह माया[6] ॥

१—अफीम । २- दुःख । ३—लड़ना । ४—बुरा । ५—मोटे मोटे लेप । ६—समाया ।

करजोड़ अरज कामणि कहै हाय हमैं हो हारगी ।
भरतार मती भुगतायरे निलज जीवतोई नारगी॥२२
हिलता हिलता हाय मिलो मत दुख सुं भाई ।
मिल मुरदां मनवार करो मत बुरी कमाई ॥
सोचो ऊंडी समज मिनख तन कद कद मिलसी ।
काल अगन घृत कलो पिंड इक दिन पीघलसी ॥
अब गरब कियो अमलान में तन देखेला तासनां ।
जनमान्त फेर जासी नहीं बुरा करम री वासना॥२३
चोखो ओढूं चीर लाल मांहीं लुल जावे ।
अतर लगाऊं अंग पाद आगे पुल जावे ॥
मेंदी देऊं मुलक मेल सूं करदे मोली ।
दीवालीरे दिवस हिया में ऊठे होली ॥
हाथ झटक झिझिकार हँस नाथ न लेऊं नामजी ।
भव भांड इसे भरतार सूं रांड भली ओ रामजी २४
दालद बधियो देह बाल बंधिया बधियोड़ा ।
पाखै बधिया पिसण बसण लटकै बधियोड़ा ॥
नख बधियोड़ा निपट सीत बधियोड़ो साथै ।
दुख बधियोड़ो डैल[1] मैल बधियोड़ो माथै ॥
किम कटे पाप दुख सुख कियां साघै ज्युं हिंज सधायलूं
इण भंवर हूंत अबदे अलख विधवापणूं बधायलूं २५

१—शरीर ।

खिजमत[1] करतां खिजै चैल छूटै चिंडाली।
सुणै न नाम सिनान गंध दे लाखां गाली॥
पाला भरै पलीत मूंतरा बैठो मांहीं।
कोई काम रो कहूं निलज सीख्यो इक नाहीं॥
कद मरै कुटिल ओ कालसूं कहे उड़ाऊं कागलो[2]।
लागगो लार लूंठो[3] लियण आंटो[4] कोइक आगलो
धारी अन्धा धून्ध अन्द आदत अलियां री।
दपट उडे दुरगन्ध गन्ध नासे गलियां री॥
समझाऊं सो वार समज रो घाटां शांई।
जगत कमावण जाय मुरड़ बैठे घर मांई॥
आखरी लाख मांने न ओ खाक करी मम खाल री।
कुण सुणं साल मोटी कथा हाय व्यथा मो हाल री॥२७
गहर आंखियां गीड झपक नीचो झड़ जावे।
नाक न पूंछे नींच मांय मांख्यां मरजावे॥
मूंछां सेडे मांय भरी चिपके भीनोड़ी।
अलगी कोई उघड़ी कठण कमज्या कीनोड़ी॥
हायरे हाय फूटो हियो जतन न दीसे जेणरो।
मरजाय जदे जोखो मिटै ओ धोको हे अंणरो॥२८

१—हजामत कराना। २—कौवा। ३—मजबूत।
४—बदला।

सल पड़ियोड़ा सिथल गोल भुज हे गलियोड़ा ।
गलियोड़ी छिक्क गुंमर गिरे ढूंगा गलियोड़ा ॥
गलियोड़ो सब गाथ गजब कांधो गलियोड़ो ।
अमल खाण नें अजे बलै-मूंडो[1] बलियोड़ो[2] ॥
अण हूंत सरब गलगी उमग मूंडो भलोन भालणों ।
गल गयो देस हा हा गजब गजबी तज्यो न गालणों[3]
सरधा[4] घटगी सेंग[5] बेग[6] बिरधापण[7] वलियो[8] ।
निकलण रो रथ नहीं कलण[9] ऊंडी[10] में कलियो[11] ॥
मगर-पचीसी[12] मांय डोकरो[13] बणगो डाकी ।
डांगड़ियां[14] निठ[15] डिगे थिगे[16] टांगड़ियां[17] थाकी ॥
ऊठगी उमेद बैठण उठण भेद न पैला भालियो ।
बहु गरथ देरू बांदी बिपद करगो अनरथ कालियो ॥ ३०
मड़ियो कुड़ियो मेर संग सड़ियो न सुहावै ।
पड़ियो रहै परेत दैत ज्यूं दांत दिखावै ॥

१—(अफीम खाये बिना) मरा जाता है । २—जला हुआ । ३—अफीम का घोलुआ । ४—ताकत, श्रद्धा । ५—सब । ६—जल्दी । ७—बुढ़ापा । ८—आया । ९—कीचड़ । १०—गहरी । ११—फँस गया । १२—पचीस वर्ष की खास जवानी । १३—बुड्ढा । १४—लकड़ियें । १५—कठिनता से । १६—डगमगाती है । १७—पैर, जंघाएँ ।

चोखो भावै चूण[1] कमावण कूंण कमावै ।
मेटूं छलबल सूं न खून बिन तलतल[2] खावै ॥
सुखसेज दैण ढोलो सदा अमल लैणनैं आखतो[3] ।
इण स्यामहूंत आछीहुती राम कवारी राखतो ॥३१॥
करे न अच्छर करम धरम नहिं कुलरो धारे ।
पले न राखे परम सरम नहिं किणरे सारे ॥
मन खावण नें मरे ढेढ री हांडी ढूंढे ।
उडे नहिं असलाग माखियां बैठे मूंडे ॥
परवार गयो पिस्तावणों करूं न मूं वां कन्थ रो ।
म्हांरो महा दुःख मेटदै भलो हुवे भगवन्त रो ॥३२
महा शंख री मित्र सेज नहिं सोवा जाऊं ।
पोरीसो मुख पेख घणी दोरो घबराऊं ॥
खारी नींद में खाज मूढ खिण बेठे मारे ।
नख लांबा सूं निठुर लोई काडे ललकारे ॥
मिल जाय जुंवां लाखां भले लेऊं कांई इण लाड में ।
परबात पिहर जास्यूं परी खांवद पड़ज्यो खाड में ॥३३
पीस पीस पीसणों हाथ घस गया हाथा सुं ।
लाय लाय ईनणी बाल उड़ गया माथा सुँ ॥

१—भोजन । २—तेल में सेक सेंक कर । ३—तेज, आतुर ।

सींव सींव सीवणों नेण आंदा हुवा न्यारा।
कात कात कातणों रातरा गिण गिण तारा ॥
को अमल पूरवूँ कठा सु ं लाऊं कांईक लाड में।
परभात पिहर जास्यूं परी खावंद पड़ज्यो खाड में ॥३४

सुडफां[1] चालै सदा दाव दावूं फिर दावूं।
पालै वैसै पास ढाव ढावूं फिर ढावूं ॥
देवणनैं रतिदान जाच जाचूं फिर जाचूं।
रीभावण दिनरात नाच नाचूं फिर नाचूं ॥
कर कोप दई दीनी कुबुधि धरण दिसा धुन धूधड़ै।
आठही पहर सेऊं अधम अेक आंख नह ऊघड़ै ३५

मरो भलांही मूढ भलांहीं भव में भागो।
बल जावो घरवार लाय[2] इणरै तन लागो ॥
कै पड़जावो कूप गिरवरां चढि गिर जावो।
अंजन[3] वालो आय फेर पैड़ो[4] फिर जावो ॥
मरणूंज हुवै विण मोतसूं अमल न मिलै अहाररो।
मन नह उमेद हसि मिलणरी तन नह धोखो ताररो ३६

खेता चाले वाड़ वागरां[5] चाले वेता।
गाँवाँ गूदड़ गहर रात रा चाले रेता ॥

१—शरीर में दर्द। २—आग। ३—रेल का ऐंजिन।
४—चक्का, पहिया। ५—घास चारे के ढेर या समूह।

मूंछां डाढी मूंह फूँकदे बाले फीटा।
धुक धुक दे नित धुवां कालजा करदे कीटा॥
चिलमियां करण चित चाहसूं टलण हार नहिं टालणां।
अमलियां तणां सिधान्त ए बले जठा तक बालणां॥३७

उठता गालै अमल गोत बातांहूं गालै।
गालै अपणूं गांत घरोघर गोडा गालै॥
गालै कपड़ा गहर मैल मांहीं मन माठा।
सूतर गालै मांहिं ठीकरा भर भर ठाठा॥
घर घरणि गालि गाटोकरै पुन्यधरम नह पालणूं।
अमलियां तणो सिद्धांतओ गलै जठा लग गालणूं॥३८

जनम सोच नह जिकां जिकांनह सोच जलूसी।
कामणि सोच न करै परसकर सोच पलूसी॥
संपत रो नह सोच सोच नह सरधा सोई।
स्यान गई नह सोच सोच नह ध्यान रसोई॥
भवमंहिं सोचनभलपरो ऊंडो सोच न अंग रो।
इक अवस सोच है अमलियां साबत रहे न संग रो ३९

ध्यांन न विद्या धरे ध्यांन नहिं देश सुधारे।
धर्म ध्यांन नहिं धरे अलबता ध्यांन उधारे॥
धनरो धरे न ध्यांन ध्यांन जस रो नहिं धारे।
ध्यांन न बैरी धरे ध्यांन दुख हू नहिं धारे॥

सत्थरां सोथ सारा सुखी चवरी ढुलतां चोसरां।
तन लगन तीसरां[1] री तिकां मंगत ध्यान मन मोसरां[2]
सूली दार सुभात्र त्रिशूल दार तैयारी।
मरज दार होय मांग आंणी कहुं दार उधारी॥
जमींदार हुय जमीं करजदारी में कलगी।
ईजनदार अन्धार गरज दारी में गलगी॥
छलदार[3] होय छाती छड़े अमलदार मुरदार[4] री।
और नो दार सब आ मिले कमी एक कलदार री॥४१॥
माजी रोवे मांय बापजी रोवे बारे।
भाई रोवे भला सुणें नहिं किणरे सारे॥
बद बद कड़वा बेण सेण रोवे सिर खावे।
दुसमण ताली देन हँसे जीवे हरखावे॥
जिण अमल कियो देखो जुलम कांमण रोवे कांमनें।
गांव गिणे नहिं गेले नें ज्यूं गेलो गिणै न गांम नें॥४२॥
फाटा टोलां फिरै फेर कपड़ा फाटोड़ा।
बोत निकामां बोर खाय बैता खातोड़ा॥
डूबण जोगो डोल कियो साथे कंडीरां।
कंडीरां कंडीर धरै पग धीरां धीरां॥

१—मृतक के पीछे तीसरे रोज का भोजन। २—मृतक के पीछे बारहवें दिन का भोजन। ३—पोलिसी वाली, कूट-नीतिज्ञता। ४—नाताकत।

गरणाट मांखियां रो गरठ लारै उडतो लाविया।
पस जुगत बात जांणी परी अै बंधाणी आविया ॥४३॥
होको हींडे हाथ लटकतो खड़ियो[1] लारे।
पड़ पड़ पादे पाद नोक[2] जिम पड़ी नंगारे॥
चिलम पोस चालतां बाजे टोकर बादोड़ा।
खिणें हालतां खाज धुन्धक आफू ऊगोड़ा॥
घर त्याग करण परघर बिघन आठूं पहर ऊंघारिया।
जीवनें देत मोता जिके पोतादार[3] पधारिया ॥४४॥

अमली आलोच वाक्य

काला में कोडाय चाहि खायो कर चाला[4]।
मोड़ा[5] उघड़्या मींत चिरत[6] थारा चिरताला[7]॥
ऊंगां आवैं ऊंघ नाक ऊनरियां नालो।
भालो लागो मूत करूं किम थारो कालो।
तैं करी कुबधि भैंरी तिका बैंरी कदे न बीसरूं।
चितहूंत हटै चेड़ो[8] अचल नेड़ो फेर न नींसरूं ॥४५॥
लेतो कर कर लाड़ दूसरां हसि हसि देतो।
नेता हूज्यो नास बणायो पूरो बेतो॥

१—कंधे पर लटकाने का एक लम्बा थैला। २—डंका।
३—अफीमची। ४—प्रेम। ५—देर से। ६—चरित, हाल।
७—कुतूहली। ८—प्रेत।

दुखदे जेतो दुमट तिके कुण जाणै तेतो ।
चेतो कुल चूकगो दूरसूं धूल न देतो ॥
बद बदसु मूंछ के मेल्हघद तदमें नाहक ताणियो ।
मद मेटि कियो अतनां मरद जदमें तोनैं जाणियो ॥४६॥

(उपदेशक वाक्य)

देखो विगड़ो देह डोल बीगड़गो देखो ।
विगड़ गई सब बात लारलो[1] ले कुण लेखो ॥
समा विगड़गी सैंग नीत बीगड़गी न्यारी ।
देस विगड़गी दसा क्यारी सूं पीगी[2] क्यारी ॥
अमलरी आस मांही उलझ समझदार निस दिन सिड़ो
आ बात अजब उलटी अकल बिन बिगड़्या क्यूं बीगड़ो

कनैं न बैठो कोय मनैं करदो मनवारां ।
मनवारां रै मांहिं मनैं होसी मनवारां ॥
मिनख न लो मनवार महा भूंडी मनवारां ।
मार दिया मनवार मान लिखि लिखि मनवारां ॥
मनवारां करो उण दिन मरद मिलै घड़ी मनवार री ।
मनवार बणासी नांमरद मोज इसी मनवार री ॥४८॥

स्याणां स्याणां सैंण देस में गैला दीठा ।
पुरख कठण पारखा[3] मांहिं खारा मुख मीठा ॥

१—पीछे का । २—पी गई । ३—परखने वाला, परीक्षक ।

बैर अमल सूं वढै[1] सगाई अमलां सांधै।
अमल गलीजै अवस ब्याहमें तोरण बांधै॥
आदू तिंवार[2] में सुगन ओ देख अमल बिन दोघड़ा।
आ रसम फँसाई अमलियां तार[3] न सोचै टोघड़ा[4]॥
भोग बधावण भखो भोग फिर दूर भमैला।
रोग मिटावण रखो जनम रो रोग जमैला।
सोग हटावण सधो सोग में पड़िया सिड़स्यो।
लोक रीतसूं लधो लोकसूं चिड़स्यो लड़स्यो॥
ओखदि पिछाण खावो अमल ओखदि है नह अकलरो
असलरो मजो क्यूं ओरहै निकमूं आनद नकलरो ५०

(अमली आलोच वाक्य)

लीनूं मैं जद अमल क्यूं हिंक कंठ सेठों कीनूं।
पातरवाली प्रीत दिनां में धोखो दीनूं॥
लेतां भारी लाल चोलरंग[5] लागा चोखा।
कोडी फेर किया अजब द्रग घमल अनोखा॥
पगधार बणायो तैं पठो कठो अगाड़ी बेपठो।
थाकतो निभायो मझथलां अबै थकायो ऐकठो॥५१॥
मित्र जाणियों अमल हुवो दुसमण हतियारा।
किसा किसा में कथूं थिरा में ओगण थारा॥

१—मिटना। २—त्यौहार। ३—ज़रा भी। ४—बड़े बछड़े।
५—लाल रंग।

अंग में उठे अनंग लगन खोटी पुल लागी।
मरिया जीयां मांय एक नहिं रया अभागी॥
दिनरात दार कारा करें वहे कलेजा बीच रे।
जो पैला हूँ जांणतो नेड़ो न जातो नीच रे॥५२॥

(उपदेशक वाक्य)

चारण वरण चकार ख्यांतकर जहर न खावो।
बणै जठा लग विहसि अमलरी धूड उड़ावो॥
महि अपणा माबाप प्राणहूँ छत्री प्यारा।
इण आफ़न हूँ अलग वचै जदि तरुण[1] विचारा॥
निज करम परम निरसंक व्है वीदगधरम बजावणूँ।
हित हरख सवाया पूं'णहुय लूण न कदे लजावणूँ॥५३
आजे मीत अमल्ल खग्ग-बग्गां[2] खणकारा।
पिड़ सींधू[3] सुर पड़ै भड़ा कानां भणकारा॥
खुरियां करता खूंद हुवै तुरियां होकारा।
घिरयां दुसमन घड़ा तिकण वेला तेजारा*।

१—नौजवान। २—तलवार वजने पर (युद्ध समय)। ३—युद्ध का राग। * राजपूताने के राजपूतों में विवाह, शादी, त्योहार या खुशी की महफिलों में पानी में घोल कर अफ़ीम (घोलुआ) मेहमानों-मित्रों को एक दूसरे की हथेली पर पिलाया (चटाया) जाता है। उस समय भी खुशामदी लोग अमल की प्रशंसा में कई एक दोहे कहते हैं जैसे:—

सो समै गई सुपना सद्रस सोचाई सब सुकबियां।
विण खबरि रंग दे दे बृथा कतल करो मत कुकबियां
रुड़ै[1] सींधवो राग गुड़ै[2] हल्लां गज ढल्लां।
खलां उथल्लां खग्ग बणै बगतर बरघल्लां॥
सेल घमेड़ांसल्ल पड़ै मल्लां प्रति मल्लां।
भल्लां भल्लां भणै ऊगतां भड़ां अमल्लां॥
देव कुळज नमि अै बचन वदि आळा[3] खालड़[4] ओढिया
उमर गुमाण गाजै अधिक कुकवि न लाजै कोढिया ५५
रंग देण दिनरात चारणां चार कुचाळै।
भाटो[5] मोटो भले डूबतां ऊपर डाळै॥

अमल तूॅं उदमादिया सैणॉं हन्दा सेण।
था बिन घड़ी अन आवड़े फीका लागै नेण॥

अर्थात्—अफ़ीम, तेरा नशा आने पर शरीर मे चैतन्यता आ जाती है। तू मित्रों का मित्र है। तेरे बिना मुझे पल भर चैन नहीं पड़ता और तेरे नशे के बिना नेत्र फीके प्रतीत होते है।

शासक राजपूतो के देखा देखी दूसरी जातियो में भी इस दुर्व्यसन का प्रचार बढ़ गया है (देखो इतिहासवेत्ता श्री जगदीश-सिह गहलोत कृत "राजस्थान का सामाजिक जीवन" पृष्ठ ३५ सन् १६२६ ई०)। १—गाया जाय। २—गिरे। ३—गीला, बिना सूखे हुए। ४—चमड़ा। ५—पत्थर।

अमलथां भेला अमल खूब पीवै भरि खोबा ।
उपमां आंधां आंखि धूल नांखै भरि धोबा[1] ॥
चिपि नसांमांहि चकचूर हुय सरधा दूर सिधायगी।
खित[2] राड़ि समै किय खत्रियां[3] बाड़ खेतनैं खायगी ॥
आगैं खत्री अपत नसां कस हुयगा नामी।
कहां उगूणी कोर जाय आंथूणां जामीं ॥
समझावां सो बार जिके समझण नह जाणैं।
दिन ऊंधैरै दोर तिके नित ऊंधी तांणैं ॥
की करै जोर लाचार कवि आदत तजै न आलसी।
सोधी मिसाल लाधी सितम खतमदुतरफ खिलालसी
लगी गांव में लाय तकै तोई डूंम तिंवारी[4] ।
साध सराहै सती निरथक है विधवा नारी ॥
जावै मूरख जेल देखज्यो रह्यो न दोरो।
नकटो कटियां नाक सास आवण कह सोरो ॥
गलि अमलदार तिरणं गिणैं मरणं डूबि सुमाणसां।
खलभाति सिरड़ि[5] मनमें खिटै,
मिटै न टिरड़ि[6] कुमाणसां ॥५८॥

१—दोनों हाथो से मुट्ठी भर के। २—पृथ्वी। ३—क्षत्रियो (राजपूतों)। ४—त्यौहार पर खाने को दिया जाय उसे कहते हैं। ५—बेवकूफी की तरंग। ६—घमंड।

आछा काम अनेक प्रगट करि करि पोमावो।
मानव जनम अमोल ग्यान बिन मती गुमावो॥
अड़ियो घोचो आंखि अमल छोडण आलोचो।
सोचो सोचो सुघड़ पलै बंधिग्यो नग पोचो[1]॥
जिण बखत मेल पड़सी जरां कोडीरै नह कामरो।
तन चाख लगी मेटो तिका राख भरोसो रामरो॥५६

(पोसती प्रिया वाक्य)

नाड़ां नीसर गई आंतड़ा चैंठा ऊंडा।
कूंडा में काचसा भिले है ढालां भूंडा॥
मूछ्यांसूं मसलतां पिसलता डाढां[2] पीसै।
पोसत छाणर पिये दसत रा दोसत दीसै॥
लड़णनैं लागिजावै ललकि तो पड़ण न देवै पूंतरा।
नित नारि गैल रोवै निलज छैल मती पी छूंतरा[3]॥६०

१--खराब, खोटा। २—पशु, मूर्ख। ३—तीजारें के डोडे।

दारू[1] रा दोस

कवित्त

रोग को भवन[2] ज्यूं कुजोग को समन[3] जानो,

१—इसमे कोई सन्देह नहीं है कि अंगरेजों तथा मुसलमानों के आने के पहिले भी भारत में लोग शराब बनाते और पीते थे। परन्तु उस समय भारत में इतना धर्म का प्रभाव था और भारतीयो मे इतनी सद्‌बुद्धि थी कि जो लोग शराब पीते थे उनकी गिनती बहुत कम थी। अक्सर बहुत छोटे दर्जे के तथा अनार्य लोग ही उस समय शराब पीते थे। धर्म की कुछ ऐसी शक्ति थी कि बहुधा लोग उस पाप को करने में आगे नहीं बढ़ते थे। बाद में इस पवित्र देश में मुसलमान आये। उनके धर्म में भी इसकी मनाही है। फिर भी धीरे-धीरे इसका प्रचार बढ़ा। मुसलमान बादशाह बहुधा ऐयाश हुए अतः शराब-कबाब को वे छोड़ नहीं सके। यथा राजा तथा प्रजा। ऐसी दशा मे इसका प्रचार बढ़ता गया। मुसलमानो के बाद भारत में अंगरेज आये और अंगरेजी शिक्षा का प्रचार होने लगा। इस शिक्षा से अपने धर्म, सभ्यता, नीति, वेदान्त आदि पर लोगों को शंका सी हो गई। और लोग धीरे-धीरे कर्त्तव्य च्युत हो रहे हैं। अंगरेजी रंग ढंग के प्रचार के साथ ही साथ शराब का प्रचार भी भारत मे बढ़ रहा है। बड़े हर्ष की बात है कि महात्मा गांधी की कृपा से आज जगह जगह लोग इस बुरी लत को छोड़ रहे हैं और दूसरे को छुड़ाने का प्रयत्न भी कर रहे हैं। लेकिन क्या करें विचारे भारतवासी! उनके हाथ में तो कुछ अधिकार ही नहीं है। वर्ना अमेरिका की तरह यहाँ भी फौरन से पेश्तर ये बला बन्द हो जाती। २२ जनवरी १६२० ई० से अमेरिका मे न तो शराब कोई बनाने या बेचने पाता है न बाहर से लाने ही पाता है। २—मकान, घर। ३—काल।

दया को दमन ओ गमन गरुवाई[1] को।
हिम्मत को हासकारी विद्या को विनाशकारी,
तितिक्षा[2] को तासकारी भीरू[3] भरवाई को।
ऊमर विचार सिख पाप रिख आपन में,
विषै विष व्यापन में पौन परवाई[4] को।
भगतन को भाई ओ कसाई निज कामनी को,
शत्रू सुखदाई सुरा[5] हेतू हरवाई[6] को ॥१॥
पीथल[7] के तोख[8] पार्‌यो महमुंद[9] को मांन मार्‌यो,

१—बड़ाई। २—सहनता। ३—मददगार। ४—पूर्वी हवा। ५—शराब। ६—नीचता। ७—विद्वानों ने महाराजा पृथ्वीराज चौहान का जन्म सं० १२२१ वि० के आसपास माना है और सं० १२३६ मे वह अजमेर की गद्दी पर बैठा तथा सं० १२४६ मे लगभग ३६ वर्ष की आयु में रणक्षेत्र मे काम आया। पृथ्वीराज रासो मे सुल्तान शहाबुद्दीन गौरी का रणक्षेत्र से पृथ्वीराज को क़ैद कर गजनी ले जाना व वहा पृथ्वीराज के संकेतबाण से सुल्तान का मारा जाना इत्यादि जो लिखा है सब कपोल कल्पना है। क्योंकि शहाबुद्दीन गक्खरो के हाथ से हिजरी सन् ६०२ ता० २ शाबान (वि० सं० १२६३ चैत्र सुदि ३ = सन् १२०६ ई० १४ मार्च मंगलवार को लाहौर से गजनी जाता हुआ नमाज पढ़ते वक्त धोखे से मारा गया था। (देखो कुँवर जगदीशसिंह गहलोत कृत "क्या जयचन्द्र देशद्रोही था ?" पृष्ठ ८-६) ८—जंजीर। ९—इसका जन्म २४ रबील सन् १११४ (भादो बदि ११ सं० १७६०=ता० २६-८-१७०२ ई०) को, तख्त-

बुद्धसिंह[1] को बिगार्‍यो नीके निरधारू में।

नशीनी १५ जिल्काद ११३१ हि० (सं० १७७६ द्वि० आसोज बदि २ शनि = ता० १६-६-१७१६ ई०) को और देहान्त सं० १८०५ वैशाख बदि ३० (ता० १६-४-१७४८ ई०) को हुआ। इस रंगीले बादशाह के मरने के बाद दिल्ली में नाम की बादशाहत थी। न बादशाह को कोई मानता था, न सूबेदारियाँ शाही हुक्म से मिलती थीं। सिर्फ दिल्ली मे "खान"-"जंग"-"दौला"-"मुल्क" वगैरह लम्बे चौड़े खिताब (पदवी) देकर विचारे बादशाह अपनी जान बचाते थे। इनमें से दो बादशाह तो मरहठो के खिलौने और तीन अंगरेजो के पेन्शनदार थे। अन्तिम बादशाह बहादुरशाह दूसरा था जिसे अंगरेजों ने क़ैद कर ता० ४-१२-१८५८ ई० को रंगून भेज दिया जहाँ वह सं० १६१६ मंगसर बदि ६ (ता० ११-११-१८६२ ई० को मर गया। इसकी औलाद मे से कुछ लोग बनारस आदि में रहते हैं जो किसी तरह जागीर पर दिन काटते हैं। १—महाराव बुद्धसिंह १० वर्ष की आयु में सं० १७५२ पौष बदि १३ सोमवार को बूंदी की गद्दी पर बैठा। ता० १०-६-१७०७ ई० (आषाढ़ बदि ६ सम्वत् १७६४ वि० मंगलवार) को जाजऊ के रणक्षेत्र मे इसने बड़ी वीरता बताई जिससे सम्राट् बहादुरशाह (मुअज़्ज़म) अपने भाई आजम को मारकर दिल्ली के तख्त पर बैठ सका। इस सेवा के उपलक्ष में बादशाह ने बुद्धसिंह को "महाराव राजा" का खिताब दिया। यह वाममार्गी व शराबी थे। अतः सं० १७८६ वि० में इसे अपने साले आम्बेर (जयपुर) नरेश महाराजा सवाई जयसिंह की कृपा से बूंदी राज्य से हाथ धोना पड़ा और यह अपने सुसराल ठिकाना बेगूं (मेवाड़) में जा रहा जहाँ स० १७६६ बैशाख बदि ३ रविवार को ये मर गया।

खून बिन जेत[1] खोयो डूंगसिंह[2] कां डबोयो,

१—यह मारवाड़ के प्रसिद्ध ठिकाणे आऊवा का जागीरदार और चंपावत राठोड़ो का मुखिया था। सं० १८२२ में जब महाराजा विजयसिंह नाथद्वारा (मेवाड़) के गोकुलिये गुसाइयों के शिष्य होकर मारवाड़ में कसाई और कलाल का धन्दा बन्द कर दिया तब इस ठाकुर ने महाराजा की आज्ञा नहीं मानी और मांस व शराब का प्रचार जारी रखा। इससे महाराजा ने जेतसिंह चंपावत को जोधपुर के क़िले में बुला कर देवातड़ा के जागीरदार हरिसिंह गहलोत के हाथ से सं० १८३१ वि० की भादों सुदि ६ बुधवार को मरवा डाला। २—डूँगरजी और जवाहरजी शेखावाटी (जैपुर) जिले के गाँव बठोठ के शेखावत कछवाहा थे। ये दोनो काका भतीज थे और संवत् १६०३ से बड़े-बड़े डाके डाला करते थे। इनकी धाक से उस समय राजपूताना के लोग थराते थे। अंगरेजों ने मौका पाकर जब डूंगरजी को आगरा की जेल में क़ैद कर दिया तब जवाहरजी ने अपने बहादुर साथी करनीया मीना और लोटिया जाट की सहायता से अपने काका डूंगरसिंह को आगरा की जेल से छुड़ा लिया। इसके बाद भी दोनों वीर फिर शराब मे पकड़े जाकर क़ैद हुए किन्तु मारवाड़ के उनके सम्बन्धी कई ठाकुर लोग दल बाँध आगरे पहुँच कर षड्यन्त्र द्वारा ठीक ताजिये की कतल की रात (सं० १६०३ पौष सुदि १२ मंगलवार=ता० २६-१२-१८४६) को जेलखाना तोड़कर डूंगरजी जवाहरजी को मय अन्य क़ैदियों के छुड़ा लाये। बाद में ये शेखावत डाकू नसीराबाद (अजमेर) छावनी के खजाने को लूट कर ५२ हज़ार रुपये ले भागे। अन्त में जवाहरजी तो बीकानेर के महाराजा रतनसिंह की शरण मे चला गया।

जोर[1] को मरन जोधो हिये मोज हारूं में।

जहाँ वह सं० १६५८ तक रह कर अन्त मे अपने गाँव में मरे। और डूंगरजी महाराजा तख्तसिंह की सेवा में गया जहाँ सं० १६०४ कार्तिक सुदि ५ को वह पकड़ा गया जैसा कि प्रसिद्ध है—

दियो डूंगसिंग जोधपुर, उजर अली आंवेर।
रतन जुहारो रखियो, वंके वीकानेर ॥

पकड़ते वक्त उसे अंगरेज़ों को न सौंपने का वचन दिया था परन्तु अंगरेज़ों ने एक वार तो महाराज तख्तसिंह जी से उसे ले ही लिया। वाद में सं० १६०५ के भादों मास (अगस्त १८४८ ई०) में अंगरेज़ों ने डूंगरसिंह को वापिस जोधपुर लौटा दिया जहाँ जोधपुर के क़िले में विना वेड़ी के ही निगरानी में वर्षों तक रहकर अन्त में वहीं गुजरा।

इन वीर डाकुओं के डकैती के कार्यों की प्रशंसा अव तक थोरी लोग घूवरों वाली नारेली (तांत का वाजा) पर गांव गांव गाते फिरते हैं। और इस तरह लोगों मे डूंगजी जवाहरजी की यादगार ताजी वना रक्खी है। इनका ही वंशधर सूवेदार भूर-सिंह शेखावत (वावा भूरजी) भी वड़ा नामी डाकू हो गया है जिसने सं० १६६२ वि० से राजपूताने में तहलका मचा दिया था। वह अन्त में जोधपुर के सुयोग्य इन्सपेक्टर जनरल पुलिस खान वहादुर एम० आर० कोठावाला के प्रयत्नों से ठाकुर वख्तावर सिंह महेचा, खींची कानसिंह आदि की गोलियों से ३० अक्टूबर १६२६ ई० को मय अपनी टोली के मारा गया। इस सफलता में जोधपुर पुलिस को जयपुर व जोधपुर स्टेटों से १३, ६०० रु० का इनाम मिला।

१—जोरावरसिंह चांपावत गांव खाटु (मारवाड़) का था।

तगत[1] कां कियो तंग सज्जन[2] कां मृत्यु संग,
कोटापती[3] कां अपंग ऊमर उचारूं में।

वह जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह जी द्वितीय (सं० १६२६—१६५२ वि०) की सेवा मे रहता था। अतः उसे यह अभिमान था कि क्षत्रिय (राजपूत) को कोई नही पकड़ सकता सो वह भी नशे की दशा मे धोखे से लगभग सं० १६३३ के खेरवा (मारवाड़) के जोधा राठोड़ जागीरदार के गढ़ मे घिर गया। ये वीरता से लड़कर काम आया और अपनी प्रतिज्ञानुसार जीते जी राज्य की सेना के हाथ से गिरफ्तार न हुआ।
१—जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह जिन्हे शराब का अधिक चस्का होने से राज्य मे कुप्रबन्ध हुआ। इन्होंने सं० १६०० फागुण बदि ५ को चारण, भाट, ढोली (नक्कारची) आदि लोगो को राजपूतों के विवाह मे त्याग (इनाम) देने के नियम बनाये और हुक्म जारी किया कि कोई राजपूत अपनी कन्या को न मारे। इसी मिती को एक और हुक्म जारी किया कि राज्य भर मे कोई दास (लड़के लड़की) क्रय विक्रय न करे। २—उदयपुर नरेश महाराणा सज्जनसिंह जो शराब की कृपा से शीघ्र ही स्वर्ग सिधारे। उदयपुर मेवाड़ के सीसोदिया राजवंश मे महाराणा अमरसिंह दूसरे (सं० १७५५—१७६७ वि०) ने ही पहले पहल शराब पीना शुरू किया था। ३—कोटा (राजपूताना) नरेश महाराव शत्रुशाल जो सं० १६२३ वि० को गद्दी पर बैठे और ३२ वर्ष तक राजा कहला कर सं० १६४६ मे संसार से विदा हो गये। कुसंगत व शराब पीने से उनका राजप्रबन्ध बिगड़ गया और अपंग भी होगये।

तोस[1] पोस[2] ओस[3] मारू[4] काय अपसोस कोस,
हाय दारू तेरे दोस कहांलौं पुकारूं मैं ॥१॥

दोहा

दारू पर दार दोहूं, हैं तन धन री हांण ।
नर सांप्रत देखो निजर, नफो और नुकसांण ॥१॥

निरदोसां री बलिहारी

छप्पय

रंग देऊं वां नरां काछु रा पूरा काठा[5],
रंग देऊं वां नरां माछु[6] देवण हिय माठा[7] ।
रंग देऊं वां नरां शधर[8] छाती रा शूरा,
रंग देऊं वां नरां प्रगट वातां रा पूरा ।
आंखियां लाज लीधां अडर[9] सारा काज सुधारणां,
मादक अलीण[10] मेले[11] न मुख वांरा लेऊं वारणां ॥१

१—संतोष । २—पुरुषार्थ, पोषण । ३—ओज, जवानी । ४—मारने वाला । ५—मजबूत, दृढ़ । ६—इनकार ।७—खोटा, चलने मे सुस्त । ८—धैर्यवान । ९—निर्भय । १०—मांस । ११—रक्खे, खावे ।

विभचार री बुराई

दोहा

विभचारी विभचार कर, कुल भ्रम खोय कुमोज।
खूट गया इण खलक[1] में, खुड़को[2] हुवो न खोज ॥१

छप्पय

कीचक[3] वाली[4] कदिन पुरुवा[5] श्रो पविपाणी[6],
लम्पट भये लंकेस[7] जून खाया जग जाणी।

१—संसार। २—आहट, खटका, आवाज। ३—मत्स्य देश के राजा विराट का साला व केकय राजा का पुत्र, जो द्रौपदी को बुरी दृष्टि से देखने लगा। तब ये जान कर भीम ने उसे मार डाला। "महाभारत मे द्रौपदी के लिए पांच पति आदि के जो अनेक लांछन लगाये गये है, वे सभी पीछे की कल्पना हैं, जो वाममार्गियों (कूडापंथियो) ने अपना मतलब सिद्ध करने के लिए पीछे से जोड़ दी है। (देखो Dr. Winternitz in Journal Royal Asiatic Society 1897 A. D. page 714-759.) ४—ये किष्किन्धा प्रान्त का राजा था। अपने भाई सुग्रीव को गैर मौजूदगी मे उसकी स्त्री को भी इसने अपनी स्त्री बना लिया था। अन्त मे वह भगवान रामचन्द्र की सहायता से मारा गया। ५—यह बुध का पुत्र था। इसने उर्वशी के विरह में बड़ा कष्ट उठाया। प्रयाग नगरी इसकी राजधानी थी। ६—इन्द्र। ७—रावण।

पीथल[1], जयचंद[2], प्रगट मार खाई रण मीठी,
नवरोजी[3] परनार दिली[4] गल गई सह दीठी।

१—अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान। २—कन्नौज पति जयचन्द्र गाहड़वाल जिसके विषय मे प्रबन्ध कोष मे लिखा है कि वह अपनी उपपत्नी सुहवादेवी के वशीभूत हो उसके पुत्र को युवराज बनाने को तैयार हो गया, परन्तु मंत्रियों के विरोध करने पर उसे विचार बदलना पड़ा। इस से पासवान सुहवादेवी ने रुष्ट होकर पंजाब की तरफ़ दूत भेज कर मुसलमान सुल्तान को कन्नौज पर चढ़ आने का निमंत्रण दिया। ३—नौरोजा के जशन (उत्सव) ईरानी प्रथा के अनुसार हरेक नये (सौर) वर्ष के शुरू दिन से मनाया जाता था। यह उत्सव अकबर ने ही अपने राज्य में शुरू किया था और उसने १६ दिन तक बढ़ा दिया था। मुगलशाही में यह अधिकतर गर्मियों मे होते थे, और उनमें जनाने व मर्दाने शानदार दरबार और मीना बाजार प्रदर्शिनी, नुमाइश) लगते थे। दरबारों में अमीरों की नज़र-न्योछावर और बादशाहों की कीमती बख्शिसों के हालात जो तवारीखों व दूसरी किताबों में लिखे हैं, वे आज किस्से कहानी से मालूम होते है। इन नौरोजों की असल हकीकत को न जानने से चारण लोगों ने इसके गलत अर्थ लगा कर कई किस्से कहानी गढ़ लिये हैं, जो वे भोले-भाले राजपूतों को सुनाया करते हैं कि बादशाह मीना बजारों से रानियों को पकड़ कर ले जाते थे और चारणियाँ सिंह का रूप धारण करके उनकी इज्ज़त (सतीत्व) बचाने को आसमान के रास्ते आया करती थीं। ऐसे गलत और मन गढ़न्त किस्सों से मीना

आंख हिये खोल देखो अब जगत न सोभा जार री,
कोट[1] रा कोट ढहगा[2] किता चोट लगी विभचार री॥१॥
जिण लागां हुय जाय न्यायकारी अन्याई,
जिण लागां हुय जाय भाई रो दुसमण भाई।
जिण लागां हुय जाय बुद्धि वाळो बेबुद्धी,
जिण लागां हुय जाय सुद्धि वाळो बेसुद्धी।
पिण्ड रे आंण लागां पछे पडे सीस पंजार[3] री,
भेट रे भेट भोगा मरद बुरी फेट विभचार री॥२॥
हुवे प्रथम धन हांण घणों तन पांण घटावे,
कोई न राखे कांण मांण परतीत मिटावे।
अपजस छावे आंण अवल अवसांण न आवे,
जाणत होय अजांण बांण नर री विसरावे।
तार[4] रो नहीं सुख तेड़[5] में पावे दुःख अपार रो,
सार रो बांण खटके सदा नेह पराई नार रो॥३॥

बाजार के फायदों पर पानी फेर दिया गया। किन्तु जो खास-लोग राज-दरबार की बातों, पोलिटिकल पचड़ों (भेदों) और इतिहासों को जानते थे, उनके ऐसे ग़लत ख्याल नहीं थे। (देखो मारवाड़ राज्यका इतिहास पृ० ३५७)। ४—

दोहा—दिल्ली नें दोखा लग्या, रंडी दारू राग।
तिण कारण सूं तुरकड़ा, खांच न सकिया खाग॥

१—क़िला। २—गिर गया। ३—जूती। ४—जरा भी। ५—योनि।

कुल नें लागे काट[1] खाट[2] में जूता खावे,
अंग में होय उचाट जाट जोगी बण जावे।
घर-घर ओघट घाट टाट[3] निस दीह कुटावे,
दिल नहिं लेवे दाट लाट गंज हाट लुटावे।
निज थाट खोय फीटा निलज स्याट न बूजे सार री,
आट वाट भागे अकल चाट[4] लगे विभचार री ॥४॥

गरमी[5] होवे गात जदे वेदां[6] घर जावे,
ओखद मूंडे आंण छेल लालां[7] छिटकावे।
तेल हींग रो त्याग वृद्ध नारी विलगावे,
निज इन्द्री कर नांस स्यांन विन जन्म गमावे।
कांम थें इसो नीचो कियो स्यार पगां धूग चाडियो,
भज भांम गाल वटको भरयो कांई गटको काडियो ॥५॥

अपणायो अपणेह पुरुष कद होय परायो,
तूं कदुरी पतिव्रता कन्थ अपणों छिटकायो।
ठाकर हूतो ठीक पावड़ी चडण न पातो,
हुं जांणतो इसी विटल नें धूक वगातो।
अगाड़ी थूं जा आगड़ो फीटा पड़े फिटोलवा,
एक ने एक देखो अवे आपस देवे ओलवा[8] ॥६॥

१—कलंक। २—चारपाई, नाचा। ३—खोपड़ी। ४—आदत ५—गरमी की बीमारी (आतशक) ६—वैद्य, डाक्टर। ७—मुंह में पानी आना, लार टपकना। ८—उलहाना।

मात पिता रो मोह कुटंब छोड़े जिण कारण,
धरे पतीव्रत धर्म तेण समजे भवतारण।
जीमें नित्य जिमाय ताप देवे तोई तूठे,
आज्ञा जुत अरधंग रांड कवणां सूं रूठे।
नित नेम हिये भूले नहीं चाले सदा सचेत नें,
भोगना[1] फूट परत्रिय भजे हाय तजे इण हेत नें ॥७॥
निज पितु छोड़ै नीच तुरत छोड़े महतारी,
निज भ्रम छोड़ै निलज छोड़ै निज नारी।
भल छोड़ै निज भ्रात छैल कुल घर छिटकावै,
प्रभु नै छोड़ै परो जिकण दिस फेर न जावै॥
दाम री भाम झेली डुकर भव सारै नैं भांडियो,
छिता पर इता गुण छोड़ दै रांड न छोड़ै रांडियो॥८॥
पिंड[2] री गई प्रतीत मांण मिटग्यो मरदां में,
ग्यांन मिल गयो गरद दांम रुलग्यो दरदां में।
लात घूथ[3] लाठियां बणी आछी वरषा वलु[4],
जून भेट व्हा जठे नाक हुइग्यो निछरावल।
विभचार मांय पायो विभो जातां जुगां न जावसी,
नित स्वाद लियो परनार में याद घणा दिन आवसी॥९
वेद न सुणियों विमल खेद पाई तन खोयो,
सांड हुय रह्यो सदा रांड रांडहि कर रोयो।

१—भाग्य, हृदय। २—देह। ३—घुस्सा। ४—फिर।

न्याय न जाण्यों नितुर निलज जांणी नहिं नीती,
निज नारी व्रत नेम रुगड आंणी नहिं रीती।
परदार प्यार हुयगो प्रमत बिन सीगारां बेलियां,
भौगरे मांय भँवता भँवर गयो जनम सब गेलियां ॥१०

मोर्चा

तीरथ जात समस्त सकल साथां मिल संगा,
रास तमासा रमें हुलस नाचे हुड़दंगा[1] ।
सांजी मेला सांग देव राखी चन्दोली,
मिन्दर मंडी मसांण होलिका फाग हरोली ।
भागवत कथा भूतावली[2] हिरण दरस हींडोरचा[3],
परवीण होय जांणे पुरुष मालजदां रा मोरचा ॥१॥

दोहा

रजपूती रैई नहीं, पूगी समदां पार।
पातरियां रा पाद में, सीज गया सिरदार ॥१॥
रंडपोखां[4] रा राज में, रुलगी भूखां रेत[5] ।
सूंकां[6] नित सीरा करे, दण्डन चूकां देत ॥२॥

१—मस्त। २—कुंडापंथियों की गोष्ठी। ३—हिंडोरे। ४—रांडों के प्रेमी। ५—प्रजा। ६—रिश्वत से।

मसकरी की मां

(ढूंढाड़ का ढंग)

कवित्त

येरे नादीदी[1] थारां की लार[2] कोड़ीने[3] चाली छेयांन[4],
नठोड़ी[5] नगोड़ो[6] रांड न माने री नीच।
मैं भी छां मूंछाला मांके[7] पाग छे माथा के माले[8],
मालजादी मांनें क्ये मरथा जाण्यां मीच।
न्यात छे जात छे मांके पांत[9] छे बराजां[10] नीकां[11],
हेड़ो कोको[12] व्हेछ ल्यांछां लांयणां[13] भी हेर।
हरांमां की पिल्ली क्यूं हरांमजादी फूट्यो हीयो,
बेरो[14] कोन्यां[15] नसे-गोसे[16] केदीनों सो बेर ॥१॥
टूम टाम छल्ला बींटी छीन दारी काडयूं तो,
ढोल पड़े चाड़यूं तो माजनो धिक्कार।
झूठी खूसड़ी[17] की खाली आंख झगड़ी कोन्या
झांक[18] इसी रोस आवे लेल्यूं लूगड़ी[19] उतार।

१—निराली। २—संग। ३—कहां। ४—ऐसे। ५—बिगड़ैल। ६—नालायक। ७—हमारे। ८—ऊपर। ९—पंक्ति। १०—बैठते हैं। ११—भली भांति। १२—न्योता, निमन्त्रण। १३—हांवी। १४—खबर। १५—नहीं है। १६—गुपचुप। १७—जूती। १८—देख। १९—ओढ़नी।

ईकी घाल्या कोड़ी नें जावां आबरू उडावे छे री,
लुंगाडी कमाव छे री न आवेछै री लाज।
जीजो[1] ये जीजी की जीजी मांकाला दादा की जीजी,
अरे बारे ईस्युं खियां जीतीज्ये रे आज ॥२॥

जवाब औरत की तरफ़ से

क्यूंरे मोल्या[2] ऊँख्यावड़ा बूजबालो[3] कुण छै रे तूं,
मांकी खुसी होगी जेंडे[4] जावांगा हमेस।
राम होतो गेबी लोडा जेल में खनादीज्ये[5] रे,
रांड्या रो रे राज में तू दला दीज्ये रेस।
बाल्या बाल डाडी का उपाड़ ल्यूंगी बाप खाणां,
भोगनां का राल्या बांदा[6] क्यूं सूजी रे मूंड[7]।
तकादो भोत बताड़े दांत से[8] तुड़ावेगो तूं,
माजनां सूं रेज्ये देज्ये[9] फुड़ावेगो मूंड[10] ॥३॥

(लाचारी मर्द की तरफ़ से)

बोलबा की बांण छे बुरो मानजा ली बावलो छे,
अरे भांणकी तूं भारयो[11] मांड्यो छे अन्याय।
प्रांणप्यारी ओठी लेल्यूं गोध मांकी कोन्या पूंछ:

१—बड़ी बहिन। २—नामर्द, जोरूदास। ३—पूछने वाला। ४—वहां। ५—भेज देना। ६—गोला, दास। ७—बुराई। ८—बस। ९—देखना। १०—सिर। ११—जबरदस्त।

देख्ये गाली बाली मांनें खाए की छे दाय ।
थांकी ज्यो खसी छे जीमें मांकी बी खसी छे थेट,
मोटो पेट कीज्ये मूंनें दीज्ये गना माफ ।
तूं जिसी तो तूंई छे री कालो मूंडो काडवा में,
सालो छे कसूर मांको जांणबा में साफ ॥४॥
आग लागी बुझा लेबो ईमें छे आंपां की आछी,
च्यावसी तो आथ कोन्या वचारवो थोक ।
ओज्यूं ऊंडी सोचवा की ओरांको न दायो ईंठ,
लुगाई थे मांकी छोजी मेछां थांका लोग ।
रात की रात में ओठा आजाज्यो रांमकूंरांजी,
वात की बात में कांईं वसांवां छां वेर ।
थमो[1] तो तावड़ो[2] थे दादा का पाछे मोज थांकी,
खूंसड़ी तो पेर जाज्यो पगा मांईं खेर ॥५॥

कवी ऊंमर बोले

जारे गोला गधेड़ा गिंवार गेली रांड जाया,
पूंछ विना पड़ायो क्यूं माजनों पलीत ।
थारी मा नें छेड़ी क्यूं ही छेड़ी तो क्यूं छोड़दी थें,
गई रांड लांठां[3] लारे गा रे बैठो गीत ॥

१—ठहरो । २—धूम । ३—मजबूत, शक्तिशाली ।

जवाब जैपुरिया का

जवानीं दीवांनी छे अमानी में सुजांण छां जी,
नेकी वो निभावां छां अयांण ओछा नांय।
खावा पोवा सोवा का खुसी का खेल खेल लेगी,
छोरा छोरी होला ज्यां झेल लेगी छांय ॥६॥
सरस्ते बगाड़ी अगाड़ो बाबूजी साय,
राज माये रोता डोलां डीलां हुया राड़।
मारवाड़ा कोन्यां छां विचारयां विनां मारां मरां,
ढंग सूं चाला छां इंडे धण्यां की ढूंढाड़[1] ॥

कवित्त

लिंग कौं चढ़ावे लाडू भाटें कौं लगावे भोग,
भड़वे पुजावे भग स्वामी सेल सोधां[2] की।
मुरदे मनावे मूढ़ जसोदा जनावे जापो,
पिता को जनावे प्रेत खुसी खेल खोधां[3] की॥
धन्न नरसिंघ थायो खीच करमां[4] को खायो,
अवारयां[5] पधार आयो बात बेल बोदां[6] की।

१—जयपुर राज्य का पुराना नाम। २—लुच्चे, धूर्त। ३—सांग। ४—करमा जाटनी बड़ी भगवत भक्त हुई जिसका खिचड़ा प्रसिद्ध है। कहते हैं कि आज दिन भी जगन्नाथपुरी (जगदीश) में पहले करमा के खिचड़े का भोग लगता है (देखो मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन १८९१ ई० पृष्ठ ६२)। ५—वैकुण्ठ नर्क के हाल को देख कर आना। ६—हरिद्वार।

गंगा गयां पाप गयो गया[1] गयां भई गती,
ग्यानी को सुनाऊं गपें गपी गेल गोदाँ की ॥१॥

चेटक चतुर्दशी

दोहा

बोलां में ओछा विदूर[2], भोलां में नह मोट।
पोला में परताप रै, गोलां वालो गोट[3] ॥१॥
अटका[4] तू ठाकुर अबै, बटका भरणां बोल।
भला मिनख भटका[5] लिये, गटका[6] खावै गोल ॥२॥
खप्फा[7] होवै खलक पर, डप्फा[8] डावां डोल।
नप्फा थारै है नहीं, गप्फा[9] खावै गोल ॥३॥
छाती छोला छोड़ दे, ओछा बोला एह।
अब तो ढोला[10] चेति उर, गोला खावै गेह ॥४॥

१—उड़ीसा प्रान्त का सुप्रसिद्ध तीर्थस्थान "गया"। २—धृतराष्ट्र के भाई विदुरजी दासी पुत्र थे इस कारण कवि ने दूसरे रूप से इस शब्द का दासी पुत्र के अर्थ में प्रयोग किया। परन्तु कहाँ वह "विदुर-प्रजागर" के रचयिता विदुरजी कहां वह महाभारत के प्रधान वक्ता, नीति निपुण विदुरजी और कहां यह दासी पुत्र। इन दोहों में कविराजा बांकीदास के इस विषय के काव्य (विदुर बत्तीसी) की लटक है और उस पर से ही बनावट हुई प्रतीत होती है। ३—टोला। ४—रोक दे। ५—हविश। ६—मजा। ७—गुस्से होना। ८—बेवकूफ। ९—ग्रास। १०—मालिक, पति।

खोली बातां ख्यातकर, तोली सारो तोत[1] ।
ढोली वालै ढोल ज्यूं, गोली वालो गोत ॥५॥
परगट अंकुर पाप रा, नहीं धाप रा नेम ।
अंत कदे नह आप रा, बिनां बाप रो बेम[2] ॥६॥
बरणी रा देखो बिदर, नह घरणी रा नेम ।
करणी रा खोटा कुटिल, बिण परणी रा बेम ॥७॥
आयलरा बाजै अपत, कुल कायल रा कंस[3] ।
तन घायल रा नह तनूं, बिगड़ायल रा बंस ॥८॥
तांदी धाया[4] गच्छतति, मांदी[5] काया मेल ।
चांदी खाया नह चडै, बांदी[6] जाया बेल ॥९॥
गांवां सहरां गोलणां[7], रहे हुवा रजपूत ।
लखणांहूं लखि लीजिये, मुकर घणांरा मूंत ॥१०॥
कल छत्री बाराह कुल, पोरिस[8] बांकम[9] पूर ।
मिलिया चाहै तिणमहीं, गोला नै गंडसूर ॥११॥
बीछू बानर ब्याल विष, गंडक गर्दभ गोल ।
अै अलगाहिज राखणां, ओ उपदेस अमोल ॥१२॥
वासी नरका रां बिदर, ग्यासी रा गैसोत ।
सत्यानासी रा सुगुन, दासी रा दैसोत ॥१३॥

१—झूठा सांग । २—संतान । ३—भगवान् श्री कृष्ण का मामा । ४—धाये हुए । ५—बीमार । ६—दासी । ७—विदुर, दास । ८—पुरुषार्थ । ९—बाँके ।

कूकर खाय जलै कदे, जुड़ै न कायर जंग।
बिदर न ठहरै विपतमें, संपतिमें द्विज संग ॥१४॥

दासी द्वादशी

दोहा

कर कर वाड़ा[1] कपट रा, धाड़ा[2] पाड़ण धाम।
दिल चोरण झाड़ा दिये, भाड़ा[3] वाळी भाम[4] ॥१॥
प्यारा थांसूं पलक हो, वांछूं[5] नहीं बियोग।
उर वसिया मुहि आवज्यो, रसिया थांरो रोग ॥२॥
परनारी हूं प्रीत कर, आफू डला अरोग।
आखर पछताया अठै, लाणत दे दे लोग ॥३॥
अंग घणां आलंगियो, अधर घणाणी अैठ।
नर मूरख जाणै नहीं, पातर री आ पैठ ॥४॥
कोड़ गुणी खातर कियां, पातर न करै प्रीत।
अरथ हेत अकुलीननूं, माडैई[6] करलै मीत ॥५॥
घणी दिराडै घूमरां, गवराड़ै नह गूढ।
भाड़ैवाळी भाम नूं, माथै चाड़ै मूढ ॥६॥
परगहले बांधै पगां, सांठी गूघर साथ।
हंजा[7] रो सारो हुकम, हुवै रंगीली हाथ ॥७॥

१—घेरा। २—डाका। ३—किराया। ४—औरत। ५—चाहूँ। ६—जबरन। ७—नपुंसक।

समझ देख बिगड़ी सभा, आहुट गई उमंग।
गणिका सूं राखै गुसट[1], रसिया तोनैं रंग ॥८॥
सोवै अलगी सायधण[2], सुपनें ही नह संग।
गणिका सूं राखै गुसट, रसिया तोनैं रंग ॥९॥
दीधो धन उपदंस[3] लै, कीधो काथ कुढंग।
गणिका सूं राखै गुसट, रसिया तोनैं रंग ॥१०॥
बिहद[4] कोर गोटां बणी, पातर रै पोसाक।
परणी फाटा पूंगरण[5] बैठी फाडै बाक[6] ॥११॥
देखै फिरती दूतियां, सूतो धूणै सीस।
फसियो कामणि फंद में, रसियो करै न रीस॥१२॥

डफोल-डूंडी

(सवैया)

ऊसर[7] भूमि कसान[8] चहै अन,
तार[9] मिले नहिं ता तन तांईं।
नारि नपुंसक[10] सों निसिमें निज,
नेह करै रतिदान[11] तौ नांईं।

१—प्रीति। २—स्त्री। ३—गर्मी की बीमारी। ४—बे शुमार। ५—चीथड़े। ६—मुँह। ७—वञ्झाड़ (barren) ८—करसा, किसान (peasant). ९—लिगार (least) १०—नामर्दो। (Hermaphrodite)। ११—बालकोत्पत्ती (conception).

मूरख सूम डफोलन के मुख,
काव्य कपोल[1] कथा जग कांईं।
बाजति रै तो कहा वित[2] लै बस,
भैंस के अग्र मृदंग भलांईं ॥१॥

गायन भीन सुरावलि में गहि,
ज्यूं बधिरादर[3] बीन बजाई।
फूल दियो नकटे कर में फिर,
रीस करी रुख राख रुखाई[4]।
पोल में उत्तम काव्य पढ्यौ,
पुनि गोल[5] कपूत कि कीरति गाई।
अंधके अग्रिम ज्यूं हि गई वह,
चूनरि बांधन की चतुराई ॥२॥

ग्राम दिगंबर[6] के रजकाग्रह[7],
गेह[8] कियो गिन दाम न दीने।
खांट[9] खुजा[10] दिनरात रहे खुश,
लात लई पयपात[11] न पीने।

१—गालबजान (talkativeness) २—धन (money).
३—बहरे के लिए (for deaf). ४—रूखापन (sternness).
५—दासीपुत्र, कमसल (bastard). ६—नगन (nacked).
७—धोबी ने हट करके (washerman insisted on).
८—घर बसाया (inhabiting). ९—बेछाड़ गाय
(unmilch cow). १०—पंपोलना (scratch). ११—
दुग्धधारा (milk drops).

मन्द[1] स्वच्छन्दन[2] की महिमा मल[3],
छंद गये छलछंद[4] विहीने[5] ।
कानकटी नटकी कुलटा[6] कर[7],
कारक[8] ने नथ कुंडल कीने ॥३॥

भोगिय मोख कुरोगिय भोजन,
जोगिय जोषत[9] जोवत जैसे ।
पातर[10] कों उपदेश पतीव्रत,
कातर[11] कों सुर सिन्धुन[12] तैसे ।
स्राव्य[13] सुभावत है सुकवी सुठि[14],
काव्य कपूतन भावत कैसे ।
बंध[15] किलौरन[16] कंधनके बिधि[17],
अंधन आरसि ओपत ऐसे ॥४॥

१—मूरख (fool). २—स्वइच्छुक (self-willed). ३—घसना (resounding). ४—दगाफरेब (cunning-ness). ५—खाली (vacant). ६—महामालजादी, वेश्या (prostitute). ७—हाथ (hand). ८—स्वर्णकार (gold-smith) ९—(योषित) स्त्री (woman). १०—छिनाल (adultress). ११—कायर (coward). १२—सिन्धुराग (heroic music). १३—सुननेलायक (worth hearing). १४—अच्छा (good). १५—रोक (confinement). १६—बैड़का, बैल (bullock). १७—भांति (manner).

बंदनवंत[1] बसंत[2] बिभा[3] बर,
चंदन चक्रियवंत[4] चढ़ायो ।
मंदर अंदर बंदर कों मनु,
पैठि[5] पुरंदर[6] पाठ पढ़ायो ।
हे सविता[7] कवितामृत ह्रीहत[8],
मूसलपे घ्रत ज्यूं मुरझायो ।
पैल[9] न जानत वास प्रभा प्रिय,
बैल के पास गुलाब बिछायो ॥५॥
गंधि गयो ग्रह रेगर[10] के गल,
बंध[11] भयो ग्रहधंध[12] बिगार्यो ।
पीनसकाय[13] के पास कपूर,
धर्यो कविऊमर[14] तौ हियहार्यो ।
गोबर के गननाथन की गुन,
गाथ करी सु वृथा गुनगार्यो ।

१—पुजारी (worshipper). २—ऋतुराज (spring). ३—शोभा (beauty). ४—गधा (ass). ५—लेजाकर (conducting). ६—इन्द्र (Indra). ७—पैदा करने वाला (creator). ८—निर्लज्ज (shameless). ९—माठो (sluggard). १०—मोची, चमार (a class of leather-Curer) ११—कंठ घुट गया (was fuffocated). १२—घर का काम (house work). १३—नाक के रोग वाला (person having a nosedisease). १४—कवि-ऊमरदानग्रन्थकर्त्ता name of theauthor).

गायन व्यग्र[1] प्रलाप[2] गह्यो जनु,
ऊठके अग्र अलाप[3] उचायो ॥६
बांझ के पास प्रसूत[4] की वेदन,[5]
भेद न जानत मूंड भमायो ।
पूत कपूतन कों चटशाल[6] कि,
ज्यूं कुलटा सुसराल सुनायो।
हीर[7] कंगालन हाथ दियो हंस,
चीर[8] कुकोढ़िय साथ चिपायो ।
श्लोक झरी बिसरी सुनके शठ,
गर्धभ पैं मिसरी गुन गायो ॥७॥
छंद अलंकृत[9] छांह छुवे नहिं,
बांह गहै नहिं पुस्तक बाचै ।*

१—दुःखित (sorrowful). २—रोना (bewailing). ३—रागोच्चारण (tune). ४—प्रसव, जापा (parturition). ५—पीड़ा (labour). ६—पाठशाला (school). ७—हीरा (diamond). ८—कपड़ा (cloth). ९—अलंकार वाला (metaphoric).

* अर्थ—ऐसे डपोल शंख (मूर्ख) लोगों के सामने कवि लोग अपनी कविता रख कर कभी समय न खोवें । जो लोग छन्दों, अलंकारों का कुछ भी ज्ञान नहीं रखते, न पुस्तक हाथ में लेते हैं और न पढ़ते हैं । जो मनुष्य कविता के मर्म को नहीं पहिचानते और न ये जानते हैं कि पढ़ा हुआ शब्द और उसकी

लक्षक[1] लक्ष्य[2] कहां अविधा[3] कथ,
वाच्यरु[4] वाचक[5] नाच न नाचै।
व्यंगरु[6] व्यंजक[7] नां रस[8] वृत्तिय[9],
रीत न दूषण[10] दूषण राचै।
डौल डफोलन तोल यथातथ,
जाचक पौल वृथा जिन जाचै ॥८॥

छपनां रो छन्द

सिलोका छन्द

निर्भय नारायण सुद्धी सिर नाऊं।
परहर संसय भय वुद्धी वर पाऊं॥

अन्दरूनी अर्थ मे क्या भेद हैं। जो लोग कविता के लक्षण व्यंजना आदि भेदों को नहीं जानते न रस (८) और वृत्तियों (९) का ज्ञान रखते और सिर्फ संसार के दोष ढूंढ़ते रहते हैं, उन लोगों से सच्चे कवि अलग ही रहें तो अच्छा है।

१—चेताने वाला। २—जिस चीज से जाने। ३—शब्दसामर्थ। ४—शब्दार्थ। ५—शब्दार्थसूचक। ६—वाक्यार्थ से विशेष। ७—विशेषसूचक। ८—शृङ्गार, हास्य, करुणा, वीर, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त। ९—कौशिकी, आरभटी, भारती, गौड़ी, पांचाली और वैदर्भी। १०—अन्ध, वधिर, पिष्टीपेसण, अपुष्टार्थ, भग्नप्रकरण, अश्लील इत्यादि।

संवत छपनै[1] रो केवण सिरलोको ।
　　लौकिक लैवण नै सांभलज्यो लोको ॥१॥

सुखसूं सूती थी पिरजा सुखियारी ।
　　दुसटी आतांही करदी दुखियारी ॥
जग में ऊसरियो[2] खापरियो जैरी ।
　　बाल्हा बीछोडण बापरियो[3] बैरी ॥२॥

माणस[4] मुरधरिया[5] मांणक सम मूंगा[6] ।
　　कोडी कोडी रा करिया श्रम सूंगा[7] ॥
डाढी मूंछाला डलियां[8] में डुलिया ।
　　रलियां[9] जायोड़ा गलियां में रुलिया[10] ॥३॥

आफत मोटी नै खोटी पुल[11] आई ।
　　रोटी रोटी नै रैय्यत रोवाई ॥

१—सं० १९५६ वि० (सन् १९००) में राजपूताना मे भयंकर अकाल पड़ा था। मारवाड़ प्रजा इस दुष्काल की भीषणता को कभी भूल नही सकती। वह अब तक ५६ छप्पन के सालके गीत गा गाकर उसकी भयकरता का परिचय देती है । महाकवि ऊमरदान ने भी उसकी ऐतिहासिक भीषणता को कविता में चित्रित कर दिया है। २—बरसने लगा। ३—चल पड़ा । ४—मनुष्य । ५—मारवाड़ के मारवाड़ी । ६—महँगे । ७—सस्ते । ८—टोकरी। ९—महल। १०—रुल गये । ११—समय ।

आडी ओखलियां खायोड़ा आधा।
लाडां-कोडां[1] में जायोड़ा[2] लाधा[3] ॥४॥
सारी सृष्टी में कुंडल[4] छल करियो।
भारी हाहा रव भूमंडल भरियो ॥
वसुधा काली[5] री ताली तड़ वागी।
भिड़ियां सोनां री चिड़ियां पड़भागी ॥५॥
मैंनत मजदूरी मासक घण मोला।
बिलखा विगताळू आसक अणबोला ॥
ठांठां ठांठां में ठांठां[6] ठांठरिया।
भूखां मरतोड़ा मरिया गुण भरिया ॥६॥
छोरा रोळा में छपनैं रस रुळिया।
पहुमीं[7] नवरस नस दसहौं दिस पुळिया[8] ॥
तरुणी रस तंडळ तरुणापण तायो।
छोनी मंडळ में करुणा रस छायो ॥७॥
बिडरी हिरणींसी फिरणीं बिजकाती।
मुखड़ै मुसकाती जोरो जतळाती ॥

१—प्रेम व उत्सव वाले। २—पैदा हुए। ३—मिले। ४—चन्द्रमा के चारों तरफ के घेरे जो वर्षा होने के निसान माने जाते हैं। सं० १९५६ वि० में ये कुण्डल बहुत हुए थे। ५—कालिका देवी। ६—जगह-जगह। ७—पृथ्वी। ८—चले।

ओलै[1] भक[2] आटा कोलै[3] जिम कुयिगी।
हावर भामणियां सामणियां हुयगी ॥८॥
सतियां म्हासतियां कहतां तन सोहै।
मधुरो वांणी मुख प्राणी मनमौहै॥
रजपूतांणी रुच सींचाणीं[4] सिरखी।
नैणां जल भरती सैणां थल निरखी ॥९॥
सुन्दर सुकुलीणी भीणीं साड़ी में।
जुलफां सपणीं जिम अपणी आड़ी में॥
सूनीं ढाणीं[5] में सेठाणीं सोती।
रैगी विणियाणीं पाणींनैं रोती ॥१०॥
जंगल जंगल में जूंनी जणियांणीं।
घोला धोरांरी घूनीं धिणियाणीं॥
खोटै टोटै नग कणियां बीखरगी।
माहव मोटै दुख जाटणियां मरगी ॥११॥
वैरण रसणां वस त्रसणां तनताई।
आभा आगणरी अँन मांगण आई॥
सांप्रत पूछो नह किण ही कुसलाता।
अँन अँन करतोड़ी मरगी अँनदाता ॥१२॥

१—पृथ्वी। २—गुप्त। ३—खा करके। ४—एक बड़ा फल (कौला)। ५—चीलह।

भूखी की जीमें सिसकारा भरती।
नांखै निसकारा धीमें पग धरती॥
मुखड़ो कुम्हलायो भोजन बिन भारी।
पय पय करतोड़ी पोढी पिय प्यारी॥१३॥

सूकी सुदराणीं झाड़ांरै सारै।
लाधी बिदराणीं[1] बाड़ांरै लारै॥
सद् व्रत करतोड़ी बरणाश्रम सेवा।
काढे मरतोड़ी रेवा तट केवा॥१४॥

इत्यादिक अज्ञा कथितादिक ऊणीं।
पहुँची प्रमदा पथ परमारथ पूणी॥
वांसूं कब व्हां अब अगलै भव ऊरण।
व्यारूं बरणां री सरणांगत चूरण॥१५॥

पांचो आठो दस पनरो खूपड़िया।
सतरै बीसै हय[3] खतरै में पड़िया॥
कालप चावी कर भावी भुज भेटी।
मोटा मोटां री मावीती[4] मेटी॥१६॥

पुलियो पचीसो चोतीसो चुलियो।
अठतालीसो भी अन्तर आकुलियो॥

१—जंगल मे खेत के बीच मे किसान का झोंपड़
२— दासी। ३—घोड़ा ४—गर्व।

पीढी पर पीढी पोतोजी पाया।
अगले कालां रा दादोजी आया॥१७॥
छपने छोरा विधि कीनी कुलटाई।
उलटा पलटी कर दुनियां उलटाई॥
कीरत छपनैं री गुणिये कविराजा।
महिमा छपनैंरी सुणिये महाराजा॥१८॥
धुरधर[1] असाढां अंबर[2] धर-हरीयो[3]।
घोरा डंबर में संबर-घर[4] हरियो॥
साई सर सरिता आई इकरारा।
धोला जलधर सूं धाई जल धारा॥१९॥
भूरा भुरजाला[5] अंबुद[6] भल हलिया[7]।
खाला नदनाला बाल्हा खल हलिया॥
अवनीं आन्दोलन[8] ओला ओसरिया।
पिड़िभिड़ि प्लासोपै गोला जिम गिरिया॥२०
काली कांठल में दामणियां[9] दमकी।
चित में कामणियां विरहानल चमकी॥
छूटी आसारां[10] कासारां[11] छिलती[12]।

१—आरम्भ में। २—आकाश। ३—गरजा। ४—रक्षा का उपाय। ५—किला। ६—बादल। ७—चमके। ८—हिलाने वाले। ९—बिजलियें। १०—तालाब की ऊपरी हद। ११—तालाब। १२—भर गई।

पड़ती परनालां पहुवी पिलपिलती ॥२१॥
संमा संमारा जल कुंडल जोया।
धारा संमारा महिमंडल धोया॥
लूवां मगलागी धरणीतल धायां।
मुसला मिटिगा ज्यूं अँगरेजां आयां ॥२२॥
धुरवा धरणीं लग लोढा लौ धावै।
जीमण जीमण नै मोडा जिम जावै॥
मोरां अनुमोदित लोरां लड़ लागी।
नीझर नवनीरद[1] भमनां भव भागी ॥२३॥
हरकण छाई दिस चिलकारो[2] हरियो।
करसण करसणियाँ किलकारो करियो॥
झेलण हलवेडर झलकी तन झांईं।
मरिया डेडर ज्यूं हरिया मनमांहीं ॥२४॥
हल थल बाखल में चलवल थल हेरै।
टणमण टोकरिया बलधां[3] गल टेरै॥
पाणाँ प्रेरणिका पापल पुचकारै।
बापू बापू कर थापल बुचकारै ॥२५॥
लंगर लल्लारा तरभंगर लाडा।

१—नये बादल। २—चमक। ३—बैल।

गोरख[1] गायांरा गाहिड़ रा गाडा ॥
भाई भयदाई लागत[2] है भारी।
सींगां लज्जा है सींगालाँ सारी ॥२६॥
पीहर[3] पतला[4] रा सैंणांरा प्यारा।
तारक[5] तूटांरा नैंणांरा तारा ॥
सीरी सिटियांरा सूल्हांरा सारा।
भोड़ी भूखां रा फूलां रा भारा ॥२७॥
पाणीं जीतांनै तूही नित पावै।
जीवां मरतांनैं तूही जीवावै ॥
कैणां आखड़िया जूड़ा[6] दै कांधै।
बैणां[7] बलधां रै राखड़ियां बांधै ॥२८॥
बैणव बीजणियां बंधण बिगतालू।
लट्ठै घोतां रा खूंजा लटकालू ॥

१—ये एक प्रसिद्ध सिद्ध हुए हैं। कहते हैं कि गौ की रक्षा करने से ये गोरखनाथ कहलाये। ये बड़े उदार थे। इनका समय १४वीं शताब्दी का आरंभिक भाग माना जाता है। इनके गुरु मछन्दरनाथ थे। गोरखनाथ से ही जोगियों का पंथ चला जो भर्तृहरि और गोपीचन्द जैसे बड़े-बड़े राजाओं के योगी हो जाने से शीघ्रता से सारे भारत में फैल गया। गोरखनाथ का एक गुरुभाई जलंधरनाथ था। मारवाड़के जोगी "जलधरनाथ" को अधिक मानते हैं। २—खर्चा। ३—सायका, स्त्री के पिता का घर। ४—दीन। ५—तारने वाले। ६—जुहाड़ा। ७—चलने वाले, या पानी लाने के बड़े घड़े।

राती कानो री पोतड़ियां रूड़ी।
कंनी लोवड़ियां बगलां में ऊड़ी ॥२९॥
ओछी अँगरखियां दुपटी छीव देतो।
गोढै बरड़ी जे पूरा गामेती ॥
फैंटा छोगाला खांधा सिर फाबै।
टेढा डोढावै डिगतो नभ दाबै ॥३०॥
हुरैं भरैं कर नेता हलकारा।
लांबा सींगाला देता ललकारा ॥
मुलकै बेलो चख पोलछ लख मोजी।
चेली दीठां ज्यूं साधू चितचोजी ॥३१॥
सूतल नाथा सर नासां सणकारी।
फुरणीं दूंधातां रासां फणकारी ॥
भूसर घायां गल आवढ कढ भांखै।
नम नम सा वढ नैं नायां[1] कण नांखै ॥३२॥
गोरी पणियारी तेजो तन गाजै।
लारै धोरीरै जणियारी लाजै ॥
फोरै खाथांनैं गाली फटकारे।
तोरै जातांनै हाली ततकारे ॥३३॥

१—लकड़ी का एक खोखला औजार जिसमें अनाज डालकर बोया जाता है।

भीरू आरातुर मूंफाड़ा भाजै।
बैतां फुरणां रा फूंफाड़ा बाजै॥
हाली मूंछरा लेता हटकारा।
फिरता पूंछा रा देता फटकारा॥३४॥
बीरा बीरा भड़ दोला बिड़दावै।
धीरा धीरा पड़ धोला मत धावै॥
बेलू बैतड़ री ताती बलवाली।
रेणा धोली री राती कर राली॥३५॥
बिकसी भाता[1] ले भतवारां वाली।
चंगी चोधरण्याँ सतवारां चाली॥
जोबन रायजादी सादी सिणगारी।
नखसिख संचै में ढलियोड़ी नारी॥३६॥
लोई ओढणनैं साड़ो लूमालो।
फूटर लटकंतो नाड़ो फूंदालो॥
पावां पचडोरी पगरखियां पैरै।
सूरत सिंघण सी बन जंगल बैरै॥३७॥
चूड़ो चमकीलो कचबीड़ी चमकै।
दामण दमकीली दामणिसी दमकै।
भँवरयो[2] फुरणी में भवरालो भलकै।
पाघर बहती रा पसवाड़ा पलकै॥३८॥

१—भोजन। २—नाक का गहना विशेष।

काचल कातरिया बाजूमें काठा।
भुजतल भेटै जां मेटै अघ माठा॥
करमें कांकणियां जसदा गल काठी।
अद्भुत मोरां पर लुठतोड़ी आटी॥३६॥
इंढी कचडाली माथै पर ओडी।
छैली अलकावल मुखड़ै पर छोडी॥
झणकै झालरियो[1] झूमरिया[2] झटकै।
लूमीं भींगां[3] री खूंणी तल लटकै॥४०॥
खोलां टंकियोड़ा गलमें खूंगाली।
जल जुत ठोडी पर टिमकी जंघाली[4]।
भीनैं कांचलिये घम घम डग भरती।
धसलां देतोड़ी धमधम पग धरती॥४१॥
गोरी पींडी पर ऊघड़ता गोडा।
लम्बी वीखां[5] दै लेतोड़ी लोडा॥
सेणां साजनियां ऊमर भर सालै।
घूमर देतोड़ी केतां घर घालै॥४२॥

१—गले में पहिनने का हार। २—कानो का गहना। ३—हरे रंग के चमकदार कीड़े। ४—हरी। ५—पग।

हेरै हरियालो भूतल हरखाती।
गहरो ऊँचै गल हरियालो[1] गाती॥
धिन धण छकि जाती छाती लख छाती।
जांभर भणकाती जाती मदमाती॥४३॥

भूरै मुखड़ै पर स्वेदण कण भारी।
पहुँची पोलछ[2] में प्रीतम री प्यारी॥
नाचै खेलावण मेलावण नांहीं।
जोवण जोगी वा बेला जग मांहीं॥४४॥

नाडा[3] भरियोड़ा नैड़ा[4] निजराता।
गाडा गुड़काता पैड़ा रुड़पाता॥
लाखै फूलांणी[5] भीणां सुर लेता।

१—किसानो का एक गीत। २—उमदा तैयार किया हुआ खेत। ३—छोटे तालाब। ४—पास। ५—यह कच्छ देश का राजा था, जो यादव-वंशी फूला जाड़ेजा का पुत्र था। इसका जन्म वि० सं० ९१२ सावण सुदी ७ गुरुवार (ता० २५-७-८५५ ई० को) हुआ और ये सोलंकी मूलराज प्रथम (सं० १०३०-१०५१) के हाथ से सं० १०३६ कार्तिक सुदी ८ शुक्रवार (ता० ३१-१०-९७९ ई०) को मारा गया। मारवाड़ की ख्यातों में राठौड़ राव सीहा के हाथ से लाखा फूलाणी का मारा जाना जो लिखा है, वह गप्प है। क्योंकि लाखा फूलाणी, सीहा राठोड़ से ३०० वर्ष पूर्व हुआ है।

डीघा गाडीणां डब डब धुनि देता ॥४५॥

बूंठां बीतोड़ा जांभर कै[1] जाता।

लादां[2] बिसनोई[3] ऊंटाँ पर लाता॥

ढांचां खांचांसूं कलसां जल ढारा।

जोगी जांभै रा घुरता जसवारा॥४६॥

रातां जागणरो जंगलमें रोलो।

ढाणीं ढाणींमें फिरतो ढंढोलो॥

धुणता नर माथा चुणता घर धाड़ा।

१—खूब सुबह, ब्रह्म मुहूर्त्त। २—लकड़ी से लदा हुआ ऊंट। ३—देखो पृष्ठ ७२ में टिप्पण संख्या ५।

पाबू[1] हरबू[2] रा सुणता परवाड़ा[3] ॥४७॥

१—यह बहुत प्रसिद्ध वीर होगया है। मारवाड़ी ख्यातों में इसका जन्म सं० १३०१ में और मृत्यु सं० १३२३ मगसर वदि ६ की लिखी है जो ग़लत है। क्योंकि इसके पड़दादा राव सीहा राठोड़ के मरने का शिलालेख सं० १३३० वि० (ई० सन् १२७३) का मिला है। इससे विद्वानों ने पाबू का समय सं० १३६० के आसपास माना है (देखो J. B. A. S. vol XII No 3 P. 107). पाबू का जन्म सं० १३४१ के आस-पास फलोदी परगने के गाँव कोलू में हुआ था। उसके बाप का नाम धांधल और दादा का नाम राव आसथान राठोड़ था। सारे मारवाड़ में लोग देवता के जैसे पाबू राठोड़ की पूजा करते हैं। गौओं की रक्षा करने में ही सं० १३८३ मंगसर वदी ६ को उसके प्राण गये थे। अनेक स्थानों पर पाबू के छोटे-छोटे मन्दिर हैं, जिनमें उसकी मूर्त्तियाँ ऐसी ही हैं कि जिनमें वह खुद एक घोड़े पर सवार है और उसके पीछे उसके थोरी नामक अछूत जाति के दो साथी चांदा और ढेवा नामक हैं, जिनके हाथों मे चढ़ी हुई कमानें है। आज तक मारवाड़ के गाँव-गाँव में थोरी जाति के लोग पाबू का गुण कीर्त्तन करते फिरते हैं। उन थोरियों के पास एक बड़ी चादर भी होती है, जिस पर पाबू के जीवन-काल की अनेक घटनाएँ भी चित्रित होती हैं। फलोदी परगने के गाँव कोलू में पाबू के दो मन्दिर हैं। उन में सब से पुराना शिलालेख वि० सं० १४१५ भादवा सुदि ११ आदित्य-वार (?) का है। इस में धांधल सोभ के पुत्र सोहड़ द्वारा पाबू का मंदिर बनाये जाने का उल्लेख है। २—यह मारवाड़ के फलोधी परगना के गांव बेंगटी के सांखला (परमार) राजपूत और राव जोधाजी राठोड़ (सं० १५१०-१५४५ वि०) के समकालीन थे। जोधाजी इन्हें बड़ा महात्मा मानते थे। ३—यश।

दुनियाँ दातारां जूझारां देवै।
लिपला लोकांनैं लेखै ऊण लेवै ॥
दत्तब करतब मैं दोढा दरसाता।
सारी प्रथवी सिर सोढा[1] सरसाता ॥४८॥
गांवां गांवांमें गीतेरण गाती।
चित्रण गृह भींतर चीतेरण चाती ॥
गावड़ डावड़ का भावण गुण गाता।
गायां गरभाती गोरी गव्वाता ॥४६॥
धेनू चरतोड़ी धोरां खड़ धाती।
ऊधां झरतोड़ी लोरां झड़ आती ॥
राती बासैरी माती रंभाती।
जाया गोपासै जाती जंभाती ॥५०॥
डोढा कँधलोटा जूटणनैं घुमडै।
महिषी[2] महिषी[3] ज्यूं डाबर[4] में रमडै[5] ॥
माती ऊहाड़ां दरसै मादलसी।
देई बीलोई बरसै बादलसी ॥५१॥
लाडी लाखीणीं धारां धूंधाती।

१—पंवार राजपूतों की एक शाखा जिनका राज्य पहले अमरकोट (सिन्ध) में था। विस्तृत हाल इतिहास-वेत्ता गहलोत कृत "राजस्थान के ३६ राजवंश" पुस्तक में देखो। २—भैंस। ३—राणी। ४—छोटा तालाब। ५—खेलती है।

पीवर ऊधांरी पारां[1] पय पाती ॥
भाषा खीणां भड़ एवड़[2] ले आता ।
धाया धीणा रा गोधन रा धाता ॥५२॥
फजरां हथणीं, सी दधि मथणीं फुरती ।
माटां घरघर में घणहरसी घुरती ॥
खूली आथणियाँ साथणियाँ खाती ।
फूली-फूली[3] फिर फूंयालो[4] गाती ॥५३॥
बिरछां बेलां पर चढणें बुधि चाही ।
उरमें अलबेलां बेलण सुध आई ॥
आणां[5] लेवणनैं अैधूला[6] आया ।
दरसण देवणनैं मोभी[7] मुलकाया ॥५४॥
वाल्ही धण वालम मीठी मुखबोली ।
घड़ियां अमृत री बुलती घणमोली ॥
उण पुल अमरापुर कापुर[8] उर आयो ।
मुरधर मंडळ तळ महिमंडल मायो[9] ॥५५॥

१—स्तन । २—मटका भर के । ३—खुशी खुशी । ४—दो लड़कियों का एक दूसरे के दोनों हाथ पकड़ कर गोल चक्कर में फिरने का खेल (देखो "मारवाड़ के ग्राम गीत" पृष्ठ १६२) । ५—स्त्री को पीहर से लेने के लिये सुसराल वाले जाते हैं उसे "आणां" कहते हैं । ६—मस्त लोग । ७—पहला पुत्र । ८—कुछ नहीं, ना कुछ शहर । ९—छुप गया ।

हा उण इच्छाधर भिच्छा गत हाणीं ।
जगमें दैविच्छा किणहीं नह जाणीं ॥
बादल़ बिजल़ियां नभमें नहिं नैड़ी[१] ।
भेजो भणणायो भलकी[२] पुल भैड़ी[३] ॥५६॥
ललकत जांझलियां[४] बाजणनै लागी।
भूखां मरतोड़ी खलकत पड़ भागी ॥
बो:रा थल बिहुणां तिल खलवत तरजै ।
बूढी चेली नैं साधू ज्यौं बरजै ॥५७॥
अंबर[५] संबर बिण संबर अकुलावै ।
जलहर[६] बलियां[७] बिन जलियां जियजावै॥
खोरां लै लूरां मोरां ललकारै ।
पांसू पड़ियोड़ा आंसू पलकारै ॥५८॥
अणूं बाह्योड़ो नव बीज न ऊगो ।
पैलै भवरो हवबदलायत पूगो ॥
पूर्वाषाढा में खाडा में पड़िया ।
अगलै अनरथरा अंकुर ऊघड़िया ॥५९॥
खूटो बीजण कणसांचै खड़ खूटो ।
छपनैं प्रलयागम पावन पड़ छूटो ॥

१—नजदीक । २—चमकी । ३—बुरी । ४—बरसात की नाउम्मेदी की हवा । ५—आसमान । ६—बादल । ७—आये ।

फीका चै:रा पड़ फीका द्रग फेरै।
हाहा ऊंडा दिन भूंडाभय हेरै ॥६०॥
किड़की कारायण कनफड़ियां कूटी।
तिड़गी तारायण सो पुरसां तूटी॥
प्रतिदिन मोलापड़ भिनभिन पद पूजै।
घोलानीरण बिन जीरण जिम घूजै ॥६१॥
करता मांचा दे लांचा कूतरिया।
उतरत आसाढां मूंढा ऊतरिया॥
सैणां संकटमें बंकट सब राया।
घांटा घुटियोड़ा घूंघट घबराया ॥६२॥
फूंकण नवकोटी झंडा फरहरिया।
घर घर जातीरा-टामक[1] घरहरिया॥
खाली जल धरथी जलधर जल खूटो।
ततखिण जीवण बिण जगजीवण तूटो॥६३॥
थोथा[2] गैडंबर संबर बिण थाया।
छपनैं सूमांसा आडंबर छाया॥
तुरत तिजोरी में जल नैं जड़ दीनूं।
देदे खांडेला खड़नैं खड़ दीनू ॥६४॥
दुरभिख निकटासण किणनैं नह दीधो।
नकटै नकटापण ऊपणासय कीधो॥

१—खातमे की नौबत। २—पोले, खोखले।

मिलगा धूली ज्यूं जेष्टाश्रम जूनां ।
सालै सूली ज्यूं श्रेष्टाश्रम सूनां ॥६५॥
हाहा दुखदाई छपनाँ हतियारा ।
सज्जन सुखदाई सावल सथियारा ॥
निसनह निसनायक[1] नभ नहिं नखतालो[2] ।
करदी पूनमनैं ऽअमावस काली ॥६६॥
चहुँघाँ चकचूरण खूरणोखे[3] चढती ।
मसलत महिमंडल नभमंडल मढती ॥
रेणूं[4] रवि[5] मंडल रसमीं[6] रयरोकी ।
तनमन प्रज कांपत ढांपत त्रयलोकी ॥६७॥
काली पीली सह सीली ककुभाली ।
कांठल कावलती बावल बल वाली ॥
अंचल उलटाती कुलटाऽकृति आवै ।
खैखैं करतोड़ी मरतोड़ां खावै ॥६८॥
बायू आयू हर बिबरण बहरावै ।
थर थर थरकत थिर थिरचर[7] थहरावै ॥
खेहाडंबर[8] खर अंबर अरड़ावै ।
धरणींतल धूणैं गरदव गरड़ावै ॥६९॥

१—चांद । २—तारों की पंक्ति । ३—धूल । ४—धूल, रेत । ५—सूर्य । ६—किरणें । ७—चराचर । ८—तूफान ।

लाँवा लाँवा धर आंवा अड़ जावै।
धड़ धड़ वड़ भड़ कै पीपल पड़िजावै॥
टणका टणका तरु जरघै टुरिजावै।
दुर्व्वा गुर्व्वा गुण गरबै दुरजावै॥७०
पत्ता भड़ पत्ता खत्ता खड़खावै।
उड़ता ऊमर इव पत्ता नहिं पावै॥
केकी[1] केका[2] तजि ठेकादै ठैरण[3]।
विखमी[4] भांखड़ियां पांखड़िया वैरण॥७१
भुकियो वेलूभड़ आधो फर आधौ।
हाथा ताली हणि तुकियो नहिं लाधै॥
कच्छीयो करकर रच्छी रुलिजावै।
तड़फै मच्छीतल पच्छी पुलजावै॥७२
करकरहूँ भाड़ा सालण किचलावै।
वाजै भूंभाड़ा वालण विचलावै॥
चमकैला डागल गोडा चिक्क चिकता।
जंतू जल रिकता सिकता में सिकता॥७३॥
घोरांधोरां धर घूघल धुरधाई।
थल थल ऊथलती वलती वुरकाई॥
पड़ती पुल पुलफर भुलभुल भरभूंजै।
सरकर सर सोखत गिरवर दरगूंजै॥७४॥

१—मोर। २—मोरनी। ३—भाग जाते हैं। ४—टेढ़ी।

किरकर भोजन कर जोजन जुल जावै ॥
घरघर निरमल जल वेकल घुल जावै ॥
पींगै पूतांरै तंबू तण जावै ।
सेजां सूतां रै वजरँग वणजावै ॥७५॥
झाडूदे ढाणी झालरिया झाडै ।
पाणीं पालरिया[1] पीवण पछखाडे ॥
लोरीदै पोलछ लालरिया लेती ।
दड़खिल खोड़ानैं हालरिया देती ॥७६॥
आंधी खूंखाटा करती उठ आवै ।
फ़दके मूंफाटा चेता चलजावै ॥
गोलू गायांले गांमां गल गाहै ।
दुखिया सुखिया मिल दोनूं दल दाहै ॥७७॥
खत्था खेसलिया भाखलिया खांधै ।
वेझड़[2] दामोदर चामोदर बांधै ॥
सुखिया मनमोहण दोहण घर गेढी ।
गोढै ढेरो व्है खूंणी में गेढी ॥७८॥
छोटी दीवड़ियां काखां[3] तल छाले ।
मोटी लोटड़ियां दाखां जलमाःले ॥
निरबल चोरां डर बसियोड़ा नैड़ा ।
दुरबल मोरां पर कसियोड़ा डेरा ॥७९॥

१—वर्षा का पानी । २—नाज का मिश्रण । ३—बग़ल ।

हीलाकर हिएके ईला हुय आधा।
 लीला भगवत री लीला नहिं लाधा॥
ढालां ढालांतर सांतर ढलियोड़ा।
 बेठा नीरांतर आंतर बलियोड़ा॥८०
बाटी बोटे नहिं खाटी खड़ बूझे।
 फिर फिर फरफाटी साटी नह सूझे॥
अमली ठाकरड़ा डेरां में आवै।
 मोटी घसका घड़[1] मावा[2] मटकावे[3] ॥८१॥
इत्यादिक मोथी आदतिरा अलिया[4]।
 थोथी थलवट रा थलिया बेथलिया॥
ढीली लांगां रा ढेरा ढलकाता।
 टोघड़ टुकड़ांरा खेरा[5] खलकाता[6] ॥८२॥
खोटी खोडी रा गोला गलकाता।
 पीली कोडीरा डोला[7] पलकाता॥
ममता भवसागर ममता मढियोड़ी।
 केवल नलियांरी नलियां कढियोडी ॥८३॥
पाई[8] नहिं पाई[9] पाटी पढियोड़ी।
 चपटा दांतांपर काई[10] चढियोड़ी॥

१—गप्पें। २—अफीम। ३—खा जाते है। ४—खराब। ५—छोटे छोटे टुकड़े। ६—गिराते। ७—आंखें। ८—पैसा। ९—मिली। १०—मैला।

धोली आंख्यां रा चींदड़[1] भड़ धीठा ।
दोनूं भव निजरां बीगड़ता दीठा ॥८४॥
मरणै परणै में गोडा खर गालै ।
बनिता[2] सुत जावो बैती[3] रै बालै ॥
भलपण खांचै पणरांचै भूंडै में ।
मांचै सूतां रै हूको मूंढै में ॥८५॥
बाका फाटोड़ा थाका दम बाकी ।
डेल्हो चुलियोड़ा डुलियोड़ा डाकी ॥
थिरता मन री नहिं तन री गति थाकी ।
फुरणां परधन री अन री नहिं फाकी ॥८६॥
भूवा भगनीं रा थलचट भिखियारी ।
धन्यां कन्या रा गलकट हठधारी ॥
राफां झरणावै गिरणावैं रोता ।
गंता निरणावै करमां रा गोता ॥८७॥
बिलली बातांरी बाणीं बधरावै ।
पतली भिण जिण में पाणी पधरावै ॥
घालै बिसमत मत मगमग ठग घेरो ।
फोरी किसमतसूं पगपग पग फेरो ॥८८॥
डांढा[4] तांभाडै केरडिया[5] ढींकै[6] ।

१—नाकुछ । २—स्त्री । ३—बहती नदी । ४—पशु । ५—बछड़ा । ६—पुकारते हैं ।

रोटी पांणीनैं टींगरिया[1] रींकै[2] ॥

चित्त पर घोराख आकर बरचावै।
घर घर नरनायक लायक घबरावै ॥८६॥

गोवै चरतोड़ी पेडां थिग गेडी।
भैभै करतोड़ी भेडां ढिग भेडी ॥

ऊणां ऊरणियाँ[3] खरसणियाँ ओलै।
डरड़ा नरड़ा बिण अरड़ादे टोलै ॥६०॥

सांयंड भेरावै सेढां[4] रै सारू।
बेरै बेढांकर हेरै हथवारू ॥

भैंस्याँ रिड़कै रिड़ गायाँ रंभावैं।
प्राणी तिरषातुर पाणीं कुण पावै ॥६१॥

खाली खेली में बाजै खणणाटा।
भाजै धाफड़लै कोठा भणणाटा ॥

बारै बारैरै घनदै बणणाटा।
गाँजर खाँचैलै पाँजर गणणाटा ॥६२॥

पड़पण कोहिर पर कोहिर पड़जावै।
खड़ खड़ करता खर खुदधर खड़िजावै ॥

खालड़ खैंखारो घर घाटो खेवै।
दोसत ओधारो आटो नह देवै ॥६३॥

१—बच्चे। २—रोते हैं। ३—भेड़ का बच्चा। ४—दूध की धार।

दलिया राँधै दलबलिया हल बांणै।
बेचण बींदणियां इंधणियाँ आणैं ॥
लादी भारी नैं ओलावो[1] लेती।
दुरबख बारीनैं बोलावो[2] देती ॥६४॥
दाधी दुखड़ैं री फिरतोड़ी दोरी।
गोरै मुखड़ै री गिरतोड़ी गोरी ॥
चाँमीकर[3] धामैं[4] कामीं कर चोड़ै।
जामी जामी कर सामैं कर जोड़ै ॥६५॥
मौड़ै मुख मौड़ै हीतल हतवाली।
पीतल पैरणनैं सीतल सतवाली ॥
लुचा ललचावै लालच घिनलागै।
लोचणजलमोचण सोचण खिणलागै ॥६६॥
खेड़ा गाँमाँरी गलती जे खावै।
आधा दामाँ में बलती दे आवै ॥
बिलखी अंजल बिन धावे बेराजी।
भीनीं बाँफणियाँ आवे घर भाजी ॥६७॥
बाबर[5] बीखरिया ओढणियें आडै[6]।
डाबर नयणां री टांबर[7] वय डाडै[8] ॥

१—मिस, बहाना। २—विदाई। ३—सोना। ४—देने को कहें। ५—केश, बाल। ६—पुकार कर। ७—बच्चा। ८—रोवे।

नवला नंगाती संगाती सैंणीं।
निरणीं नव अंगा गंगाजल नैंणीं ॥६८॥
भाये भलहलिया भुरटां रा भारा।
अध अँग ऊललिया उरगा[1] रा आंरा[2] ॥
बिरला[3] दांता री पांता बिरलाती।
चोड़ै चाचर रा चोड़ै चिरलाती ॥६६॥
मिलियां मनमेलू मातीं मुसकाती।
डुसका भरतोड़ी आती डुसकाती ॥
सासू सकुलीणीं संतू सुर सानीं।
ऊजल़ दंतीनैं उरमें उर लीनी ॥१००॥
वाल्हा बीरा कह ससहू बतलाती।
अश्रूपाती हा छाती भरि आती ॥
आणैं आयोढ़ी जलमें[4] जल पीणीं।
काणै घूंघट में कलपे[5] कलहीणी ॥१०१॥
दीरघनेसांरी छांणां तपदेती।
लांबा केसांरी दाणां लपलेती ॥
बेगी छेटी बिन भेटी भुजभारी।
पातल पेटी निज बेटी सम प्यारी ॥१०२॥

१—सांपों के। २—मंडल। ३—अलग अलग। ४—कहै।
५—दुःखी होती है।

सीरावण[1] जीमण दोपैरां सारो ।
पीसण पोवण में आरो पछ्लारो ॥
आती ओलणनैं अंबक दृक आयो ।
छाती छोलणनैं छपनों छित छायो ॥१०३॥
जावक[2] पावक जिम रंडातक जीवैं ।
साता ठोड़ांसूं चंडातक सीवै ॥
आधी उगलांची[3] कांचलियां आधी ।
बिलिये चूंड़ी बिन चींथरियां बाधी ॥१०४॥
सोनूं रूपो तन पीठी सुपनैं में ।
छल्ले बींटी बिन दीठी छपनैं में ॥
काजल टीकी बिन फीकी द्रग कोरां ।
सधवा विधवा बिच बिवरो[4] नहिं सोरां[5] ॥१०५॥
महला मुरधर री तरसै अन तांईं ।
तीजै पो:रां तक बीजै दिन तांईं ॥
नांखै नीसासा आसा अड़ियोड़ी ।
पामर पुरुषां रै पानैं-पड़ियोड़ी[6] ॥१०६॥
ऊजल मल संकुल पीठी उबटांणीं ।
करडै[7] लो[8] साथै औरण कूटांणीं ॥

१—सुबह का कलेवा । २—महँदी । ३—नंगी । ४—भेद । ५—सहज मे । ६—वश में आई हुई । ७—कठोर । ८—लोहा ।

कलियां कूलारी कादैमें कलगी।
विषहर[1] संगत सूं पीपलियां वलगी[2] ॥१०७॥
करता विश्वंभर कसरांकाः कांई।
नागरवेली दल निरफल फल नाहीं ॥
दाता घर दालद भुगतै हठभाया।
मूंजी[3] मिनखांनैं सूंपै सठ माया ॥१०८॥
लावां लखणां रा दस दस सुत देवै।
उत्तम लखणां रो अकेल उरलेवै ॥
सिंधुरवर बावर भूंडण कर सांधै।
वामा बीजल नैं थावर गल बांधै ॥१०६॥
वेस्या सुखभोगै पतिवरता व्याधी।
इणसूं ईस्वररी ईस्वरता आधी ॥
सावल सुर साधक सुखसूं नह सोया।
सकुनीं सकुनावल रावल बलरोया ॥११०॥
सिद्धां सिद्धाई धरणी में धसगी।
भोपां भोपाई फाँफाँ में फसिगी ॥
झूठा जोतसियां जोतिस्र की झूठी।
करसा कलपाया वरसा नह वूठी ॥१११॥
दारादुर्दिनदुति दुगणित दरसाई।
आवण आवण में गावण सरसाई ॥

१—गोह। २—जलगई। ३—कंजूस, सूम।

निकसी तीजणियां वणियां घड़न्हाली ।
उपमां घड़ टाली बरछी छड़वाली ॥११२॥
बिमला कमला[1] सी अमला[2] वेसां री ।
कड़ियां रलकंता कमला[3] केसां री ॥
भूषण आभूषण मनसा भरियोड़ी ।
बेला[4] मनबंछित केला[5] करियोड़ी ॥११३॥
चंचल चपला[6] सी चितवन चिरताली ।
निरखै निगमागम नागम निरताली ॥
मादा[7] मरजादा जादा मदमस्ती ।
बेली अलबेली छेली छदमस्ती ॥११४॥
डोला हींडोला होकर हुचकाती ।
अणवट ठोकरदे एडी उचकाती ॥
रमझम बिछियां रो बजता रणकारा ।
झमझम जेहरि रा उठता झणकारा ॥११५॥
सादर सांईनी आदर उमगाई ।
उड़ती परियां सी बरियां[8] घर आई ॥
गोरी गज गामणि हंसां गति हालै ।
चंपा डाली सी राली भुजचालै ॥११६॥

१—लक्ष्मी। २—निर्मल। ३—कोमल। ४—समय। ५—भोग। ६—बिजली। ७—कम। ८—पतियों के।

पद्मणि पूंगल री ऊगल गल आगै।
गंजा हंजादे गंजा गृह लागै ॥
महितल मगजाई मेलै थल मेली।
लेली[1] महिमा मत महिला दल लेली ॥११७॥

मगरीयै स्वरियै पद पेरण माल्ही।
हेरण हरियाली हच्छय हद्हाली ॥
तिण दिन तीजणियां निरखी तन त्यारी।
कंचन बेलीसी केसररी क्यारी ॥११८॥

गहकै आरङ्ग पुर सारँग[2] सुर गावै ॥
बाणिक दीठांइं नींठां बणिआवै ॥
झूलर झांखल बिन खांखल दिन ढंक्यो।
हींडै हींडण बिन हींडै हिय हंक्यो ॥११९॥

सूकी सेवणरी हेला उरहाई।
मैंदी देवणरी बेला मुरझाई ॥
खावण रूचैं धन ऊचैं मन खूणैं।
धामण तामण बिन जामण सिर धूणैं ॥१२०॥

गायां गोसालां गूदां गलगलती।
ढाला द्रग ढलती बूंदां बलबलती ॥

१—प्रसिद्ध प्रेमी मजनू की प्रेमिका "लैला"। २—सारंग राग या मयूर (मोर) का सा मीठा राग।

डाई डेडरसी धाई धुरधीएँ।
झींणो झेडर झुरगाई सुर झीएँ ॥१२१॥
बीणां नारद सी कोयलसी बांणी।
कुरलै केकीसी काया कुम्हलांणी ॥
अपणैं आसरिये अतलो दिन ऊगो।
पीहर सासरिये पनलो पुनि पूगो ॥१२२॥
आखी जगदीस्वर सांधण अभिलाखी।
राखी बांधण री ईस्वर नह राखी ॥
लोयण[1] लागणियां तणियां लजवाला।
कोयण काजलिया रलिया रजवाला[2] ॥१२३॥
जो जो झांवड़ियां जाती जतनाली।
रोरो आंखड़यिां राती रतनाली ॥
बाट बटाऊ हुय सांसो डर सालै।
बाट बटाऊ बिण हंसो उडहालै ॥१२४॥
नीचो नैणांसूं धोवां[3] जल धावै।
ऊंचो ईखण रो अभलेखो आवै ॥
गाढी गयणांगण रज ले गरणाटा।
सावण सूकोगो देतो सरणाटा ॥१२५॥
फुरियो भादरवो घुरियो नह फीको।
नीरदरज आगै लागै नह नीको ॥

१—नेत्र। २—ललाईदार। ३—अंजली।

तिसिया संगारा भूपर नर तिरसै।
बिसिया अंगारा ऊपरसूं बरसै ॥१२६॥
बेरा बैरागर सागर सम सोभा।
रीती गागरलै नागर तिय रोभा॥
धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै।
जीवन संजीवन जीवन धन जोवै ॥१२७॥
बालक बरलावे आखा अभिलाखै।
भूभू बूबू[1] बिन भाखा नहिं भाखै॥
सूंपे सीरावण ब्यालू ले बांसै।
वेला ब्यालू री सीरावण सांसै ॥१२८॥
धाडा धाड़ायत लूटणनैं धावै।
अपती कुलहीणा कूटणनैं आवै॥
दुजबड तीजा दरसातू ले दोड़ैं।
खावै जातूखल मारग सूं मोड़ैं ॥१२६॥
निसदिन जनमाठम आठम गमनांहीं।
माधव जनम्यों कै मरियो जगमांहीं।
कूड़ा पूजारी कूड़ी कथ कीनीं।
देवणकानां में पंजीरी दीनीं ॥१३०॥

१—छोटे बच्चे पानी को "भू" और मां को "बू" कहते हैं।

ऊंधा चूंधा कर फेरा उलझावै ।
बनड़ो बनड़ी बर मनड़ो मुरझावै ॥
रस में बेरस बस रागांरल रीसै ।
दुलहणि दुलहै नै दावानल दीसै ॥१३१॥

ऊभी आंगणियें बोलुड़ी आवै ।
गद गद मुरली सुर ओलूड़ी गावै ।
बालम व्रीड़ा[1] री पीड़ा कुण पालै ।
पीहर प्यारी नैं सासरियो सालै ॥१३२॥

सांथरवाड़ै[2] सी वाडै में सोती ।
आनन[3] अंभोरू[4] रंभोरू[5] रोती ॥
दोलै दूधालू गलियोडी गेरी ।
ढोलै ढलियोड़ी रतनां री ढेरी ॥१३३॥

सुरगारोहण पण निरसण नवसूती ।
सूधी लहु सूती सूती बहु सूती ॥
काया कठसेडी मठसेडी कांपै ।
ढांगी बेलां नैं तेलां नैं ढांपै ॥१३४॥

खोली खीलां री डेढां ढिग ढीली ।
पोली सेढां री लीलां बिण पीली ॥

१—लाज । २—शोक की बिछायत । ३—मुँह । ४—कमल ।
५—केले के थंभ सी जंघावाली स्त्री (सुन्दरी) ।

खड़ती सूवाड़ी बाड़ी विन खटकै ।
भरती मूंछड़ियाँ पूंछड़ियाँ पटकै ॥१३५॥
बैठी वाखडियां चाखडियां चाटै ।
कामल नै चकियां चकियां सूं काटै ॥
माकड़ माकड़सी मोली मुख मोलै ।
घरणीं हिरणीं लख हिरणी चख घोलै ॥१३६॥
सूधी सींघणिया च्यारूं थण सोधै ।
बिमनीं बिणजारण कारण परबोधै ॥
बाल्ही बेगड़ नैं थेगड़ दे बालै ।
भाली भोली नैं भोंडी नैं भालै ॥१३७॥
मोडी गोडी दे पसवाड़ा मोड़ै ।
तड़छां बातोड़ी घड़छां तन तोड़ै ॥
पीली पाडल पर फिर फिर कर फेरै ।
धोली घूमर नैं घिर घिर घर घेरै ॥१३८॥
बूरी सीणी सुर भीणी बतलावै ।
माड़ी काजल लख प्राजल मतलावै ॥
अबली सबली नैं सबली उर आणैं ।
गोरी गुणवंती गोरी गुण जाणैं ॥१३९॥
कपला कवली नैं वारै पुचकारै ।
लाखर लाखर अै आखर मनमारै ॥

हांसो बांसीसी सूकी हिय हारै ।
सरणीं लसणी लख छैदसणीं[1] सारै ॥१४०॥

बूटी लापड़ गीचांबर बिन बूटी ।
खांडी बांडी सब खावण बिन खूटी ॥
वैडां व्यायोड़ी खैड़ा में खांसै ।
कोमल काछड़िया बाछड़िया बांसै ॥१४१॥

दूभर द्वीहायन त्रीहायन दोरी ।
सूभर चतुरब्दा सब्दारथ सोरी ॥
इक नहिं आक्रान्ता क्रान्तातुर आडी ।
डाई अवतोका सोकाकुल डाडी ॥१४२॥

जोवण बरसोड़ी करसोड़ी जागी ।
मधरीडीघी सब सधरी मगलागी ॥
गंडक[2] गोमायू[3] पायू पल[4] पावै ।
वायस[5] वांसै चख चांचां भख चावै ॥१४३

लोका[6] लह लाणति छुटकारा लेती ।
दीरघ कानांसूं फिटकारा देती ॥
खुंडी पाडी रा लाडी चख खोलै ।
धमती खाडाली काली दिन धोलै ॥१४४॥

१—सर्पिणी। २—कुत्ता। ३—सियार। ४—मांस। ५—कौआ। ६—लोमड़ियें।

भूरी सूभरभर भावड़दा भांगी।
मोटी झोटी[1] री आवड़दा[2] मांगी॥
चारो नाणूं व्है खारी भरचारै।
अपणीं प्यांरी पर प्राणांतक वारै॥१४५॥

कुढ कुढ काया नैं माया बिन मोसै[3]।
रोती कड़ियां दे आंतड़िया रोसै॥
छिलगी देवर री जेवर बिण छाती।
ऊंडी नाभी री बाभी[4] अकुलाती॥१४६॥

खटकै खांवँदरै अड़ियां उर खारी।
पतली कड़ियां[5] री कड़ियां[6] बिन प्यारी॥
घां घां गुड़गी खा ऊधांरी घेरी।
विस में जुड़िगी हा दूधांरी बेरी॥१४७॥

काचा करमां सूं रैगा गळ रीता।
साचा सोनैंरा बालळिया बीता॥
गोरां खाली हुय खालां री गांठां।
लेग्यो लूंठांपण लांठां री लांठा॥१४८॥

सुरभी कासारी लारै सुख लेगी।
देई बीलोई दोई दुख देगी॥

१—भैंस। २—उम्र। ३—घोटना। ४—भाई की स्त्री, भौजाई। ५—कमर। ६—पांव का जेवर।

गोगो[1] मोगो हुय गोरधाँ[2] गिरियो।
तेजो[3] मोलो पड़ि नेजो[4] लै तिरियो ॥१४६॥
पीरां पतधीरां पैलो घर धायो।
उण दिन रामो[5] डर सामो नहिं आयो ॥

१—यह जिला हरियाला के गांव मेहरीके चौहान राजपूत थे। सं० १४१० प्र० भादों बदि ६ गुरुवार (ता० २५-७-१३५३ ई०) को दिल्ली के बादशाह फिरोजशाह द्वितीय के सेनापति अनुवक से युद्ध करके काम आये। हिन्दु इन्हे देवता तुल्य मान कर भादों बदि ६ को इनकी जयन्ती मनाते हैं। मुसलमान इन्हे जाहीर पीर के उपनाम से पूजते है।२—जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंह की धाय "गोरां" की खुदवाई विशाल बावड़ी "गोरंधा" जो जोधपुर शहर मे पोकरण की हवेली से सटी हुई है। अकाल मे भी इस बापी का पानी नही सूखता है। ३—यह नागोर के गांव खड़नल के निवासी और धोलिया गोत (नुख-शाखा खीची) के जाट थे। इनका जन्म सं० १७५१ वि० और देहान्त सं० १७७७ वि० की भादों बदि १० को हुआ। लुटेरों मेरो से गायों की रक्षा करते हुए घायल होकर सर्प के विष से यह स्वर्ग सिधारे। ४—भाला। ५—यह मारवाड़ के गांव जूँजाल के तंवर राजपूत थे। इनकी माता का नाम मालदे (मालदेवी) और पिता का अजमाल था। इन्होने भैरव नामक एक राक्षस (दुष्ट) को मारा था इससे इनका खूब नाम हुआ। मुसलमान हिन्दू सब इन्हे देवता की तरह पूजने लगे। इन्हें मानने वाले अधिकतर अछूत जाति के लोग हैं। इनका जन्म सं० १४६१ में हुआ और इन्होंने जीतेजी पोकरण से ८ मील गांव रुणेचा (रामदेवरा) में सं० १५१६ मे समाधि ले ली। वहां हर वर्ष भादों मे एक बड़ा मेला लगता है।

लुट लुट खीरांमें दुनियां लवलाई ।
पांचुँहिं पीरा मिलि खीरां नह खाई ॥१५०॥

भरियो भादरवो खाली पड़ भागो ।
लगतां आसूं[1] में आसूं झड़ लागो ।
छपनैं घोरारव आरव रव छायो ।
सूरज ससि मंडल गर्व्वित गहणायो ॥१५१॥

भमियां भूगोलक नभ गोलक भाई ।
कविजण करुणांरस अलमिति अधिकाई ॥
सूका सरवरिया तरवरिया सूका ।
च्यारूं वरणाश्रम भय भ्रम क्रम चूका ॥१५२॥

जादा जीवण रा पड़िया जिय जांदा[2] ।
मांगण खावण डर नर पड़िया मांदा ॥
गायां भैंस्यां रो कर दीनूं गाटो ।
लज्जाकुमजा रो ले लीनूं लाटो ॥१५३॥

फेदड़ फेदड़ सी नभ में निजराई ।
माखण चाखण री मनसा मुरझाई ॥
प्रावृट प्रावृटरी आवट मनमारै ।
थर[3] नैं पापां रा थर[4] लेग्या लारै ॥१५४॥

१—आसोजमास । २—लाले । ३—मलाई । ४—ढेर ।

भूरो कीटी रा आसी भव भटका ।
गुडली छाछांरा सुपनैं में गटका ॥
प्यारा टोघड़िया पाडाकूद पेखां ।
दूधां दहियां रा चाडा कद देखां ॥१५५॥

थेबा पड़तोड़ी रावां घी थीणां ।
धापिर देखांला दूजे भव धीणां ॥
हुय ग्या हत आसा हकबक सुणि हाको ।
निरधन धनवालां नीकल ग्यो नाको ॥१५६॥

खावण पीवण री खासा रग खूटी ।
छपनैं जीवण री आसा जग छूटी ॥
पल पल दींठां बिन पाणी नह पीता ।
जांरा मींठा मुख जोयर जगजीता ॥१५७॥

माता पितु बेटी बेटा भल भरिया ।
प्यारां प्यारां नैं मुसकल परहरिया ॥
जंतर जर हरणूं अभ्यंतर जडियो ।
पीतम प्यारीनैं परहरणूं पडियो ॥१५८॥

महिमां परमातम आतम नहिं मालम ।
वाल्ही घण[1] नैं तजि बिलखाणो बालम[2] ॥

१—स्त्री । २—पति ।

भाई भाई तज भूखो तज भागो ।
पग पग पुरसां नैं लूखो जग लागो ॥१५६॥

धांसू ढोल्हरिया सखियां घणियाली ।
आंसू ओलरिया अखियां अणियाली ॥
घरणीं निज परणीं घर बाहिर घेचै ।
बनिता बनितावत निलजा नर बेचै ॥१६०॥

निर्दय नारद सी लाजे मत नैड़ी ।
ईस्वर देखाजे मत बेला[1] वैड़ी ॥
गद्गद बांणीं द्रग पाणी गल लाटा ।
कँगला बँगला में कीना कललाटा ॥१६१॥

ठां ठां ठरड़ाया सुख दुख किण सूझै ।
बिपदा बरड़ाया बिपदा कुण बूझै ॥
चिंताहर नागर चिंता नह चोनी ।
करुणां सागर भी करुणां नह कीनी ॥१६२॥
धरणीतल व्याकुल छेलो सिर धुणियो ।
सरणागत बच्छल हेलो नह सुणियो ॥
लिछमी वर छानूं कानूं लै लीनूं ।
दीननबंधू हुय दीनन दुख दीनूं ॥१६३॥

१—समय ।

घट घट घण नामीं स्वामी सुरराई।
अंतरजांमीं हुय ओलज नह आई॥
इतरी आवज्ञा ईस्वर क्यूं आंणीं।
बूढो हुयग्यो कै प्रज्ञा विसराणीं ॥१६४॥

निरगुण अणविद्या छाई जग जिष्णू।
विद्या बीसरिगो सदगुण बस विष्णू॥
हाहा जगदीस्वर भैड़ी पल हेरी।
गाफल दुनियां पर अैड़ी पुलगेरी ॥१६५॥

कांपै अनुकंपा लांपो कर लीनां।
दानां दानां पण हानै घर दीनां॥
किण ढिग ढूकां म्हे किण ढिग म्हे कूकां।
हरदम हियामें ऊठै हरि हूकां ॥१६६॥

सब विधि समरथ तू सब थारै सारै[1]।
मारण बहु मारग अन बिन क्यूं मारै॥
दाता गुण ग्याता दूषण नह देणूं।
रैणीं कैणीं सूं भू भूषण रैणूं ॥१६७॥

विद्या वेदांमें वैदिक विधि वरणीं।
अपणीं करणीं सूं जगपार उतरणीं॥

१—वश।

निर्भय नीयंता यंता नरनारीं ।
करता बिश्वम्भर भरता सुखकारी ॥१६८॥
भगवत करतानैं करतब भुगतावै ।
पिछला पापां रा पामर फल पावै ॥
भावी भूलोड़ा भूंको[1] क्यूं भाया ।
पोचा करमां रा पोचा फल पाया ॥१६६॥
निकंमी नीयत रा सरवर नोलरिया ।
बींठा[2] बीजांरा तरवर बीथरिया[3] ॥
चतुरां क्यूं ऊंडी चिंता चांपां री ।
आछी ईसुर री भूंडी आपां री ॥१७०॥
सैणा[4] सैंणा सब हिलमिल दुख सैंणूं[5] ।
माहो माही[6] में नह देणूं मैणों[7] ॥
कसरां करता में राई नह काई ।
कसरां करमां में भुगतो रे भाई ॥१७१॥
परतख पग जलती पेखै नह पाई ।
डूंगर[8] बलती नैं देखै दुखदाई ॥
रचनां ईस्वररी ईस्वरता रोचै ।
सँमदम श्रद्धा बिण संभव नहिं सोचै॥१७२॥

१—भुसते हो। २—खराब। ३—फैले। ४—सीधे। ५—सहन करना चाहिये। ६—आपस में। ७—ताना, कड़ुआ वचन। ८—पहाड़।

निंदा नेता री भवभव में भूंडी ।
विद्या वेता विण अवगत गत ऊंडी ॥
वसुधा वीजांकुर विध विध निसतारै ।
न्याईसुर आसुर विध विध निसतारै ॥१७३॥
धरमीं नर ऊपर कोमल कर धारै ।
पापी पुरुषां ने सद्व्रत संहारै ॥
तदऽनुग्रह विन हा गृह गृह गृह तूती ।
जिण तिण विग्रह में निग्रह दी जूती ॥१७४॥
पादाकान्ती पदकान्ती विन पावै ।
आर्यावर्ती जन अन विन अकुलावै ॥
वहतो अखलेश्वर अवगति अनदाता ।
तत सत जग पालक जग भालक[1] त्राता[2] ॥
जगमें जीपातो पाछा सुख पासां ।
बोःरा[3] वनलावो न्होरा[4] कर न्हासां ॥
धुर धुर[5] कर कर नर लागा धीरावण[6] ।
वे सोनैं चांदी रो करिग्या सीरावण ॥१७६॥
पड़ज्यो कुलसणियां बोरां पर पटको ।
गैंणे गांठैरो करिगा ठग गटको[7] ॥

१—संसार को देखने वाला । २—रक्षक । ३—कर्जा देने वाला । ४—आरजु । ५—कर्जा लेने वाला । ६—धीजाने । ७—ग्रास ।

लूटै खावै धन धन में घर लेवै।
दोढा दूणां रा तूणां कर लेवै ॥१७७॥
सब धन जाटां रो काटां रै सारू।
बोरां चोरां रो कोई नह बारू[1] ॥
कूकस खावै नित धावै कण काढै।
बिखमीं बिरियां में अत गत खत बाढै ॥१७८॥
अह प्रभु चोधरियां कुल कवण उबारै।
मत्तू[2] अत्तू में गत्तू दै मारै ॥
आखी ऊमर आंरो कस आयो।
छल बल मुतलब कर बसकर छिटकायो॥१७६

पल पल आतांरी चमड़ी नित पीनी।
दमड़ी खरचीरी जातां नह दीनीं ॥
सोचै बोरां सिर भरियोड़ा रीसां।
सत्यानासी री देता दुरसीसां ॥१८०॥
दुरधर डंका दे बंका द्रढ धाया।
उठिया उद्योगी उद्दिम उमगाया ॥
कित है बंबोई उड़िया कलकत्तो।
मादू मुरधरिया[3] करियो मिल मत्तो[4] ॥१८१॥

१—बाहर करने वाला। २—दस्तखत का निशान। ३—महत्पुरुष। ४—मनसूबा।

अनमी[1] आंटीला थलिया थलवाला ।
बिपदा बांटीला बलिया बलवाला ॥
दुरजय दीखणमें निरभय दिन दूल्हा ।
भीखण दुरत्तिख में भुजबल नह भूला॥१८२॥

थेटू घर संबर ऊंडा सर थागै ।
आंरै मालागर मूंढारै आगै ॥
सारी कीमत है करियोड़ा सारै ।
हीमत भरियोड़ा हीमत नह हारै ॥१८३॥

सरधा बांकीसूं झांकी सुखसेरी ।
ढूंढी ढूंढाहड़[2] हाडोती[3] हेरी ॥
जाणीं जीवणनैं जिण तिण मिस जुलिया ।
पाणी पीवण नैं पूरब दिस पुलिया ॥१८४॥

जाडा धनवाला सिंधू तट जुड़िया ।
गाडा तनपाला गुज्जर[4] घर गुड़िया ॥
घर घर छपनैं में घर घर री घाली ।
मोऊ मुरधर री सनमुख सुखमाल्ही ॥१८५॥

सासा नोली में अटकायां सांसै ।
बालक झोली में लटकायां बांसै ॥

१—किसी को सिर न झुकाने वाले । २—जयपुर राज्य का पुराना नाम । ३—बूंदी व कोटा राज्य के नाम । ४—गुजरात ।

माथै ओडी धर साखीणां माडे।
छपनैं लाखीणां अपणां घर छाडे ॥१८३॥

बलदां गांडांसल पाडां पर बो:रा।
छोटा डोरान्तर रोरांकुर छोरा ॥
करणां दरसावै केटा बरकड़िया।
जूती फाटोड़ी बांधी जेवड़ियां ॥१८७॥

मूंछां गालड़िया सेडै में भरिया।
ऊबासा लेवै मावा[1] ऊतरिया ॥
खांधां पर खड़िया मैला मांख्यां सूं।
लणमणियां जोवै झरती आंख्यां सूं ॥१८८॥

हाथां हूकलिया[2] लटकंता लोटा।
रिणरिण रींकंता सुपनैं में रोटा॥
कोडी कोडी लै कलियोड़ा कूंगा।
ढाला भूंडोड़ा ढलियोडा ढूंगा ॥१८९॥

लारै बालद रो डेरो लीनोड़ो।
दोलो दालदरो घेरो दीनोड़ो ॥
जूंवां लीखां रा जमियोडा जाला।
नीचा नमियोड़ा कड़ कोड़ा काला ॥१९०॥

१—अफीम। २—हुक्का।

चींचड़ ईंतां बुगदोला चैठोड़ा ।
आएँ झोली में टुकड़ा अँठोड़ा ॥
धोती धड़चाली संधियोड़ा धागा ।
तुवियां तुणियोड़ा वधियोड़ा वागा ॥१६१॥
खेटरखल मूंडा छिपियोडी छाती ।
गोडा गलियोड़ा चिपियोडो चाती ॥
हारा दुरदृष्टी अष्टी सुकजावै ।
ज्यूं ज्यूं जल बरसै त्यूं त्यूं तन तावै ॥१६२॥
फाटा धावलिया घाघरिया फाटा ।
फरकै चोटलिया देता फरराटा ॥
तागत तूटोड़ी तापड तूटोड़ा ।
खातां पोतांसूं पैलां खूटोड़ा ॥१६३॥
छैलां छोगालां छक्का छूटोड़ा ।
फिरतां फिरतां रा फींफर[1] फूटोड़ा ।
लालू लोकां रा खाता जग खोणां ।
बाबा वैलां रा जाता पग जोणां ॥१६४॥
लख लख झख मारै सुखह्वै किण लेखै ।
दुसमी दलियेरा दोजख दुख देखै ॥
कंठी कंठा में चंदण री काली ।
गुरुपद वंदणरी मूंढै में गाली ॥१६५॥

१—हीया, हृदय ।

पसुवत पामरपण पोषण घण पागल ।
दोनूं भुज दुर्गति चौघटियां दागल ॥
मोटा मोटा पग छोटासा माथा ।
खोटा करमांरा खावणनैं खाथा[1] ॥१९६॥

चूल्है रा चंदा खाटण कण खारा ।
हांडी चाटणनैं बंदा हुसियारा ॥
दैणै मैःणैं धिन लैःणैं विन दोरा ।
रुपियो खोवै रज सोवै जद सोरा ॥१९७॥

गोडा गुडियोड़ा गलतीरै गारै ।
उरबुग उडियोड़ा बैठा सह बारै ॥
रिब रिब धायानी छाया सिर रोलै ।
घूंटी आया जिम काया चखघोलै ॥१९८॥

ऐंठै चूंठै नैं मींठो कर आणैं ।
दीठो अणदीठो दीठां कर जाणैं ॥
पोखै प्रांणांनै नीसरिग्या परचा ।
चोखै बींठैरी बीसरिग्या चरचा ॥१९९॥

भूपति टोटां में दीवाला भिलिया ।
मोटां मोटां रा कुल मुंगतां मिलिया ॥

१—आतुर ।

बांधै गांठड़ियां वड़ियां चग बाल़ै।
राली गूदड़ लै कांधै पर रालै ॥२००॥

ऊंचा नींचां में आंगल़ नह ईखै।
भागल भकभूरां भेल़ा भड़ भीखै॥
मंगण मंगणसूं पद पद रद पीसै।
डूमां दैसोतां दल़ ओसल़ दीसै ॥२०१॥

नींची न्यातां रा ऊंचा ऊधरिया।
ऊंची जातां रा नींचा ऊतरिया॥
नीची जातां रो ठुणको[1] पण न्यारो।
ऊंची जातां रो उडिग्यो उणियारो[2] ॥२०२॥

ऊंची जातांरा नींचा पुन आया।
खोड़ां काढण री खोड़ा खिणखाया॥
जोगो नांनांणां दादाणां जोड़ो।
ताजा कुल़ दोनूं रोटी रो तोड़ो[3] ॥२०३॥

मामों भाणेजो हिल मिल मुख मोड़ो।
फोड़ो किंचित नह, फलकां[4] रो फोड़ो॥
काको भत्तीजो सारै दिन काटो।
घर में घाटो नह, आटै रो घाटो ॥२०४॥

१—ऐंठ। २—सूरत। ३—कमी। ४—रोटियां।

दुरबिध घमडी दै सणकारी साजी।
भारी भमडीलै घर में भूवाजी॥
चिलमीं अमली के जुलमीं चितचावा।
दासी बेस्यां रा मद्वां रै दावा॥२०५॥

गिरमीं गिरमीं में गिरवै मुडियोड़ा।
जान्है डैरूं ज्यूं गोडा जुड़ियोड़ा॥
कुलटा साची ह्वै ठुकराणी कूड़ी।
पड़दै पड़दायत[1] रांणीं सूं रूड़ी॥२०६॥

रामा अभिरामा कामातुर रोवै।
हडमल हुडदंगी सेजां में सोवै॥
ललनां लातरियां खातरियां खारीं।
भड़वी भगतणियां पातरियां प्यारी॥२०७॥

भडवा लोकां रै जागीरी भारी।
आवै आटै नैं काटै उपकारी॥
परजापतियां नह परजा नैं पालैं।
टुकड़ै टुकड़ै नैं टीवै टंक टालै॥२०८॥

लाखां जन डोलै भचभेड़ा लेता।
दारूखोरां री घोरां दव देता॥

१—उपपत्नि।

भाजो भाजो कर भोजन कज भीखै।
दुखमें दरवाजो दातां रो दीखै ॥२०९॥

जसरी तुल पग दे ललका लेजावै।
हीरा माणक सब हलका ह्वै जावै॥
धिन धिन दाता जग साता मग धाया।
जननी जसधारी बारी जिण जाया ॥२१०॥

लाखां लोकां रो लाखां भर लीनों।
दुरलभ बेला में चेला[1] भरि दीनों॥
धिन धिन दातारां साता रां धणियां।
आगल खुलियोडी तुलियोड़ी अणियां ॥२११॥

धिन धिन धनवंतां थेली ले धायां।
भायां लातरतां झेली भुजभायां॥
अबलां उद्धारी सबलां कुल आया।
पुन परचारण रा परमोदय पाया ॥२१२॥

आईयो अंगरेजां अद्भुत गतिवालां।
इँगलस[2] नेसन[3] रां देसन उजवालां॥
बांटण बनितावां बारी अणबारी।
बालक बूढां रा पालक बलिहारी ॥२१३॥

१—पलड़ा। २—अँगरेज। ३—जाति।

निरमल गंगाजल गंगासी[1] नामी।
जंगल घर में किय मंगल जगजामी॥
परदुख काटणघर बिक्रमधुर पूठो।
बरखा अंमृत झड़ बिक्रमपुर[2] बूठो॥२१४॥
सुण सुण जसवारो आनंद मन आण्यो।
जगमें जीवावण जैपुरपति जाण्यो॥
मूंघो मांखण सूं मिसरी सूं मींठो।
द्रग सूं दो घड़ीयां अन बिकतो दीठो॥२१५॥
फबतो आयुस श्रीमाधव[3] फुरमायो।
कांतीचंद्र[4] नैं कालींदर खायो॥
छपनैं जयपुर रो जग में जस छायो।
ओतो अरबां रा बलसूं फल आयो॥२१६॥
साहिब साहिब सम देखो दरसायो।
हरदम हरियँद[5] भी सेखो[6] सरसायो॥

१—बीकानेर नरेश महाराजा गंगासिंह जो सं० १९३७ आसोज सुदि १० बुधवार (१३-१०-१८८० ई०) को जन्मे और सं० १९४४ भादों सुदि १३ (ता० ३१-८-१८८७ ई०) को गद्दी पर बैठे। २—बीकानेर राजधानी। ३—जयपुर नरेश महाराजा सवाई माधोसिंह (तीसरे)। ४—जयपुर का दीवान बंगाली ब्राह्मण बाबू कान्तिचन्द्र मुकर्जी। ५—जयपुर राज्य के प्रजाहितैषी मुख्य सरदार हरीसिंह लाडखानी। ६—कछवाहा वंश की शेखावत शाखा।

लख पुल पातल[1] जस परचो लिख लीनों ।
दुनियां पालण रो कोन्सल कस कीनों ॥२१७॥
धान दिरावण नै सुखदेवो[2] धायो ।
पाणी निरमल नित सुबला लै पायो ॥
आछा आछा जनवासी[3] हेगा बनवासी ।
उठगा उगलाणां[4] पाछा कद आसी ॥२१८॥
अगणित अबलावां छावां[5] जुत आई ।
निरमल नैणां जल बलबल बिललाई ॥
भारी नांणां[6] बिन दाणां बिन भूमै ।
घररी रदनोरी सदनां बिन घूमै ॥२१९॥
डहती डूलीसी भूली ढंग ढांगै ।
मोटी आंख्यां री रोटी मुख मांगै ॥
तोता बोता में रैता तुतलाता ।
बातां बीसरगा बैता बतलाता ॥२२०॥
जाता गैले जिम जुल जुल हंसि जोता ।
रोटी मांगण सूं पैलांवस रोता ॥

१—जोधपुर के दीवान महाराज प्रतापसिंह । २—जोधपुर के प्रसिद्ध नीतिज्ञ (चाणक्य) राजकर्मचारी रावबहादुर सुखदेव-प्रसाद काक (कारमीरी ब्राह्मण) । ३—शहरों के लोग । ४—बिना कपड़ों के । ५—बच्चे । ६—रुपया पैसा ।

छिन छिन खाती बिच छड़ती नित छाती।
मोकल चाकल में कोकल नह माती ॥२२१॥

हांडी खांडी में डोई संग हालै।
चख भख खंजन में धारोला चालै॥
भुक भुक हरियाले कुमले नहिं भूली।
भूली छणियारो मणियारो भूली ॥२२२॥

तरुणीं बरुणीं में नींभर भर-ताकी।
थिग थिग मृगनैंणीं बिकबैंणी थाकी॥
पिंजर पांसलियां भीतर पैठोड़ा।
बोलै बोबाता डोबा बैठोड़ा ॥२२३॥

कूंची नांगलियां नरता करड़ाता।
ऊंची आंगलियां करता अरड़ाता॥
नाड़ा नीसरगी जाड़ातल झलकै।
न्यारी न्यारी निज पांसलियां पलकै ॥२२४॥

ललता पंखारा पैलू लागोड़ा।
भूखा भमतां रा भीतर भागोड़ा॥
डिगती डोकरियां डोकरिया डोलै।
बाबा टुकड़ो दो हाबा कर बोलै ॥२२५॥

नख नहिं निरखाती नाजक नखराली।
पिय जिय प्रतपाली जाती पथपाली॥

घूरण नयणां चल काजल जल घूमै ।
लड़ थड़ आथड़ती प्रीतम गल लूमै ॥२२६॥

डोरा डिगमगता आटी खुल डुलती ।
तिरछी झांकणियां बरछीसी तुलती ॥
दुरबल लाजालू सालू में दीखै ।
भामण भूखालू ज्यालू बिन बीखै[1] ॥२२७॥

भूरी भटकूडी उरजणियां भावै ।
गोरी गटकूडी कुरजणियां गावै ॥
छपनूं गावै गल नैणां जल छावै ।
अपणीं उणमुखता सनमुख दरसावै ॥२२८॥

संक्रम सुभ स्रष्टी द्रष्टी लुभदेती ।
लंपुट संपुट लख घूंघट पट लेती ॥
लुलकर लकुटीले त्रकुटी सलताती ।
भूखी बाघण सो भ्रकुटी भलकाती ॥२२९॥

सरती सदनामी चाहत नहिं चोरी ।
डरती बदनामी गावत नहिं डोरी ॥
चित भव भांडां री चरचा नहिं चावै ।
छिपली[2] रांडां री अरचा नहिं लावै ॥२३०॥

१—बिलखना । २—बे विश्वासी, लोफर ।

होणीं सो होई थिर नह थिर कोई।
सिरजणहारै फिर सिरजी सिर सोई ॥
लूंजी लेतोड़ी गूंजी गुणगाती।
पिछली पूंजीनैं सिर धुणि पिछताती ॥२३१॥

दोड़ा दोड़ी कर गिण गिण दुख गेरै।
हाथा जोड़ी कर जिण तिण मुख हेरै ॥
छंदागारी छिब प्यारी पुलवंती।
कर कर लाचारी हारी कुलवंती ॥२३२॥

मुड़ मुड़ पड़तोड़ी आंखड़ियां मींचै।
भूखां मरतोडी मूंठड़ियां भींचै ॥
सीधी सैणांसी मैणी सुण मालहै।
बैसक पुरबसणों हसणों तजि हालै ॥२३३॥

टींगर टोलीले चटपट घण टोली।
चहुँघां चींघणसी दुबघा घटदोली ॥
ऊसर बैणांसूं श्रवती अलश्रारां।
धूसर नैणांसूं श्रवती जलधारां ॥२३४॥

ओदण महदालय ओढण थण ओढै।
प्रमुदा आलयबिण प्रमथालय पोढै ॥
झुर झुर कुरजांसी उरजां सुक झड़कै।
तीखा नेतर री छेतर में लड़कै ॥२३५॥

घर घर घाटां घिन संसोधन घालै।
हर हर हाटां बिन हंसो उड हालै ॥
दुरघंट अटव्यासण सोपट दुख दीखे।
अज्जण मज्जण विण सज्जण मुख ईखे ॥२३६॥

दागै सम ईरण जीरण छद दाटै।
कोणय बित्थीरण संकीरण काटै ॥
बाल्हा बन्ही बिन बाल्हा बिसरावै।
घर अन्तेष्टी कर परमेष्टी धावै ॥२३७॥

मुड़दा मड़हट में पड़िया नह मावै।
सड़िया बासैं सब बिकरंद बभकावै ॥
आडां[1] खाडां[2] में भोडक अड़वड़ता।
संतां आश्रम जिम तूंबा तड़भड़ता॥१३८॥

खांचै सूकरवत कूकर नह खावै।
जोगा कांपण तन खापण बिन जावै ॥
ग्रीधां गणणांवै खावै तन खाचै।
रामदुवारा में रांड ज्यूं राचै ॥२३९॥

धूम मुसाणा में निसबासुर धावै।
अन्तेष्टी आसर टांणा लख आवै ॥

१—तालाब मे पानी आने का रास्ता। २—गड्ढे।

गुड़दा खेचां हुय पामल गुण गावै।
मुड़दा मुड़दा में सामल मिल जावै ॥२४०॥
सासा सणकावै नासां निरतावै।
जीता मरिथा जुग भिभरो भररावै ॥
पल पल पलकां सूं पड़ता परनाला।
मोटा मूंगां री होठां में मालां ॥२४१॥
काठी कुरलातां काती निस काली।
होली हीये में दांतां दीवाली ॥
सांमूं सीयालो[1] साकी सरसायो।
बाकी वंचियांनैं डाकी दरसायो ॥२४२।
महिका महिषासुर आसुर सुर मारण।
दावो धावोदें ठावो अरिडारण ॥
आथी व्याधीरा आधण ऊकलिया।
अंजण मंजण बिन संजण द्रग उलिया॥२४३॥
पीतल परिकर पर चीतल कर परसै।
बेहद महितल सिर सीतल सर बरसै ॥
खलभल खावणनैं मृगसिर खल खेधै।
बावल बरफांरी तरफांसूं बेधै ॥२४४॥
पालो पड़तोड़ो वरुणालय बींटै।
भालो कड़तोड़ो करुणा नहि भींटै ॥

१—शरद ऋतु।

रातां मोटी व्है दिन छोटा रोवै।
हाथां पावां रा खोटा दिन होवै ॥२४५॥
मुगधा मध्यानै मोढा मिलजावै।
पढ पढ प्रारथनां प्रोढा पिलजावैं ॥
हीयागम आगम उलटा पण होवैं।
साध्वी दुख देखे कुलटा सुख सोवैं ॥२४६॥
चारा मिणतोड़ी सजनीं चितचावैं।
तारा गिणतोड़ी रजनीं विनवावैं ॥
ओभक ऋैली में आवेस अलूझैं।
सीली रेली में चीसलियां सूझैं ॥२४७॥
पदमणि पुरखांरैं पँगरण[1] नह पूरा।
भूखा सूनोड़ा सँगरणवैं भूरा ॥
रोजा निसवासर संठांगें साजै।
वैंकृति कंठांमें अलगोजा[2] बाजै ॥२४८॥
मृत्यू सीमासी रावी विसमासी।
भीमा भावीसी भीमा निस भासी ॥
तूहिन कंठीरव[3] तन कुंजर[4] तावै।
डग डगि चढियोड़ा मरिया डुसकावै॥२४९॥

१—सामान। २—वंशी की तरह का एक बाजा। ३—सिंह
४—हाथी।

बासप नैणांसूं निकलैं मुख बाफां।
रैणूं ऐड़ी पर फाटोडी राफां[1] ॥
थुर थुर धूजन्ता थुड़ता थाकोड़ा।
पीला पड़ियोड़ा पिलिया पाकोड़ा ॥२५०॥
गिरिया गाडी पर चढतोड़ा चालै।
हित्या देतोड़ा चेतोड़ा हालै ॥
चटपट पिंजारण घट घट लुचैंठी।
अटपट आंलांनैं तांतां जिम ऐंठी ॥२५१॥
बैठा बिंजण विण हिंजरता बारै।
धुंघट पिंजरमें पिंजण झुणकारैं ॥
सुखमें सांतांरा सुणता संजीरा।
मुखमें दांतांरा धुणता मंजीरा ॥२५२॥
बिगड़ी किसमत री पारायण वांचैं।
नाड़ी नाडी में नारायण नांचैं ॥
बणग्या बैदेही वेहो अभ्यासो।
संका देही नहिं गेही सन्यासी ॥२५३॥
बैरस बैरागी त्यागी तन तावै।
बेला[2] तेला[3] बिधि सहजां बण आवै ॥

१—मुँह फाड़। २—दो दिन का उपवास। ३—तीन दिन का व्रत।

पत्थ्या पाटणदै भिदयाटण भाजी।
रत्थ्या कर्पटलै चर्पटवत राजी ॥२५४॥
साधू संता में वेवल कद सोवै।
जरजर कंथामें केवल[1] पद जोवै ॥
अतिथी अभ्यागत टोला टुल आवै।
झोली झंडाले पोली पधरावै ॥२५५॥
रमता रावलिया रलियारत रोधैं।
धुनमें धुन लागी पुन में सत सोधै ॥
कमंडल कापादा कंबल गलकंथा।
खोखा बांहांरी खुद सीखी संथा ॥२५६॥
जै जै जोगेश्वर भोगेस्वर भूला।
धारण पक्की धर चक्की नहिं चूला ॥
अैतो जिन कल्पी अल्पी अणगारा[2]।
थीवरकल्पी[3] जन नांखै थुथकारा ॥२५७॥
अलगा अेकांयत नीयत निरदावै।
घूर्णी अवधूतां दूर्णी धुकवावै ॥
पूरा पोमाहे सूरा सत सावै।
पीता मरियोड़ा जीता पद पावै ॥२५८॥
गोढै थल गोडा पहुवी पोढणनैं।

१—मोक्ष। (केवल ज्ञान)। २—साधु। ३—जैन साधु।

गाभो[1] गलती[2] निस[3] आभो[4] ओढणनैं ॥
जोषित दत्तात्रिय गोरख जिम जोता
त्यागी तीर्थंकर संकर सम सोता ॥२५६॥

तन मन जुगती री जागी ततकाली ।
त्यारी मुकती री लागी अब ताली ॥
ठिरतां दांतां में नांगलियां ठेली ।
मरतां दांतांमें आंगलियां मेली ॥२६०॥

बन्दोबस्तां में बाकी नह बाकी ।
चल चल प्रज थाकी बाकीमें चाकी ॥
परजा प्रांणांसूं धन गो धणियां रो ।
भणणूं भणियांरो बणगो बणियांरो॥२६१॥

मांख्यां अण मिनखां पांख्यांसूं पोखै ।
कुत्ता कोथलियां राखै अणरोखै ॥
हा हा ढोलै पसु कागां कुल हाथै ।
मिनकी[5] पोरायत[6] चूहां दल माथै ॥२६२॥

ऊजड़ खेड़ा हा भेड़ा हा ओरा ।
राजी साधू हा खल रिसवत खोरा ॥

१—कपड़ा । २—पिछली । ३—रात । ४—आसमान ।
५—बिल्ली । ६—चौकीदार ।

कीन्हीं कड़दै में ऊमर कव छररी।
दीन्ही पड़दै में घूमर मुरधर[1] री ॥२५२॥

१—मारवाड़। मारवाड़ राज्य की राजधानी जोधपुर का किला मयूर पुच्छ (मयूरध्वज) आकार का होने से उसे "मोरधज" भी कहते है। इस किले की नीव जब सं० १५१५ (वि० सं० १५१६) मे रक्खी गई तब ब्राह्मण ज्योतिषियों की सलाह से मनुष्य बलिदान के निमित्त दो चमार (भांबी-मेघवाल-ढेड) राजाराम (राजिया उर्फ रतना) और कलिया नीव मे जीवित गाड़े गये। इस आदर्श राजभक्त बलिदान के एवज में राव जोधाजी राठोड़ ने भांबी राजिया और कलिया के वंशजो को कुछ भूमि दी थी जो आज भी उसके नाम पर जोधपुर किले के पास सूरसागर कसबे मे "राज बाग" नाम से प्रसिद्ध है। इनसे राज्य की बेगार आदि नहीं ली जाती है। देखो महकमे तवारीख पंडित रामकर्ण आसोपा कृत "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृ० १८२ पंक्ति १६ तथा सन् १६०० ई० मे छपा सरकारी ग्रन्थ "गायड टू जोधपुर" पेज ७ और कर्नल डाक्टर एडम्स कृत "दी वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स" पेज ८१ लाइन ३० दूसरी आवृत्ति सन् १६०० ई०, व गहलोत कृत "मारवाड़ राज्य का इतिहास" दूसरी आवृत्ति पृष्ठ ३६ व ४३ सन् १६२५ ई०)

अबार रो हाल

(राग प्रभाती बिलावल)

खारी रे आ समें[1] दुखारी,
हाहा बड़ी हत्यारी रे ॥ टेर ॥
मोटा घरां मुजादा मिटगी,
बंगलां रे सो बारो रे।
गोला जुगली मांय गई जद,
नसल बिगड़ गई न्यारी रे ॥खारी० ॥१॥
होटल माई खाणों हिलतां,
बिटला[2] बुरी बिचारी रे।
मांनव धर्म शास्त्र री महिमां,
सुरती नहीं समाली रे ॥ खारी०॥२॥
घुड़दोड़ा सूं डूंगा घसगा,
नामरदी फिर न्यारी रे।
लाखां रुपया लेखे लागा,
कोई न लागी कारी[3] रे ॥खारी०॥३॥
ख्यातव्यां[4] बंद छोड खिड़कियां[5],
धणियां टोपी धारी रे।

१—समय। २—भ्रष्ट लोगों ने। ३—उपाय। ४—प्रसिद्ध पुरुष। ५—पुराने ढंग की मारवाड़ी पगड़ी।

कमर बंदा बांदण री कवि ने,
 विद इण आई बारी रे ॥खारी०॥४॥
अदालतां सूं होय आगती[1],
 पिरजा रोय पुकारी रे।
सूंक[2] दुकांनां मडी सरासर,
 घोले दिवस अंधारी रे ॥खारी०॥५॥
फिर जंगलायत कियो फायदो,
 जुल्म कायदो जारी रे।
टोगड़ियां रा गला टूंपतां,
 भयो कष्ट अति भारी रे ॥खारी० ॥६॥
छत्री धर्म छोड़ियो छेला,
 चौड़े हुय व्यभिचारी रे।
परणघोड़ी रे पास न पोढ़े[3],
 पातर लागे प्यारी रे ॥खारी०॥७॥
दुख सतियां रो सुणे न दिलकी,
 बिलकी[4] फिरे बिचारी रे।
धणी जीवतां देखी घरांमें,
 भोगे रंडापो भारी रे ॥खारी०॥८॥
रजपूतांणीं रहे रिजक[5] बिन,

१—हैरान। २—रिशवत, घूंस। ३—लेटना। ४—रंजीदा। ५—जीविका।

धर्म पतीव्रत धारी रे।
बिद्राणी परदां में बैठी,
किसब कमावे सारी रे ॥खारी०॥९॥
निरोगता रो नास करे, नित,
निरख पराई नारी रे।
ऊमरदांन डूबसी आंदां,
कोई न लागे कारी रे ॥खारी०॥१०॥

कलदार करामात

चौपाई

अब कलदार[1] लियो अवतारा।
सब कलजुग कौं दैन सहारा॥
तुरत रेल अरु तार उतारा।
एक करन सबको आचारा॥

१—सन् १७९३ ई० (सं० १८५० वि०) मे अँग्रेजों इण्डिया कम्पनी) ने बंगाल में चांदी का सिक्का चलाया पर बादशाह शाहआलम दूसरे का "सन जुलूसी छापा गया था"। यही सबसे पहला कलदार रुपया था। कल (मैशीन) से ढाले जाने से ये रुपया 'कलदार' कहलाया। आज भी केवल अँगरेजी रुपया ही कलदार के नाम से कहलाता है। यहाँ कलदार से मतलब धन, लक्ष्मी से है।

भज कलदारम् भज कलदारम्।
कलदारम् भज मूढमते॥१॥

बिन कलदार बुद्धि नहिं बंसा।
पुनि या बिन नहिं होत प्रसंसा॥
संकट हरन भव[1] बेसंसा।
येह नरनारि जक्त अवतंसा॥भज०॥२॥

भजन करे याको बड़ भागी।
भजैं नहिं सो महा अभागी॥
लेवन लगन परम पद लागी।
रात दिवस रहिये अनुरागी॥भज०॥३॥

भाई तुझे बताऊं भेवा[2]।
साचे तन मन करियो सेवा॥
मोज करोगे मिलहैं मेवा।
दोसत[3] देखि बोलता देवा॥भज०॥४॥

यह कलदार पुरष अविनासी।
पुन काटत यह जम की फांसी॥
क्यूं जाइये फिर मथुरा कासी।
याही के बस वहां उपासी॥भज०॥५॥

१—भव=संसार। २—भेद। ३—दोस्त, मित्र।

जोगी[1] जगमें जोवत जती।
साध सेवड़े[2] सोधत सती॥
ग्यांनी गिनत ईसीकूं गती।
भगवत यही यही भगवती ॥भज०॥६॥
चेले गुरु चलते इक चील्हे[3]।
हैं कलदार बटोरन हीले॥
परजा कों हाकम सब पीले।
बस कोल्हू[4] कानून बसीले ॥भज०॥७॥
मित्र पिता को किसकी माता।
भो सुत बनिता किसके भ्राता॥
जग सब दीखत आता जाता।
सबका मन इस मांहि समाता ॥भज०॥८॥

१—जोगियों का पंथ गोरखनाथ से चला जो भरथरी और गोपीचन्द जैसे बड़े बड़े राजाओं के जोगी (योगी) होने से बहुत जल्द तमाम हिन्दुस्तान में फैल गया और जोगी फकीरी से गुजर कर बादशाही करने लगे।...... और रियासत महियर इलाके बघेलखंड के राजा तो अब भी जोगी हैं......(देखो मारवाड़ मदुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८६१ ई० जातियों की उत्पत्ति व इतिहास पृ० २४० कौम जोगी।) विद्वानों ने मछंदरनाथ के चेले गोरखनाथ और जलंधरनाथ का समय १४ वी शताब्दी का प्रथम भाग माना है। जो जोगी कान फटाते हैं वे "नाथ" या "कनफटे नाथ" कहलाते हैं। २—जैन साधु। ३—रास्ते। ४—घाणी।

जब कलदार पास ह्वये जावें।
    दीन होय नहिं दांत दिखावें॥
चीनी चावल घी चलि आवैं।
    आप अरोग अनंद उड़ावैं॥भज०॥९॥

ऊमर यार जमाना ऐसा।
    कह घरबार निभैगा कैसा॥
पास नहीं जब होवै पैसा।
    जगमें जीनां मरनां जैसा॥भज०॥१०॥

यही रुपया है अनदाता।
    स्वारथ परमारथ सुख साता॥
दुनियां मांहिं चारि-फलदाता[१]।
    विश्वंभर विश्वेस विधाता॥भज०॥११॥

कहु विंजन आराम विकसाया।
    सुभ पट भूखन छंद सुहाया॥
द्वेष प्रीति निज हित दरसाया।
    ब्रह्म यहैं याके बस माया॥भज०॥१२॥

सेवक को सेवक यह स्वामी।
    जग सबको हैं अंतरजामी॥

१—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

सोलह कला संपूर्ण सकामी।
निकट निवास करहु धन नामी ॥भज०॥१३॥
धन बिन बुधि बल धूर धमासा।
सब निसफल हैं सास उसासा॥
मिलि दसमासा[1] बारह मासा।
तेरे बिन जग करत तमासा ॥भज०॥१४॥
करिये कृपा अहो अविकारा।
अब नहिं जाऊं लैन उधारा॥
सब तेरेतैं होत सुधारा।
झल्लरि जूं करतो झनकारा ॥भज०॥१५॥
बहु बिवेक वित[2] होवहिं बंदा।
करहिं दान आनंद के कंदा॥
छबि धरि रच्यो षोडशी छंदा।
ऊमर के मन भयो अनंदा ॥भज०१६॥



१—कलदार रुपया वज़न में एक तोला यानी १२ माशा भर होता है। उसमें १० माशा तो चाँदी व दो माशा कांसी बताई जाती है। २—धन, माल।

करन्यास[1]

दोहा

कोडी बिन कीमत नहीं, सगा न राखे साथ ।
हाजर नांणों हाथ में, वैरी बूजे बात ॥
ओ३म् वाक् वाक् ॥ १ ॥

दालद घर दोलो[2] हुवे, परणि न आवे पास ।
रुपिया होवे रोकड़ा, सोरा[3] आवे सास ॥
ओ३म् प्राणः प्राणः ॥ २ ॥

कलजुग में कलदार बिन, भायां पढ़िया भेव ।
जिण घर माया जोर में, दरसण आवे देव ॥
ओ३म् चक्षुः चक्षुः ॥ ३ ॥

रुपियां बिन रागां करें; हाजर जोड़े हाथ ।
एक अधेली आँट[4] में, बोलो[5] सुण ले बात ॥
ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम् ॥ ४ ॥

भांत भांत रा सांग भर, प्रभु सूं करे न प्रेम ।
सोधे लिछमीं साधड़ा, नाभ कवल रो नेम ॥
ओ३म् नाभिः ॥ ५ ॥

१—आचमन मन्त्र । २—घेरा देना । ३—सहज । ४—धोती की अंटी । ५—बहरा ।

घर धारी घबराय नें, भणिया मांगे भीक।
नांणों ले प्रभु नाव री, ठरे[1] कालजा ठीक॥
ओ३म् हृदयम् ॥ ६ ॥

करे कमाई कपट सूं, दीन हांण[2] कर दोर।
कंठ दाब काढे कसर, जमका लागे जोर॥
ओ३म् कण्ठः ॥ ७ ॥

देवां रो ही देवता, रुपियां रो ही राज।
अंगरेजां में आज दिन, सारां रा सिरताज॥
ओ३म् शिरः ॥ ८ ॥

दौलत सूं दौलत बधे, दौलत आवे दोर।
जस होवे सब जगत में, जोबन आवे जोर॥
ओं बाहुभ्यां यशोबलम् ॥९॥

धन्धो करणों धर्म सूं, लोकां लेणों लाव।
पइसो आवे प्रेम सूं, दब के देणों दाव॥
इति करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥१०॥

हक्क कमायो हाथ सूं, ठावो धरिये ठांम।
लुच्चो आवे लेणने, दीजे एक न दांम॥
इति अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥११॥

१—ठंडा होना। २—हानि।

अन धन जिण घर आसरो, भला अरोगे[१] भोग।
पइसो हुवे न पास में, लूलू[२] करदे लोग॥
इति अनामिकाभ्यां नमः ॥१२॥

हित री बात

(दोहा)

डोफाई सूं डूबगो, खोटी संगत खूब।
डूबो सोतो डूबगो, कूक मतो बेकूब ॥१॥
पढे गुणें नहीं पेखवे[३], चारुहीं वर्ण निचिन्त।
मारवाड़ री मूढता, मिटसी दोरी मिन्त ॥२॥
गुरू लोक गप्फा चरे, धरे न राजा ध्यान।
सो किण विध सूं सूधरे, दाखे[४] ऊमरदान ॥३॥

२

(सोरठा)

चोड़े[५] कर चालोह[६], लूटे भालो[७] लोकनें।
कदहुसी कालोह, मुनस्यां वालो मुलकसुं ॥१॥
हिये ऊठत हूकांह[८], सूंकां मुनस्यांरी सुणां।
किण आगे कुकांह, लूंका[९] सुणे न लोकरी ॥२॥

१—खाते है। २—बेवकूफ। ३—देखना। ४—कहना। ५—प्रकट। ६—उपद्रव ७—देखो। ८—चोट। ९—लफंगे।

बोली रा बाड़ाह[1], रीत बिगाड़ा राजरा ।
धोले दिन धाड़ाह, मुनसी पाड़े मुरधरा ॥३॥
गरथ[2] लेत गोसेह[3], रात दिवस रोसे[4] रयत ।
मांय मांय मोसेह, मुनसी खोसे मुरधरा ॥४॥
पोहोरे पधरावेह, स्थांन गमावे सहज में ।
दावे बेदावह, मुनसी खावे मुरधरा ॥५॥
सेजां घण सूतेह, ऊबा मुंते अधपती ।
हूंते अणहूँतेह, मुनसी चुंथे[5] मुरधरा ॥६॥

आपरी[6] ओलखाण[7]

जोगी कहो, भव भोगी कहो,
रजरोगी कहो, कौ केसेइ हैं ।
न्याई कहो, औ अन्याई कहो,
कुकसाई कहो जग जेसेइ हैं ॥
मीत[8] कहो, वो अमीत कहो,
ज्युं पलीत[9] कहो, तन तेसेइ हैं ।
ऊत कहो, अवधूत कहो,
लो कपूत कहो, हम हैं सोइ हैं ॥१॥

१—कड़वे । २—धन । ३—गुप्त । ४—मारना, तंग करना । ५—रोंदना । ६—अपनी यानी कवि की । ७—पहिचान, परिचय । ८—मित्र । ९—भूत, प्रेत, दुष्ट ।

कवित्त

मुलक मारवाड़ में थली[1] के मद्ध जन्म जोय,
चारन वरन चारु विकल विसासी को।
बाल वय ही में पितु मात परलोक बसे,
भ्राता नवलेस[2] भये हुवो खेल हांसी को।
रंडां के सनेही गरू मुखिया मुरार[3] मिल्यो,
धणी श्रीप्रताप[4] धारयो अंकुर उदासी को।
सुख को न किन्हिनों सोच लख उमरेस लिन्हिनों,
देव सब दिनों सराजांम[5] सित्यानासी को॥१॥



१—रेगिस्तान, रेतीला परगना। २—कवि का भाई नवलदान। ३—महामहोपाध्याय कविराजा मुरारदान आसिया चारण, जोधपुर। ४—जोधपुर के मुसाहिब आला कर्नल महाराज सर प्रतापसिंह (बाद में ईडरनरेश)। ५—प्रबन्ध।

यह ग्रन्थ एक हजार पृष्ठ का बड़े आकार (रायल अठपेजी साइज) का पोथा होगा परन्तु एक ही जिल्द में संक्षेप से सागर को गागर में भर दिया गया है। साथ ही में कोई उल्लेखनीय बात छूटने नहीं पाई है। इसमें कई गुप्त एवं सत्य घटनाओं का उल्लेख मिलेगा जो नवीन खोज से सिद्ध हुई हैं।

बड़ी खोज और छानबीन

के साथ यह "राजपूताने का इतिहास" लिखा गया है। इसके लिखने में कितना परिश्रम और कितना खर्च हुआ है यह आप पुस्तक पढ़ कर ही कह सकेंगे। राजघराने के पुराने कागज-पत्रों, शिलालेखों, तांबांपत्रों व सिक्कों और ख्यातो, ऐतिहासिक बहियों की वर्षों तक खोज करके यह अपूर्व इतिहास ग्रन्थ तैयार किया गया है। राजपूताने के राज्यों से निकलकर जो राज्य अन्य प्रान्तों मे फैले हैं उनका भी संक्षेप वर्णन इसमें दिया गया है। प्रत्येक राज्य के साथ उस राज्य के मुख्य जागीरदार, उमरावों, सरदारों का भी वृत्तान्त इसमें है। वीर पुरुष, देशभक्त, कवि, लेखक, मुत्सद्दी और प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों के करीब ३०० ऐतिहासिक दुर्लभ चित्र भी इस ग्रन्थ की शोभा बढ़ावेंगे। भाषा सरल तथा सुबोध है इसलिए स्कूल के विद्यार्थी भी आसानी से पढ़ सकते हैं।

१००० पृष्ठ और ३०० चित्र होंगे

इतने चित्र, इतने पृष्ठ और सुन्दर छपाई तथा बढ़िया टिकाऊ कागज होने पर भी सस्ता है। हमने सर्वसाधारण के प्रचारार्थ इस अनमोल एवं उपयोगी उत्तम ग्रन्थ का मूल्य

६) ~~लगभग ४॥)~~ रू० ६)

रखना निश्चित किया है। वी० पी० डाक खर्च अलग। शीघ्र अपना आर्डर भेजिये। नहीं तो फिर शायद ग्रन्थ आपको न मिले। शीघ्रता करें।

हो, जागीरदारों के हकूक कुरब कायदे सिरायतों व ताजीमी सर-दारों तथा हिन्दु मुसलमान जातियो की उत्पत्ति आदि का सचित्र वृत्तान्त, मारवाड़ मे सरकारी महकमें और प्रचलित कानून कायदों का दिग्दर्शन करना तथा विविध प्रकार से समस्त मारवाड़ यानी जोधपुर स्टेट का सर्वाङ्ग पूर्ण दिग्दर्शन करना हो तो, यह अपटू-डेट इतिहास पढ़िये। इसमे राजपूताने की सभ्यता रहन सहन एवं साहित्य का भी वर्णन आ गया है। इसकी रचना शैली इतनी सरल मनोहर और रोचक है कि पढ़ते-पढ़ते जी नही ऊबता और उपन्यास से बढ़कर आनन्द आता है। मारवाड़ देश और राठोड़ राजवंश सम्बन्धी कोई बात छुटने नहीं पाई है। यह अप-टू-डेट गेजेटियर सर्वसंग्रह व इतिहास है और प्रजा संबंधी इतने हालात का ग्रंथ बिरला ही छपा होगा। देशी राज्यों के इतिहासो में यह बिलकुल ही नया, अनोखा और अपने ढंग का ग्रंथ है। इसमें पचासों ऐसे दुर्लभ चित्र हैं जो आज तक कही भी प्रकाशित नहीं हुए हैं और जिन्हे हमने बहुत खोज तथा काफी धन खर्च करके प्राप्त किये हैं। यह कहना अतिशोक्ति नहीं है कि इस ग्रन्थ के मूल्य में इतने चित्र भी आपको प्राप्त न हो सकेंगे। इसमें कई ऐसे चित्र हैं जिनके मूल-रूप के लिये यूरोप के विद्वानगण हजारों रुपया खर्च कर सकते है। ग्रन्थ के अवलोकन से ही आपको इसका महत्व ज्ञात हो जायगा। भारत विख्यात इतिहासवेत्ता सर यदुनाथ सरकार एम० ए०; सी० आई० ई०, महामहोपाध्याय रायबहादुर पं० गौरीशंकर ओझा, महामना पं० मदनमोहन मालवीय आदि विद्वानों और विश्वमित्र, माधुरी, प्रताप, त्यागभूमि, महारथी, बाम्बे क्रानिकल, तरुण राजस्थान, आर्यमार्तण्ड, आदि पत्रों ने इस की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। कई संस्थाओं ने अपने

विद्यार्थियों के लिये इस पुस्तक को पाठ्य व पारितोषिक ग्रन्थ के तौर पर नियुक्त किया है। उपहार देने योग्य एतिहासिक मौलिक ग्रंथ है। इसकी प्रथम आवृत्ति छपते छपते ही बात की बात में निकल गई और दूसरी आवृति भी बड़े जोरो से बिक रही है।

शीघ्र एक प्रति मंगा लीजिये। समय न चूकिये

नही तो पछताना होगा। पुस्तक सर्व प्रकार अनूठी है। बढ़िया सफेद, चिकने कागज उत्तम व सुन्दर छपाई लगभग ६२५ पृष्ठ और १५५ से भी अधिक भावपूर्ण सुन्दर हाफटोन के अनमोल पुराने व नये दुर्लभ चित्रो से सुसज्जित। इतने बड़े पोथे का मूल्य लागत मात्र केवल ३॥) साढ़े तीन रुपये और सजिल्द का ४।) सवाचार रु० है। डाक खर्च अलग ॥=) आने।

इस इतिहास के विषय में कुछ पत्रो की राय देखिये—

"**माधुरी**"—प्रस्तुत पुस्तक इतिहास भी है और साथ ही साथ सचित्र वर्णन और भूगोल भी है। कोरा इतिहास न होने के कारण इसकी मनोरंजकता बहुत बढ़ गई है। इस पुस्तक मे राजपूताने की सभ्यता, रहन सहन, एवं साहित्य का भी वर्णन आ गया है। हमारी राय में यह बड़ा ही उपादेय ग्रन्थ है। ऐसे उत्तम ग्रन्थों के प्रकाशन से स्थायी साहित्य का सब प्रकार से भला होता है। इधर हिन्दी मे इतिहास के कई महत्वपूर्ण ग्रथ निकले हैं। "मारवाड़ राज्यका इतिहास" भी उनमें से एक है।...... इस ग्रंथ में मुख्यतया रियासत जोधपुर का विशद वर्णन है; पर गौणरूप से भारतवर्ष में स्थित सभी राठोड़ रियासतों का वर्णन कर दिया गया है। यदि राजपूताने की अन्य रियासतो के भी इसी प्रकार के इतिहास निकल जायँ तो देश, जाति एवं मातृभाषा का बड़ा कल्याण हो। तथास्तु।"

सुधा—"पुस्तक सर्वांग सुन्दर हुई है। इतिहास जिस तरह लिखा जाना चाहिए, लेखक ने उसी तरह से इसका साद्यन्त निर्वाह किया है।.......... हिन्दी साहित्य में इसके द्वारा मारवाड़ के इतिहास पर अच्छा प्रकाश पड़ा है।"

महारथी—"पुस्तक बड़ी खोज के साथ लिखी गई है। गहलोतजी ने इस पुस्तक को लिखकर एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। साथ ही साथ पुस्तक को सुन्दर एवं आवश्यक चित्रों से सुसज्जित कर पुस्तक की सुन्दरता को द्विगुणित कर दिया गया है।...........इतिहास प्रेमियों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। कर्नल टाड के "राजस्थान" से भी यह पुस्तक अधिक परिमार्जित है। हिन्दी एवं हिन्दू संसार को ऐसी सुन्दर पुस्तक भेंट करने के उपलक्ष में लेखक का आभारी होना चाहिए।"

"त्यागभूमि"—(अजमेर)—हमने जितने मारवाड़ के इतिहास देखे, उनमें यह सबसे उत्कृष्ट है।.. यह इतिहास केवल वर्णनात्मक ही नहीं, आलोचनात्मक भी है।... हम राजपूताने के इतिहास के विद्यार्थियों से अनुरोध करते हैं कि वे इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

"प्रताप"—(साप्ताहिक, कानपुर)—"... पुस्तक की लेखनशैली मनोरंजक और भाषा सरल तथा सुबोध है। मुझे आशा है कि जोधपुर राज्य निवासी और इतिहास प्रेमी लोग इस पुस्तक को बड़ी रुचि और जिज्ञासा के साथ पढ़ेंगे तथा इससे समुचित लाभ उठायेंगे। पुस्तक संग्रहणीय है। पुस्तकालयों में इसका संग्रह अवश्य होना चाहिए।"

"सरस्वती"—इस ग्रन्थ के पढ़ने से मारवाड़ के राजवंश का ही पूरा ज्ञान नहीं होता है, किन्तु वहाँ के परगनों, नदी,

नालों, पैदावार, निवासियों, उनके रहन-सहन आदि एवं वर्तमान शासन का भी पूरा पूरा ज्ञान हो जाता है। मारवाड़ के निवासियों के लिए यह पुस्तक अधिक उपयोगी होते हुए भी अन्य लोगों के लिए भी लाभप्रद है।

"तरुण राजस्थान" (अजमेर)—"···ऐतिहासिक दृष्टि से लेखक ने केवल राजवंश के हाल-चाल लिखकर ही सन्तोष नही किया है। प्रत्युत जनता के रीति-रिवाज, भाषा-भेष, सामयिक एवं आर्थिक स्थिति सम्बन्धी अन्य उपयोगी सामग्री भी विपुल परिमाण मे दी गई है और शासन व्यवस्था पर काफी प्रकाश डाला है। सार यह कि पुस्तक मारवाड़ के विषय में जानकारी प्राप्त करने वालो के लिए सब प्रकार से काम की चीज़ है।"

वयोवृद्ध विद्वान् ठाकुर चतुरसिंह वर्मा, चीफ़ आफ़ रूपाहेली (मेवाड़) लिखते हैं कि—"बड़े बड़े भारत के इतिहास वेत्ताओ और अनेक समाचारपत्रो ने मुक्तकंठ से सराहना की है। वास्तव मे मारवाड़ रूपी महासिन्धु को एक छोटे से मटके में भर दिया है।··· ऐसा इतिहास भारत भर के किसी राज्य का अब तक नही छपा।"

"आर्य्य मार्तण्ड"—(साप्ताहिक अजमेर)—······ प्रस्तुत पुस्तक क्या है, नौ कोटि मारवाड़ का विश्वकोष है।

मारवाड़ सम्बन्धी कोई भी ज्ञातव्य बात नही छोड़ी गई है, हिन्दी भाषा में ऐसे वर्णनात्मक और साथ ही आलोचनात्मक ग्रन्थ विरले ही होंगे।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी पुस्तक अपूर्व है। पुराने संस्कृत ग्रंथों, तवारीखों, सिक्कों, ताम्रपत्रों, शिलालेखों और ख्यातों का

मन्थन करके मारवाड़ और रणबाँकुरे राठौरो का विस्तृत वर्णन किया गया है।

उदयपुर राज्य के वयोवृद्ध इतिहासज्ञ बाबू रामनारायण दूगड़—"वास्तव में आपकी यह पुस्तक अति प्रशंसनीय पद्धति पर बड़े खोज और परिश्रम के साथ लिखी हुई हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक ग्रंथो में अद्वितीय है। किसी भी राज्य का ऐसा कोई इतिहास हिन्दी मे आज तक देखने में नहीं आया जिसमें राज्य और प्रजा सम्बन्धी इतना हाल मिल सकता हो।"

"विश्व मित्र" (साप्ताहिक, कलकत्ता)—"यह मारवाड़ राज्य जोधपुर का भूगोल और इतिहास दोनो ही है। प्रासंगिक चित्रो से यह आदि से अन्त तक सुसज्जित है।... पुस्तक इतनी योग्यता के साथ लिखो गयी है कि इसे पढ़ लेने के पश्चात् किसी को जोधपुर राज्य एवं वहाँ के निवासियो के सम्बन्ध की जानने योग्य कोई बात बाकी नही रह जाती है।"

"बम्बे क्रानिकल" राष्ट्रीय अंग्रेजी पत्र की सम्मति इस प्रकार है:—

Bombay Chronicle—daily Bombay. (Editor Mr. Syed Abdullah Brelvi)

The History of Jodhpur State (Marwar) ... is a history of modern Jodhpur in Hindi written by one who knows Marwar and its people intimately ....The book under review. ...is a veritable mine of information on Jodhpur and her dynastic

feudatories. The author seems to have taken great pains to collect the material . .The political economic and social conditions of Marwar are copiously illustrated and graphically described The style is illuminating and the facts so interesting A patriotic spirit runs through-out the book

The book is valuable for those who are interested in the problems of Indian States and the subjects of History and Sociology while for every Rajasthani it is an indispensable acquisition

---

भारतीय नरेश

यदि भारतवर्ष भर के ५०० देशी राज्यों की वर्तमान स्थिति व उनका संक्षिप्त इतिहास जानना हो, यदि देशी नरेशो की जात, जन्म, राजतिलक की तिथि देखना हो, यदि नेपाल, भूटान, जैसे स्वाधीन राज्यो का दिग्दर्शन करना हो और भारत के अन्तर्गत पोरचूगीज, डच और फ्रेंच राज्यो का वर्णन पढ़ना हो, यदि भिन्न भिन्न राज्यों के साथ अंग्रेज सरकार की संधियो, अहदनामों का सिंहावलोकन करना हो तथा वाइसराय, गवर्नर और सम्राटों के देशी नरेशो के प्रति दिये हुए प्रजोपयोगी भाषणों का आनन्द लेना हो, तथा भारत सरकार को किस राज्य से कितना खिराज (कर) मिलता है,मुख्य मुख्य रजवाड़ो में प्रजा की सामाजिक आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी क्या हालत है, कौन कौन से (मुख्य मुख्य) राजे अपनी प्रजा की उन्नति के लिये क्या उद्योग कर रहे हैं, यह जानने की इच्छा हो तो दो रुपये

खर्च कर इस पुस्तक को जरूर पढ़िये। इसका दूसरा संस्करण प्रेस में छप रहा है शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

राजस्थानका सामाजिक जीवन

इसमें राजपूताने की सब रियासतों के रीति रिवाज, रहन सहन, आर्थिक व सामाजिक दशा मय मनुष्य गणना के अंकों के दी गई हैं। देशी नरेशों के राज्यो का विस्तार, सलामी की तोपें तथा उनके सरदार उमराव जागीरदारो के कुर्ब कायदे रहन सहन, और राजदरबारों मे रहनेवाले मनुष्यों के रंग ढंग का इसमें चित्र खींचा गया है। विविध जातियो में क्या खान-पान होता है, किस तरह से रहते है, पहिनावा क्या है, यह सब बड़ी रोचकता के साथ उन्हीं की कहावतोंको उद्धृत करते हुए लिखा गया है। राजपूताने के कला-कौशल, मजदूरी, शिक्षा, दवाखाना और ग्रामीण जीवन का भी वर्णन मनोरंजक रूप में किया गया है। अंग्रेज सरकार की तरफ से देशी राज्यो में जो सुधार के आदेश बड़े लाट साहब द्वारा समय समय पर हुए है वे भी यथास्थान दिये गये हैं। यहाँ के सरदारों व प्रजा में प्रचलित सामाजिक कुरीतियो का भी अच्छे ढग से दिग्दर्शन कराया गया है। वार, त्यौहार पर क्या क्या रस्में मनाई जाती हैं इसका भी अच्छा वर्णन किया गया है। संक्षेप में यह राजस्थान की प्रजा का सब हाल जानने के लिये कुञ्जी है और हरेक देशप्रेमी के पढ़ने योग्य काम की चीज है। दाम केवल चार आने।

राजपूत कौन हैं ?

इस सुन्दर पुस्तक में प्रमाणो से यह सिद्ध किया गया है कि प्राचीन-क्षत्रिय जाति व वर्तमान राजपूत कौम एक ही है। क्षत्रियों का "राजपूत" नाम कैसे और कब पड़ा, इस पर भी प्रकाश डाला गया है और देशी व विदेशी विद्वानो के भ्रम मूलक विचारो की छान बीन करके यह निचोड़ निकाला है कि राजपूत वास्तव में शुद्ध क्षत्रिय हैं। दाम न्योछावर मात्र एक आना।

क्या राजपूत अनार्य हैं ?

कर्नल टाड आदि विदेशी विद्वानो और उनका अनुकरण करने वाले देशी लोगो ने भी राजपूतो की उत्पत्ति के बारे में अपने मन गढन्त विचार लिखे है, उनका वर्णन करते हुए इस पुस्तक में यह बतलाया गया है कि राजपूत वास्तव मे शुद्ध क्षत्रिय और आर्य्य नस्ल से है। पुस्तक बड़े काम की है और प्रत्येक राजपूत को एक बार अवश्य पढ़ना चाहिये। मूल्य दो आने।

मारवाड़ के उमराव और मुत्सद्दी

इस ग्रन्थ में मारवाड़ राज्य के मुख्य मुख्य उमराव, जागीरदार, सरदार, भोमीचारा जागीरदार तथा पुराने व नये मुत्सद्दी, सोनानवीसं, कैफ़ियतदार और सासनदारो के, कुरसीनामें—वंशवृक्ष कुर्ब कायदे, ताजीम, उत्तराधिकार के नियम आदि का वर्णन है। यत्र तत्र वीर पुरुषों के दुर्लभ चित्र भी इसमें दिये गये हैं।

मारवाड़ भर के तमाम ठिकानों और जागीरों के रेख-चाकरी (खिराज), हुक्मनामा, नजराना आदि की सूची भी इसमें है। पुस्तक एकदम अनुपम, और बड़ी खोज व वर्षों के परिश्रम से तैयार की हुई है। शीघ्र खरीदिये। थोड़ीसी प्रतियें छपाई गई हैं। मूल्य केवल १) एक रुपया।

अवश्य पढ़िये

अठारहवीं शताब्दी के

स्वराज्य-संग्राम के

क्रान्तिकारी योद्धा

वीर दुर्गादास राठोड़

का

(जीवन चरित्र)

प्रकाशित होगया ! शीघ्र मँगाइये !!

आज तक

जितनी भी पुस्तकें वीर दुर्गादास राठोड़ के सम्बन्ध में प्रकाशित हुई हैं, वे या तो उपन्यास के रूप में या नाटक की शक्ल में निकली हैं। उस स्वाधीनता के पुजारी की प्रमाणिक जीवनी का अभाव हिन्दी में बुरी तरह खटकता था। उसी की पूर्ति के लिए वर्षों के परिश्रम, खोज और अनुसन्धान के बाद यह पुस्तक तैयार हुई है। अभी तक किसी भी भाषा में इतनी अच्छी देशभक्तिपूर्ण पुस्तक "दुर्गाबाबा" के सम्बन्ध में प्रकाशित नहीं हुई है। पुस्तक की छपाई सफ़ाई अत्यन्त मनोहर है। बीच बीच में ऐतिहासिक व दुर्लभ चित्रों के कारण इसकी शोभा और

भी बढ़ गई है। जिन्हे उस समय के प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ बादशाह औरंगजेब की चालों को दुर्गादास द्वारा नष्ट किये जाने का हाल मालूम करना हो वे अवश्य उस राठोड़ सेनापति राव दुर्गादास की इस जीवनी को मंगाकर पढ़ें। छत्रपति शिवाजी के बाद हिन्दू-संस्कृति के रक्षक दुर्गादास ही थे—अतएव विस्तृत बातें जानने के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़ जाइये। पुस्तक का मूल्य केवल ।।।) बारह आने।

सती मीरांबाईका जीवन और काव्य

राजस्थान मे सती मीरांबाई का नाम छिपा नहीं है। इसके भक्तिरस के भजनों का स्त्री पुरुषों मे घर घर प्रचार है। स्त्री जाति को उज्ज्वल बनाने वाली इस महिला का जीवन चरित्र बड़ा शिक्षादायक और उपयोगी है। यह ऐतिहासिक दृष्टि से छानबीन के साथ लिखा गया है और इसमें असम्बद्ध और असम्भव बाते जो बाद मे लोगो ने जोड़ दी थीं उनको निकाल कर स्पष्ट सत्य घटनाओं का वर्णन किया गया है। साथ ही मे मीरांबाई के भजनों का एक अपूर्व संग्रह भी छान बीन करके दिया गया है जिसको पढ़कर ईश्वर भक्ति में पाठकों को प्रेम व आनन्द का अनुभव होगा। आज तक ऐसी रोचक जीवनी मीरांबाई की किसी भाषा में नहीं निकली। छपाई सफाई सुन्दर है। पुस्तक प्रेस में है। मूल्य केवल ।।।) बारह आने।

चित्रमय जोधपुर

यह जोधपुर शहर के दर्शनीय स्थानों और उनके ऐतिहासिक वर्णन बताने वाली सुन्दर सचित्र गायड बुक है। मूल्य ।≈) है।

क्या जयचन्द्र देशद्रोही था ?

इसमें उन प्रचलित विचारों का खंडन किया गया है जो लोगो में फैले हुए हैं कि कन्नोज पति महाराजा जयचन्द्र गाहड़-वाल (गहरवार) ने अन्तिम हिन्दू सम्राट् महाराजा पृथ्वीराज चौहान के मुकाबले मे मुसलमानो को बुलाकर भारत के पतन की नींव रक्खी थी और लंका के देशद्रोही विभीषण का सा काम किया था। वास्तव में ऐतिहासिक प्रमाणों से यह सिद्ध किया गया है कि कन्नौज पति जयचन्द्र देशद्रोही नहीं था। मूल्य केवल एक आना।

महाराजा सर प्रताप

इसमें ईडर नरेश और जोधपुर के रीजेन्ट सुप्रसिद्ध राठोड वीर हिज हाईनेस लेफ्टिनेण्ट जनरल महाराजा सर प्रतापसिंह बहादुर जी० सी० बी० ओ० (स्वर्गवासी) का वीर चरित्र है। सर प्रताप के नाम को आज भारत और योरुप मे कौन नहीं जानता। जर्मन महायुद्ध में तथा चीन, चितराल आदि कई लड़ाइयों में जो वीरतायें इन्होंने दिखाई थीं उनकी अब तक देशी व विदेशी प्रशंसा किया करते है। बीसवी सदी में राजपूतों की वीरता का साक्षात् नमूना देखना हो तो इस पुस्तक को पढ़िये। सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज और कई चित्रों से सुसज्जित है। इस पर भी मूल्य केवल ॥) आठ आना। तीसरा संस्करण प्रेस में है।

राजस्थानकी कृषि सम्बन्धी कहावतें

यदि आप घर बैठे ही भविष्य में खेती व वर्षा का हाल जानना चाहते हों तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। ये किताब किसानो और अनाज के व्योपारियों को बड़ी लाभदायक है क्योंकि इसमें राजपूताना के धुरन्धर ज्योतिषियों और किसानों के वर्षों के अनुभव का निचोड़ है। प्रत्येक कहावत का सरल हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में भी अर्थ दिया गया है। दाम ।-) पांच आना।

दियासलाई का इतिहास

इसमें आधुनिक दियासलाई की रोचक व युक्ति संगत उत्पत्ति आदि का वर्णन है। मूल्य =) दो आने सिर्फ।

क्या आप जानना चाहते हैं?

१—हिन्दू वास्तव में निर्बल हैं?
२—निर्बलता का कारण क्या है?
३—निर्बलता किस प्रकार आई?
४—निर्बलता किस प्रकार दूर हो सकती है?
५—प्राचीन समय के हिन्दू कैसे थे?
६—वर्त्तमान समय के हिन्दू क्या हो गये?
७—विदेशी सभ्यता का प्रभाव क्या हुआ?
८—भारतीय सभ्यता का अभाव कैसे हुआ?
९—हिन्दू नेता व हिन्दू धर्माचार्यों और आर्य्यसमाज का क्या कर्त्तव्य है?

यदि इन जानने योग्य बातों की लालसा हो तो आप

हिन्दू संगठन

नामक अनुपम सचित्र पुस्तक आज ही मँगाइये और पढ़िये। मूल्य केवल चार आना। इसमें कई चित्र भी हैं। हिन्दी के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र "कर्मवीर" (खंडवा) की राय देखिये—

"कर्मवीर"—"पुस्तक में हिन्दू-समस्या पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार किया है। निबन्ध में हिन्दुओं की निर्बलता के कारण, उसका प्रतिकार आदि विषयों की संक्षेप में समीक्षा की गई है। लेखक के विचारों में कई स्थलों पर निर्भीकता और स्वतन्त्रता है।

धर्म के नाम पर धर्म में जो अनेक हानिकारक आचार विचार प्रविष्ट हुए हैं, उन पर आरूढ़ होने के कारण भी हिन्दुओं का ह्रास हुआ है आदि विचार धर्माभास के ढकोसले को ठुकरा रहे हैं।" मूल्य ।) चार आना।

राजस्थान के छत्तीस राजवंश

इसमें जगत्प्रसिद्ध वीर राजपूत जाति की मुख्य खांपें और उनकी शाखा प्रशाखाओं का सुन्दर वर्णन है। भिन्न भिन्न विद्वानों ने इन राजवंशों की उत्पति व संख्या किस प्रकार मानी है। इनके राज्य कहाँ कहाँ पर हैं और इन शाखाओं के मूल-पुरुष कब हुए। इन सब पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक बड़ी छान बीन व प्रमाणों से लिखी गई है। प्रत्येक राजपूत भाई को इसे पढ़ना चाहिये और अपने उच्च गौरव का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। मूल्य ॥) दूसरा संस्करण प्रेस मे छप रहा है।

मारवाड़ राज्य का भूगोल

ताजीमी सरदारों की सूची

मारवाड़ देश का हाल जानने के लिये यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक बनी है। यह न केवल स्कूलों के विद्यार्थियों के लिये लाभकारी है परन्तु सर्व साधारण लोगों को भी हर प्रकार का भौगोलिक ज्ञान कराता है। मारवाड़ की भूमि, वर्षा, नदी, झील, जलवायु, फसल, जन संख्या, पशुधन, खनिज पदार्थ, व्यौपार, धन्दा, रेल, सड़क, कारीगरी, परगनों का वृत्तांत आदि अनेक विषयों को खोज कर इकट्ठी सामग्री इस पुस्तक में जुटाई गई है। यही नहीं मारवाड़ के जागीरदार व सरदारों की जागीर, रेख चाकरी (खिराज), ताजीम, कुरब कायदे और शाखा प्रशाखाओं की सूची जो अमूल्य और कहीं भी मिलने में दुर्लभ है वह भी इस पुस्तक के अन्त में स्वतन्त्र दे दी गई है। इससे यह पुस्तक मारवाड़ के उमराव व सरदार व जागीरदारों के लिये भी बड़े काम की चीज है। ऐसी अनोखी, अमूल्य सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र।) चार आने प्रचारार्थ रखा है। यह भूगोल राज्य के स्कूलों में पढ़ाने के लिये शिक्षा विभाग राज मारवाड़ से मंजूर शुदा है। इसमें कई नकशे भी हैं। बढ़िया कागज पर सुन्दर छपाई है।

तन्दुरुस्ती

इस पुस्तक में स्वास्थ्य की प्रारम्भिक उपयोगी एवं जानने योग्य बातों की स्पष्ट ढंग से चर्चा की गई है। लेखक के डाक्टर होने से पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। कई बीमारियों की उत्पत्ति के विषय में कीड़ों के बीसों सुन्दर हाफटोन चित्र देकर इस पुस्तक को सरल व मनोरंजक बनाई है। बालकों तक के समझ में शीघ्र आ जाती है। मूल्य लागत मात्र।) चार आना।

राजपूत जाति को सन्देश

इसमें क्षत्रिय जाति का प्राचीन गौरव व कर्तव्य का दिग्दर्शन कराते हुए वर्तमान राजपूतो की दशा का सुन्दर वर्णन किया गया है और उनमें प्रचलित कुरीतियो को बतलाते हुए लेखक ने राजपूत जाति में एकता, विद्याप्रचार, सदाचार और सुरीतियों के प्रचार की ओर ध्यान दिलाया है। राजा रईस सरदार उमरावों के पढ़ने की यह खास तोहफा (भेंट) है। इस पुस्तक के लेखक एक जागीरदार व सनातनधर्मावलम्बी होने पर भी शुद्धि व संगठन के लाभ पर भी काफी प्रकाश डाला है। पुस्तक के अन्त में भारतवर्ष भर के देशी राज्यो की नामावली, राज्य-विस्तार, जनसंख्या तोपों की सलामी आदि की सूची भी दी है। कई एतिहासिक चित्र हैं और छपाई सफाई उत्तम है। दाम १॥)

राजपूतों का आदर्श

इस पुस्तक में क्षत्रिय की परिभाषा, क्षत्रिय का कर्तव्य, राजा और प्रजा का परस्पर धर्म, आजकल के देशी नरेश और उनका बहु स्त्री प्रेम, क्षत्रियों की जातीय सभाओं की राजनीति से उदासीनता, राजपूतों के सच्चे इतिहास और देशी राज्यों में समयानुसार सुधार होने की आवश्यकता आदि अनेक महत्व-पूर्ण विषयों पर लेखक ने अच्छे ढंग से अपने विचार प्रकट किये हैं। जिन्हे प्रत्येक राजपूत को और विशेष कर देशी नरेश और जागीरदारों को पढ़ कर लाभ उठाना चाहिये। पुस्तक के लेखक स्वयं एक वयोवृद्ध जागीरदार हैं। मूल्य केवल ॥)



सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

हिन्दी साहित्य मंदिर

घंटाघर, जोधपुर (राजपूताना)

Hindi Sahitya Mandir, Jodhpur.

